श्रमणोपासक

बोहरा दपति स्मृति अक

10 अगस्त-25 अगस्त
(सयुक्ताक)

सम्पादक
चम्पालाल डागा

विशेष सम्पादक
भूपराज जैन
उदय नागोरी
जानकी नारायण श्रीमाली

प्रकाशक
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
'समता भवन', रामपुरिया मार्ग बीकानेर-334005 (राज)

श्रमणोपासक
* बोहरा दपति स्मृति अक
* 10 अगस्त-25 अगस्त
(सयुक्ताक)
* वर्ष 37, अक 9-10
* पजीयन सख्या आर एन 7387/63

सदस्यता शुल्क
* आजीवन 501/-
* वार्षिक 30/-
* वाचनालयों के लिए 25/-
* प्रस्तुत अक 25/-
* मुद्रित प्रतिया 6800

प्रकाशक
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
समता भवन' रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005 (राज)
दूरभाष 544867/203150
फैक्स 0151-203150 तार साधुमार्गी'

मुद्रक
जैन आर्ट प्रेस के लिए
कमिता कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स बीकानेर द्वारा मुद्रित

सम्पादकीय

श्रमणोपासक का चिर प्रतीक्षित बोहरा दम्पति विशेषाक सुधी पाठको के हाथों में समर्पित करते हुए हर्ष हो रहा है। श्रमणोपासक के विशेषाको की देदीप्यमान परम्परा मे यह एक हीरक रत्न सुजड़ित हो रहा है। भारतवर्ष के साहित्याकाश मे श्रमणोपासक पाक्षिक पत्र ने अपनी ज्ञान दर्शन चारित्र पर आधारित सामग्री से एक विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। श्रमणोपासक की सत्यनिष्ठा और प्रामाणिकता जहा पत्रकारिता के क्षेत्र में एक मानक स्तर का आदर्श है वहीं इसका अखिल भारतीय पारिवारिक पत्रिका का स्वरूप इसे अनूठी गुण-गरिमा से शोभित करता है। जहा इस पत्रिका की ३७ वर्षो की कालयात्रा इसकी उत्कृष्टता और गुणवत्ता की साक्षी है वहीं इसकी निरन्तर प्रवर्धमान ग्राहक सख्या इसकी शिखरोन्मुख लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण भी।

इसके विशेषाकों की एक सर्वथा विलग व विशिष्ट प्रस्तुति होती है। युग ज्ञा युग साक्षी और युग दृष्टि को वाणी देते हुए श्रमणोपासक के विशेषाक काल के भाल पर ललित चारित्र और जीवन आदर्शों के अमिट लेख हैं। श्रमणोपासक ने अपने विशेषाका के विषयो का चयन सदैव समाज की आदर्श सरचना और राष्ट्र की गुण-गरिमा को प्रोत्साहन प्रदान करने की भाव भूमिका के आधार पर किया है। यह श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ का मुख-पत्र है। अत साधुमार्गी परम्परा के प्रकाशन और सरक्षण मे श्रमणोपासक की अग्रगण्य भूमिका है। श्रमणोपासक का प्रस्तुत विशेषाक इसी भूमिका के निर्वहन का एक स्तुत्य प्रयास है। साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका रूपी चतुर्विध सघ हमारा आदर्श है। इसी आदर्श के दो प्रतीक रूप स्तम्भों के जीवन के आदर्श स्वरूप को लोक में गुणपूजा की प्रवृद्धि हेतु इस विशेषाक मे चित्रित करने का प्रयास किया गया है। यह विशेषाक स्वर्गीय श्री गणपतराज जी बोहरा और उनकी सहधर्मिणी स्वर्गीया श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा को समर्पित है।

समता विभूति धर्मपाल बोधक आचार्य श्री नानेश शासन को समर्पित श्री गणतपराज जी बोहरा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के दो बार अध्यक्ष रहे साथ ही सन् १९६६ से तो जीवन पर्यंत पूर्णत सघ और शासन की सेवा मे समर्पित रहे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा भी श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की अध्यक्षा व सरक्षिका तो रही ही साथ ही

सम्पूर्ण जीवन भर संघ और समिति को समर्पित रहीं। बोहरा दम्पति ने सघ
श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृति के साथ ऐसा एकात्म स्थापित किया कि ल
धर्मपाल उन्हे पिता-माता की भाति मानने और पूजने लगे। वे धर्मपाल पिता
बाहराजी और धर्मपाल माताश्री यशोदा माता के रूप मे प्रसिद्ध और स्थापि
व मान्य हो गई। इस विशेषाक में इन दोनो की बहुआयामी जीवन यात्रा
सार रूप मे प्रकाश डालने का लघु प्रयास किया गया है।

विशेषाक की सामग्री तीन खडो में समायोजित की गई है। प्रथम खड
बोहरा दम्पति के जीवन चरित्र को श्री जानकी नारायण श्रीमाली ने कुशलत
और समग्रता से चित्रित किया है। इसी 'जीवन खड' में उनके विचार प्रवाह ए
कतिपय साक्षिया सैकडो अभिनन्दन पत्रों के प्रतीक स्वरूप दो-तीन ऐतिहासिव
अभिनन्दन पत्र और चित्र वीथी है। यह जीवन खड साररूप मे एक समग्र
प्रस्तुति है।

विशेषाक का द्वितीय भाग 'सस्मरण खड' है। बोहरा दम्पति समाज में
इस प्रकार रमरत हो गए थे कि उनका जीवन व्यक्तिगत कम सार्वजनिक
अधिक हो गया था। इसलिये सस्मरणों की बाढ सी आ गई जिनमें से
प्रतिनिधि चरित्र के सस्मरणों को इस विशेषाक में प्रकाशित किया गया है।
सस्मरण वह विधा है जो जीवन के अन्तरग अनछुए पहलुओं को उजागर करती
है। इस विशेषाक में सकलित सस्मरणों में जो भावोद्रेक अकित हुआ है वा
सस्मरणों के इतिहास मे एक अमिट कीर्ति कलश की भाति सदैव स्वर्णिम
कीर्ति किरणें बिखेरता रहेगा।

इस विशेषाक का तृतीय भाग चिन्तन प्रधान लेखों से समृद्ध है। सेवा
शिक्षा सस्कार सहकार और चरित्र निर्माण के अनुभूतिमूलक विचारों का यह
यशस्वी सकलन सुधी पाठकों को ज्ञान दर्शन-चारित्र के पथ पर अग्रसर करने
में पाथेय की भूमिका निभावेगा ऐसा विश्वास है।

इस प्रकार का वैशिष्ट्य पूर्ण दिशा बोधक या विशेषाक आत्मोपासक के
सजग जिज्ञासु और गुणपूजक पाठक समूह को समर्पित करते हुए सम्पादक
मडल एक आत्मतोष की अनुभूति से आप्लावित है। विश्वास है समाज और
राष्ट्र जीवन में गुण-पूजा की पावन प्रेरणा जगाने के इस सात्विक प्रयास को
आपका स्नेहपूरित प्रोत्साहन सदैव की भाति प्राप्त होगा।

सादर

—चम्पालाल डागा सम्पादक
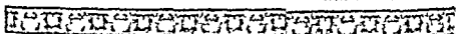
अनुक्रम

प्रथम खण्ड जीवन खण्ड

1 श्री गणपतराजजी बोहरा की जीवन यात्रा एक दृष्टि में 1

2 आदर्श समाजसेवी श्री गणपतराजजी बोहरा 4

3 धर्मपाल माता, धर्मपरायण, समाज सेवी श्रीमती यशोदा देवीजी बोहरा 14

4 अभिनन्दन-पत्र– श्री श्वे स्थानकवासी जैन सभा 17

5 अभिनन्दन-पत्र– श्री वर्द्ध स्थानकवासी जैन श्रावक सघ राजनादगाव 18

6 अध्यक्षीय भाषण– राजनादगाव में श्री अ भा सा जैन सघ के चतुर्थ वार्षिकात्सव पर– श्री गणपतराजजी बोहरा 20

7 अध्यक्षीय भाषण–दुर्ग में श्री अ भा सा जैन सघ के वार्षिक अधिवेशन पर– श्री गणपतराजजी बोहरा 26

8 अध्यक्षीय भाषण– रतलाम में श्री अ भा सा जैन सघ के 26वें अधिवेशन पर– श्री गणपतराजजी बोहरा 29

9 अध्यक्षीय भाषण– कानोड़ में श्री अ भा सा जैन सघ के 27वें अधिवेशन पर– श्री गणपतराजजी बोहरा 35

द्वितीय खण्ड सस्मरण खण्ड

1 आचाय श्री नानेश के अन्तरग श्रावक श्री बोहराजी– श्री धर्मेश मुनिजी म 1

2 बोहरा दपति प्ररक, गरिमामय व्यक्तित्व– श्री शातिलाल साड 3

3 अद्‌भुत, आदर्श सघ समर्पण– श्री गुमानमल चौरड़िया 6

4 समता का आदर्श यशोदा माता– श्री गुमानमल चौरड़िया 9

5 महान व्यक्तित्व के धनी - श्री गणपतराज बोहरा– श्री सोहनलाल सिपानी 10

6 सरल, सहज, सौम्य श्री बोहराजी– श्री सरदारमल काकरिया 1[illegible]

7 सघ सिरमौर बोहरा दपति– श्री रिघकरण सिपाणी 1[illegible]

8 युग पुरुष श्री बोहराजी– श्री धनराज बेताला 16

9 एक स्तम्भ ढह गया महामनीषी श्री गणपतराजजी बोहरा व श्रीमती यशोदा देवी बोहरा छोड़ गए मधुर स्मृतियां– श्री चम्पालाल डागा 18

10 प्रेरणा के स्रोत बोहरा दंपति– श्रीमती निर्मला देवी चोरड़िया 20

11 हे-दव-अमर पुरुष– श्री केशरीचंद गोलछा 21

12 सेवा व संघनिष्ठता के पुरोधा– श्री जयचंदलाल सुखानी 23

13 संघ के प्रति अटूट आस्थावान बोहरा दंपति– श्री धनराज, विमला देवी कोठारी 24

14 आदर्श समाज रचना के पुरोधा– समाज सेवी श्री मानव मुनि 25

15 ऐतिहासिक पुरुष श्री बोहराजी– श्री केशरीचंद सेठिया 27

16 परोपकार के मसीहा श्री गणपतराजजी बोहरा– श्री इन्द्रचंद बैद 31

17 धर्मनिष्ठ, दानवीर समाजसेवी बोहरा सा – श्री विरेन्द्रसिंह लोढ़ा 33

18 समाज रतन बोहराजी– श्री सुरेन्द्र कुमार दस्सानी 34

19 संघनिष्ठ, धर्मप्रेमी बोहरा दंपति– श्री मोतीलाल मालू 35

20 ए मानवता के सजग प्रहरी– श्री समरथमल डागरिया 36

21 समाज भूषण धर्मपाल पितामह श्री बोहरा सा श्री लूणकरण हीरावत 38

22 राष्ट्रीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र स्व बोहरा दंपति– श्री महेन्द्र सुराणा 39

23 मानवता का महाप्रकाश– श्री मनोहरलाल मेहता 41

24 सर्वतोमुखी व्यक्तित्व– श्री उत्तमचन्द श्रीश्रीमाल 42

25 प्रकाश स्तंभ श्री बोहरा– श्री बसन्तीलाल जैन 43

26 संघ गौरव, साहित्य प्रेमी श्री बोहरा सा – डा सुरेश सिसोदिया 44

27 पूर्वोदय की श्रद्धा– श्री कमलचन्द भूरा 45

28 दिल्ली महामानव– श्री एस के सोलंकी 46

29 समाज सेवी संघ प्रेमी श्रीमान बोहरा सा– श्री सतीश मेहता 47

30 सर्वमूर्ति [illegible] माता माँ यशोदा देवी– डा [illegible] मेहता 48

31 शिक्षा और चिकित्सा का समर्पित बोहरा दंपति– श्री लक्ष्मीचन्द जैन 49

32 अलौकिक व्यक्तित्व– श्री चचल कुमार बोथरा 50
33 हस उड़ गया, लोग देखते रह गये– श्री मिट्ठालाल मुरड़िया 51
34 बोहरा दपति को भावभीनी श्रद्धाजलिया– श्रीमती शाता देवी मेहता 52
35 धर्म राही बोहरा दपति खट्टी मिट्ठी यादें– श्रीमती कमला श्रीमाली 53
36 सेवा पथ के पथिक– एम के धर्मराज सचेती 55
37 जैन समाज के अमोलक रत्न बोहरा दपति– श्री केवलचद मूथा 56
38 श्री बोहरा व्यक्ति नहीं सस्था थे– श्री राजेन्द्र कुमार सिंघवी 57
39 भीलणी के बेर– श्री हीरालाल मकवाना 60
40 हम धर्मपाल तो क्या पूरा श्री सघ भी नहीं भूलेगा– श्री नरसिंह सोलकी 62
41 धर्मपाल समाज को असह्य आघात– श्री कुन्दनलाल मकवाना 64
42 सस्कारों के अग्रदूत– श्री सज्जनसिंह मेहता 66
43 सघ समर्पित, समाज सेवी दपति– श्री शातिलाल राका 68
44 सघ भामाशाह श्री बोहरा– श्री तोलाराम मिन्नी 69
45 देशभर में श्रद्धापूर्ण स्मरण 70
46 धर्मपाल पिता श्री गणपतराजजी बोहरा– भँवरलाल कोठारी 73
47 ओजस्विता का पुज-लोक मगला
श्रीमती यशोदा देवीजी बोहरा– रेणुमल जैन 75
48 सौजन्य मूर्ति श्री बोहरा सा के सम्पर्क की
मधुर स्मृतिया– श्री पी सी चौपड़ा 79
49 स्वतत्रता सेनानी, उद्योगपति श्री गणपतराजजी बोहरा– श्री रेणुमल जैन 82
50 श्री जी पी शाह नहीं रहे– श्री रेणुमल टाटिया 86
51 बोहरा दपति के पारदर्शी जीवन की झलक– श्री रिखबराज कर्णावट 87

तृतीय खण्ड चिन्तन-मनन खण्ड

1 राग, त्याग, वीतराग– श्री चादमल चावेल 1
2 समता दर्शन निर्गुण और सगुण पक्ष– श्री कन्हैयालाल डूगरवाल 5

3 उपलागो लक्खणम्– श्री उदयलाल जारोली 9
4 जैनेतर जातियों में जैनत्व का प्रभाव– डा महेन्द्र भानावत 13
5 समता पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में– श्री इन्द्रचन्द बैद 18
6 आदर्श शिक्षा– श्री जानकीनारायण श्रीमाली 24
7 जैन शास्त्र में गुरु महत्ता– डा प्रकाश लता 27
8 धर्म का मर्म– श्री उदय नागोरी 30
9 जैन संस्कृति के मूल स्वर– श्री बसन्तीलाल लसाड़ 32
10 दान या सहयोग–श्री मनोहरलाल मेहता 40
11 सुसंस्कारों का पुल बनाइये– श्री राजमल डागी 45
12 राहु नहीं सूर्य बनो– श्री दलीचंद भंडारी 47
13 मानव का शत्रु "अहंकार"– श्री देवीचंद भंडारी 48
14 सच्चा आनन्द–श्री पेवरचन्द सुच्चा 5
15 क्या है माटी क्या सोना है ?– डा महेन्द्र सागर प्रचंडिया 5
16 जीवन मूल्यों की तलाश–श्री निहाल चन्द जैन 5

नोट यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक
या संघ की सहमति हो।
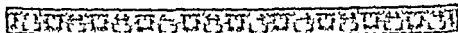
जीवन खण्ड

धर्मपाल पिता, सुश्रावक स्वर्गीय सेठ गणपतराज जी बोहरा पीपलियाकला की जीवन यात्रा एक दृष्टि मे

सन् १९१३ ई	म जन्म पीपलियाकला–मारवाड म।
सन् १९२० ई	तक धार्मिक परिवेश म लालन–पालन और आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा के दर्शन।
सन् १९२१ ई	ज्योर्तिधर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा से प्रगाढ धर्म प्रेरणा ।
सन् १९३० ई	सविनय अवज्ञा आन्दोलन क सन्दर्भ मे स्वय को थाने पर गिरफ्तारी हेतु प्रस्तुत किया।
सन् १९३१–३२ ई	कार्यक्षेत्र मे परिवर्तन–तमिलनाडु के विल्लुपुरम में निवास।
सन् १९३३–३५ ई	व्यवसाय के साथ ही खादी–स्वदेशी और स्वराज्य हेतु कार्य का सकल्प प्रजा परिषद को सहयोग।
सन् १९३६–४७	भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के एक सच्चे समर्पित कार्यकर्त्ता की भाति राष्ट्रीय स्वातत्र्य के सभी प्रयासों मे सहयोगी।
सन् १९४३	शान्तक्राति के दाता आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा की नेश्राय म।
१५ अगस्त १९४७	भारत की आजादी का स्वागत–अभिनन्दन।
१९४७ से १९५१	उद्योग सस्थापना एव सुश्रावकत्व की ओर तेजी से अग्रसर।
१९५७ ई	चैन्नई तमिलनाडु मे उद्योग स्थापना।
१९६१ ई	राजस्थान मे प्रथमत कोटा व तदनन्तर अपने ग्राम पीपलियाकला में उद्योग स्थापना।
१९६१ ई से	अपने ओजस्वी यशस्वी ज्येष्ठपुत्र श्री पारसराज जी शाह के प्रशस्त सहयोग की पृष्ठभूमि में उद्योगों के राष्ट्रव्यापी विस्तार की ओर अग्रसर साथ ही अपने कनिष्ठ पुत्र स्वतत्र चिन्तक सेवा समर्पित श्री पूर्णमलजी शाह को प्रोत्साहनपूर्वक गुर्जर भू पर उद्योगों के विस्तार हेतु प्रोत्साहन
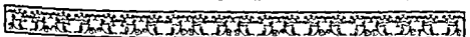
	अहमदाबाद और बड़ौदा में पदसिद्धि। प्राय सम्पूर्ण भारत में उद्योगों का विस्तार।
१९६६ ई में	श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष का गरिमामय पद भार धारण राजनादगाव म प्र।
२३ मार्च १९६४ ई	श्री धर्मपाल प्रवृत्ति की स्थापना– स्थापना से ही नेतृत्व
१९६८	श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष
एव १९६९	पद का निरन्तर निर्वहन देशव्यापी प्रवास।
१५ ४ १९७३	जावरा धर्मपाल सम्मेलन–एक नवीन कीर्तिमान।
अगस्त १९७५ ई	धर्मपाल क्षेत्रों में रोग निदान परीक्षण व औषधदान है धर्मपाल समिति अध्यक्ष श्री बोहरा की सहायता और पद्मश्री डॉ नदलाल बोरदिया की पहल पर प्रथम शिविर–तदनन्तर शिविरों की शृखला प्रारम्भ।
१९७५ से ८०	धर्मपाल ग्रामों में धार्मिक पाठशालाओं का अपूर्व–विस्तार
१९७५	देशनोक में प्रथम धर्मपाल सम्मेलन। धर्मपाल क्षेत्रों में श्री बोहरा और संघ प्रमुखों के प्रवासों की धूम से नई चेतना
१३ जून १९७६	प्रवृत्ति इतिहास का नया अध्याय श्री बोहरा जी के अ सहयोग से मन्दी में धर्मपाल समता भवन।
२५ सितम्बर १९७६	संघ के चौदहवे अधिवेशन में श्री बोहरा द्वारा अपने अनुज सम्पतराज जी बोहरा की स्मृति में श्रीमद् जवाहराचार्य शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में चल चिकित्सा वाहन धर्मपाल क्षेत्रों को भेंट। अध्यक्ष के रूप मे श्री बोहरा जी द्वारा धर्मपाल क्षेत्रों में मानव प्रवृत्तियों द्वारा जागरण का शखनाद।
२० १० ७६	धर्मपाल नवयुवक रैली।
१९७५ से १९७७	स्नेहजागरण पदयात्राओं के आयोजन। (दस पदयात्राए)
सितम्बर १९७७	से धर्मपाल जैन शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन।
१९७८	सेवा प्रकल्प– रतलाम में गोकुलचद सूर्या चलन्त्र गुजरान।
मार्च १९७९	धर्मपाल पाठ्यक्रमों की सरचना।
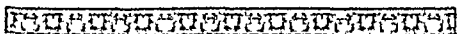
७ जुलाई १९७९ — श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर का शुभारभ।

१९८३ — धर्मपाल क्षेत्रों मे श्री समता प्रचार सघ उदयपुर द्वारा पर्युषण पर्वाराधन प्रारभ।

१९ ३ १९८३ — वज्राघात—श्री बोहरा जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज जी शाह का कार दुर्घटना मे निधन उस समय आप धर्मपाल क्षेत्रो मे पदयात्रा पर थे।

१८ ८ ८३ — को पीपलियाकला म पी जी हॉस्पीटल की नींव तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिहजी के हाथ से रखवाई।

१९६७ से जीवन पर्यन्त— सघ के प्रत्येक अधिवेशन में बोहरा दम्पति उपस्थित होकर सघ तथा समाज की सेवा में सक्रिय रहे। सघ की प्रत्येक प्रवृत्ति में आप दोनो ने मुक्त हस्त और उदात्त हृदय से दान दिया। स्मरणीय है कि श्रीमती यशोदा देवीजी सदैव छाया की भाति पति के साथ रहा करती थीं।

१९९७ — ब्यावर सघ अधिवेशन में सविधान सशोधन के ऐतिहासिक प्रस्ताव को समर्थन।

३० ७ १९९८ — श्रीमती यशोदा देवीजी बोहरा का स्वर्गवास।

१९ अगस्त १९९८ — महाप्रयाण—पीपलियाकला मे श्री बोहरा जी का।

२० ८.१९९८ — अपार जनमेदिनी की श्रद्धा—समर्पणा के मध्य दाह सस्कार पीपलियाकला में।

ॐ

आदर्श समाजसेवी श्री गणपतराज जी बोहरा

श्री गणपतराज जी बोहरा का जन्म आदर्श सुश्रावक व्रती और दृढ़धर्मी श्री प्रेमराज जी शाह के पुत्र रूप में मारवाड़ के पीपलिया कलां ग्राम में सन् १९१३ को हुआ। पाली जिले के ग्रामीण अंचल में स्थित पीपलिया कलां में उच्च प्रतिष्ठित समृद्ध और संस्कारी शाह परिवार में जन्म लेकर अपनी शिक्षा दीक्षा को दत्त चित्त होकर ग्रहण किया। व्यायाम और खेल के शौक से आपके सुदृढ़ स्वास्थ्य की नींव पड़ी। परिवार के धार्मिक वातावरण से आपके जीवन में धर्म का बीजारोपण हुआ जो आपकी जीवन यात्रा की प्रशस्त सफलता का आधार बना और धर्मो रक्षति रक्षितः के उद्घोष के अनुरूप आपने धर्ममय जीवन जिया, फलतः धर्म ने आपके सर्वांगीण विकास का पथ प्रशस्त किया।

स्वातंत्र्य समर के अमर योद्धा– देश में आजादी की आग दावानल की भांति जन जन के हृदय में दहक रही थी। स्वातंत्र्य समर का जयघोष दिग् दिगन्त में गूंज रहा था। सारा देश मानो आजादी के ज्वर से आक्रान्त था। एक ओर लोकमान्य तिलक की सिंहगर्जना से देश रोमांचित था। बंगाल महाराष्ट्र-पंजाब और दिल्ली में क्रांति की चिनगारियाँ ज्वालामुखी बनने को मचल रही थी तो दूसरी ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक विराट अकल्पनीय जन आन्दोलन अंगड़ाई ले रहा था। १९१३ में अपने जन्म काल से संवेदनशील बाल मन ने सूक्ष्मता से राष्ट्रीय परिवेश राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय आन्दोलन को अनुभव किया। परिवार के समृद्ध वातावरण सुखमय जीवन से आजादी के मतवालों की [illegible] श्री बोहरा का बचपन प्रभावित होता रहा। किशोरावस्था की [illegible] के आगमन के साथ ही साथ साहस और निश्चय की भावना में बदलने लगी। इसी समय महात्मा गांधी ने सन् १९३१ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आह्वान किया। देश में ज्वार आ गया। उत्साही युवक [illegible] होने लगा।

[illegible] श्री गणपतराज जी का पारिवारिक [illegible] गांधी और स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत था। श्री बोहरा जी के पिताजी श्री प्रेमराज जी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के अनन्य अनुयायी थे। आचार्य श्री ने [illegible] में खादी स्वदेशी [illegible] और [illegible] पर अपने ओजस्वी प्रवचनों से राष्ट्र और [illegible] जैन समाज में अपूर्व राष्ट्रीय जागृति पैदा की थी। राष्ट्र
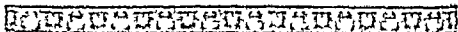
धारा के इस प्रवाह मे श्री प्रेमराज जी बोहरा अवगाहन कर चुके थे। इस अनुकूलता से श्री गणपतराज जी बोहरा का साहस बढ़ा। इस नैतिक समर्थन से उनका सकल्प प्रबल हुआ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और गिरफ्तारी– सविनय अवज्ञा के राष्ट्रीय आह्वान को श्री बोहरा का भावुक किशोर मन अनसुना न कर सका। अमित उत्साह के साथ मात्र १७–१८ वर्ष की वय मे अपने हृदय मे देश भक्ति का उद्दाम प्रवाह लेकर किशोरावस्था से तरुणाई की देहलीज पर चरण धर रहे श्री बोहरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समर्थन करने स्वय थाने पर पहुचे और अपने आपको गिरफ्तारी के लिए प्रस्तुत किया। मारवाड़ के प्रतिष्ठित समृद्ध परिवार के इस लाडले को थाने पर उपस्थित देख सहसा किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। प्रशासन की सदाशयता और परिवार के प्रभाव से आपकी गिरफ्तारी नहीं हुई किन्तु इससे आपकी भावनाओ मे कोई दुर्बलता नहीं आई। आपके सस्कारी मन का सकल्प और भी प्रबल हुआ।

प्रजा परिषद और साइमन कमीशन–श्री प्रेमराज बोहरा एक निर्विवाद व्यक्ति थे। अपनी ग्राम पचायत के वे २० वर्ष तक निर्विरोध अपितु सर्व सम्मति से सरपच निर्वाचित होते रहे। राजस्थान म काग्रेस नामक राष्ट्रीय सस्था की सहकारी सस्था आजादी की अलख जगा रही थी और उसका नाम था प्रजा परिषद। आपके ही क्षेत्र के श्री आनन्दराज जी सुराणा प्रजा परिषद के जबरदस्त कार्यकर्ता थे। जोधपुर मारवाड़ के लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास राजस्थान और विशेषकर पश्चिमी राजस्थान के अद्वितीय नेता थे। सेठ प्रेमराज जी बोहरा के शेरे व्यास जी और सेठ सा श्री सुराणा जी से आत्मीय सबध थे और श्री शाह प्रजा परिषद के सभी कार्यों मे मुक्त भाव से सहयोगी रहते थे। इस सबका श्री बोहरा पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। वे एक सस्कारित सयमित नौजवान के रूप मे उभरे।

श्री बोहरा अपने पिता के साथ तमिलनाडु क दक्षिण अर्काट जिले के विल्लुपुरम मे व्यवसाय के लिये पहुचे। चूकि उनके पिता एक सच्चे गाधीवादी थे और कट्टर काग्रेसी थे और इसलिये सन् १९३३–३५ के बीच देश मे चल रही बहिष्कार की आधी से श्री बोहरा अछूते न रह सके। पीपलिया कला (मारवाड) में रहते हुए उन्होने देशी रियासतो की सामन्ती व्यवस्था का जम कर विरोध किया था सा तमिलनाडु पहुच कर ब्रिटिश राज मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के ये सच्चे सिपाही बन गए और अब तक के अप्रत्यक्ष सघर्ष से हटकर अग्रेजा के साथ प्रत्यक्ष सघर्ष में कूद पडे। चाहे 'साइमन कमीशन–गो बैक' का अवसर हो
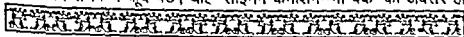
या प्रतिरोध आन्दोलन विल्लुपुरम में रह कर भी उन्होने राष्ट्रीय धारा में अपने सहयोग को अखण्ड रखा। खादी और स्वदेशी के वे जो अनन्य उपासक बने तो जीवन-पर्यन्त इस पथ के निष्ठावान पथिक बने रहे। काग्रेस कार्य के दौरान श्री बोहरा के जीवन पर महात्मा गाधी के साथ ही, साथ पडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार बल्लभ भाई पटेल जैसे नेताओं का भारी प्रभाव पड़ा। इस स्वातत्र्य समर में प्रत्यक्ष भाग लेने से उनके राष्ट्रवादी चरित्र में अद्भुत निखार और स्थैर्य आया जो उनकी सम्पूर्ण जीवन यात्रा का आधार बना रहा उनकी काल यात्रा को प्रदीप्त करता रहा। वे राष्ट्रीय काग्रेस के सच्चे सिपाही रहे किन्तु उनकी वाणी मे कभी दलीय आग्रह रचमात्र भी ध्वनित नहीं हुआ सदैव राष्ट्रहित ही मुखर हुआ। वे सचमुच एक समर्पित गाधीवादी थे।

समर्पित गाधीवादी– श्री गणपतराज जी बोहरा ने गाधी जी के सभी विचारों को अपने जीवन से एकात्म कर लिया। राष्ट्रीय एकात्मता साम्प्रदायिक सौहार्द सामाजिक और आर्थिक न्याय एव अस्पृश्यता का अत जैसी महात्मा गाधी जी की अवधारणाए श्री बोहरा जी की सुदीर्घ जीवन यात्रा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। कथनी और करनी की दुर्लभ एकता श्री बोहरा जी की एक लोक-दुर्लभ विशेषता है। हम श्री बोहरा जी के जीवन विकास को जैसे-जैसे देखेंगे हमें अनुभव होगा कि आपने इन सभी गाधीवादी आदर्शों को साकार करके दिखाया है।

पुजीभूत मानवीय करुणा– श्री बोहरा जी पुजीभूत मानवीय करुणा के प्रतिरूप हैं। सहायता के लिए समुपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को आप हाथ बढ़ाकर जीवन-पर्यन्त सहायता करने को तत्पर रहे। शिक्षा और चिकित्सा सुविधा की जरूरत हो अथवा आर्थिक स्वावलबन हेतु आधारभूत सुविधाए जुटाने का प्रश्न हो देश के किसी भी भाग में किसी भी समाज को सहयोग देने हेतु आप सदैव तत्पर रहे। मानवीय कल्याण श्रमिकों का उत्थान और नारी स्वावलबन आपके सहयोग के प्रिय क्षेत्र रहे और इन कार्यों मे आपने अपनी सम्पूर्ण जीवन यात्रा में दिल खोल कर दान और विनियोजन किया।

गजय कर्मण्य उद्योगपति–योग कर्मसु कौशलम्– आपके पिता श्री प्रेमराज जी शाह ने थोड़ी-सी पूजी देकर आपको स्वतत्र व्यवसाय करने को कहा। यह ऐसा ही था जैसे लकड़ी के लट्ठे के सहारे सागर सतरण किन्तु साहसी कर्मठ दूरदर्शी और प्रतिभा सम्पन्न श्री बोहरा ने इस स्वल्प पूजी में अपनी व्यावसायिक दक्षता मिलाकर शीघ्र ही देखते-देखते भारत व्यापी उद्योगों की स्थापना की। आपने देश विदेश की यात्राए कीं। नए-नए कारखाने स्थापित

किए और यहा तक कि मशीनो की अपनी जरूरत के अनुसार डिजाइनिग व निर्माण की दिशा में भी मार्गदर्शन प्रदान करके समय-समय पर दक्ष इजीनियरो को भी आश्चर्यचकित किया। अपने ग्राम पीपलिया-कला म पी जी फॉयल्स जैसे विराट और भव्य उद्योग समूह की स्थापना करके मातृभूमि के ऋण से स्वय को उऋण किया। इस उद्योग से इस ग्राम्याचल मे रोजगार के जो साधन सुलभ हुए हैं वे अभिनन्दनीय हैं।

आपके उद्योग– आपके व्यवसाय का क्षेत्र प्राय सम्पूर्ण भारत रहा और यह आपकी अद्भुत सगठन क्षमता का ज्वलत उदाहरण है।

उदार अर्थ सहयोग– राष्ट्रीय सकट के प्रत्येक क्षण मे आपने मुक्त हस्त से केन्द्र व प्रान्तीय शासनो को अर्थ सहयोग किया। दुर्भिक्ष अकाल के प्रत्येक प्रसग पर आपने मुख्यमत्री सहायता कोष में भरपूर राशि भेट की। यह तो सबको ज्ञात है कि राजस्थान मे अकाल एक स्थायी-सी समस्या है। ऐसे प्रत्येक प्रसग पर तन-मन-धन से सेवार्पित हो जाते थे।

मरु भूमि की आशा भव्य चिकित्सालय– आपकी उदारता की एक झलक पीपलिया कला में आप द्वारा स्थापित चिकित्सालय है। इस पी जी चिकित्सालय हेतु आपने ५ करोड रुपये की राशि आवटित की और इसकी आधार शिला तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति सरदार ज्ञानी जैलसिह जी ने १८.८.८३ को रखी थी और आज यह मरु भूमि की स्वास्थ्य के क्षेत्र मे एक ज्वलन्त आशा-विश्वास है। अधुनातन सुविधायुक्त यह चिकित्सालय ग्रामीण क्षेत्रों के जरूरतमन्दों को निशुल्क चिकित्सा-सुविधा प्रदान करता है।

श्री साधुमार्गी जैन सघ– आपका परिवार साधुमार्गी परम्परा का उपासक है। श्रमण सस्कृति के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा है और प्रभु महावीर की करुणाधारा से अनुप्राणित शुद्धाचारी हुकम सघ की आचार्य परम्परा के चार आचार्यों श्री श्रीलाल जी म सा श्री जवाहरलाल जी म सा श्री गणेशीलाल जी म सा और श्री नानालाल जी म सा की सेवा का आपको अपूर्व अवसर मिला। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के आस्थावान सदस्य के रूप मे आपने सघ सेवा शुरू की तथा सन् १९६६/६७/६८ तथा २० वर्ष बाद पुन सन् १९८८ में आप इस अखिल भारतीय सगठन के अध्यक्ष बने। आपके अध्यक्षीय काल मे सघ का द्रुत विकास-विस्तार हुआ। अपनी पहल-प्रेरणा से महिला स्वावलबन के क्षेत्र मे श्री महिला उद्योग मन्दिर रतलाम' की स्थापना का क्रातिकारी कदम आपने उठाया जो भारत मे एक मिसाल है।

श्री साधुमार्गी सघ की प्रत्येक प्रवृत्ति में प्रत्येक नवाचार में आपकी महत्त्वपूर्ण सहयोगी भूमिका रही। शिक्षा चिकित्सा स्वधर्मी वात्सल्य और स्वाध्याय–समता प्रसार के प्रत्येक प्रसग पर आप अग्रणी रहते थे। सघ की विशाल धर्मसभाओ में प्रवासो मे आपके प्रति जन-जन की श्रद्धा देखते ही बनती थी। आप सचमुच सघ वरेण्य थे।

सघ सेवा मे आपने अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य समर्पित कर दी। आप आचार्य श्री नानेश के अनन्य निष्ठावान सुश्रावक के रूप म चतुर्विध सघ के समक्ष आदर्श स्थापित कर गए।

श्री धर्मपाल प्रवृत्ति– समता विभूति धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने अपने प्रथम रतलाम चौमासे के बाद मालव क्षेत्र में विहार के समय वहा के दलित अस्पृश्य कहे जाने वाले बलाई समाज के हजारो लोगों को धर्मोपदेश देकर धर्मपाल का विरुद प्रदान किया। आचार्य प्रवर ने इस समाज को व्यसन विकार मुक्त होकर सस्कारी जीवन जीने की प्रेरणा दी। धर्मपाल बधुओ ने आचाय श्री के इस उद्बोधन रूपी अमृत का पान कर स्वय सकल्पित होकर जीवनोन्नयन के पथ पर कदम रखा। मालव अचल के ७०० से अधिक गावा मे बस लाखो बलाई बन्धुओ को व्यसन मुक्त बनाकर उन्नत जीवन जीने के अवसर प्रदान करने का भागीरथ कार्य सघ का दायित्व बन गया।

अपने बाल्यकाल से हरिजन सेवक सघ हरिजन सुधार समिति और पिछड़े बन्धुओं की सेवा म अग्रणी रहने वाले श्री बोहरा जी दलितोद्धार व्यसन मुक्ति और सस्कार निर्माण के इस महाआन्दोलन में कूद पडे। ग्राम-ग्राम घर-घर व्यक्ति व्यक्ति तक आचार्य श्री नानेश का समता सन्देश पहुचाने के लिए श्री बोहरा जी प्राण-पण से समर्पित हो गए। धर्मपालों को आपने एसा अनोखा प्यार दिया कि वे जननायक से भी बढकर धर्मपाल पिता और फिर धर्मपाल पितामह बन गए।

सोने में सुहागा यशोदा माता– श्रीयुत गणपतराज जी बोहरा को प्रभु के वरदान की भाति इन सभी सेवाकार्यों में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा का आत्मीय सहयोग सदैव मिला। श्रीमती यशोदा देवी जी का सगठन कौशल उनकी बुद्धिमता प्रियवादिता और निश्छल स्नेह ने सोने में सुहागे की भाति श्री बोहरा जी के यश को लोक मे प्रसारित किया।

कोमल मन रघुवीर सुभाऊ– श्री बोहरा जी का कोमल मन प्रत्येक

सवेदनशील प्रसग पर नवनीत की भाति पिघल जाता था। उनके अनुज जी सम्पतराज जी के आकस्मिक निधन ने उन्हें हिला दिया। अनुज श्री स्मृति मे आपने धर्मपाल क्षेत्रो में चल चिकित्सा वाहन भेंट किया। आपको वज्राघात की भाति अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज जी शाह की दुर्घटना म मृत्यु, भी सहन करनी पडी। आपने प्रत्येक अवसर पर अपनी धार्मिक मान्यताओ के अनुरूप समता धारण कर समाज के समक्ष अद्भुत आदर्श उपस्थित किया।

बोहरा परिवार– यद्यपि श्री बोहरा जी ने अपने ज्येष्ठ एव युवापुत्र श्री पारसराज जी शाह के दिनाक १६ मार्च ८३ को हुए असामयिक आकस्मिक देहावसान को समभाव से सहने का भरसक प्रयास किया किंतु इस आघात ने उन्ह भीतर ही भीतर तोड डाला। स्व श्री पारसराज जी उनके केवल ज्येष्ठ पुत्र ही नहीं व्यवसाय के क्षेत्र में उनकी दाहिनी भुजा थे।

प्रेम उद्योग समूह ने सर्वप्रथम तत्कालीन मद्रास सप्रति चैन्नई में कन्डक्टर बनाने का कारखाना स्थापित करके उद्योग जगत मे प्रवेश किया और तत्पश्चात् सर्वप्रथम अपने गृहप्रान्त राजस्थान के उद्योग जगत म प्रवेश किया। श्री गणपतराज जी बोहरा की प्रेरणा से उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज जी शाह ने कोटा मे उद्योग स्थापित किया किन्तु मातृभूमि की ममता श्री प्रेमराज जी शाह के आग्रह से उद्योग समूह कोटा से स्थानान्तरित कर पीपलिया कला ले आया गया। सोने में सुहागे की भाति पिता-पुत्र के सयुक्त प्रयत्नो से उद्योग दिन-दूनी रात–चौगुनी वृद्धि करता रहा जिसके साथ ही साथ पीपलिया–कला का भी विकास तेजी से होने लगा। पीपलिया–कला मे टेलीफोन व बिजली की सुविधा के साथ ही साथ श्री गणपतराज जी की मातुश्री और श्री पारसराज जी की दादी जी श्रीमती सुन्दर बाई के नाम से गाव मे एक सुन्दर भवन बनाकर शिक्षा विभाग को भेट किया जिसमे आज उच्च माध्यमिक स्तर का राजकीय विद्यालय सचालित हो रहा है। अपनी प्रशस्त सेवाओ के बल पर स्व श्री पारसराज जी २० वर्ष तक निर्विरोध सरपच रहे। शिक्षा क्षेत्र में स्व श्री पारसराज जी शाह की विशेष रुचि थी। इसलिए आपके निधन पर प्रान्त स्तरीय शिक्षक सगठन–राज माध्यमिक शिक्षक सघ बीकानेर ने स्मारिका प्रकाशित की थी।

प्रेम उद्योग समूह को श्री पारसराज जी के आकस्मिक देहावसान के बाद अपने दादा के प्रोत्साहन में सर्वश्री पकज पी शाह अशोक पी शाह और अभय पी शाह ने निष्ठा और कर्मण्यता से सम्हाला और अपनी युयकोचित पहल से उद्योग समूह को नव गति नय लय प्रदान की। तीनो भाई अपने परिवार की
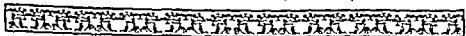
परम्परा के अनुसार सघ समाज देश व क्षेत्र की सेवा मे समर्पित हैं।

श्री गणपतराज जी के द्वितीय पुत्र श्री पूर्णमल जी शाह ने अपना कर्मक्षेत्र अहमदाबाद को चुना और गुजरात के समाज में अपनी सेवा भावना के बल पर अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया है। मोरवी के तूफान मे पीड़ितो की सेवा में पहुचने वाले पहले जत्थे मे श्री पूर्णमल शाह पहुचे थे। आप अभिनव सोच के कर्मठ प्रतिभावान समाजसेवी हैं।

स्व श्री बोहरा जी के परिवार की कुल वधूए भी सेवा क्षेत्र में अग्रणी हैं। सघ की प्रमुख सहयोगी सस्था श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति के पदाधिकारी के रूप मे श्रीमती मजू देवी बोहरा नीला देवी बोहरा श्रीमती शैला देवी बोहरा आदि ने प्रभावी भूमिका निभाई है।

सारत कहा जा सकता है कि सेवाधर्म शाह परिवार का सहज धर्म बन गया है।

आप जीवन के अतिम क्षण तक सजग रहे। सघ के ब्यावर अधिवेशन में भी आप पधारे यद्यपि आपके स्वास्थ्य की स्थिति के कारण पधार सकने की आशा क्षीण थी किन्तु आपका सघनिष्ठ शासन समर्पित मन नहीं माना और आप पीपलिया से ब्यावर पधारे। इतना ही नहीं आपने अधिवेशन के सभी कार्यक्रमों मे भाग भी लिया। ब्यावर के तेरापथ भवन में सघ की साधारण सभा की महत्वपूर्ण बैठक हो रही थी। श्रमपूर्वक सीढिया चढकर भी आप पूरे समय सभा में उपस्थित रहे। उस महत्वपूर्ण सभा में सघ सविधान सशोधन के प्रस्ताव की प्रस्तुति आपकी पूर्व सहमति से प्रस्तुत किया गया। आपके प्रति सघ की अगाध श्रद्धाभावना बार-बार उजागर होती थी।

सघ अभिनन्दन– आपका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर क्षीण होता जा रहा था। सघ आपके स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता और आपके महान् योगदान के प्रति भावुक आभार से ओत-प्रोत था। आपने जीयाजीव से भावपूर्ण खमतखामणा की जो सघ के लोकप्रिय मुखपत्र श्रमणोपासक के माध्यम से जन जन के हृदय को स्पर्श कर गई। सघ मे चिन्ता और आदर का ज्वार हिलोरें लेता रहा और इसी समय सघ प्रमुखों ने एक सामयिक महत्वपूर्ण निर्णय लेकर श्री बोहरा जी का पीपलिया–कला में जाकर अभिनन्दन करने की घोषणा की। इस निर्णय का देशभर के श्री सघों में स्वागत हुआ।

श्री बोहरा का सम्पूर्ण जीवन एक अभिनन्दन–यात्रा थी। उस जीवन में सत्य की कर्मठता की परमार्थ की सुवास थी। आज वह सुवास अपने चरम पर थी और दिग्दिगन्त को व्याप्त कर रही थी। सर्वत्र सूचना प्रसारित की गई

और देश की दशो दिशाओं से सघ-प्रमुख गण पीपलिया–कला की ओर उमड पड़े। एक सादे किन्तु गरिमामय समारोह मे स्व श्री बोहरा जी का उन्हीं के निवास के प्राकृतिक परिवेश मे उन्हीं की जन्मभूमि कर्मभूमि मोक्षभूमि पीपलिया में श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया। जीवन पर्यन्त श्री बोहरा जी को अभिनन्दन-पत्र भेंट होते रहे थे किन्तु अविचल आत्म सतोष और महाप्रयाण की मन स्थिति मे उस समता साधक ने बहुत सहजता और अपनी चिर-परिचित सरलता के साथ विनम्र भाव से सघ-सम्मान को शिरोधार्य किया । सघ प्रमुखो के मन भर आए। इस पावन प्रसग की अमर स्मृति सहित विदा होते समय उनके भाव जगत म बार-बार बिजली की चमक सी कौंध होती थी जो मन को झकझोरती हुई पूछ उठती थी–क्या इस महामानव के पुन दर्शन होगे ? भरे हृदय से विदाई ली। स्थितधी श्री बोहरा के भावुक मन को भी ये क्षण स्पदित किए बिना न रहे।

सहधर्मिणी का विछोह– इस अभिनन्दन–समारोह के थोड़े दिनों पश्चात् ही उनकी जीवन सहचरी सहधर्मिणी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा का देहावसान हो गया। श्री बोहरा के जीवन मे एक और अपूरणीय रिक्ति उभर आई।

महाप्रयाण– अपनी सहधर्मिणी की मृत्यु के मात्र २० दिन पश्चात् ही श्री गणपतराज जी बोहरा का दिनाक १९ ८-९८ को स्वर्गवास हो गया। ये पर्युषण महापर्व के पावन दिवस थे। वह पवित्र आत्मा इन्हीं पावन दिवसो मे आत्म–साधना की पूर्णाहुति कर अनन्त मे विलीन हो गई। लहरो का राजहस उड़ चला।

महाविदाई– स्वर्गीय श्री गणपतराज जी बोहरा के तीनो पौत्र उनके महाप्रयाण की बेला मे सेवा में उपस्थित थे। उनकी अस्वस्थता की अवधि मे भी उनकी पूर्ण चिकित्सा परिचर्या सचालित करने मे इन तीनों पौत्रो सर्वश्री पकज पी. शाह अशोक पी शाह और अमय पी शाह ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। श्री बोहरा के कनिष्ठ पुत्र श्री पूर्वराज जी शाह भी उपस्थित हो गए।

स्वभाव से ही त्वरित और योजनाबद्ध कार्य स्वभाव के धनी श्री पकज पी शाह ने अपने पितामह सुश्रावक श्री गणपतराज जी बोहरा की महाविदाई को उनके भव्य व्यक्तित्व के अनुरूप स्वरूप प्रदान करने की कमान स्वय सम्भाली। अपने परिवार के प्रमुखो–सदस्यों को सूचित करने के साथ ही साथ

श्री पकज पी शाह ने श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के प्रधान कार्यालय समता-भवन बीकानेर को श्री बोहरा जी के महाप्रयाण की तत्काल सूचना दी। सघ कार्यालय से देशभर में सघ प्रमुखों को इस स्तब्ध कर देने वाली सूचना से अवगत कराया गया और पर्युषण पर्वाराधना के दिवसों में भी स्थान स्थान से जिनका पहुचना सभव था वे सघ प्रमुख दिवगत आत्मा को अतिम श्रद्धाजलि अर्पित करने पीपलिया–कला की ओर उमड़ पड़े।

सघ के प्रधान कार्यालय बीकानेर से भी सघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालाल जी डागा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री जयचद लाल जी सुखाणी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी एव श्रमणोपासक के सम्पादन सहयोगी श्री जानकी नारायण श्रीमाली सूचना मिलते ही पीपलिया की ओर चल पडे।

पूर्ण आयुष्य प्राप्त करके भरा-पूरा परिवार छोड़कर देश सघ और समाज के प्रति अपनी अशेष सेवाओ की स्मृति छोड़कर आत्म सतुष्ट श्री गणपतराज जी बोहरा की पावन आत्मा ने इस नश्वर देह का परित्याग किया था। उनकी पार्थिव देह को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने मानो सम्पूर्ण पीपलिया–कला और समीप का ग्रामीण अचल उमड़ पड़ा। ब्यावर के सुश्रावकों के आगमन का ताता लग गया। जयपुर से पूर्व सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरड़िया के नेतृत्व में सघ प्रेमी इस महाप्रयाण यात्रा में उपस्थित हुए थे। पी जी फॉयल्स के अस्पताल के समस्त गैर सरकारी व सरकारी कार्यालयों के भी कर्मचारी अपने श्रद्धा केन्द्र को विदाई देने उपस्थित थे। जनसागर का ऐसा ज्वार इस छोटे से ग्रामीण क्षेत्र में दिखाई दिया जो अपूर्व था।

जैसा स्वर्गीय बोहरा जी का मगलमय जीवन था वैसा ही मंगलमय महाप्रस्थान था। अपार जनसमूह के बीच इस सच्चे जननायक की बैकुंठी निकाली गई। अबीर–गुलाल की बौछार बैंड वादन और पी जी.फॉयल्स तथा पी जी उद्योग समूह के सुरक्षाकर्मियों द्वारा किए गए सलामी फायरों के बीच श्री बोहरा जी की पार्थिव देह को चिता पर स्थापित किया गया और उन्हें मुखाग्नि दी गई। अगर चन्दन की लकड़ी और खोपरों के ढेर से बनाई गई चिता की लपलपाती अग्नि ज्वालाओं ने श्री बोहरा जी की पार्थिव देह को पचभूत में विलीन कर दिया। शेष रह गई उनकी अगाध यशस्वी जीवन यात्रा की स्मृतियाँ।

इस महाविदाई की महाव्यवस्थाओं को अपूर्व कौशल और अप्रतिम दक्ष
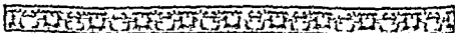
निर्देशन के साथ श्री बोहरा जी के पौत्र और सघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पकज पी शाह ने मूर्त रूप प्रदान किया। गाव के ठाकुरद्वारे से चन्दन आया। ग्राम प्रमुखो की ओर से नीम के पत्तों से छींटे ग्रहण करते हुए स्व श्री बोहरा सा के पुत्र श्री पूर्णराज जी शाह और पौत्रो सर्वश्री पकज अशोक अभय तथा परिजनो से सवेदना व्यक्त की गई।

एक अध्याय पूर्ण हुआ। परम यशस्वी समाजसेवी राष्ट्रसेवी धर्मनिष्ठ दानवीर भामाशाह धर्मपाल पिता श्री गणपतराज जी बाहरा अपना प्रकाश स्तभ सा आदर्श जीवन जीकर आदर्श मृत्यु का वरण करके महापथ पर महायात्रा पर बढ चले।

समस्त श्री सघो व श्री अ भा सा जैन सघ की अशेष श्रद्धाजलि।

लोकोत्तर चरित्र– श्री गणपतराज जी बोहरा के समाज सेवा के क्षेत्र म लोकोत्तर चरित्र का देश भर मे स्थान-स्थान पर अभिनन्दन हुआ। ऐसे प्रत्येक अवसर पर आपकी विनम्रता अनुकरणीय रही। आपको अभिनन्दनो के क्रम मे भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेता कुशल राजनीतिज्ञ और राजस्थान के पूर्व मुख्यमत्री श्री भैरोसिह जी शेखावत तक ने स्वय अपने हस्ताक्षरो से जयपुर मे अभिनन्दन पत्र भेट कर आपकी सात दशक की सेवायात्रा का बहुमान कर उससे जन-जन को प्रेरणा प्राप्त करने का सन्देश दिया। श्री बोहरा जी की वाणी में उनकी जीवन साधना स्वर ग्रहण करती थी। अत सदा समादृत होती थी। भारत के धुर दक्षिण तमिलनाडु के परम यशस्वी लोकनेता तत्कालीन मुख्यमत्री श्री अन्नादुरै एव वर्तमान मुख्यमत्री श्री एम करुणानिधि भी आपकी लोकोत्तर सेवाओ का बहुमान कर चुके हैं। सच कहे तो सम्पूर्ण भारत मे आपने अपनी सेवा-साधना के बल पर जन-जन के हृदय मे अपना स्थान अकित किया है।

ॐ

धर्मपाल माता, धर्मपरायण, समाज सेवी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा

भारत के सुवर्ण क्षेत्र कर्नाटक प्रान्त की कोलार स्वर्ण खदानों की रत्नगर्भा भूमि मे केजप कस्बे मे एक समृद्ध श्रेष्ठी परिवार में श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा का जन्म हुआ था। आपका परिवार दक्षिण भारत मे जैन धर्म के अनुयायियों मे सुप्रतिष्ठित था और जैन सस्कार तथा जैन आचार विचार आपको जन्म घूटी के रूप मे ही अपनी ममतामयी मा की गोद मे और परिवार के परिवेश मे सहज ही प्राप्त हो गए थे। जैन सस्कार का सहज अर्थ अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के प्रति निष्ठा अर्थात् भारतीय जीवन मूल्यों और जीवन आदर्शों को अपनाना है। श्रीमती बोहरा ने अपने सरल मन और अपनी सहज प्रतिभा से जैन शील को अपने आचरण मे दूध में मिश्री की तरह घोल लिया। उनकी जीवन यात्रा पर विहगम दृष्टि डालने से ही स्पष्ट हो जाता है कि बाल्यकाल में प्राप्त सुसस्कारों से आपका पूरा जीवन जगमगाता रहा।

स्वदेशी दृढ़ बाल-सकल्प– आपके जीवन की सस्कार झाकी का एक छोटा-सा किन्तु अद्भुत उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। श्रीमती यशोदा देवी ने अभी केवल ५ वर्ष की वय ही प्राप्त की थी। उन्होंने छठे वर्ष में प्रवेश किया ही था। बाल सुलभ चपलता-चचलता और सहेलियों के साथ पितृ घर में खेल-कूद में आनन्द-उल्लास से समय पख लगाकर उड़ रहा था। बालिका यशोदा मा के आचल की ओट पिता की अंगुलि पकड़े सत-दर्शन के लिए जाती थी। यह वह काल था जबकि सम्पूर्ण देश स्वदेशी खादी और स्वातत्र्य की उद्दाम भावना से अभिभूत था। सौभाग्य से उन दिनों कर्नाटक में जैन सत श्री गणेशीलाल जी म सा खादी वाला का विहार प्रवचन क्रम जारी था। ये संत राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर राष्ट्र में एक महान् क्राति चेतना की भूमिका का निर्माण कर रहे थे। श्री गणेशीलाल जी म सा अपनी सयमीय साधु मर्यादा मे रहते हुए खादी रूपी स्वदेशी को स्वातन्त्र्य का कारगर, अचूक अहिंसक शस्त्र मान कर, खादी के प्रचार में समर्पित थे। उनके उपदेशों से खादी अपनाने वाले जीवन में सदैव खादी का व्रत लेने वालों की सख्या असख्य होती जा रही थी। समाज ने आदरपूर्वक इन जैन सत को 'खादी वाले' कहकर सम्मानित करना प्रारंभ कर दिया। यह जन श्रद्धा का विरद था। जन-मन के भावुक भक्ति भा
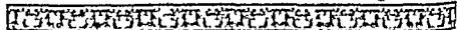
का सहज प्रकाश था।

बालिका यशोदा ६ वर्ष की वय मे धर्म सभा मे पहुची। सभी ने श्री गणेशीलाल जी म सा के उपदेशो से जीवन मे सदा-सर्वदा खादी पहिनने के सकल्प लेने की तत्परता दिखाई। नन्ही बालिका को इस अल्पवय मे जीवन की सुदीर्घ काल यात्रा हेतु बधते देख व्रत की कठिनता और पालन के मार्ग की सभावित बाधाओ से अवगत कराया गया किन्तु लौह सकल्प हिमाचल-सा अचल अडोल मन डिगा नहीं। बालिका यशोदा ने मात्र ७ वर्ष की वय मे जीवन में सदैव खादी के वस्त्रो का प्रयोग करने की शपथ ली।

किसी कवि की पक्ति है–'शपथ लेना तो सरल है पर निभाना ही कठिन है किन्तु श्रीमती यशोदा देवीजी ने अपनी सात दशक की सुदीर्घ जीवन यात्रा में बालपन मे खेल-खेल मे ली गई शपथ को पूर्ण रूप से निभाया। यह दृढ़ता आपके चरित्र का अभिन्न अग है। इसी दृढता मे आपकी सत्य निष्ठा प्रतिबिंबित होती है। आपने विवाहोपरान्त साधुमार्गी परम्परा के प्रति जिस प्रकार समर्पित सेवा प्रदान की है वह आपकी इन्हीं चारित्रिक विशेषताओ को प्रमाणित करती है।

जीवन यात्रा– आपका विवाह पीपलिया कला के श्री प्रेमराज जी शाह के सुपुत्र श्री गणपतराज जी बोहरा से हुआ। सोने मे सुहागे की भाति आपके आगमन से बोहरा परिवार की श्री और समृद्धि में दीप्ति आ गई। श्रीमती यशोदा देवी जी ने अपने पति के प्रत्येक कार्य में सहभागी बन कर धर्म अर्थ काम मोक्ष के पुरुषार्थ चतुष्टय की साधना कर अपने गृहस्थ धर्म का निर्वाह किया।

धर्मपाल माता– समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा मालव क्षेत्र मे बलाई जाति के दलित जनो के उद्धार हेतु धर्मपालन का उपदेश दिया गया और श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ ने धर्मपाल प्रवृत्ति का दायित्व सभाला। श्री गणपतराज जी बोहरा ने दलितोद्धार के इस कार्य को अपना प्राथमिक लक्ष्य निर्धारित किया तो उनकी सच्ची सहधर्मिणी श्रीमती यशोदा देवी जी ने स्वय को धर्मपालों के उत्थान हेतु समर्पित कर दिया। धर्मपाल बालक-बालिकाओं भाई-बहिनों को शिक्षा और स्वावलबन की ओर अग्रसर करने मे आपने प्राण-पण से प्रयत्न किया।

आपने दलित-वचित धर्मपालो की पीड़ा से द्रवित होकर उन्हे अपनी मातृछाया और मातृ वत्सलता का प्रसाद प्रदान किया। विराट धर्मपाल समाज ने इन्हें अपनी माता के रूप मे देखा और श्रीमती यशोदा देवी जी धर्मपाल माता के रूप मे ७०० गायों के लक्ष-लक्ष धर्मपालों की ममतामयी मा बन गई।
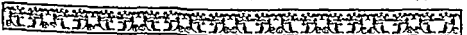
मालव के धर्मपाल क्षेत्र मे आपने दिन को दिन और रात को रात नह मानकर प्रवास किया। धर्मपालों की आर्थिक अवस्था से आप सदा द्रवित हो थी। एक बार एक झापडी मे जाने पर आपने देखा कि उस गरीब परिवार के पास बिछाने को कुछ भी नहीं है। उसी दिन से आपने प्रतिज्ञा की कि जब तक प्रत्येक धर्मपाल की गरीबी नहीं मिट जाएगी मैं गद्दी पर नहीं बैठूगी। सहसा और सहज ही यह प्रण ले लिया और इसे एक ओर जीवन पर्यन्त निभाया दूसरी ओर धर्मपालों के सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित रहीं।

समिति अध्यक्ष–श्रीमती यशोदा देवीजी बोहरा ने श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ के अन्तर्गत कार्यरत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की अध्यक्षा के रूप में नारी जाति की उन्नति का भागीरथ प्रयास किया और समिति को भारत के स्वयसेवी महिला सगठनों में अग्रणी रूप से प्रतिष्ठित किया। आप जीवन भर इस समिति की सरक्षक के रूप में नारी-गरिमा एवं उन्नति हेतु कार्यरत और समर्पित रहीं।

सत सेवा–सत-सती वर्ग की सेवा मे आपकी अगाध रुचि थी। सत वर्ग की शुचिता और मर्यादा के प्रति आप की सजगता देखते ही बनती थी। श्री बोहरा और श्रीमती बोहरा सचमुच आदर्श सेवाभावी थे। आप दोनों सत सती वर्ग के लिए अम्मा पिया (माता-पिता) की भूमिका निभाते थे।

अखड सौभाग्यवती–आपने जीवन पर्यन्त अपने पति का साथ छाया की भाति निभाया। श्री बोहरा जी के साथ व्यवसाय उद्योग हेतु प्रवास हो या नियमित धर्मपाल प्रवास सघ काय समिति सघ प्रवास या सघ अधिवेशन अथवा वैयक्तिक कार्य से प्रवास हो श्रीमती यशोदा देवी जी सदैव श्री बोहरा जी के साथ रहती थीं और उनकी सुख सुविधाओं का पूरा ध्यान रखती थी। अपने पति के स्वास्थ्य के प्रति वे सदैव सजग सचेष्ट रहती थीं।

विगत दिनों श्री बोहरा सा अधिक अस्वस्थ रहने लगे थे जबकि श्रीमती यशोदा जी अपेक्षाकृत स्वस्थ प्रतीत होती थीं किन्तु वे सहसा गभीर रूप से अस्वस्थ हुई और अपने पति के हाथों में अमर सुहागिन अखड सौभाग्यवती के रूप में चिरविदा लेकर महाप्रयाण कर गई। उनकी एकनिष्ठ साधना सफल हुई और वे अपने पति की साक्षी में चिरनिद्रा में लीन हो गई।

श्रद्धावान शीलवान भारतीय नारी जाति के आदर्शों की परम्परा में स्व श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा की पति सेवा समाज सेवा सन्त सेवा धर्मपाल सेवा एव प्रकाशदीप की भाति जगमग आलोक बिखेरती रहेगी। वे धन्य थीं।

□

माननीय श्री गणपतराज जी बोहरा के कर कमलों में सादर समर्पित

—अभिनन्दन-पत्र—

आदरणीय !

इस कर्म–सकुल जगती के कोलाहलपूर्ण अचल मे कार्यरत रहते हुए भी अवकाश निकाल कर इस पुनीत अवसर पर पधार कर आपने जिस महती अनुकम्पा का परिचय दिया है वह वर्णनातीत है। आज आप ऐसे कर्मवीर शिक्षाप्रेमी कर्त्तव्यनिष्ठ को अपने बीच पाकर अभिनन्दन करते हुए हम फूले नहीं समाते।

शिक्षाविद् !

आपकी विद्वता एव शिक्षाप्रेम से अभिभूत 'मद्रास एजुकेशन सोसाइटी ने आपको अपनी सदस्यता प्रदान की है। आपके शिक्षानुराग का यही प्रबल प्रमाण है। आपने एकनिष्ठा लगन एव तत्परता के साथ उद्योग के व्यापक क्षेत्र में कार्य करते हुए भी शिक्षा की ओर ध्यान देकर अपनी उभयमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

उद्योगपति !

देश की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रख अहमदाबाद मद्रास आदि बड़े-बड़े नगरों मे उद्योग का सचालन करते हुए आपने पिपलिया (राजस्थान) जैसे छोटे गाव में भी एल्युमिनियम केबुल का कारखाना खोल दीन–हीन गरीब जनता को कार्य देकर जो स्तुत्य प्रयास किया है वह आपकी उदारता एव उद्योग-निष्ठा का परिचायक है।

कर्मवीर !

आपदाओं के प्रबल झझावता म हिमालय-सा आप सर्वदा अडिग देखे गए। ऐश्वर्य एव वैभव से परिपूर्ण वातावरण म भी आप पुष्कर–पलाशवत् निर्लेप रहे। निरभिमानता के प्रतीक बन समाज के समक्ष आपन जो आदर्श उपस्थित किया है वह सर्वदा अभिनन्दनीय है।

धर्मनिष्ठ !

धार्मिक भावनाओ से ओत-प्रोत मातृ-पितृ भक्ति की प्रतिमूर्ति आपका खद्दर परिवेश ही आपकी धारता एव सादे जीवन का उद्घोष है। आपके

मिलनसार एव सहानुभूति परायण स्वभाव के अन्चल में कितने ही प्राणी नि
आशातीत सफलता प्राप्त करते हैं। अनेकानेक सामाजिक संस्थाओं एव धा
को अविरल दान द्वारा आपने अपनी जिस उदारता का परिचय दिया है व
सर्वथा स्तुत्य है।

सुश्रावक !

गृहस्थाश्रम धर्म का पूर्णत पालन करते हुए भी सुश्रावक बनकर आ
अपनी तपस्या तथा देशभक्ति के द्वारा अपनी मानवता का जो परिचय दिया
वह समाज एव देश के इतिहास मे अमर रहेगा।

श्रीमन् !

आज हम आपकी सास्कृतिक साधना सहानुभूतिपूर्वक सहृदयता, सु
कार्य-कलाप प्रशसनीय स्वभाव एव अनुपम दक्षता के प्रति शुभकामना प्र
करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

जय जिनेन्द्र !

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा
१८ डी सुकियस लेन कलकत्ता-१
दिनाक १५ ८ ६६

हम हैं आपके परमशुभाका
श्री श्वेताम्बर स्थानकवा
जैन सभा के सद

महान् व्यवसायी समाज सेवी दानवीर शिक्षाप्रेमी
आदरणीय श्रीमान् गणपतराज जी सा बोहरा के
कर कमलों में सादर समर्पित -

—अभिनन्दन-पत्र—

श्रीमान् !

आज छत्तीसगढ के इस सिंहद्वार राजनादगाव के प्रागण में आपका यह
सार्वजनिक अभिनदन करते हुए हम हर्ष तथा गौरव का अनुभव कर रहे हैं।
आपको अपने बीच में पाकर सत्य ही हम बड़े ही भाग्यशाली हैं।

महान् व्यवसायी !

मारवाड के एक छोटे से देहात पीपलिया-कला से अपना व्यवसाय
प्रारम्भ कर आज अपने भारत के प्रमुखतम नगर बबई मद्रास अहमदाबाद
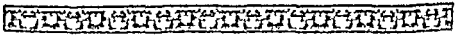
न्ता दिल्ली तथा बैंगलोर आदि स्थानो पर समय के अनुरूप नई सूझ-बूझ
ाथ अपना उद्योग एव व्यवसाय फैलाकर अपनी व्यावसायिक बुद्धि प्रतिभा
कर्मशीलता का परिचय दिया है।

दानवीर !

लक्ष्मी का अर्जन यह बडी बात नहीं किन्तु सचित लक्ष्मी का सदुपयोग
लक्ष्मीपति ही कर सकते हैं। आपने अपन वयोवृद्ध पिता श्री प्रेमराज जी
बोहरा के नाम पर 'प्रेम चेरिटेबल ट्रस्ट के रूप म एक बड़ी राशि
जिक कार्यो को वेग देने के लिए सुरक्षित कर दी है। इसके अलावा हजारो
ों का दान प्रतिवर्ष आपके उदार हाथो से होता ही रहता है।

समाज सेवी !

व्यावसायिक क्षेत्र में व्यस्त रहते हुए भी आपने धार्मिक तथा सामाजिक
मे सक्रिय भाग लेकर युवको को एक नई प्रेरणा तथा बल प्रदान किया है।
प्रखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ आपका नेतृत्व पाकर प्राणवान हो
है। जिन उद्देश्यो को लेकर यह सस्था आज खडी हुई है आपके मार्गदर्शन
ह सस्था अपनी लक्ष्य सिद्धि प्राप्त करके ही रहेगी।

शिक्षा प्रेमी !

छत्तीसगढ़ में धार्मिक शिक्षण एव सस्कारो के लिये १८ वर्षों से सचालित
त एक ही सस्था है और वह है श्री देव आनद जैन शिक्षण सघ। आज इस
ा को छात्रालय का निजी भवन अध्यापको के लिये ५ क्वार्टर प्रचार कार्य
लेये एक स्टेशन वैगन तथा स्थायी कोष की आवश्यकता है। सस्था की
व एव अनियार्य आवश्यकताए आपके ध्यान मे ला दी गई हैं जो समयोचित
है।

परमादरणीय !

आपके रूप में एक अदम्य अथक निष्ठावान तथा श्रद्धाशील कार्यकर्ता
र और वह भी मिलनसार तथा निरभिमान समाज आज सत्य ही गौरवान्वित
उठा है। राजनादगाव मे आज आपका यह पधारना और सार्वजनिक
नदन स्वीकार करना यह एक अमिट ऐतिहासिक घटना बन गई है।

नादगाव
ाक १६ १० ६६

हम हैं आपके
श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन
श्रावक सघ के समस्त सदस्यगण।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के चतुर्थ वार्षिकोत्सव

अध्यक्षीय भाषण

राजनादगाव

(अध्यक्ष श्रीमान् गणपतराज जी बोहरा)

मगल भगवान् वीरो मगल गौतम प्रभु ।
मगल स्थूलिभद्राद्या जैन धर्मोऽस्तु मगल ।।
सर्व मगल मागल्य सर्व कल्याण कारण ।
प्रधान सर्वधर्माणा जैन जयति शासनम्'।।

अपना वक्तव्य प्रारभ करने के पूर्व यहा विराजित परमश्रद्धेय आ प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा एव सत सतिया म.सा साविधि वदना करता हूँ। साथ ही साथ दिनाक १७ अक्टूबर ६६ को भाग दीक्षा अगीकार करने वाले वैरागी बन्धुओ व वैरागिनी बहिनो का नतमस्तक अभिनन्दन करता हूँ।

आज हम लोग भी अ भा साधुमार्गी जैन सघ के चतुर्थ वार्षिकोत्सव शुभ अवसर पर यहा एकत्रित हुए हैं। मुझे इस बात का सतोष हो रहा है समाज मे अनेक वयोवृद्धों और विद्वानों के रहते हुए मुझ जैसे अल्पज्ञ अकिचन पर आप लोगो ने बहुत बडा दायित्व डाल दिया है। गत वर्ष भी मैं अपनी यही आकाक्षा व्यक्त की थी कि इस पद के द्वारा समाज मानव के पर अनुभवशील समाजसेवियों को सम्मानित किया जाये और आज भी मेरे य विचार हैं। मैं नहीं समझ सकता कि मैं इस भार को उठाने में कहा तक सा रहूगा ? जिन लोगों ने इस उत्तरदायित्वपूर्ण आसन पर बैठने का आदेश दि है उनके स्नेह सौजन्य एव सहयोग के सहारे इस आसन पर बैठने का साह कर रहा हूँ। मैं उन सब महानुभावो का विशेष आभारी हूँ एव आप द्वारा कि गए स्वागत को स्वागत न मानकर आत्म निरीक्षण की कसौटी मानता हूँ ए समाज द्वारा दिये गए इस सेवाभाव का एक सैनिक की भाति वहन करने साहस कर रहा हूँ।

हमारा गौरवमय अतीत

यदि इस पृथ्वीतल पर कोई ऐसा देश है जो मगलमय पुण्य भू कहलाने का अधिकारी है ऐसा देश जहा मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रत्येक आत्मा
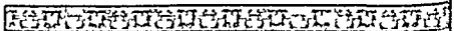
ना अनिवार्य है ऐसा देश जहा मानवता ने ऋजुता उदारता शुचिता एव
ति का चरम-शिखर स्पर्श किया हो तथा इन सबसे भी आगे बढ़कर जो दश
त्म दृष्टि एव आध्यात्मिकता का घर हो तो वह हमारा प्रिय देश भारत
है।

भारत का प्राचीन इतिहास अलौकिक उद्यम एव असीम उत्साह विभिन्न
क्तियों की अप्रतिहत क्रिया और प्रतिक्रिया के समन्वय तथा इन सबसे पर एक
ग्रतुल्य जाति के गम्भीर चिन्तन की अपूर्व गाथा है। यह उसी गम्भीर चिन्तन
ा परिणाम है कि सभ्यता के विहान के बहुत पहिले एक विशाल मानव समूह
बुद्धि-बल के सहारे अनेक मार्गों और उपायो का आविष्कार कर पूर्णता की
रमावस्था को प्राप्त कर लिया था।

हमारे वर्तमान समाज का दिग्दर्शन

भारत के सामाजिक नियम सदैव युगानुसार परिवर्तनशील रहे हैं।
नका प्रारम्भिक उद्भव एक विशाल योजना के प्रतीक-स्वरूप हुआ था और
न योजनाओं को शनै शनै समय के साथ उद्घाटित होना था। प्राचीन भारत
मुनि महात्माओ की दृष्टि भावी के गर्भ मे इतनी दूर तक प्रविष्ट हो चुकी थी
कि विश्व को ज्ञान का उचित मूल्याकन करने क लिये अभी शताब्दियो तक
तीक्षा करनी होगी। उनके वशजों म उस आश्चर्यजनक योजना की पूर्ण
ीमाओं को समझने की योग्यता का अभाव ही भारत के पतन का प्रमुख कारण
। भारत का पतन इसलिए नहीं हुआ कि अतीत के नियम या आचार खराब
बल्कि इसलिये हुआ कि उन नियमा एव आचारो को उनकी स्वभाव सिद्ध
देशाओ मे अग्रसर नहीं होने दिया गया।

हमारा अज्ञान अधकार इतना अधिक बढ गया कि हम अपने ज्ञान दर्शन
चारित्र को ही समझने की क्षमता नहीं रख सके और आज हमारी यह हालत
है कि हमारा अनेकान्तवाद और स्याद्वाद का सिद्धात जो कि सर्वमान्य सिद्धाता
का सिरताज है के वास्तविक अर्थ को इने-गिने ही व्यक्ति जानते हैं क्योंकि
हमारे यहा उसको समझने और प्रयोगात्मक रूप देने की योजनाबद्ध व्यवस्था
नहीं है।

हमे स्वय अवकाश नहीं है कि हम अपने शास्त्रो को पढे और मनन करें।
यद्यपि युग प्रधान श्री मज्जवाहराचार्य के प्रवचनो का सकलन हमारे समक्ष है
और जिसका अध्ययन कर जैनागमो की गभीरता का भली भाति ज्ञान प्राप्त कर
सकते हैं लेकिन हम इतने कामकाजी व्यवसायी हैं कि एक घटे का समय भी

हमारे लिये निकालना बहुत मुश्किल है। कुछ आज का वातावरण ही ऐसा गया है कि व्यापार ही व्यापार हमारे दिमाग मे चक्कर लगाता रहता है।

महाराज साहब ने व्याख्यान दिया और सौभाग्य से समय निकल भी तो वहा भी दत्तचित्त हो श्रवण नहीं कर पाते क्योंकि बुद्धि तो लौकिक कार्यों में सलग्न है। व्यापार ने हमारे सिद्धातो को समझने तक का मौका नहीं दिया। त्यागियो और वैरागियों के अनुयायी समाज की यह दशा कितनी शोचनीय है।

अत मैं अत्यन्त विनम्रतापूर्वक साग्रह निवेदन करूगा कि हम चाहे किसी भी व्यवसाय उद्योग अथवा कार्य में निरत हों यह सकल्प अवश्य करें कि प्रतिदिन घटे आध–घटे का समय शास्त्र-श्रवण अध्ययन मनन चिन्तन के लिये अवश्य निकालेंगे।

हमारे समाज की श्रद्धा श्रमणत्व मे है जिसमे श्रम शम और सम के आदर्श गर्भित है। इसकी साधना में रत मानवोत्तम श्रमण या साधु के महान पद पर प्रतिष्ठित होते हैं और उनकी वदना भक्ति नमस्कार कर श्रमणत्व के प्रति सम्मान श्रद्धा व्यक्त करते हैं एव अपने को श्रमणोपासक या साधुमार्गी कहने में गौरव का अनुभव करते हैं। श्रमण हमारे श्रद्धेय हैं और श्रमण वही हैं जो विषया की आशा से रहित हों लेकिन इसके विपरीत जिनके आचार-विचार हैं वे कभी भी श्रद्धेय नहीं हो सकते वे चक्षुहीन हैं।

> 'चक्षुष्मन्तस्तएवेह ये श्रुतज्ञान चक्षुषा ।
> सम्यक सदैव पश्यन्ति भावान् हेयेतराननरा' ।।

अर्थात् वे ही पुरुष वास्तविक आख वाले कहलाते हैं जो श्रुतज्ञान रूपी आख से हेय और तदनुरूपी आचरण करते हैं।

साधुमार्गी समाज की यह मौलिक विशेषता है कि यह गुणपूजक समाज है। जो सत मुनिराज पाच महाव्रतों का पालन ईमानदारी से करते हैं मूलगुणों में दोष नहीं लगने पाये इसके लिये हमेशा जागरूक रहते हैं उनकी यह मान्यता देता और वदनीय मानता है।

सम्प्रदायवाद तो वहा है जहा गुण की तरफ दृष्टि न होकर जो मेरा है वही ठीक है यह भावना हो तथा अमुक आचार्य को ही मान्यता देना और अमुक आचार्य की ही श्रद्धा लेना दूसरों को मान्यता नहीं देना। ऐसी सकुचित मनोवृत्ति से प्रत्येक गुणपूजक व्यक्ति को सदा सर्वदा दूर रहना चाहिए।

अत मेरा आप सज्जनों से यही निवेदन है कि हम गुणपूजक हैं और गुणपूजक ही रहें तथा गुणीजनों की ही उपासना करें। इसी में हमारा और शासन का हित है।
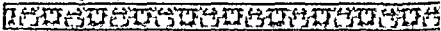
स्त्री शिक्षा

स्त्रिया के सम्बन्ध मे हमारा हस्तक्षेप करने का अधिकार बस उनको शिक्षा देने तक ही सीमित न रहना चाहिये बल्कि उनमे ऐसी योग्यता ला देनी होगी जिससे वे अपनी समस्याओ को स्वय ही सुलझा सके। अन्य कोई उनके लिये यह कार्य नहीं कर सकता और करने का प्रयत्न भी उचित नहीं है। हमारी भारतीय स्त्रिया अपनी समस्याओ को हल करने मे ससार के किसी भी भाग की स्त्रियो से पीछे नहीं है जिसके उदाहरण दुनिया के सामने मौजूद हैं।

आजकल धार्मिक शिक्षा के न होने से बहुत ही बहिने सामायिक भी मर्यादापूर्वक नहीं कर पाती हैं जब सामायिक करने बैठती हैं तो वहा अपने घर की आलोचनाए आपस मे एक दूसरे की चर्चा आदि करती रहती हैं। प्रश्न पैदा होता है कि इसमे दोष किसका है ? उत्तर स्पष्ट है कि स्त्री शिक्षा के प्रति हमारी उपेक्षा ही इसका प्रमुख कारण है। अत हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपनी बहिनों को शिक्षित एव सुसस्कृत बनाने की ओर विशेष ध्यान दे ।

नवयुवकों से

भारत फिर उठेगा किन्तु केवल शारीरिक शक्ति से नहीं अपितु आत्मा के बल से। विध्वस की पताका के नीचे नहीं किन्तु शाति अहिंसा और स्नेह के ध्वज की छाया में। अपने आन्तरिक देवत्व का आह्वान करो जो तुम्हे भूख-प्यास सर्दी-गर्मी सहने की शक्ति प्रदान करेगा। भोग विलासयुक्त घरों म रहना जीवन के समस्त सुखों से घिरे रहना कर्त्तव्यनिष्ठा से दूर रहना है। आप अगर देश समाज और अपने प्यारे धर्म का प्रचार और प्रसार करना चाहते हैं तो अपने सुखों की आनदो की यश की प्रतिष्ठा की यहा तक की अपने प्राणों तक की आहुति चढ़ा दो और मानव आत्माओ का ऐसा सेतु बाध दो जिस पर होकर के करोड़ों नर-नारी पार हो जावें। सत्य की समस्त कठिनाइयो को एकत्रित करो। यह चिन्ता मत करो कि लोग क्या कहेगे तुम्हे इन सब को त्यागना होगा महान् बनो त्याग के बिना कोई भी महान् कार्य होना सभव नहीं है।

ससार में जितनी उन्नत जातिया दिखलाई पड़ती हैं उन सब का इतिहास त्याग से भरा पड़ा है। भगवान् महावीर स्वामी सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र सती सीता सावित्री और महात्मा बुद्ध आदि सत महात्मा त्याग से ही उत्थान की ओर बढ़े हैं। सिक्ख धर्म आर्य समाज ईसाई धर्म आदि का इतिहास कोई पुराना इतिहास नहीं है। इन लोगों ने अपने त्याग बल से ही लाखों करोड़ों की सख्या बढ़ा ली और जीवन्त समाज में उनकी गणना होने लगी
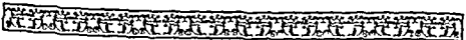
है। जिस किसी कार्य म व जूझ पडते हैं उसे पूरा करके ही विश्राम लेते'
यह क्यो ? उन्होंने अपने त्याग सहानुभूति प्रेम और सहिष्णुता व प्रचार प्र
के जरिये एक महान् सगठन का निर्माण किया। अत हमारे समाज में
सम्मानित व्यक्तियो के त्याग की आवश्यकता है। बिना त्याग के उत्थान है
असम्भव है ऐसा मेरा मानना है।

तीर्थकरों के जमाने में धर्म-प्रचारार्थ कोई राजा राजकुमार या राजकु
दीक्षा लेती थीं तो हजारो की तादाद में लोग एकत्रित होकर उनके त्याग
कहानी सुनते थे। यह स्पष्ट है कटु सत्य है उससे कोई भी इन्कार नहीं
सकता पर इसे कौन कहे और कौन माने ?

साहित्य का प्रकाशन

हमें अपने साहित्य भण्डारो के रत्नों को लोगों मे इस प्रकार सज
साथ लाना चाहिये जैसा कि दूसरे साहित्य निकलते हैं। अपनी धार्मिक
को गूढ़ रहस्यो को और दार्शनिक सिद्धातों को सुरुचिपूर्ण भाषा मे ही तर्क
कथाओं के रूप मे प्रकाशित करना चाहिये। ताकि सब लोग पढ सकें
खरीद सके। इस प्रकार के साहित्य से हमारा प्रचार एव प्रसार बढ़ेगा।

हमारा देश

देश को आजाद हुए अभी थोडे ही दिन हुवे हैं। हमनें इस थोडे से स
में विकास और तरक्किया की हैं उन्हें दुश्मन फूटी आखों भी नहीं देखना चाह
हैं। वे चाहते हैं कि हमें डरा धमका कर हमारी आजादी को गुलामी के रूप में
बदल दें। यह सोचकर चीन और पाकिस्तान ने मिलकर हमारे उपर आक्रम
किया। पाकिस्तान ने तो चीन के इशारे पर बाकायदा युद्ध भी जाहिर किय
था। हमारे वीर सैनिकों ने जान की बाजी लगाकर दुश्मनों के छक्के छुडा दिये।
हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम देश और धर्म की रक्षा के लिये अपना सहयोग
दे और यदि आवश्यकता पडे तो कमर कसकर तैयार भी हो जायें।

जैन धर्म का प्रचार प्रसार

अभी २ ३ वर्ष पहिले परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म सा
आदि सत प्रवरो के मालव प्रदेश के विहार के साथ हजारो की सख्या में
भाई-बहिनों ने आचार्य श्री जी के सद् उपदेशों से प्रभावित होकर कुव्यसनों का
त्याग किया अपने जीवन को सात्विक बनाया। उन धर्मपाल बन्धुओं की प्रगति
देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष होता है और उन धर्मपाल जैन बन्धुओं से आग्रह करता
हू कि उन्होंने जिस भावना से प्रेरित होकर जो कदम उठाया है उस दिशा मे

आगे ही आगे बढते रहे। मैं अ भा साधुमार्गी जैन सघ की तरफ से उन्हें पूर्ण विश्वास दिलाता हू कि सघ धर्मपाल जैन भाइया के लिये शक्य सभी उपाय और सहयोग करने मे कभी पीछे नहीं रहेगा।

अन्तिम निवेदन

मैंने आपका अधिक समय ले लिया है जिसका मुझे खेद होना चाहिये था किन्तु उसके स्थान पर मुझे हर्ष हो रहा है क्योकि मुझे तो आप सभी लोगों के सहयोग और प्रोत्साहन ने ही अपने हृदय के उद्‌गारा को समाज के सामने रखने का समय दिया है। अत मेरी अल्पज्ञता और प्रमाद से यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आप महानुभाव स्वागत-कमेटी के सदस्यगण एव श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ राजनादगाव के सदस्यगण क्षमा प्रदान करेगे। एक बात जो निहायत जरूरी है वह है श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ' की कार्यप्रवृत्तियो को सफल बनाने का सवाल उसकी सफलता बिना आर्थिक सहयोग के पूरी नहीं हो सकती। अत जिन भाइयो ने सघ की किसी भी प्रवृत्ति मे रकम लिखवाई है और अभी तक देना बाकी हो वे अपनी लिखाई हुई रकम शीघ्र भिजवाने की कृपा करे और प्रत्येक शुभ अवसर पर यथाशक्ति सहायता प्रदान करते रहें।

यहा से हम सब समाज कल्याण करने का सकल्प लेकर उठें और 'जैन जयति शासनम् का विजयनाद करते हुवे दृढ़ निश्चय के साथ आगे कदम बढ़ायेगे यही मेरी आकाक्षा है।

स्थान — सघ सेवक
राजनादगाव (म प्र) — गणपतराज बोहरा

मिती आसोज शुक्ला २–३ सवत् २०२३
दिनाक १५, १६ अक्टूबर १९६६

ജ്ഞ

है। जिस किसी कार्य मे वे जूझ पडते हैं उसे पूरा करके ही विश्राम लेते
यह क्यो ? उन्हाने अपने त्याग सहानुभूति प्रेम और सहिष्णुता व प्रचार प्र
के जरिये एक महान् सगठन का निर्माण किया। अत हमारे समाज मे
सम्मानित व्यक्तियो के त्याग की आवश्यकता है। बिना त्याग के उत्थान है
असम्भव है ऐसा मेरा मानना है।

तीर्थंकरों के जमाने में धर्म-प्रचारार्थ कोई राजा राजकुमार या राजकु
दीक्षा लेती थीं तो हजारो की तादाद म लोग एकत्रित होकर उनक त्याग
कहानी सुनते थे। यह स्पष्ट है कटु सत्य है उससे कोई भी इकार नही
सकता पर इसे कौन कहे और कौन माने ?

साहित्य का प्रकाशन

हमें अपने साहित्य भण्डारों के रत्नो को लोगो में इस प्रकार सजधज
साथ लाना चाहिये जैसा कि दूसरे साहित्य निकलते हैं। अपनी धार्मिक कथ
को गूढ़ रहस्यो को और दार्शनिक सिद्धातो को सुरुचिपूर्ण भाषा में हो सके
कथाओ के रूप मे प्रकाशित करना चाहिये। ताकि सब लोग पढ सकें
खरीद सके। इस प्रकार के साहित्य से हमारा प्रचार एव प्रसार बढेगा।

हमारा देश

देश को आजाद हुए अभी थोडे ही दिन हुवे हैं। हमनें इस थोड़े से सम
मे विकास और तरक्किया की हैं उन्हे दुश्मन फूटी आखो भी नहीं देखना चाह
हैं। वे चाहते हैं कि हमे डरा धमका कर हमारी आजादी को गुलामी के रूप
बदल दें। यह सोचकर चीन और पाकिस्तान ने मिलकर हमारे ऊपर आक्रम
किया। पाकिस्तान ने तो चीन के इशारे पर बाकायदा युद्ध भी जाहिर किय
था। हमारे वीर सैनिको ने जान की बाजी लगाकर दुश्मनों के छक्के छुडा दिये।
हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम देश और धर्म की रक्षा के लिये अपना सहयोग
दें और यदि आवश्यकता पड़े तो कमर कसकर तैयार भी हो जायें।

जैन धर्म का प्रचार प्रसार

अभी २-३ वर्ष पहिले परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म सा
आदि सत प्रवरो के मालव प्रदेश के विहार के समय हजारो की सख्या में
भाई-बहिना ने आचार्य श्री जी के सद्-उपदेशा से प्रभावित होकर कुव्यसनों का
त्याग किया अपने जीवन को सात्विक बनाया। उन धर्मपाल बन्धुओ की प्रगति
देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष होता है और उन धर्मपाल जैन भाइया से आग्रह करता
हू कि उन्हाने जिस भावना से प्रेरित होकर जो कदम उठाया है उस दिशा मे

आगे ही आगे बढते रहें। मैं अ भा साधुमार्गी जैन सघ की तरफ से उन्हें पूर्ण विश्वास दिलाता हू कि सघ धर्मपाल जैन भाइयो के लिये शक्य सभी उपाय और सहयोग करने मे कभी पीछे नहीं रहेगा।

अन्तिम निवेदन

मैंने आपका अधिक समय ले लिया है जिसका मुझे खेद होना चाहिये था किन्तु उसके स्थान पर मुझे हर्ष हो रहा है क्योकि मुझे तो आप सभी लोगों के सहयोग और प्रोत्साहन ने ही अपने हृदय के उद्गारो को समाज के सामने रखने का समय दिया है। अत मेरी अल्पज्ञता और प्रमाद से यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आप महानुभाव स्वागत-कमेटी के सदस्यगण एव श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ राजनादगाव के सदस्यगण क्षमा प्रदान करेगे। एक बात जो निहायत जरूरी है वह है 'श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ' की कार्यप्रवृत्तियो को सफल बनाने का सवाल उसकी सफलता बिना आर्थिक सहयोग के पूरी नहीं हो सकती। अत जिन भाइया ने सघ की किसी भी प्रवृत्ति मे रकम लिखवाई है और अभी तक देना बाकी हो वे अपनी लिखाई हुई रकम शीघ्र भिजवाने की कृपा करे और प्रत्येक शुभ अवसर पर यथाशक्ति सहायता प्रदान करते रहे।

यहा से हम सब समाज कल्याण करने का सकल्प लेकर उठे और 'जैन जयति शासनम्' का विजयनाद करते हुवे दृढ निश्चय के साथ आगे कदम बढायेंगे यही मेरी आकाक्षा है।

स्थान — सघ सेवक
राजनादगाव (म प्र) — गणपतराज बोहरा

मिती आसोज शुक्ला २–३ सवत् २०२३
दिनाक १५, १६ अक्टूबर १९६६

ꣻ

बन्धुओ ! आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि किसी भी समाज का सामाजिक रूप बनाये रखने के लिए धार्मिक आचार-विचार की शुद्धता आर्थिक स्थिति की सुदृढता और शिक्षा का प्रचार-प्रचार यह तीन मूलभूत आवश्यकताए होती है।

हमारे समाज की धार्मिक करणी के आधार श्रमण हैं जिनकी श्रमणत्व के मूलाधार श्रम शम और सम मे निष्ठा है और जो श्रमण भगवान् महावीर द्वारा प्ररूपित तत्त्व ज्ञान आचार-विचार मे निष्ठा रखते हैं एव तदनुकूल जीवन व्यवहार करने वाले हैं। ऐसे महापुरुष और उनकी साधना पूजनीय है। अत मैं आपसे आशा रखता हू कि हम अपने धार्मिक आचार-विचार के आधार की शुद्धता और उसके मगल रूप की सुरक्षा के लिए प्रयत्न करते रहे।

लेकिन श्रावक वर्ग द्वारा ऐसा होना तभी सम्भव है जबकि यह साध्वाचार और श्रावकाचार की मर्यादाओ का मर्मज्ञ हो। अत हम श्रावको का कर्त्तव्य हो जाता है कि लोक परम्पराओ एव यह मेरा और यह तेरा की गुत्थियो मे न उलझकर धार्मिक नैतिक सस्कारो से समृद्ध समाज रचना की परिधि को विस्तृत करते जावे।

इसी विशाल लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए सघ के उद्देश्य मे सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र की अभिवृद्धि और समाजोन्नति के कार्यो को करने का प्रावधान किया है। सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र की अभिवृद्धि और समाजोन्नति का कार्य यह दो पृथक पृथक कार्य नहीं है। वरन् एक ध्येय के दो पहलू हैं। दर्शन ज्ञान चारित्र की वृद्धि से समाजोन्नति के कार्य होने और समाजोन्नति से दर्शन ज्ञान चारित्र की वृद्धि होगी। अत हम आप सब सघ उद्धेश्यो के प्रचार-प्रसार के लिए सदैव सचेष्ट हों।

सघ द्वारा सचालित प्रवृत्तियों के बारे मे श्रमणोपासक द्वारा जानकारी दी जाती है। उनमे आप अनुभव करते होगे कि वे प्रवृत्तिया अपने विकास द्वारा सघ के उद्धेश्य का महत्त्व व्यक्त करते हुये समाज का सामाजिक रूप बनाये रखने मे सफल हुई हैं।

यद्यपि सघ द्वारा सचालित प्रवृत्तियो के विषय मे जानकारी देने की आकाक्षा है। लेकिन अभी आपके समक्ष मत्री महोदय द्वारा प्रवृत्तियो का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाने वाला है। उसमे सभी विवरण स्पष्ट है। अत पुनरावृति न हो और उसमें लगने वाले समय का हम समाजस्पर्शी अन्यान्य प्रश्नों के विचार विमर्श में सदुपयोग कर लें तो श्रेयस्कर होगा। इसीलिये मैंने सक्षेप में अपना चिन्तन आपके समक्ष रख दिया है।
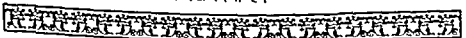
हम सभी का यह परम सौभाग्य है कि अधिवेशन के इस शुभ अवसर पर चारित्र चूडामणि बाल ब्रह्मचारी जिनशासन प्रद्योतक समता दर्शन प्रणेता धर्मपाल प्रतिबोधक समीक्षण ध्यानयोगी परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म सा एव उनके आज्ञानुवर्ती सन्त–सतीवृन्द भी यहा रतलाम में विराज रहे हैं जिससे हमे उनके पावन दर्शन करने और जीवन को अमृत बनाने वाले अमृतमय प्रवचनो को अमृतकुज मे बैठकर सुनने का लाभ सहज ही प्राप्त हो रहा है। स्व श्री जवाहराचार्यजी म सा के प्रशिष्य वर्तमान आचार्य श्री नानेश के इस वर्षावास स अतीत की स्मृतिया फिर से तरोताजा हो गई है।

हमारे श्रद्धाकेन्द्र आचार्य प्रवर का यह रतलाम चातुर्मास जिनशासन की गौरव–गरिमावृद्धि का एक अविस्मरणीय अध्याय बन चुका है। वर्षावास में प्रवचन का ठाठ और त्याग प्रत्याख्यानो की होड़ लग रही है। अकेले रतलाम मे ही ४६ मासखमण हो चुके हैं और अठाई आदि तपस्याओं का तो जलजला ही आ गया है। आपश्री की सन्निधि मे पर्युषण पर्व मे जो तपस्याए इस वर्ष हुई उन्होने आदर्श नवीन कीर्तिमान स्थापित कर दिए हैं। यह आचार्य प्रवर के अतिशय और निर्ग्रन्थ श्रमण धर्म के प्रति उनकी अविचल श्रद्धा का स्वाभाविक और सुखद परिणाम है।

आचार्य श्री नानेश के शासन म रतलाम मे २५ भागवती दीक्षाओं के भव्य आयोजन गत वर्ष सुदूर दक्षिण प्रदेश के सिरकाली में वैरागिन बहिन चन्द्राकुमारी की ६६ दिन की उग्र तपस्या और गगाशहर-भीनासर मे ७२ दिन के आत्मलीन सथारे की प्रेरक विलक्षण घटनाए घटी है जिनसे जिनशासन की प्रभावना का विस्तार हुआ है। आचार्य प्रवर के द्वारा प्रदत्त समता-दर्शन और समीक्षण ध्यान रूपी बीजमत्र समाज जीवन को विषमता मुक्त करने और राग द्वेष क्रोध-मान आदि कषायों से रहित करने के अमोघ उपाय के रूप मे आदर प्राप्त करने लगे हैं सुप्रतिष्ठित हो रहे हैं। आपश्री की प्रेरणा से सृजित साहित्य ने स्वाध्याय को गति प्रदान की है और समाज के दलित और अस्पृश्य माने जानेवाले वर्ग को आपकी समता दृष्टि से धर्मपाल के रूप में श्रेष्ठ आचरण के कारण अपार आदर प्राप्त हुआ है। सारे देश को इस पर गर्व है।

आपने अपने आज्ञानुवर्ती सन्त-सती वर्ग को मारवाड मेवाड मालवा और जम्मू–कश्मीर के साथ ही साथ दक्षिण के महाराष्ट्र कर्नाटक व तामिलनाडु जैसे सुदूर प्रान्तो में विचरण कराके जिनशासन को ज्योतित करने की प्रेरणा दी है। इस प्रकार असेतु हिमाचल –कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले अपने इस महान् देश में आपश्री का समता-दर्शन गूज रहा है। सारे देश में जहा–२ भी आपश्री

के आज्ञानुवर्ती सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास हैं त्याग-तप की होड़ लग गई है। ये क्षेत्र तप-क्षेत्र बन चुके हैं। कोयम्बतूर मे वैरागिन चन्दा बहिन ने इस वर्ष ६१ का तप किया है। मैं अभी-अभी दक्षिण प्रवास से लौटा हू वहा आपश्री की आज्ञानुवर्ती महासतीवृन्द ने अकल्पनीय परिषह सहकर भी अपने शुद्धाचार पर अडिग रहकर जिनशासन की महान् सेवा की है। आचार्य-प्रवर की नेश्राय मे अब तक २४० भागवती दीक्षाए हो चुकी हैं। ऐसे जन-मन नायक आचार्य-प्रवर के मगल आशीर्वाद से हमारा सघ दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। हम आचार्य-प्रवर के आभारी हैं।

मैं आज सघ अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण कर रहा हू। २० वर्ष बाद आप सभी ने मुझे फिर अध्यक्ष निर्वाचित किया है यह कार्य सम्भालने की आज्ञा दी है शारीरिक स्थिति आयु के अनुसार बदलती है फिर भी आप सभी की शक्ति के बल पर ही आज्ञापालन के लिए मैं यह पद ग्रहण कर रहा हू। मेरा बल आप ही हैं। आपके भरोसे यह कार्य स्वीकार किया है। विश्वास है आप सभी तन-मन-धन से सहयोग देकर सघ गौरव को बढावेगे। सघ की प्रवृत्तियो पर सघ मत्रीजी ने अपने प्रतिवेदन मे बहुत कुछ कह दिया है इसलिये उनको न दुहराते हुए मैं भावी योजनाओं के बारे मे आप सभी के सामने कुछ निवेदन करना चाहता हू।

हमारे सघ की शक्ति का आधार युवक हैं उनका सगठन समता युवा सघ भी सघ के अन्तर्गत सचालित है। मैं समता युवा सघ से प्रार्थना करता हू कि ३५ वर्ष की आयु तक ही अपने को सीमित रखे। ३५ वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति चाहे वे मन से युवा ही क्यो न हो उन्हे समता युवा सघ में पदाधिकारी न बनावें। हम उन्हें सघ-कार्य में जुटाना चाहते हैं जिससे सघ मे युवारक्त की तेजस्विता बनी रहे। हम समता युवा सघ के सुझावो पर विचार कर उनके प्रतिनिधियो को सघ कार्य समिति में लेंगे। इसी प्रकार हमारी श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति जो भारत का एक आदर्श महिला सगठन है उससे भी मैं अनुरोध करता हू कि सघ कार्यसमिति मे भेजने के लिए अपने प्रतिनिधियों की नामावली हमें देने की कृपा करे।

समस्त महिला शक्ति से मैं यह भी अपील करना चाहता हू कि फैशन परस्ती छोडे। सौन्दर्य प्रसाधनों के कारण जो हिंसा हो रही है हमे उससे बचना चाहिये। राजस्थान उच्च न्यायालय ने अपने एक निर्णय मे शुक्रवार को 'मास रहित दिवस' घोषित किया है। तमिलनाडु मे भी ऐसा है। महिलाओं को जीवदया के इस कार्य को सारे भारत में लागू करवाना चाहिये पर सबसे पहले

उन्हे फैशन के लिए होने वाली हिंसा से स्वय को मुक्त रखना चाहिये।

मैं इसी के साथ समाज को आडम्बर मुक्त बनाने की पुरजार ११ करता हू। हम अपने पूर्वजा की गौरवशाली सस्कृति को सादा जीवन ७५११८ ही बचा पाएगे। समाज से निवेदन है कि शादी-विवाह यहा तक कि के धार्मिक आयोजन मे भी घुस गई आडम्बरप्रियता के दोष को निकाल और समाज जीवन को निर्मल बनावें।

आचार्य-प्रवर की प्रेरणा से धर्मपाला में व्यसनमुक्ति का अभियान ५ किन्तु मेरा निवेदन है कि सम्पूर्ण समाज व्यसनमुक्त होना चाहिये। यही गरी दूर करने का आधार है। धर्मपाल व्यसन मुक्त होकर हमारे समकक्ष आए है। हम उनके एकात्मता स्थापित करे उन्हें गले लगावे और उन्हे पूर्ण सम्मा प्रदान करे।

श्रमण सस्कृति को शुद्ध स्वरूप में बनाए रखने हेतु हमारा साधु सा वर्ग अपना जीवन समर्पित कर रहा है। इस कार्य मे श्रावक-श्राविका वर्ग व योगदान भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है तदर्थ सघ ने श्री समता प्रचार सघ की स्थाप की है। श्री समता प्रचार सघ के स्वाध्यायियो ने थोडे से कार्यकाल में समा की महान् सेवा की है। हमारे लिए यह और भी हर्ष की बात है कि महिला भी काफी अच्छी सख्या मे स्वाध्यायी बन कर पर्युषण पर्व में सेवा देने जा र हैं। मैं अधिकाधिक श्रावक-श्राविकाओं से स्वाध्याय पथ पर अग्रसर होने के लि श्री समता प्रचार सघ के सदस्य बनाने की अपील करता हू।

मेरा समस्त सघ सदस्यों से यह भी अनुरोध है कि अपने बालक-बालिकाओं को पूर्वजों की विरासत से परिचित रखने और उनके जीवन को उन्नत बनाने के लिए हर घर मे एक पुस्तकालय खोले। घर में पुस्तकालय की एक अल्मारी होनी चाहिये जिसमें सघ द्वारा प्रकाशित जीवन उन्नायक तथा लोककल्याणकारी साहित्य भी रहे। इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रत्येक सदस्य को सघ का आजीवन साहित्य सदस्य बनना चाहिये।

मुझे मेरे विगत राजस्थान मध्यप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु प्रवासो में सघ-सदस्यो से अपार स्नेह मिला है जिसके लिए मैं सकल सघ का आभारी हू। सभी जगह सघ प्रवास कम होने की भी मुझे शिकायत मिली है और अधिकाधिक प्रवास करने का आग्रह किया गया है। मैं समस्त सघ की सेवा के लिए आज स्वय को सर्वभावेन समर्पित करते हुए यह विश्वास दिलाता हू कि मैं अपने स्तर पर अधिकाधिक प्रयत्न करने का प्रयत्न करूगा।
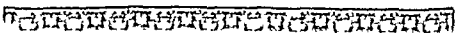
मेरा सभी सघ प्रमुखो एव स्थानीय सघ के पदाधिकारियो से विनयपूर्वक निवेदन है कि वे भी अपने-अपने क्षेत्र का प्रवास कार्यक्रम निर्धारित कर। हर तीसरे महीने ३-४ दिन का एक प्रवास रख जिसमें कुछ केन्द्रीय पदाधिकारियो को भी आमन्त्रित करे तथा गाव-गाव और व्यक्ति-व्यक्ति स जीवन्त सम्पर्क बनाए रख। वहॉ आडम्बर विहीन व्यसनमुक्त समतायुक्त समाज रचना का सात्विक वातावरण बने ऐसा प्रयास करे।

बैंगलोर सकल्प— अभी-अभी कर्नाटक प्रवास मे श्री कमलजी सिपानी के घर बैंगलार के प्रमुख सघ-सदस्यो से विचार-विमर्श हो रहा था। हमारे बैंगलोर के साथी इस बात को लेकर चिन्तित थे कि धनाभाव के कारण सघ अपनी प्रवृत्तियो का विस्तार नहीं कर पा रहा है। वे यह सोचकर उद्वेलित भी थे कि इतने विशाल सघ मे धनाभाव है। उन्होने एक योजना प्रस्तुत की और अपने महानगर से उसका शुभारम्भ भी कर दिया। इस बैंगलोर सकल्प म यह निर्णय किया गया कि सार देश मे कम से कम १०० ऐसे सदस्य बनाए जाए जो ३ वर्ष तक प्रतिवर्ष २५०० रुपये प्रदान करके सघ के नित्य कार्यो को अबाध गति से आगे बढाने में सहयोग कर। इस योजना से सघ को प्रतिवर्ष २ ५० ००० अढाई लाख रुपया निरन्तर तीन वर्ष तक मिलता रहेगा। बैंगलोर सघ न तत्काल ऐसे ११ सदस्य बनाने की स्वीकृति दे दी। उदारमना मद्रास श्री सघ के सदस्या मे से भी तडियार पेट स्थानक मे सघ की पहली सभा में उपस्थित १६ महानुभावा ने इस योजना के लिए स्वय को सहयोगी रूप मे प्रस्तुत किया और यह भी घोषित किया कि आज जो सदस्य उपस्थित नहीं है उनसे भी सम्पर्क कर इस सख्या को बढाया जावेगा।

मेरी आपसे अपील है कि इस श्रेष्ठ योजना के लिए स्वय आगे बढ़कर नाम लिखाव और १०० सदस्यो के लक्ष्य को आज ही देखते-देखत पार करके उससे भी आगे बढे।

एक बार फिर बैंगलोर सकल्प को सफल बनान का विनम्र निवेदन है।

नमो लोए सव्व साहूण— हमारे नमस्कार महामत्र का यह पाचवा पद बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह सम्प्रदाय और सभी प्रकार के घेरेबन्दियो से ऊपर लोक के समस्त सन्त जनो को नमस्कार करने की महान् उदारता हमारे जिनशासन की देन है। इससे बढ़कर धर्म निरपेक्षता और कोई हो ही नहीं सकती। हमें हमारे इस मन्त्र के अनुसार अपने जीवन व्यवहार को ढालना चाहिये किन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिये कि साधु को ही साधु क रूप में मानें असाधु को नहीं। जैन धर्म के लोक मगलकारी स्वरूप का दिग्दशन

कराने वाले इस मत्र को जीवन में ढालकर हम जिनशासन की सच्ची से
लिए आगे बढे।

अन्त में मैं इस अवसर पर सघ कार्यालय के विषय म भी दो शब्द
चाहता हू। सघ-कार्यालय देशभर मे फैले सघ के विशालकाय स्वरू
बहुआयामी प्रवृत्तियो को सचालित कर रहा है। इतना बड़ा कार्य करते
त्रुटि हो जाना भी स्वाभाविक है। मेरा सघ के प्रत्येक सदस्य से अनुरोध
कार्यालय की त्रुटि से हमें सूचित करे किन्तु साथ ही उस कमजोरी को दूर
का उपाय भी सुझावें। केवल आलोचना से सुधार नहीं हो सकता। आल
के साथ ही रचनात्मक सुझाव भी देवे। मैं स्वय प्रतिमाह कार्यालय का
प्रवास करके कार्य को सर्वोत्तम बनाकर आप सभी की साहित्य श्रमणोपा
या प्रतिउत्तर आदि प्राप्त न होने की शिकायतो को निर्मूल करने का प्र
करूगा। मैं आप सभी से भी कार्यालय तथा कार्यालय कर्मियों को
सम्पादन की समुचित स्थितिया सुलभ कराने के लिए सहयोग देने और उन
मनोबल बढ़ाने की अपील करता हू।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं रतलाम श्रीसघ द्वारा की गई
अधिवेशन व्यवस्थाओ और आत्मिक वात्सल्य के लिए समस्त सघ और स्वय
ओर से हार्दिक साधुवाद देता हू। हम इस भव्य आयोजन के लिए रतलाम
के आभारी हैं।

अन्त मे पुन सकल सघो और सदस्यों से निवेदन करता हू कि पुर
के गौरव और परम्पराओ के रक्षक अपने प्रिय सघ की उन्नति के लिए मु
हृदय से अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

रतलाम
१२ १० ८८

आपका विनीत
गणपतराज बोहरा
अध्यक्ष
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
समता भवन बीकानेर पिन–३३४००५
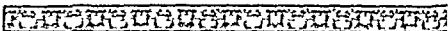
श्री अ भा सा जैन सघ के कानोड में आयोजित
२७वें अधिवेशन पर

अध्यक्षीय अभिभाषण

(अध्यक्ष – श्रीमान् गणपतराज जी बोहरा पिपलियाकला)

माननीय प्रमुख अतिथि जी स्वागताध्यक्षजी सघ पदाधिकारी गण सघ सदस्यगण एव भाइयो व बहिनो।

आज सघ के २७वे वार्षिक अधिवेशन पर प्रकृति की लीलास्थली र्मभूमि तपोभूमि धर्मभूमि कानोड़ की पावन भूमि पर सर्वप्रथम मै आपका यहा धारने के लिए हार्दिक अभिनन्दन करता हू। प्रकृति के वरद-पुत्रो आदिवासियों ो हृदयस्थली विद्यानगरी कानोड़ के सरल सात्विकजना ने शुद्धाचार और मण सस्कृति की सुरक्षा के सभी प्रयासो को सदैव पूर्ण शक्ति से सहयोग देकर ागे बढ़ाया है। इस धरती की गोद मे पल कर शिक्षित होकर शत-शत स्नातक ौर स्नातकोत्तर विद्वत् जनो ने सारे भारत म यहा की धर्ममय शैक्षिक सस्कृति ी विजय दुदुभि का जयघोष किया है। ज्योर्तिधर स्व श्री जवाहराचार्य जी । सा के उपदेशो की गूज यहा अभी भी सर्वत्र व्याप्त है। यहा स्व आचार्य ी गणेशीलाल जी म सा का चातुर्मास भी हो चुका है।

ऐसी यशस्वी धर्मभूमि पर समता विभूति समीक्षण ध्यानयोगी धर्मपाल ातिबोधक आचार्य श्री नानेश का प्रथम चातुर्मास हुआ है जिस पर हम सभी ो अपार हर्ष हो रहा है। हर्ष और उत्साह के इस मगल अवसर पर मैं एक ार फिर आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हू।

हम सभी का यह परम सौभाग्य है कि अधिवशन के इस शुभ अवसर र चारित्र चूड़ामणि बाल-ब्रह्मचारी जिनशासन प्रद्योतक परमपूज्य आचार्य-प्रवर ी १००८ श्री नानालालजी म सा एव उनके आज्ञानुवर्ती सन्त एव सती-वृन्द भी यहा कानोड़ मे विराज रहे हैं जिससे हमें उनके पावन दर्शन करने और जीवन को अमृतमय बनाने वाले पीयूष प्रवचनो को सुनने का लाभ सहज ही प्राप्त हो रहा है। स्व श्री जवाहराचार्य जी म सा के प्रशिष्य और गुरुणा-गुरु स्व श्री गणेशाचार्य जी म. सा के सुशिष्य आचार्य श्री नानेश का यह ५०वा दीक्षा वर्ष भी है। अत त्याग और तप के सयम-साधना और अप्रतिम आराधना के इस

दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष मे आचार्य-प्रवर का यह कानोड़ चातुमास जिनशा
गौरव-गरिमा का एक स्वर्णिम अध्याय बन चुका है। इस वर्षावास के प्र
के ठाठ और त्याग प्रत्याख्यानो के प्रत्यक्ष साक्षी बन हम सब गौरवान्वि
हैं। यह आचार्य प्रवर के अतिशय और निर्ग्रन्थ श्रमण धर्म के प्रति उनकी अ
श्रद्धा का स्वाभाविक और सुखद परिणाम है।

हमारे आराध्य शासन नायक आचार्य श्री नानेश के शासन में जि
को चमकाने वाली अविस्मरणीय आध्यात्मिक घटनाए एक के बाद एक
हुई हैं जिनसे निर्ग्रन्थ श्रमण-सस्कृति के प्रति जन-जन के मन में अपार
और आस्था का निर्माण हुआ है। लाखो लोगो नें व्यसनमुक्ति का सकल्प
और धमपाल समाज की रचना करने के अविश्वसनीय लगनेवाले का
अपनी प्रेरक वाणी अपने आत्मसयम और साधना के बल पर आचार्य प्रव
पूर्ण कर दिखाया है। एक साथ २५ भागवती दीक्षाए एक ही आचार्य की नेश्
मे दीक्षाए ६६ दिवस का उग्र तपश्चरण ७२ दिन के आत्मलीन सथारे
विलक्षण घटनाए, समाज जीवन को सदा प्रेरणा देती रहेगी। सुमति मुनिजी
सा के ससारपक्षीय पिता श्री चादमल जी लूणिया का नोखा मे १४ दिव
सथारा एक आदर्श है। दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष के पावन प्रसग पर सघ
आयोजित त्रिदिवसीय समता-साधना सगोष्ठी कानोड में आपने विद्वत्जनों
सम्यक ज्ञान दर्शन चारित्र के प्रशस्त पथ हेतु जो पाथेय प्रदान किया है उ
युग-युग तक साधना पथ के पथिकों को मार्गदर्शन मिलता रहेगा ऐसा
विश्वास है।

हमारे ऐसे तपोनिष्ठ श्रद्धाकेन्द्र आचार्य श्री नानेश ने सघ के आचार्य
गणेश के एक दीक्षा एक प्रायश्चित एक समाचारी के आदर्श को साकार
प्रदान कर जिनशासन की जो सेवा की है वह युग-युग तक अमर रहे
आपश्री के आज्ञानुवर्ती सन्त-सती वर्ग ने सर्वत्र अपने जीवन से शुद्धाचार
डका बजाया है। देश में एक महान् आध्यात्मिक वातावरण निर्माण करने
आपश्री के अनुयायी समर्पित भाव से जुटे हुए हैं। समता का यही सदेश अ
भारत और विश्व की आशा है। ऐसे जन मन नायक आचार्य-प्रवर के मग
आशीर्वाद से हमारा सघ दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।
आचार्य प्रवर के आभारी हैं।

दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष हम इस वर्ष आचार्य श्री नानेश का दी
अर्धशताब्दी वर्ष तप साधनापूर्वक मना रहे हैं। इस वर्ष के सन्दर्भ में बहुआया
त्याग तप की आराधना म हजारों श्रावक-श्राविका समर्पित भाव से जुटे हुए है
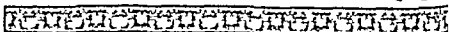
केवल आयम्बिल तप के क्षेत्र मे ही हम पौष सुदी ८ तक ५० हजार आयम्बिल करने को सकल्पित हैं।

मैंने गत अधिवेशन मे कहा था कि हमें व्यसनमुक्ति अभियान केवल धर्मपालो के लिए नहीं सम्पूर्ण समाज के लिए चलाना है। मुझे खुशी है कि आज पूरे समाज को व्यसनमुक्त बनाने के लिए हर गाव मे हमारे समाज-बान्धव अपने स्तर पर प्रयास कर रहे हैं।

हमने समता समाज की रचना के आदर्श को यथार्थ के धरातल पर प्रतिष्ठित करने के लिए कमर कसी है। हमने समता साधना और स्वाध्याय को बढावा देने के लिए श्री समता प्रचार सघ को सुदृढ और आत्म-निर्भर बनाने की योजना को भी स्वीकृति प्रदान की है। सयम-साधना सगोष्ठियों के माध्यम से आचार्य-प्रवर की अमृतवाणी को राष्ट्र के प्रबुद्ध जन तक पहुचाने का प्रयास कानोड़ की गोष्ठी से साकार रूप धारण करने लगा है। पौष सुदी ८ से पूर्व जयपुर छत्तीसगढ़ व कलकत्ता आदि म भी इन गोष्ठियो का आयोजन प्रस्तावित है।

इसी सन्दर्भ में श्रमणोपासक का सयम-साधना विशेषाक भी प्रकाशित किया जा रहा है जो अपने क्षेत्र मे बेजोड़ होगा ऐसी हमारी अपेक्षा और तैयारी है। इस प्रकार ५० सुश्रावकों को २ हजार रु प्रति व्यक्ति अर्थ सहयोग देकर स्वावलबन की ओर बढाने की भी हमने घोषणा की है।

सघ साहित्य की कुछ पुस्तको पर भी हमने इस वर्ष ५० प्रतिशत तक की छूट घोषित की है। महिलाओ को श्रमणोपासक आजीवन व समिति आजीवन सदस्या मात्र २५१) मे बन सकने की भी इस वर्ष में छूट दी गई है।

मेरी आप सभी से पुरजोर अपील है कि दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष के समस्त कार्यक्रमा मे तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

मैंने गत वर्ष अध्यक्षीय पदभार ग्रहण करते समय आपके सहयोग और आपकी सामर्थ्य के प्रति जो आस्था व आशा व्यक्त की थी आपने उसे समय की कसौटी पर खरा सिद्ध किया है। सघ के प्रत्येक आह्वान को गत एक वर्ष मे आपने जिस तत्परता और सेवाभाव से सफल बनाया है उसके लिए मैं आभारी हू।

कार्यकारी वर्ष मे हमने क्षेत्रीय प्रमुखो के नेतृत्व में प्रवास आयोजित करने का निश्चय किया और सघ उपाध्यक्षो और सहमत्रियो ने तदनुरूप योजना बनाकर उसे क्रियान्वित भी किया है। यही अनुशासन की भावना किसी भी सघ का प्राणतत्त्व होती है। हमारे सघ के प्राणतत्त्व ने व्यापक सन्तदर्शन-सघ दर्शन
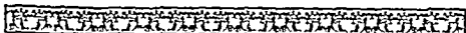
प्रवास आयोजित कर इन प्रवासो की सार्थकता को प्रमाणित किया है। इ
मेरे मालवा महाराष्ट्र तामिलनाडु, छत्तीसगढ व राजस्थान के प्रवास ई
यात्राक्रम आप सभी के भावविह्वल कर देने वाले स्नेह से सफल रहे हैं। इ
स्नेह के लिए मैं श्रद्धावनत हू।

मैंने गत वर्ष सघ कार्यालय के कार्य को व्यवस्थित करने के लिए
प्रतिमाह समता भवन का प्रवास करने की घोषणा की थी उसका स्व
कारण से पूर्ण पालन नहीं हो सका किन्तु फिर भी २-३ महिनों को छोड़कर
हर बार बीकानेर प्रवास पर गया। इन प्रवासो मे कार्यालय व प्रेस कर्मियों
जिस स्नेह और उत्साह से निर्देशो की पालना कर कार्य को सुगति प्रदान
है यह सकल सघ के लिए हर्ष की बात है। समता भवन के कार्य सचालन
एक और भी हर्षद सूचना आपको देना चाहता हू कि बीकानेर समता युवा
के उत्साही नौजवानों ने कार्यालय और प्रेस के कार्य में अकल्पनीय सह
दिया है। इन युवकों के उत्साह साहस और कर्मठ स्वभाव से हमें प्र
कार्यालय के कार्य सम्पादन में भारी सहयोग मिला है।

इस वर्ष हमने सयुक्त अधिवेशन का नया प्रोग्राम किया है और इस
सघ अधिवेशन के समापन सत्र मे हमारी युवा शक्ति महिला शक्ति बाल श
और समता प्रचार सघ एव सु सा शिक्षा सोसायटी जैसी सघ की स्वाध्या
शक्ति का सयुक्त अधिवेशन आयोजित किया गया है। इस सयुक्त अधिवेश
से हम परस्पर एक दूसरे की योजनाओ को भली प्रकार जानते-समझते हु
आपस में सहकार कर सकेंगे और सघ समन्वयक की अपनी भूमिका
अधिक सहज रूप से निभा सकेगा। विश्वास है आप इस प्रयोग को अपन
भरपूर समर्थन प्रदान करने की कृपा करेंगे।

धर्मपाल प्रवृत्ति के कार्य मे इस वर्ष नवगति का सचार हो रहा है।
दिलीपनगर रतलाम स्थित धर्मपाल छात्रावास बहुत अच्छे परिणाम दे रहा है।
यहा से निकलने वाले छात्र मेधावी और जीवन की पाठशाला में सफल सिद्ध
हो रहे हैं और विशेष हर्ष की बात है कि ये प्रतिभा सम्पन्न छात्र जैनत्व के
सस्कारों से युक्त हैं।

बैंगलोर सकल्प इस प्रकार सेवा साधना और स्वाध्याय तथा सगठन
के क्षेत्र मे सघ कार्य का यशस्वी विस्तार हो रहा है। हमारे कार्य की गुणवत्ता
ने भी समाज व देश में उचित आदर प्राप्त किया है। हमें अपने इस बढते यश
के साथ बढते उत्तरदायित्व को भी अनुभव करना चाहिये और सघ कार्यों के
लिए मुक्त हस्त से दान देने को तत्पर व उत्सुक रहना चाहिये। केवल धर्म ही
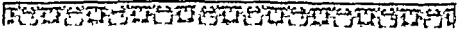
नहीं श्रम व समय का समर्पण भी समाज हेतु करना होगा। हमने गत वर्ष गलोर सकल्प घोषित किया और उसके लिए सघ सदस्यो ने उत्साहपूर्वक अपने नाम भी लिखाए। कुछ बन्धुओ ने नाम लिखाने के साथ ही अपनी धनराशि भी जदी किन्तु बहुत सारे महानुभावो का घोषित धन सघ कार्यालय मे नहीं हुचा। सघ सदस्या से मेरा निवेदन है कि अपनी पूर्व घोषणाआ को तत्परता से पूरा करे और जिन्होने अब तक अर्थ सहयोग घोषित नहीं किया है वे आज भी घोषित करे। मैं आशा करता हू कि एक विकासमान सघ की अपेक्षाओ को आप हृदयगम कर उनकी पूर्ति करगे।

हम किधर जारहे हैं ? आज मैं स्थानकवासी समाज के सामने एक प्रश्न पूछना चाहता हू कि हम किधर जा रहे हैं ? हमारी मान्यताए क्या हैं और सोचे कि हम कहीं अपनी मान्यताओ से भटक तो नहीं रहे हैं ? मैं किसी धर्म या अन्य मान्यता पर आक्षेप नहीं कर रहा हू। अन्यो के मतो का आदर करते हुए भी अपनी मान्यताओ के प्रति सजग रहना चाहिये यही निवेदन करना चाहता हू। आज यदि कहीं किसी साधु की समाधि बनती है अस्थि कलश चढता है किन्हीं साधु का स्मृति मन्दिर बनता है और हमारे बन्धु वहा धूप-दीप-नारेल से पूजा करते हैं तो क्या यह उचित है ? क्या यह स्थानकवासी परम्परा और मान्यता है ? यह द्रव्य पूजा हमे कहा ले जाएगी ? मेरा स्थानकवासी समाज से निवेदन है कि अपनी मान्यता के अनुसार अपने मार्ग का निश्चय करें। यह एक गभीर प्रश्न है नेताओ का इस पर विचार करके समाज को मार्गदर्शन देना होगा तथा समाज को भी इस पर गइराई से सोचकर अपना मार्ग तय करना चाहिये।

सादा जीवन उच्च विचार मैं आप लोगो से एक और अपील करना चाहता हू– हमे हमारे समाज मे बढ़ते जा रहे आडम्बर को मिटाना चाहिये। शादी–विवाह में ठहराव को समाप्त करने और तपस्या म प्रदर्शन को समाप्त करने के लिए युवाशक्ति से मैं आगे आने का आह्वान करता हू। हम अपने समाज को सरल-सादा और उच्च बनाए रखना है।

निवेदन मैं गत वर्ष अस्वस्थ हो जाने से करीब ढाई महीना सघ कार्य नहीं कर सका। अध्यक्ष होते हुए इस प्रकार कार्य न कर सकने का मेरे मन पर बोझ बना रहा। बीमारी की इस अवधि म सभी सघ सहयोगियों और सदस्यों ने जो आत्मीय शुभकामनाए भेजीं और सघ कार्य को आगे बढाए रखा उसके लिए मैं आप सबका हृदय से आभारी हू और क्षमाप्रार्थी हू। साथ ही स्वास्थ्य बराबर न रहने से यह निवेदन करना चाहता हू कि अध्यक्ष का नवनिर्वाचन कर
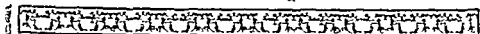
स्वातंत्र्य प्रेमी एव राष्ट्रीय एकता के प्रतीक

देश के स्वातंत्र्य हेतु सर्वस्व समर्पित स्वातंत्र्य सेनानी ज्योतिर्धर स्व जवाहरलाल जी म सा व राष्ट्रपिता महात्मागाधी के आह्वान से स्फूर्त अपनी तरुणाई को राष्ट्र के लिये न्यौछावर करने वाले 'साइमन कमीशन बैक' के सत्याग्रही स्वतंत्र भारत की भावनात्मक एकता के अनूठे मेरुदंड रूप जाति प्रान्त भाषा तथा क्षेत्र आदि के समभावी एव सद्भावी सम्मिश्र राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं।

धर्म विभूषण

धर्मनिरपेक्ष भावना से अभिभूत स्वधर्म परायण जिन आदर्शों को ऊ करने वाले मानववादी मानव के रूप मे आप सम्माननीय हैं। दया, द सहयोग सम्यक चारित्र्य तथा सम्यक दृष्टि के कारण धर्म विभूषण के र आप प्रकाश स्तम्भ हैं।

शिक्षा प्रेमी

श्रीमान् का शिक्षा–प्रेम आपकी जीवनगत कसक है। यही कसक कर सर्वत्र शिक्षा सेवा के रूप मे बह चली है। प्राथमिक स्तर से ल विश्व–विद्यालयी शिक्षा हेतु सम्प्रति प्रकल्पा में मुक्तहस्त से आपका स स्तुत्य है। अनेक शिक्षण एव स्वास्थ्य सस्थाओ के प्रादुर्भावक प्राणदाता महान् हितैषी के रूप मे आपकी सहज पहचान है।

समाज गौरव

दलित एव अछूतोद्धारक धर्मपाल पितामह स्वास्थ्य सेवक ग्रामोन्ना श्रीसघ (श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के भूपू अध्यक्ष) के सेवक तथा म समाज के गौरव श्रीमान् सादगी सदाचार प्रबुद्ध चिन्तन कर्मठ व्यक्ति निराभिमान एव निष्काम भावना के प्रतीक हैं।

एतदर्थ हम प्रसन्नता एव नम्रता पूर्वक यह सम्मान–पत्र श्रीमान् सेवामे समर्पित करते हैं। *आपके सुखद समृद्ध एव शुभकारी भविष्य तथा आयु की हार्दिक कामना करते हैं।*

हम हैं

सम्पतसिंह हिरण — अध्यक्ष

नाहरसिंह औंधलिय — सचिव

दिनांक ११ जनवरी ८७
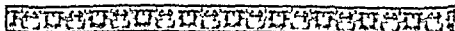
श्री अ भा साधुमार्गी जेन महिला समिति

प्रधान कार्यालय–चादनी चौक रतलाम

अष्टम् वार्षिक अधिवेशन देशनोक

के शुभ अवसर पर

श्रीमती सौ यशोदा बहिन बोहरा बडोदरा

के कर कमलों मे सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

...ला रत्न

आज महिला समिति की सभी सदस्यायें दानवीर सेठ श्रीमान् गणपतराजजी बोहरा की धर्मपत्नी के रूप मे आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए अपार ... का अनुभव कर रही है। आपका त्यागमय सरल जीवन मृदुस्वभाव एव सदा ...न्न मुद्रा सबके लिये अनुकरणीय है। आपकी सेवा कार्य के प्रति प्रगाढ ...स्था तथा सरलता एव सौजन्यता से हर कोई प्रभावित हुए विना नहीं रह ...कता।

...दृढ आधार स्तम्भ

आपने लगभग ४ वर्ष तक समिति के गौरव पूर्ण अध्यक्ष पद पर रहकर ...दर्श सेवा की है। आपके कार्यकाल मे यह पौधा प्रशसनीय विकास कर ...माज को मृदुफल देन योग्य बना है।

इसी तरह आपने अपने कर कमलो द्वारा श्री जैन महिला उद्योग मन्दिर ...लाम का शुभारम्भ कर समाज के सामने सेवा एव स्वाभिमान जागृति का एक ...या आदर्श द्वार खोला है। अपनी कौटुम्बिक परम्परा के अनुरूप दान देकर ...स्था की नींव को मजबूत किया और आज भी अपनी कपड़ा मिल द्वारा सस्था ...ो सस्ते भाव से कपड़ा प्रदान कराकर पूर्ण योगदान दे रही हैं।

...र्मपाल माता

आप धर्मपाल प्रवृत्ति की तो प्राण ही हैं। छुआछूत को भगाने पिछडे वर्ग ...ो गले लगाने और उनके साथ स्वधर्मी वात्सल्यता का परिचय देने मे अनुपम ...दाहरण समाज के सामने प्रस्तुत कर महावीर के सिद्धान्तो को कार्य रूप में ...रिणत कर दिखाया है।

...र्मयुक्त सरल जीवन

सब तरह से सम्पन्न होते हुए भी अपने लिये सीमित वस्त्रों एव शुद्ध

खादी का प्रयोग नित्य सामायिक स्वाध्याय युक्त धार्मिक जीवन र
का त्याग सेवा के कार्यों के लिये सदैव तत्परता अहकार क ल
हृदय की अत्यन्त उदारता आदि आदि आपके स्वाभाविक गुण म
विचारो से आप सदा युगानुकूल रही हैं।

हम सब यही कामना करती हैं कि आपसे समिति को उ
सहयोग एव बल मिलता रहे। आप सदा स्वस्थ रहें। आपकी सेव
नारी समाज या धर्मपाल समाज ही नहीं अपितु पूर्ण मानव समज
हो। आप अपने जीवन में मानव सेवा नारी उत्थान एव जीवदया के
निरन्तर प्रगति करती रहें इसी शुभ कामना के साथ।

देशनोक
बुधवार दि ८-१०-७५

आपकी मगलाकाक्षी
सदस्याए
श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला

ॐ७३

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जेन सभा, कलव

द्वारा

माननीय श्री गणपतराज जी बोहरा को सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

आदरणीय !

इस कर्म-सकुल जगती के कोलाहलपूर्ण अञ्चल में कार्यरत रहते !
अवकाश निकाल कर इस पुनीत अवसर पर पधार कर आपने जिस
अनुकम्पा का परिचय दिया है वह वर्णनातीत है। आज ऐसे कर्मवीर शि
कर्त्तव्यनिष्ठ को अपने बीच पाकर अभिनन्दन करते हुए हम फूले नहीं स

शिक्षाविद् !

आपकी विद्वता एव शिक्षा-प्रेम से अभिभूत "मद्रास एजुकेशन सुस
ने आपको अपनी सदस्यता प्रदान की है। आपके शिक्षानुराग का यही
प्रमाण है। आपने एकनिष्ठ लगन एव तत्परता के साथ उद्योग के व्यापा
में कार्य करते हुए भी शिक्षा की ओर ध्यान देकर अपनी उभयमुखी प्रतिभा
परिचय दिया है।

उद्योगपति !

दश की आर्थिक स्थिति को ध्यान मे रख अहमदाबाद मद्रास आदि बडे–बड़े नगरों मे उद्योग का सचालन करते हुए आपने पिप्पलिया (राजस्थान) ऐसे छोटे गाँव मे भी अलमुनियम केबुल का कारखाना खोल दीन–हीन गरीब जनता को कार्य दकर जो स्तुत्य प्रयास किया है वह आपकी उदारता एव उद्योगनिष्ठा का परिचायक है।

कर्मवीर !

आपदाओं के प्रबल झझावातों मे हिमालय–सा आप सर्वदा अडिग देखे गये। ऐश्वर्य एव वैभव से परिपूर्ण वातावरण मे भी आप पुष्कर–पलाशवत् निर्लेप रहे। निरभिमानता के प्रतीक बन समाज के समक्ष आपने जो आदर्श उपस्थित किया है वह सर्वदा अभिनन्दनीय है।

धर्मनिष्ठ !

धार्मिक भावनाओ से ओत–प्रोत मातृ–पितृ भक्ति की प्रतिमूर्ति आपका खद्दर परिवेश ही आपकी चारुता एव सादे–जीवन का उद्घोष है। आपक मिलनसार एव सहानुभूति परायण स्वभाव के अञ्चल में कितने ही प्राणी नित्य आशातीत सफलता प्राप्त करते हैं। अनेकानेक सामाजिक सस्थाओ एव दीनो को अविरल दान द्वारा आपने अपनी जिस उदारता का परिचय दिया है वह सर्वथा स्तुत्य है।

सुश्रावक !

गृहस्थाश्रम धर्म का पूर्णत पालन करते हुए भी सुश्रावक बन कर आपने अपनी तपस्या तथा देशभक्ति के द्वारा अपनी मानवता का जो परिचय दिया है वह समाज एव देश के इतिहास में अमर रहेगा।

श्रीमन् !

आज हम आपकी सास्कृतिक साधना सहानुभूतिपूर्ण सहृदयता स्तुत्य कार्य–कलाप प्रशसनीय स्वभाव एव अनुपम दक्षता के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

जय–जिनेन्द्र

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा
१८ डी सुकियरा लेन कलकत्ता–१
दिनाक – १५.८.६६

हम है आपके परमशुभाकाक्षी
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन सभा के सदस्य

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकाने

द्वारा
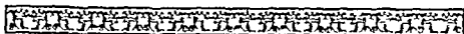
श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा को

सादर समर्पित

<u>अभिनन्दन पत्र</u>

हे सरलता की प्रतिमूर्ति !

आदरणीया ! आपकी सेवाभावना और त्यागमय जीवन भव्य ऐश्व
सागर मे रहकर भी जल म कमल की भाति निर्लिप्त व सादगी पूर्ण है।
वेशभूषा और गाढ़ी परित्याग के सकल्प आपकी दृढ़ धारणा के परिचाय
हे सरलता की प्रतिमूर्ति ! आपके य उदात गुण हम सभी के लिये प्र
व प्रेरक हैं।

हे महिला रत्न !

आपने श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की अध्यक्षा और स
के रूप में महिलाओं में धार्मिक शिक्षण स्वावलम्बन एव नैतिक आय
प्रोत्साहित करने के साथ ही महिला सगठन में अप्रतिम कौशल का प्रदर्शन
है। हे महिला रत्न ! आपका जीवन महिला समाज के लिए सदैव प्रेरणा
रहेगा।

हे शासन सेविका !

श्रद्धेया ! सतसती वृन्द की सेवा में आपकी गहन अभिरुचि और स
सेवा भावना हम सभी के लिय अनुकरणीय है। हे शासन-सेविका आपकी स
समर्पित सेवा परायणता हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ की भाति पथ का आलोक है

हे करुणा मूर्ति !

समाज की बहनों को सबल और विश्वास प्रदान करके आगे बढ़ाने मे
तथा धर्मपाल क्षेत्रों में गाव-गाव खेडे-खेडे में प्रवास करके उन दलित बहनों
के सुख-दुख में सहभागी बनने क लिए आपका करुणामूर्ति मन सदैव उत्सुक
रहता है। हे करुणामूर्ति ! मानवीय करुणा और उत्कृष्ट सवेदना के इस स्नेह
निर्झर में अभिसिंचित कर आपने सहस्रोंजनों को अभिभूत कर दिया है। हम
आपके आभारी है।
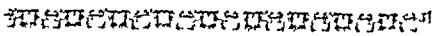
धर्मपाल माता

हे वात्सल्यमयी मातृमूर्ति ! आपने अपने मातृत्त्व का असीम विस्तार कर तृशक्ति को उजागर किय है। पीडित दलित और शोषित धर्मपाल स्त्री–पुरुषो ो अपने वात्सल्यमय स्नेह को अमृतवर्षा से व्यसन मुक्त सस्कारी स्वावलबी ार समृद्धि के उपासक बनाने म अपूर्व प्रेरक शक्ति का कार्य किया है। धर्मपाला ारा एतद हेतु आपको 'धर्मपाल माता' का सहज आत्मीय सबोधन प्रदान किया ाना सर्वथा योग्य है। हे ममतामयी धर्मपालमाता ! हम आपका हार्दिक भिनन्दन करते हैं।

हम हैं आपके

पीरदान पारख	दीपचन्द भूरा
मत्री	अध्यक्ष

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर

तलाम

नाक ३ ३ ८४

ॐ

धर्मपाल समाज नागदा एवम् महिदपुर क्षेत्र की ओर से

राष्ट्र गौरव मानव मणी समाज भूषण धर्मपाल पितामह मामाशाह

श्रीयुत गणपतराज जी बोहरा को सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

राष्ट्र गौरव

हे राष्ट्र गौरव क्षमाशील मानव मणी समाज भूषण जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र दानवीर भामाशाह धर्मपाल पितामह श्रीयुत गणपतराजजी बोहरा के सादर चरणो मे आज यह अभिनन्दन भेट कर हम फूले नहीं समा रहे हैं आप इसे स्वीकार कर हमे कृतार्थ करे।

सफलतम जीवन की ओर अग्रसर

होनहार बलवान के होत चिकने पात वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए आपने बाल्यकाल से ही अपने व्यवसायिक क्षेत्र को औद्योगिक धारा में मोड़ कर नये से नये कीर्तीमान स्थापित किये वहीं राष्ट्रीय धारा से आप जुडे रहे स्वतत्रता सग्राम में भी आपकी महती भूमिका रही वहीं आध्यात्मिक प्रभाव भी
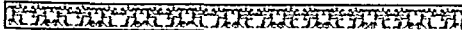
आपका गहरा रहा। राजस्थान के छोटे से कस्बे मे पिपलिया में आपने द
सेठ प्रेमराजजी बोहरा के आगन मे जन्म लेकर इस परिवार के गौर
अभूतपूर्व वृद्धि की। शैशव काल में धर्मपरायण परिवार के सस्कारों का
प्रभाव आप पर रहा और युगदृष्टा ज्योतिर्धर जवाहर एवम् श्री गणेश
सानिध्य से धार्मिक जीवन धारा बलवती होती गई।

नानेशाचार्य की प्रेरणा

वैसे प्रारम्भ से ही धार्मिक वृत्ति आपका स्वभाव बन चुकी थी सत सग
ने उन सारे गुणो को विकसित किया जो आपमे विद्यमान थे सन् १९६
आचार्य नानेश ग्रामीण अचलो मे विचरण कर रहे थे और अछुतोद्धार अपनी
चरम सीमा पर था व्यसन मुक्ति का यह अभियान जोर पर था मानव सेवा
इस अभियान के आप कर्त्ता बन गये आपकी धर्म परायण पत्नी श्रीमती
देवी इस अभियान की माता बन गई और मालवा अचल की धरती पर
विराट स्वरूप का नेतृत्व मिला और देखते देखते हजारों परिवार धर्मपाल
म प्रविष्ठ होने लगे। पदयात्राओं के दौर ने इस अभियान को शिखर
पहुचाया चार सौ पचास ग्रामो में पदयात्रा या सम्मेलनों के माध्यम से
सानिध्य मिला। बेसहारों को सहारा असहायों को सहायता और निर्बलों
बल मिला और मालवा की माटी आपके उपकारो की ऋणी हो गयी।
माह आपने ग्रामीण अचलो म प्रवास कर दिन दुखियों के दुख दर्द में
बटाया ग्रामो में समता भवन के निर्माण जीवन निर्माण की दिशा में आपका
प्रयास रहा इस युग के भामाशाह के रूप में आपका अभिनन्दन करें या
मात के रूप मे या श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष रूप मे अप
में निहित है। आपके दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए। हम सब
कृतज्ञ हैं और यह अभिनन्दन पत्र श्रद्धा भाव से अर्पित करते हैं।

दिनाक २४ मार्च १९९०

विनयवत
समस्त समाज धर्मपाल
नागदा महीदपुर क्षेत्र
ग्राम [illegible] (जिला उज्जैन)

ॐ
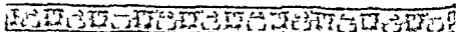
श्री साधुमार्गी जेन सघ, बम्बई द्वारा

स्वातत्र्य के पुजारी उदारमना सेवा समर्पित समाजरत्न

माननीय श्रीयुत गणपतराज जी बोहरा पीपलिया कला

को सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

हे स्वातत्र्य उपासक !

आपने तारुण्य के उपवन मे प्रवेश के साथ ही बसन्त के मनमोहक आह्वान को भुलाकर स्वातत्र्य समर की बलि वेदी पर स्वय को एक मूक समिधा की भाति प्रस्तुत किया। उल्लसित मन से जीवन के १८वे वसन्त मे आपने 'साइमन–वापस जाओ' के अमर उदघोष म अपना कठ स्वर मिलाया और प्रजा–परिषद को सर्वभावेन सहकार प्रदान किया। आपका यह महान् योगदान हमें युग–युग तक प्रेरणा देता रहेगा।

हे स्वावलबन प्रेरक

अपने पुरुषार्थ से विपुल सम्पत्ति का अर्जन करने के साथ ही आपने समाज और राष्ट्र जीवन मे स्वावलबन का प्रेरक मत्र फूका। आपने अपनी सम्पत्ति को उन्मुक्त भाव से लोक कल्याणकारी कार्यों हेतु उदारतापूर्वक समर्पित किया। रतलाम म महिला उद्योग मदिर मे धर्मपाल क्षेत्रो में कुटीर उद्योगो के साधन जुटाने मे और समाज के युवावर्ग को उद्योग के क्षेत्र मे प्रगत करके उद्योगपति बनाने मे आपने महति भूमिका निभाई। अपने छोटे से ग्राम पीपलिया कला को भारत के औद्योगिक मानचित्र पर प्रतिष्ठित कर आपने गाधी के स्वप्न ग्राम स्वराज्य की दिशा मे योगदान किया।

हे शिक्षा और चिकित्सा सेवी

आपने अपने सेवाकार्यों को शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में अधिष्ठित किया। श्रीमती सुन्दर देवी शिक्षाशाला पीपलिया कला की स्थापना कानोड़ के आदिवासी अचल में स्थित जवाहर विद्यापीठ और महाविद्यालय को उदार अर्थ सहयोग श्री प्रेमराज गणपत राज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर की स्थापना श्री प्र ग बोहरा धार्मिक शिक्षण शिविर समिति की स्थापना धर्मपाल क्षेत्र में शत शत शिक्षणशालाओं के सचालन मे योगदान और श्री
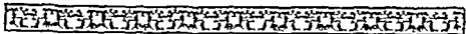
दानवीर !

धर्म के चार प्रमुख अग हैं—दान शील तप और भावना। इन चा की आप आराधना कर रहे हैं। भामाशाह की तरह आप की उदार से कौन परिचित नहीं है ? मगर विशेषता तो यह है कि लाखों का दान भी आप सर्वथा निरहकार रहते हैं। सत्य यह है कि आपने गृहस्थ यथार्थ रूप मे जाना है और उसे अपने जीवन में ओतप्रोत कर लिया है। मुख मडल ही आपके हृदय की शुद्धता सात्विकता भद्रता विनम्र धर्मशीलता की साक्षी दे रहा है।

स्वधर्मीवात्सल्य सम्यकदृष्टि का विशेष लक्षण है जैसे गाय बछड़े पर स्वाभाविक प्रेम होता है। उसी प्रकार धर्मात्मा पुरुष अपने पर सहज प्रीति रखता है। आपके जीवन में यह गुण भी विशेष रूप से हुआ है। अनेक स्थानों पर जो आपके औद्योगिक प्रतिष्ठान चल रहे हैं स्वधर्मीजनों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। और आप सदैव उनका ध्यान रखते हैं। यदि अन्य उद्योगपति आपका अनुकरण करे और स्वधर्मी के प्रति वात्सल्य भाव का परिचय दे तो समाज का बहुत हित हो

विशेष क्या कहें आप एक आदर्श श्रावक आदर्श गृहस्थ आदर्श और आदर्श समाज सेवक हैं एव आपका जीवन अनुकरणीय है। जैन को आपने गौरवान्वित किया है। हार्दिक कामना है कि शासनदेव सदैव सहायक हों आपकी श्रीवृद्धि करें। आपकी धर्मभावना निरन्तर बढ़ती रहे। चिरायु होकर शासन और समाज की सेवा करते रहें।

तथास्तु !

ब्यावर
दि ०८.११.७५

चित्र वीथी

राजनादगाय अधिवेशन में मद्रास से विशेष रेल द्वारा अध्यक्षीय कार्यभार ग्रहण करने हेतु पधारे श्री बोहरा सा एव उत्साही सघ सदस्यों का रेल्वे स्टेशन पर भव्य स्वागत। शोभायात्रा हेतु रथ में विराजमान श्री गणपतराज जी बोहरा एव राजनादगाव सघ के अध्यक्ष

छात्रावास उदघाटन उद्बोधन

श्री गणेश जैन छात्रावास उदयपुर मे
उदघाटन उद्बोधन प्रदान करते हुए श्री बोहराजी।
अध्यक्ष श्री पारसमलजी काकरिया एव सघ प्रमुख गण।

श्री अ भा सा जैन
महिला समिति की
अध्यक्षा श्रीमती यशोदा
देवी जी बोहरा द्वारा
गगाशहर मीनासर सघ
अधिवेशन स 2034
में तपस्विनी बहिन
श्रीमती पूर्ण बाई मिश्री
बीकानेर को
अभिनन्दन पत्र भेंट

रतलाम सघ अधिवेशन 1988 मे श्री बोहराजी का स्वागत करते हुए
मोहनलालजी सिपाणी बैंगलोर। मच पर बैठे हैं सर्व श्री फतहलालजी हिंगड़
समाज सेवी श्री मानवमुनिजी पी सी चौपड़ा गुमानमलजी चोरड़िया
एव खड़े हैं श्री धम्पालालजी डागा

पीपलिया कला सघ अधिवेशन मे मध्यप्रदेश के मुख्यमत्री
श्री सुन्दरलालजी पटवा को शॉल ओढाते हुए श्री गणपतराजजी बोहरा।
पास मे खडे हैं सघ अध्यक्ष श्री भवरलालजी बैद। मच पर पार्श्व में
सघ प्रमुख श्री सरदारमलजी कांकरिया सघ उपाध्यक्ष श्री हिम्मतजी कोठारी
लोक निर्माण मत्री म.प्र. शासन रतलाम एव श्री सुन्दरलालजी कोठारी मुबई।

रतलाम सघ अधिवेशन 1988 में श्री बोहराजी का स्वागत करते हुए
ोहनलालजी सिपाणी बैंगलोर। मच पर बैठे हैं सर्व श्री फतहलालजी हिगड़
समाज सेवी श्री मानवमुनिजी पी सी चौपड़ा गुमानमलजी घोरड़िया
एव खड़े हैं श्री चम्पालालजी डागा

पीपलिया कला सघ अधिवेशन में मध्यप्रदेश के मुख्यमत्री
श्री सुन्दरलालजी पटवा को शॉल ओढाते हुए श्री गणपतराजजी बोहरा।
पास में खड़े हैं सघ अध्यक्ष श्री भवरलालजी बैद। मच पर पार्श्व में
सघ प्रमुख श्री सरदारमलजी काकरिया सघ उपाध्यक्ष श्री हिम्मतजी कोठारी
लोक निर्माण मत्री म.प्र शासन रतलाम एव श्री सुन्दरलालजी कोठारी मुबई।

महाप्रस्थान की तैयारी-
स्व श्री गणपतराजजी बोहरा

प्रज्वलित चिता को साश्रु निहारता जनसमूह

पीपलिया कला में स्व. श्री गणपतरामजी देहरा की
महाप्रयाण यात्रा में उमड़ा हुआ श्रद्धालु जनसमूह

[illegible]

संस्मरण

आचार्य श्री नानेश के अन्तरग श्रावक श्री बोहराजी

–शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि जी म –

धर्मपाल प्रतिबोधक पूज्य आचार्य श्री नानेश के अग्रिम पक्ति के भक्तों मे भक्त हुए हैं– श्री गणपतराज जी बोहरा।

ात्मन समर्पित

श्री बोहरा जी का जीवन सादगी सरलता का जीवन था। उनके जीवन आचार्य श्री जवाहर के राष्ट्रधर्मी विचारो की छाया थी। वे आचार्य श्री गणेश सस्कृति रक्षार्थ उठाये कदम के प्रति निष्ठावान थे। आचार्य श्री नानेश द्वारा र्तित धर्मपाल समाज के लिए तो वे सर्वात्मन समर्पित थे। समाज सेवी श्री इरा जी का नाम तब तक जरूर याद किया जायेगा जब तक धर्मपाल समाज गा। आचार्य श्री नानेश के साथ उनके नाम का जुडना उनकी अनन्त ग्यवानी का उदय था।

श्यस्त श्रावक

सन् १६७६ में मेरा चातुर्मास इदौर था। श्री कन्हैयालाल जी ललवानी से क्षिण की ओर विहार करने हेतु चर्चा की। उसी समय श्री बोहरा जी कस्तूरबा ाम में दर्शनार्थ आये। उनसे भी दक्षिण प्रवास हेतु विचार-विमर्श किया। श्री हरा जी ने हमें विश्वास दिलाया कि आप निश्चित होकर दक्षिण की तरफ हार कीजिए। मैं आचार्य श्री की आज्ञा भिजवा दूगा। श्री बोहरा जी को इतना ात्म विश्वास था कि आचार्य श्री अवश्य आज्ञा फरमायेगे। अटूट गुरु भक्ति के बेना इतना आत्मविश्वास हो नहीं सकता। ऐसे क्षेत्र के लिए आज्ञा प्राप्त करना जेस क्षेत्र में पहले किसी साधु साध्वी का पदार्पण हुआ ही नहीं एकदम नया त्रेत्र सचमुच बिना विश्वसनीयता के असमव था। वे आचार्य श्री के अतरग श्रावकों में से एक थे। जब तक आचार्य श्री नानेश की कीर्ति रहेगी बोहरा जी का नाम भी आदर से लिया जावेगा।

उदार हृदय

उन्होंने धन-अर्जन किया तो विसर्जन भी किया। धर्मपाल क्षेत्र तो उनका मुख्य कार्य क्षेत्र था। पदयात्रा सम्मेलन आदि के अवसर पर उनकी उदारता
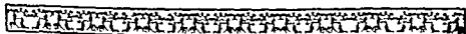
का प्रत्यक्ष दर्शन होता था। उनकी उदारता ने ही उन्हें धर्मपाल सम्बोधन प्रदान किया।

आचार्य श्री नानेश की ऐतिहासिक धर्मपाल क्रांति को गति देने में बोहराजी का संघ एवं समाज पर असीम उपकार है। श्री बोहरा जी, रामीरमल जी काठेड समाज सेवी श्री मानव मुनि जी जैसे कर्मठ व्यक्तियों का सहयोग सोने में सुगंधवाला प्रमाणित हुआ। धर्मपाल समाज को श्रावक श्राविकाओं के साथ साधु साध्वियों का भी भरपूर सहयोग मिलता रहा। आज आवश्यकता है आचार्य श्री की इस क्रांति को आगे बढ़ाने हेतु चतुर्विध संघ के जुट जाने की एवं बिखरी हुई शक्तियों को इस हेतु संयोजित करने की ताकि जिनशासन की महान् प्रभावना हो सके।

दीर्घ दृष्टि सम्पन्न यशोदाजी

बोहरा जी का निधन संघ एवं समाज की अपूरणीय क्षति है। श्रीमती यशोदा देवी बोहरा का जीवन श्री गणपत राज जी के विचारों से ओतप्रोत धर्मपाल समाज को समर्पित रहा है। उन्होंने भी इस समाज के उत्थान की भावना से काफी त्याग भी किया। श्रीमती बोहरा की दीर्घ दृष्टि थी। उन्होंने कुछ साधुओं के लिए वर्षों पूर्व संकेत दे दिया था कि ये संघ के योग्य नहीं, फलस्वरूप कालान्तर में उन साधुओं ने गुरु द्रोह किया। शासन समर्पण पूर्ण दृष्टि जब गहरी होती है तो भविष्य आर-पार दिखता है।

श्री बोहरा दंपति के शासन प्रेम संघ निष्ठा गुरु भक्ति धर्म प्रभावना की भावना से बोहरा परिवार ही नहीं चतुर्विध संघ प्रेरणा लें— यही मंगल कामना है।

> धर्मपाल के प्राण थे दानी गणपतराज।
> श्रावक गुरु नानेश के बोहरा कुल के ताज।।
> धर्मपाल माता बनी श्राविका गुणवान।
> यशोदा जस पा गई जिन शासन दरम्यान।।

द्वारा सारोठ

बोहरा दम्पति प्रेरक, गरिमामय व्यक्तित्व

—शांतिलाल सांड अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन संघ—

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के पूर्व अध्यक्ष समाज रत्न धर्मपाल पिता सिद्ध उद्योगपति और समाज सेवी श्री गणपत राज जी बोहरा की पार्थिव देह आज हमारे समक्ष नहीं है किन्तु उनका यश शरीर आज भी जन-जन के मन में जीवित और जागृत है। श्री गणपतराज जी बोहरा का नाम लेते ही सहज रूप से अभिन्न उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा का भी स्मरण हो जाता है। श्री गणपतराज जी और श्रीमती यशोदा देवी जी ने 'एक प्राण दो देह सरीखा जीवन जिया। श्रीमती यशोदा माताजी सदैव छाया की भांति अपने पतिदेव श्री बोहरा जी के साथ रहती थी और अप्रमत्त भाव से पति सेवा करते हुए उन्हे अहर्निश समाज सेवा की प्रेरणा भी देती रहती थीं। यह जुगल जोडी संघ और शासन के प्रत्येक महत्त्वपूर्ण आयोजन म उपस्थित रहती थी। आप दोनों की सात्विक और सौम्य उपस्थिति सघ प्रमोद का हेतु बनती थी।

श्री बोहरा जी सघ अध्यक्ष रहे। श्रीमती यशोदा जी सघ की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति श्री अ भा सा जैन महिला समिति की अध्यक्ष रहीं। समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने अपने प्रथम चातुर्मास मे रतलाम में समता दर्शन का प्रतिपादन किया और चातुर्मास के तुरन्त पश्चात् मालव क्षेत्र में विचरण के समय इस समता दर्शन को व्यवहार के धरातल पर साकार करनेवाली धर्मपाल प्रवृत्ति का अमृत उपदेश दिया। श्री बोहरा जी और श्रीमती यशोदा माता जी आचार्य श्री नानेश के सकेत पर न्यौछावर होने को सदा तत्पर रहते थे और उन्होने धर्मपाल प्रवृत्ति के विकास का दायित्व स्वत प्ररणा से ग्रहण कर लिया। धर्मपाल क्षेत्र मे शिक्षा सस्कार चिकित्सा और सेवा के बहुआयामी कार्यों हेतु वे दोनों सर्वमावेन समर्पित हो गए। कृतज्ञ समाज ने उन्हे सिर-आखों पर बिठाया और धर्मपाल पिता और धर्मपाल माता के आत्मीय उदबोधन से पुकार कर अपने ह्रदय की भावनाओ को श्रद्धापूर्वक व्यक्त किया।

हुकम सघ की परम्परा मे उनकी अटूट आस्था थी। श्री बोहरा जी ने ज्योतिर्धर श्री जवाहराचार्य जी से खादी और स्वदेशी की जो प्रेरणा प्राप्त की उसके अनुरूप अपने जीवन का निर्माण किया। वे बड़े सौभाग्यशाली थे कि उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदादेवी जी ने भी अपने बाल्यकाल में ही दक्षिण

...ना का अवसर मिला। मैंने बोहरा जी के दोना अध्यक्षीय कार्यकालो की ...षताओं को भी अनुभव किया।

आज सघ ने मुझे सघ अध्यक्ष के गरिमामय आसन पर प्रतिष्ठत किया ... अपने पूर्ववर्ती अध्यक्षो को स्मरण करते हुए मुझे श्री बोहरा जी का सेवा ...धना और समर्पण युक्त कार्यकाल सदैव एक सात्विक प्रेरणा प्रदान करता है। ... बोहरा जी नि स्वार्थ सेवा के प्रतीक थे।

मैं बोहरा दपति के प्रेरक गरिमामय व्यक्तित्व को स्वय अपनी अपने ...रिवार की तथा सघ की ओर से विनम्र नमन करता हू। वे युग-युग तक सेवा ...र समर्पण के आदर्श बने रहेंगे।

—शाति निवास विल्सन गार्डन बैंगलोर

शुभाशुभफल

सासारिक आत्माओं के साथ कर्मों का बड़ा ही विचित्र खेल चलता रहता है। जिसे लोग भाग्य कहते हैं वह भाग्य कुछ नहीं होती है। उसके नाम से पूर्व सचित कर्मों का शुभाशुभ फल ही प्रकट होता रहता है। इस जन्म में पहले के जन्म का सामान्यतया आत्मा को ज्ञान नहीं होता है इससे वह नहीं जान जाती है कि पहले के जन्म मे उसके द्वारा क्या—क्या शुभ कार्य हुए हैं और क्या—क्या अशुभ कार्य ? शुभ कार्यों के पुण्यों का बन्ध होती है तथा पाप कार्यों से अशुभफल मिलती है। पहले के अलग—अलग कार्यों का ही इस जीवन में अलग—अलग फल दृष्टिगत होता है।

— 'लक्ष्य वेध' आचार्य श्री नानेश

ारिक शिक्षण म अग्रणी बनाने के लिए आज दिलीपनगर (रतलाम) में जो
ल छात्रावास चल रहा है यह आपकी ही देन है। शारीरिक अस्वस्थता
हुए भी धर्मपाल क्षेत्र के उत्थान हेतु कोई भी कार्यक्रम आयोजित किया
। था तो आप अग्रणी रहते थे। धन्य है आपका धर्मपाल भाईयों के प्रति स्नेह
वात्सल्य।

ृत समतादर्शी

धर्मपाल पदयात्रा चल रही थी आप श्री के अनुज श्री सपतराज जी का
एक्सीडेन्ट में देहावसान हो गया था हम समझ रहे थे कि आपश्री का
ना नहीं होगा पर आप दपति को पधारते हुए देखकर सभी आश्चर्यचकित
ये। पुन धर्मपाल पद यात्रा का प्रसग था। यात्रा का दूसरा दिन था। सभी
ुभाव बैठे हुए थे। आपके लिए लाईटनिग कॉल आया सूचना थी कि
के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज जी सा का कार एक्सीडेन्ट हो गया है आपको
बुलाया है। आपने फरमाया कि वह अब नहीं है और आपने श्रीमती यशोदा
जी को रवाना होने हेतु कहा। हमने आपको यह कह कर धैर्य बधाना चाहा
चोट आई होगी स्वस्थ हो जावेगे पर आपको भविष्य दृष्टिगोचर हो रहा
आपने फरमाया कि 'वह नहीं रहा' और आप वहा से पिपलिया कला के
रवाना हो गये। आपके जाने के पश्चात् दुबारा समाचार प्राप्त हुए कि श्री
सराज जी सा बोहरा नहीं रहे। पदयात्रा निरस्त कर दी गई तथा सवेदना
सभी पिपलियाकला पहुचे। आपने जिस तरह से समता धारण की जिस
ह का साहस रखा वह सबके लिए अनुकरणीय है। जिस व्यक्ति को
ानपुत्र का वियोग होता है वह कितना आर्तध्यान करता है पर आप जैसे
निष्ठ सघ प्राण भामाशाह परीक्षा मे खरे उतरे जरा सा भी आर्तध्यान नहीं
ा भी रूदन नहीं चेहरे पर केवल गभीरता दृष्टिगोचर हो रही थी। धन्य हैं
प धन्य है आपका जीवन मे समता का आचरण समता का व्यवहार।

द्भुत दानवीरता

किसी भी अर्थसग्रह के अवसर पर आप हमेशा सर्वप्रथम स्वेच्छा से दान
घोषणा कर देते थे और वह भी बहुत अच्छी राशि में। दूसरे सदस्य क्या
हयोग कर रहे हैं आप यह कभी नहीं देखते थे। हमेशा भावनापूर्वक अधिक
अधिक सहयोग दान करते थे।

समता का आदर्श यशोदा माता

–गुमानमल चोरडिया–

श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा धर्म सहायिका श्रीमान् गणपतराज जी सा बोहरा पिपल्याकला करुणामय वात्सल्यमूर्ति निष्ठावान श्रद्धाशील सुश्राविका थीं। बोहरा दपति में जहा श्री गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल भाईयो के उत्थान हेतु समर्पित थे वहीं यशोदा माताजी भी धर्मपाल बहिनों के उत्थान हेतु पूर्ण समर्पित थीं। आपसे धर्मपाल बहिनों की वेदना कठिनाई सहन नहीं होती थी। आप इतनी द्रवीभूत हो जाती थी कि आपने यह प्रण ले लिया कि जब तक धर्मपाल बहिनो की स्थिति में सुधार नहीं आयेगा तब तक मैं गद्दे का उपयोग नहीं करूगी। एक बार प्रवास के निमित्त एक धर्मपाल क्षेत्र के ग्राम मे गये यहा पर एक परिवार की झोंपड़ी आग मे स्वाहा हो गई तथा उस परिवार के पास छाया का अन्य कोई स्थान नहीं था। आपने तत्काल उस परिवार की झापडी बनाने के लिए सहयोग किया एव कहा कि ८ दिवस म तुरन्त यह झोंपडी बन जावे। जब भी पदयात्रा के दौरान उस क्षेत्र में जाना होता तो आप धर्मपाल बहनों को श्राविका के कर्त्तव्य का बोध देती थी। आपके हृदय मे अत्यन्त करुणा थी।

आप श्री अ भा सा जैन महिला समिति के अध्यक्ष सरक्षक पद पर विभूषित रही थी समिति ने आपके सरक्षण मे चहुमुखी उन्नति की। आपका सभी के प्रति मातृ तुल्य व्यवहार रहता था अत आपको सभी यशोदा माताजी के नाम से पुकारते थे। आपका जीवन एकदम सरल सादगीपूर्ण था। शारीरिक अवस्था रहते हुए भी आप आदरणीय बोहरा सा के साथ सघ–समाज के सभी कार्यक्रमों में साथ रहती थी। खादी की वेशभूषा का ही सदा उपयोग करती थी। आप सत–सतियों की सेवा में पूर्णतया समर्पित थी सच्चे अर्थों में आप अम्मा–पिया का दायित्व निभा रही थी।

जीवन की अतिम सन्ध्या में आपको कैन्सर की व्याधि ने जकड़ लिया जिसका पता ही काफी विलब से लगा पर भयकर वेदना को भी आपने समभावपूर्वक सहन कर समता का अद्भुत आदर्श उपस्थित किया। आप महान् सौभाग्यशाली रही कि पति की मृत्यु के कुछ दिवस पूर्व ही सौभाग्य मे ही आपने मृत्यु का वरण किया।

वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि कम से कम भव कर आप चिरशाति को प्राप्त करे।

–१७ जवाहरलाल नेहरू मार्ग जयपुर

गजब श्रद्धा

पूज्य आचार्य युवाचार्य श्री जी के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा थी। अन्त भावना थी कि आचार्य प्रवर का पदार्पण पिपल्याकला में हो और श्री अक्षयतृतीया के पारणे पर पिपल्या कला पधार आये। आपकी व पूरे की हार्दिक इच्छा थी कि आचार्य प्रवर का एक चातुर्मास पिपल्याकला हो साल की विनती के उपरात स २०४८ का चातुर्मास पिपल्याकला में चातुर्मास काल में आपने तन मन धन से जो सेवा की वह आदर्श प्रेरणास्पद है।

विनयवान् पूर्ण निष्ठावान

आपको आचार्य श्री जी से कुछ भी निवेदन करना हो पूर्ण विन साथ अर्ज करते थे एव आचार्य श्री जी जो फरमाते थे उसको शिरोधार्य थे। कभी यह विचार नहीं कभी यह आग्रह नहीं कि आचार्य श्री को मेरी माननी ही चाहिए परिपूर्ण समर्पण उनके जीवन का विशिष्ट गुण था।

जीवनकाल की सध्या मे आपको हरपिटीज नामक व्याधि ने घेर आपने समता पूर्वक सहन किया परवाह नहीं की। गत वर्ष ब्यावर मे भी आप पधारे ऊपर पधारने की शारीरिक अनुकुलता नहीं होने के नीचे ही विराज गये। ब्यावर में दीक्षा प्रसग पर भी आप पधारे चाहे कार विराजे रहे यह आपका सघ प्रेम आचार्य श्री युवाचार्य श्री के प्रति समर्पणा का द्योतक है।

देहावसान के कुछ दिवस पूर्व ही आपको रुग्णावस्था में आपके स्थान पर ही सघ ने शाल एव रजत गुलदस्ता से सम्मानित किया। काफी बहिन पधारे थे। सबको देखकर आप उस दिवस काफी प्रमुदित थे यह स्वधर्मी वात्सल्य का प्रतीक है।

यद्यपि भौतिक दृष्टि से आज आप हमारे बीच नहीं रहे पर आप हैं आपके प्रेरक प्रसग हमारे सम्बल हैं। वीर प्रभु से शीघ्र ही आपकी यानी मुक्ति की प्रार्थना।

—१७ जवाहरलाल नेहरू मार्ग

समता का आदर्श यशोदा माता

—गुमानमल चोरडिया—

श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा धर्म सहायिका श्रीमान् गणपतराज जी सा बोहरा पिपल्याकला करुणामय वात्सल्यमूर्ति निष्ठावान श्रद्धाशील सुश्राविका थीं। बोहरा दपति में जहा श्री गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल भाईयों के उत्थान हेतु समर्पित थे वहीं यशोदा माताजी भी धर्मपाल बहिनो के उत्थान हेतु पूर्ण समर्पित थीं। आपसे धर्मपाल बहिनों की वेदना कठिनाई सहन नहीं होती थी। आप इतनी द्रवीभूत हो जाती थी कि आपने यह प्रण ले लिया कि जब तक धर्मपाल बहिनो की स्थिति में सुधार नहीं आयेगा तब तक मैं गद्दे का उपयोग नहीं करूगी। एक बार प्रवास के निमित्त एक धर्मपाल क्षेत्र के ग्राम मे गये यहा पर एक परिवार की झोपड़ी आग मे स्वाहा हो गई तथा उस परिवार के पास छाया का अन्य कोई स्थान नहीं था। आपने तत्काल उस परिवार की झोंपड़ी बनाने के लिए सहयोग किया एव कहा कि ८ दिवस में तुरन्त यह झोंपडी बन जावें। जब भी पदयात्रा के दौरान उस क्षेत्र मे जाना होता तो आप धर्मपाल बहनों को श्राविका के कर्त्तव्य का बोध देती थी। आपके हृदय मे अत्यन्त करुणा थी।

आप श्री अ भा सा जैन महिला समिति के अध्यक्ष सरक्षक पद पर विभूषित रही थी समिति ने आपके सरक्षण मे बहुमुखी उन्नति की। आपका सभी के प्रति मातृ तुल्य व्यवहार रहता था अत आपको सभी यशोदा माताजी के नाम से पुकारते थे। आपका जीवन एकदम सरल सादगीपूर्ण था। शारीरिक अवस्था रहते हुए भी आप आदरणीय बोहरा सा के साथ सघ—समाज के सभी कार्यक्रमों मे साथ रहती थी। खादी की वेशभूषा का ही सदा उपयोग करती थी। आप सत—सतियों की सेवा मे पूर्णतया समर्पित थी सच्चे अर्थों में आप अम्मा—पिया का दायित्व निभा रही थी।

जीवन की अतिम सन्ध्या में आपको कैन्सर की व्याधि ने जकड़ लिया जिसका पता ही काफी विलब से लगा पर भयकर वेदना को भी आपने समभावपूर्वक सहन कर समता का अद्भुत आदर्श उपस्थित किया। आप महान् सौभाग्यशाली रही कि पति की मृत्यु के कुछ दिवस पूर्व ही सौभाग्य मे ही आपने मृत्यु का वरण किया।

वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि कम से कम भव कर आप चिरशाति को प्राप्त करे।

—१७ जवाहरलाल नेहरू मार्ग जयपुर

महान व्यक्तित्व के धनी श्री गणपतराजजी बोहरा

—सोहनलाल सिपानी—

साधुमार्गी जैन सघ के भीष्म पितामह धीर-वीर-गभीर मानस के और सदा प्रसन्न रहने वाले स्वनाम धन्य श्री गणपतराजजी बोहरा को कौन नहीं जानता ? कौन नहीं पहचानता ? भले ही भौतिक देह से आज हमारे बीच नहीं है मगर उनकी कार्य तत्परता और सेवा को समाज कभी भूल नहीं सकेगा। ज्ञान-दर्शन और चारित्र्य के धनी इस महामना में अदम्य उत्साह साहस और जोश था। श्री बोहराजी अपने पुरुषार्थ और सौजन्य के बलपर चतुर्विध सघ में एक गौरवशाली स्थान बनाकर सन्त समुदाय के विश्वसनीय व्यक्ति बन गये।

श्री बोहराजी की आचार्य नानेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी अनन्य भक्ति भाव था इसी भक्ति भाव से श्री बोहराजी ने पीपलिया कला में आचार्य श्री का चातुर्मास सम्पन्न कराया था। आचार्य नानेश के धर्म और साधना परमाणुओं से भी बोहराजी का जीवन धन्य हुआ था सम्पन्न बना था सुखी हुआ था। फल स्वरूप उनमें कार्य करने की एक नई उमग नई चेतना नई स्फूर्ति और नव जोश उमडा था। आचार्य नानेश की निष्काम धर्म कृपा से ही कर्मयोगी के रूप में श्री बोहराजी जैसे धर्मप्राण सेवाभावी और उदार व्यक्तित्व को पाकर समाज गौरवान्वित हुआ था।

श्री बोहराजी स्वभाव से बड़े सरल सात्विक विनोद प्रिय आत्मीयता लिए हुए और माधुर्य से भरे हुए थे। वे मानवता के सच्चे पुजारी थे। श्री बोहराजी ने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया और कभी किसी का बुरा नहीं किया। लोक कल्याण ही उनके जीवन का सदुद्देश्य था। वे सभी का दिल जीतने वाले श्रेयार्थी पुरुष थे। अपनी सद्भावनाओं और सत कार्यों से साधुमार्गी जैन सघ की कीर्ति बढाने वाले और सन्त समुदाय में प्रेम और एकता स्थापित करने वाले वीरपुत्र थे।

चतुर्विध सघ से आपका सहज स्नेह था। ऐसे धर्मनिष्ठ और भावनाशील व्यक्तित्व को पाकर धर्म और समाज झूम उठा था। श्री बोहराजी का दिल दया करुणा और स्नेह से भरा हुआ था धर्मपाल सदस्यों में सत्य और अहिंसा का प्राण फूकने वाले आप पहले व्यक्ति थे। आपने उनका जीवन खान पान रहन-सहन आचार विचार बदल दिया था और उन्हे आचार्यश्री के निष्ठावान
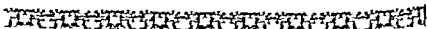
क्त बना दिये।

श्री बोहराजी महान् व्यक्तित्व के धनी थे। नम्रता शालीनता और सज्जनता के अक्षय कोष थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवीजी धर्मपरायण महिलारत्न थीं। नारी जीवन के उत्थान में उनका नाम सदा बडे आदर के साथ लिया जायगा।

मुझे स्मरण है मद्रास मे श्री धर्मेश मुनि जी के कोडम ाकम चातुर्मास मे बैंगलोर सघ गया था। उस समय श्री बोहराजी ने सघ का अभिनन्दन कर जिस लगन और भावना के साथ उनको ठहराने आदि की बड़ी सुन्दर व्यवस्था की थी– जो सराहनीय रही।

श्री बोहराजी का जब कभी बैंगलोर पदार्पण होता था तब आप बिना मिले कभी नहीं जाते थे। समाज और धर्म सम्बन्धी मार्ग दर्शन कर जाते थे। बडे स्नेह के साथ साधु सन्तो की सवा करते हुए अपने व्रत-नियमो सकल्पो और भक्ति भाव मे दृढ थे। ऐसे प्राणवान सपूत के प्रति मेरी भावभीनी हार्दिक श्रद्धाजलि है। वे जहा कहीं भी हो हमारा मार्गदर्शन करते रहें यही– मगल कामनाए हैं।

–बैंगलोर

''शुभ अशुभ कर्म

'शुभ या अशुभ जैसे भी कर्मों का बन्ध एक बार यह आत्मा करती है उनके शुभ अशुभ फल को भोगे बिना उन कर्मो से छुटकारा नहीं मिलता किन्तु जो अशुभ फल को भोगते समय भी पुन अशुभ भाव नहीं लाता और समता भाव से उसे भोगता है वह पुराने कर्मों का क्षय करता है और नर्म अशुभ कर्म नहीं बाधता। इस प्रकार कर्म–क्षय करते हुए आत्मा एक दिन पूर्ण मुक्तावस्था को प्राप्त कर सकती है।

– 'लक्ष्य वेध' आचार्य श्री नानेश
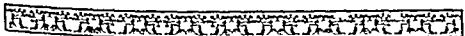
सरल, सहज, सौम्य श्री गणपतराजजी बोहरा

—सरदारमल काकरिया—

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गणपतराजजी बोहरा अत्यन्त धर्मनिष्ठ उदार सहृदय एव सरलमना थे। वे आचार्य श्री नानालालजी म सा के अत्यन्त श्रद्धालु एव सघ के प्रति सर्वतोभावेन समर्पि विरल व्यक्ति थे। करुणा से प्लावित उनका हृदय किसी असहाय एव दीन दु को देखकर सहज द्रवित हो उठता था एव उसकी हर सभव सहायता के लि तत्पर रहते थे।

मालवा क्षेत्र मे विचरण करते हुए परम श्रद्धेय आचार्य श्री जब ग्राम क्षेत्रों में गये तो वहाँ की बलाई जाति जो मद्य मास एव अन्य दुर्व्यसनों शिकार थी ने उनके उपदेशामृतों का पान किया तो उनमें दुर्व्यसनों के प्रति घृ उत्पन्न हो गई और उन्होंने उनको त्यागने का सकल्प श्रद्धेय आचार्य प्रवर समक्ष व्यक्त किया। आचार्य प्रवर ने उन्हें धर्मपाल नाम से विभूषित कि और देखते ही देखते बलाई जाति के हजारों स्त्री पुरुषो ने दुर्व्यसनों का त्य कर दिया यह एक असाधारण घटना थी। वस्तुत यह बीसवीं सदी का ए चमत्कार कहा जा सकता है कि हजारों हिंसक एव दुर्व्यसनों से लकद व्यक्तियो ने अहिंसा एव सदाचरण का मार्ग अपनाया।

साधुसत तो बहते पानी की तरह होते हैं। आचार्य प्रवर तो उस क्षेत्र अपने उपादेशामृतों का पान कराते हुए अन्य क्षेत्रो की तरफ विचरण के लि चले गये। तब इस दायित्व के निर्वाह का भार साधुमार्गी जैन सघ ने सभाल सघ ने उस क्षेत्र के गावों मे धर्म के प्रचार की आवश्यकता को अनुभव कर हुए धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना का निश्चय किया एव इसके लिए सा निष्ठ महानुभावो से अपील की।

श्री गणपतराजजी बोहरा ने आगे बढ़कर इस दायित्व को सभाला ए अनेक ग्रामों की धार्मिक पाठशालाओं एव समता भवन के निर्माण के लिए उन्हें मुक्त हाथों से अनुदान दिया।

मालवा के इन क्षेत्रों में व्यसन मुक्ति का आन्दोलन सुदृढ करने हेतु प्रत्येक वर्ष सप्ताह भर होली से पूर्व पदयात्रा का आयोजन किया जाता. उनमें
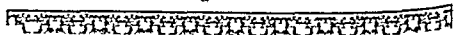
सघ के पदाधिकारियो के साथ महिला समिति की सदस्याए एव अनेक व्यक्ति सम्मिलित होते। श्री बोहराजी के साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदादेवी बोहरा भी इसमे बराबर सम्मिलित होती एव वे सब के साथ पदयात्रा करते। उस समय श्री बोहराजी अपने सूटकेश म रुपया भरकर लाते। उन गावों के लोग जब भी धार्मिक पाठशाला एव अन्य किसी कार्य के लिए सहयोग राशि की माग करते तो बोहराजी मेरी तरफ देखते एव मेरा इशारा पाते ही वे उन्हे इच्छित राशि बिना किसी झिझक के प्रदान कर देते। निश्चय ही वे इस सघ के भामाशाह थे।

वे धर्मनिष्ठ होकर भी धर्मान्ध नहीं थे। उनके विचार अत्यन्त उदार और मुक्त थे। उनमे गजब की सहनशीलता थी। मैंने उन्हे कभी क्रोध करते नहीं देखा। अक्रोध ही उनका स्वभाव था। क्षमा जैसे उदात्त गुणो से समन्वित उनका जीवन आदर्श और अनुकरणीय रहा है। यदि उन्हें अजातशत्रु कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

अतिथि सत्कार उनके रग रग मे समाया था। अनेक बार उनके यहा पीपलिया कला एव मद्रास या बड़ौदा ठहरने का मुझे अवसर मिला।

उनका आतिथ्य भाव देखकर दग रह जाना पड़ता था। वे हर सुख सुविधा का ख्याल रखते एव सेवा हेतु सदैव तत्पर रहते थे।

उनके अध्यक्षत्व काल में सघ ने जो प्रगति की एव उसका अखिल भारतीय स्वरूप बना वह उनकी सघनिष्ठा अथक श्रम एव अध्यवसाय का परिचय था। सघहित अथवा प्रचार प्रसार के लिए जो भी प्रवास कार्यक्रम बनता उनमें बोहराजी का नाम सर्वप्रथम रहता एव कभी किसी यात्रा या प्रवास के लिए वे इन्कार नहीं करते। वृद्धावस्था मे भी सघ के अध्यक्ष पद का भार उन्होंने अत्यन्त निष्ठापूर्वक सभाला एव शासन की जाहोजलाली में कोई कसर उठा नहीं रखी। यदि मैं यह कहूँ कि श्री बोहराजी और सघ एक दूसरे के पर्याय थे तो असगत नहीं होगा। वे अपनी धर्मनिष्ठा एव बलाई जाति के अभ्युदय में सदैव सचेष्ट रहने के कारण धर्म पिता कहलाये। इस विरुद का उन्होंने मृत्यु पर्यंत निर्वाह किया। ऐसे धर्मनिष्ठ बोहराजी को मेरी अशेष श्रद्धाजलि।

—कलकत्ता

❑
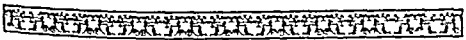
सघ सिरमौर बोहरा दम्पत्ति

—रिघकरण सिपाणी—

मैं और मेरा परिवार समता विभूति आचार्य श्री नानेश की नेश्राय के प्रति अनन्य निष्ठा रखते हैं। हुकम सघ की परम्परा म हम सब की अविचल आस्था है। मेरे बडे भाई श्री सोहनलाल जी सिपाणी श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के प्रति पूर्णत समर्पित हैं। उन्होने सघ सेवा का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। वे सघ के उपाध्यक्ष श्री सु साड शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष और श्री समता प्रचार सघ के अध्यक्ष सहित सघ की सभी सेवा और लोककल्याणकारी प्रवृतियों मे अग्रणी रहते हैं किन्तु मेरा सघ अध्यक्ष बनने से पूर्व सघ में ऐसा व्यापक सम्पर्क और सेवाकाल नहीं रहा। परिवार की और बड़े भाई साहब की सघ सेवाओं में एक परिवार सदस्य और अनुज के नाते समय-समय पर थोड़ा बहुत सघ सम्पर्क और सघ सेवा का सौभाग्य जरुर मिलता रहता था। हाँ आचार्य श्री जी म सा क दर्शन-वदन-श्रद्धा-सेवा मे जरूर मेरा मन रमा रहता था।

इसलिए जब श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के प्रमुखजनों ने मेरे समक्ष सघ अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव रखा तो मैं सहसा स्तब्ध सा हो गया। इस विराट सघ का दायित्व मैं अपेक्षाकृत अभिनय व्यक्ति कैसे सुचारु रीति से सचालित कर पाऊगा—यह चिन्तन बराबर मन को मथता रहता था। सकल सघ के आग्रह से मैंने २८.६.६२ को सघ अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण किया और ४ वर्षों तक अध्यक्ष पद पर रहा। इस अवधि में मुझे स्वर्गीय श्री गणपतराज जी बोहरा का जो आत्मीय और सक्रिय सहयोग मिला वह गजब का था।

श्री बोहरा जी सघ के पूर्व अध्यक्ष तथा सकल सघ के हृदयों पर राज करने वाले सघ प्रमुख थे। वे वृद्ध थे किन्तु सहयोग के क्षेत्र में उनकी पहल जवानों को मात करती थी। प्रत्येक सघ अधिवेशन में प्रत्येक धर्मपाल प्रवास में वे उपस्थित रहते थे। उनकी उपस्थिति मात्र ही इतनी प्रभावशाली होती थी कि कोई भी शब्द या शब्दावली उस प्रभाव का वर्णन नहीं कर सकती। सौम्य धीर-गभीर उदार और सेवा समर्पित श्री बोहरा जी की शुभ्र खादी वस्त्रों की वेश-भूषा से मडित उनका व्यक्तित्व सम्पूर्ण सभा मडप में एक महान् प्रभाव की
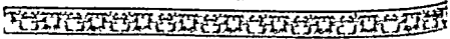
वर्षा करता रहता था। उनके सदैव छाया की भाति साथ निभाने वाली उनकी सहधर्मिणी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा भी रहती थी। दोनो मिलकर सघ सेवा का आदर्श प्रतिक्षण प्रतिपल उपस्थित करते रहते थे।

सघ अध्यक्ष के मेरे कार्यकाल म एक पूर्व सघ अध्यक्ष द्वारा जो सहयोग दिया गया वह अद्वितीय था। वे इतनी सहजता से सहयोग प्रदान करते थे वे इतने निरभिमान और निश्छल भाव से साथ निभाते थे कि मुझ जैसे नवीन अध्यक्ष का भाव विह्वल हो जाना स्वाभाविक था।

परिवार मे ज्येष्ठ की भूमिका का श्री बोहरा जी और सौ श्रीमती यशोदा माता जी इतनी लगन से निर्वाह करते थे कि आज भी वे क्षण याद आते हैं तो हृदय गद्गद् हो जाता है।

श्री गणपतराज जी बोहरा और श्रीमती यशोदा देवी जी अपने इन्हीं गुणो के बल पर सभी पदो से परे जीवन पर्यंत सघ सिरमौर बने रहे। आज भी वे सघ सदस्यों की प्रेरणा हैं। उन दोना दिव्य आत्माओ को नमन।

—बैंगलोर

❑

स्वार्थ

अधिकाशत सासारिक समस्याए स्वार्थ की उपज होती है। अमुख पदार्थ मुझे ही मिलें या मैं ही उन्हें अपने अधिकार मे रखू—जब ऐसी कामना प्रबल रहती है तभी समस्याऍं पैदा होती है विवाद बढ़ते हैं तथा राग—द्वेष की परिणति होती है।

— 'लक्ष्य वेध' आचार्य श्री नानेश
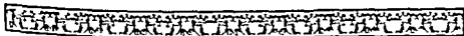
युग-पुरुष श्री बोहराजी

—धनराज बेताला—

श्रीमान् गणपतराज जी सा बोहरा उदारमना सहृदय पुरुषार्थ
और धर्मसघ के लिए समर्पित व्यक्ति थे। उनके निधन से सघ की अपूरणीय
हुई है और इस क्षति की पूर्ति अन्यन्त कठिन है। श्री बोहरा सा. श्री
जैन सघ की स्थापना से ही इसके उद्देश्यो की पूर्ति हेतु अप्रमत्त भाव से
रहे। उन्होने सघ उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अथक परिश्रम किया।

परम पूज्य आचार्य श्री नानेश के आचार्य काल में चतुर्विध सघ
अभिवृद्धि हेतु जितने भी आयाम स्थापित हुए उन सभी में श्री बोहरा
यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। बलाई भाई-बहिनो को कुव्यसन मुक्त
धर्मपथ की तरफ बढा सस्कारित कर धर्मपाल जैन बनाने में श्री गणपतराज
बोहरा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी ने सर्वभावेन सह
किया। इन कार्यों को बोहरा दम्पत्ति ने अपने जीवन ध्येय के रूप में अप
और धर्मपाल समाजोत्थान के महान् यज्ञ मे अपनी सार्थक भूमिका निभ
अमर हो गए।

बोहरा दम्पत्ति ने उन बलाई भाई बहिनो-बच्चो के बीच जाकर
एकात्मता स्थापित की। उनकी विषम परिस्थितियो में उन्हें धैर्य बधाया, वि
मे लेकर धर्मसघ की ओर अभिमुख किया। इस पर कृतज्ञ धर्मपालों ने
धर्मपाल पिता के रूप में स्वीकार किया। श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा ने
परिवारो के बीच में जाकर जिस अपूर्व आत्मीयता के साथ उन्हे स्नेह
सस्कार दिया उससे वे उन्हें धर्मपाल माता के रूप मे पुकार उठे।
बोहरा दम्पत्ति का त्यागमय स्नेहमय जीवन धर्मपाल क्षेत्र में परिव्याप्त है
अनुभव किया जाता है।

श्री बोहरा सा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के वर्षों तक अध्यक्ष
आप दीर्घ अन्तराल से दो बार सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गए। आपकी धर्म
श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा भी श्री अ. भा सा जैन महिला समिति
अध्यक्षा निर्वाचित हुई और जीवन पर्यन्त समिति की सरक्षिका रही।
जीवनकाल में बोहरा दम्पत्ति ने गाड़ी के दो पहियों की साथ-साथ गति
उपमा को साकार करके दिखा दिया। वे साथ-साथ जिए और

साथ मरे।

आप दोनो के जीवन की बहुआयामी प्रवृत्तिया आप दोनो की सरलता ा और पुरुषार्थ भावी पीढियों के लिए सदा प्रेरणा देती रहगी। आज बोहरा ो हमार बीच नहीं है किन्तु उन दोनो द्वारा किए गए सत्कार्य श्री अभा ार्गी जैन सघ के प्रत्येक सदस्य के लिए एक सुन्दर पथ का निर्देश हैं।

स्व श्री बोहरा सा के धर्मनिष्ठ पारिवारिकजन उनके सुपौत्र सर्वश्री जी अशोक जी व अभय जी बोहरा तथा इन तीनो की पूज्या मातुश्री से को पूर्ण आशा है और ये सभी भी इस दिशा म सकल्पित हैं।

ऐसे नरपुगव बोहरा दम्पत्ति को मेरी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित है। मैं नदेव से उनकी चिर शाति की कामना करता हू।

—मत्री श्री सु साड शिक्षा सोसायटी नोखा

□

जिन्दगी

जिन्दगी सागर की भाँति है। सागर मे कभी ज्वार तो कभी भाटा। कभी लहरों के वेग के कारण सागर की जल–तरगें उछलने लगती हैं तो कभी सागर एकदम शान्त और गभीर हो पड़ता है।

हमारी जिन्दगी भी सागर की तरह ही है। इसमें भी कभी चढ़ाव तो कभी उतार आते ही रहते हैं। कभी अनुकूलताएँ तो कभी प्रतिकूलताएँ कभी सुख तो कभी दु ख कभी सपत्ति का पार नहीं तो कभी विपत्तियों की सीमा नहीं कभी जगल तो कभी मगल कभी लाखो सलाम भरने वाले मिलते हैं तो कभी कोई सामने देखने वाला भी नहीं होता ॥

ऐसी विचित्रताओं और विविधताओं से उफनती जिन्दगी मे जो अपने चित्त को समतोल रख कर प्रसन्न रह सकता है वही व्यक्ति जीवन के वास्तविक आनन्द को पा सकता है।

सुख–दु ख अनुकूलता–प्रतिकूलता आदि सब कुछ कर्माधीन हैं किन्तु जब मनुष्य अपने कर्म के विचार को भूल कर निमित्त को प्रधान बना देता है तब उसकी जिन्दगी आर्तध्यान की आग में झुलसने लगती है।

यदि बचाना है अपनी जिन्दगी को आर्तध्यान की आग से तो हम दुख के हर प्रसग में 'निमित्त' को गौण कर 'कर्म को मुख्य बनाना सीखें।

—मुनि रत्नसेन विजय

एक स्तम्भ ढह गया—

महामनीषी श्री गणपतराजजी बोहरा, व श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, छोड गए मधुर स्मृति

—चम्पालाल डागा—

२१ दिन के अन्तराल में आदर्श दम्पति समाज में अपनी मधुर [illegible] छोड़कर चले गये। शायद किसी ने कल्पना ही नहीं की होगी कि २० [illegible] को धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी के स्वर्गवास के पश्चात् स्वय श्री बोहर[illegible] भी १६ अगस्त को हमारे से जुदा हो जावेगे।

इनका बहुआयामी व्यक्तित्व सघनिष्ठा अपरिमित मनोबल [illegible] और अगाध भक्ति सघ मेरुदण्ड भामाशाह के समान उदारता धर्मपत्नी [illegible] अपार स्नेह स्वधर्मी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति सेवा व शिक्षा के प्रति [illegible] मधुर मुस्कान धीमा स्वर कम शब्दो में सारभूत बातो का कथन सादा [illegible] व ढेर सारी आत्मीयता की बातें स्मृति-पटल पर एक के पश्चात् [illegible] रही हैं।

आप सघ के स्तम्भ थे। आपकी उपस्थिति हुए बिना सघ का [illegible] प्रवास मीटिंग सभा अधिवेशन कार्यक्रम फीका-फीका लगता था। [illegible] के प्राण थे। सघ प्रमुखों के बीच सबसे पहले आप के नाम से अनुदान [illegible] होता था। आपने कभी इन्कार किया हो ऐसी स्मृति में नहीं है। हर [illegible] आपकी स्वीकृति ही रहती थी। ऐसा दानवीर भामाशाह मेरे देखने में दूसरा [illegible] आया। न नाम की चाह न कभी ऊहापोह गजब के व्यक्ति थे।

मुझ पर आपका पुत्रवत् स्नेह रहा। आपके सान्निध्य मे वर्षो सघ [illegible] कार्यों को गति देने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। आपके निर्देशन में [illegible] प्रवृत्तियों का सचालन किया।

आप जब भी बीकानेर पधारते मेरे निवास को अवश्य पवित्र [illegible] अनेक प्रसग विचार-विमर्श के उपस्थित होते। जब-जब भी शादी आदि [illegible] प्रसगो पर आपको याद करते तो आपका पदार्पण होता ही।

सघ के सभी कार्य प्रवृत्ति व योजना का शुभारम्भ आपके नाम से

। था। आप स्वय सघ थे।

परम पूज्य समता विभूति आचार्य प्रवर युवाचार्य प्रवर व आज्ञानुवर्ती
सतियाजी म सा के प्रति आपकी एकनिष्ठ श्रद्धा थी। वर्ष मे कई बार
न प्रवचन सेवा का लाभ लेते ही रहते थे। आपकी प्रबल भावना के अनुसार
पूज्य आचार्य प्रवर का पीपलियाकला चातुर्मास हुआ जो अत्यन्त आदर्श
र्मास था।

आपके सभी कार्यों में श्रीमती यशोदा देवी बोहरा का पूर्ण सहयोग रहता
दोनो (दम्पत्ति) साथ-साथ ही रहते थे। आपने सभी क्षेत्रों मे जीवन की
ग्र ऊचाइयों को छुआ। धार्मिक सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक सभी क्षेत्रो
आपको बहुमान मिला।

आज आप दोनो हमारे मध्य नहीं हैं परन्तु आपके आदर्श विचार व
ना तथा गुण हमारी अक्षुण्ण निधि हैं। आपके निधन से सघ और समाज की
अपूरणीय क्षति हुई है।

आपके पुत्र व पौत्र भी आपके आदर्श कदमो पर चलने वाले हैं विनयी
मिलनसार हैं व सघ के कार्यों म रुचि के साथ भाग लेते हैं। अब समाज को
नसे बहुत बडी आशाए हैं। आप आदरणीय बोहरा सा के कदमो पर चलत
उनका नाम और रोशन करेंग इसमे कोई सन्देह नहीं है।

आपके अतिम दर्शन का सौभाग्य ब्यावर दीक्षा के प्रसग पर मिला। मैं
साथियों सहित पीपलियाकला गया व आपके साथ कुछ समय रहा।

वह दिव्य विभूति महाविभूति म विलीन हो गई। वह आत्मज्याति हमारे
का प्रदर्शन करने हेतु दिव्य ज्योति बन गई।

आपके आदर्शों के बारे में तो लिखता ही जावू ता भी कलम चलती रहेगी
रन्तु आखे नम हो गई है भावविभोर हो गया हूँ।

ऐसे महान् मनीषी को मेरे शत-शत प्रणाम व श्रद्धाजलि अर्पित है।

—सम्पादक-श्रमणोपासक बीकानेर।

❑

जिस शिक्षा की बदौलत गरीबों के प्रति स्नेह, सहानुभूति और करुणा का भाव जागृत होता है और विश्वबन्धुता की ज्याति अन्त करण में जाग उठती है, वही सच्ची शिक्षा है।

— आचार्य श्री जवाहर

प्रेरणा के स्रोत बोहरा दम्पत्ति

—निर्मला देवी घोरड़िया—

समाज भूषण महान् सेवाभावी विनय-सरलता की खान देव गुरु प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी, सघ समाज उत्थान में सतत् सहयोगी श्रद्धेय बोहरा दम्पत्ति जिन्हें आज सम्पूर्ण जैन प्रेरणास्तम्भ मानकर उनके पदचिन्हों का अनुसरण कर रहा है। तद्रुप है आदरणीय बोहरा दम्पत्ति के लिए जैसा सुना था प्रत्यक्ष सपर्क होने पर कहीं अधिक गुणों का समावेश उनके जीवन में देखकर मुझे अपूर्व हर्ष जिसकी अभिव्यक्ति इनके सक्षिप्त जीवन परिचय के माध्यम से किया [illegible] नहीं है।

श्रद्धेय गणपतराज जी बोहरा ने शिक्षा व्यवसाय में सफलता प्राप्त के साथ-साथ राष्ट्रधर्म एव समाजोत्थान के जो अपूर्व कार्य किये वह [illegible] समाज के उत्थान से स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। आपने सघ समाज के [illegible] के साथ ही साथ अपने जीवन में समता करुणा उदारता को जो स्थान दि[illegible] स्तुत्य है।

श्रद्धेया यशोदा माताजी जो सदैव अपने पति के धार्मिक स[illegible] उत्थान के कार्यों में छाया की भाति सहयोगी बनी रही ने सच्चे अर्थों में [illegible] धर्मपत्नी होने का प्रमाण समाज के समक्ष रखा है। श्री अ भा सा. जैन [illegible] समिति की स्थापना से लेकर अपनी जीवन यात्रा की सध्या तक उन्होंने [illegible] महिला समिति/महिला समाज के उत्थान हेतु चितन/सहयोग दिया। [illegible] दिनों पूर्व ही आपने मुझे मार्गदर्शन दिया कि "महिला समिति की बढ़ोतरी [illegible] के लिए हमें प्रतिपल सजग रहना चाहिए"। धन्य है ऐसी महिला रत्न को जो [illegible] से ज्यादा चितन सघ/समिति एव समाज के उत्थान का रखती थी।

आज सम्पूर्ण जैन समाज आप दोनो को धर्मपाल पिता-माता के [illegible] याद करता है। आपके गुणों का बखान करने की इतनी शक्ति मेरी लेखनी में [illegible] है उनके गुण-कार्य अथाह समुद्र की भाँति हैं जो प्रतिपल प्रति[illegible] सघ/समाज/देश के उत्थान हेतु प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। पूज्य आचार्य युवाचार्यश्री एव सत-सतियों जी म.सा के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा [illegible] आपकी आत्मा को अपने चरम लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक बनें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ [illegible] नमन।

—२ भैरवपथ मोती डूगरी, [illegible]
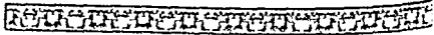
हे-देव-अमर-पुरुष

—केसरी चद गोलछा—

श्री बोहरा साहब श्री महावीर शासन' के प्रभावक शासननिष्ठ सुश्रावक आपका जब द्वितीय बार सघ अध्यक्ष हेतु मनोनयन हुआ उस समय आपकी ...ाय मे मुझे कोषाध्यक्ष के पद पर कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आप ...र्यालय व्यवस्था हेतु जब भी बीकानेर पधारते तो रात्रि विश्राम मेरे आवास ... करते। इस कारण आपका सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ एव सेवा करने की प्रेरणा ...प्त हुई।

आप आदर्श व्यक्तित्व के सच्चे कर्मठ सेवा-भावी समाजरत्न थे। सरलता-...जुता आपके जीवन की मुख्य विशेषता थी। अनुशासनप्रियता आपके जीवन ... साध्य था। हुक्म शासन के आप प्राण थे। शासन की सेवा अपने तन मन ...न से निष्काम भाव से की तथा आपका चितन पारदर्शी था।

बलाई जाति के लोगो के बीच जाकर आचार्य श्री नानेश ने सस्कारित ...विन जीने की पद्धति का जो उपदेश दिया उसको साकार करने हेतु जो ...थक प्रयास ग्रामानुग्राम घूम घूमकर आपने किया वह बेजोड है। उसका श्रेय ...र्मपाल पिता के रूप मे आपको मिला। आप मालवा क्षेत्र मे जन जन के प्रिय ...न गये।

जब भी सघ का निर्णय सगठन या प्रवास हेतु हुआ आपने अपना अमूल्य ...मय और साधन सदैव अर्पित किया। आप समाज में अजातशत्रु के समान थे। ...पके प्रत्येक निर्णय को समाज ने आदेश रूप मे स्वीकार किया तथा समाज ...ने आपको 'सघ भामाशाह के सम्बोधन से अलकृत किया।

वर्तमान आचार्य श्री नानेश एवम् युवाचार्य श्री रामेश के शासन की ...भावना का सकेत आपको मिलते ही आप तुरत सेवा मे उपस्थित होकर दर्शन लाभ प्राप्त करते तथा प्राण प्रण से कार्य मे लग जाते। हर मगल उत्सव पर आपकी उपस्थिति समाज के लिए प्रेरणादायी होती। सच्चे अर्थो मे आप समाज के सच्चे मसीहा थे।

आपके जीवन के अत समय में समाज ने आपका आपके परिवारजनों के मध्य आपके ग्राम पिपलियाकला जाकर अभिनदन' किया परन्तु सच्चे अर्थों में

यह आपस प्रेरणा प्राप्त करने का अतिम मगल उत्सव था। जीवन के
बेला म आप एक सन्यासी की भाति धीर-वीर-गभीर-निष्काम तथा
के रूप मे परिलक्षित हो रहे थे।

भावी ने हालाकि हम लोग से आपको शरीर पिंड रूप से
लिये दूर कर दिया परन्तु छाया रूप मे आज भी आप सघ के प्रेरणा
जिस यश और गौरव को आपने अपने जीवन काल में पूज्य गुरु
और समाज से प्राप्त किया उससे आप सदा-सदा के लिए कालजयी
गये हैं। आपकी गौरव गाथा समाज इतिहास मे स्वर्ण अक्षरों में लिखी
धन्य है आपका जन्म लेना और धर्ममय पुरुषार्थ के साथ जीकर मृत्यु
में अमरत्व को प्राप्त करना। हे-देव-अमर-पुरुष आपको शत शत-वदन

—महावीर चौड़

गणपति यशोदा श्रद्धाजलि

—महावीरराज एम के सचेती —

प्रेम पुत्र पारस पिता गुणमूर्ति गणपतराज।
यशोदापति नानेशभक्त श्रावक सघ सरताज।।
समाज सेवी शिक्षा प्रेमी राष्ट्र भक्त सेनानी।
उद्योगपति दानवीर थे मधु रस जैसी वाणी।।
धमपाल पितामह थे सघों के अध्यक्ष।
सस्थाओं के प्राणरूप थे निर्मल था सदु पक्ष।।
स्थानक हॉस्पिटल आदि स्कूल छात्रावास।
बहुविध देकर सस्थाओं को पूरी सबकी आश।।
नाना गुरु का परम पुजारी पिपल्या का पूत।
मात यशोदा से कुछ पीछे चला सघ का दूत।।
शाश्वत शाति मिले आपको यही भावना भाते हैं।
गणपत और यशोदा को हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।।

—डौंडी लोहारा (दुर्ग-म.प्र.)

सेवा व सघनिष्ठता के पुरोधा

—जयचन्दलाल सुखानी—

सादगी सारल्य सहजता सेवा परायणता एव सघनिष्ठता समन्वित रणीय बोहरा सा का जीवन आदर्श रूप एव प्रेरणास्पद था। आचार्य श्री श द्वारा प्रतिबोधित धर्मपाल समाज के उन्नयन हेतु सर्वतोभावेन समर्पित र आपने जो अथक परिश्रम किया है वह बेजोड है और सामाजिक क्रान्ति तिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

वस्तुत बोहरा परिवार की सघ व शासन के प्रति अनन्य निष्ठा व नेष्ठ आस्था रही है तीन पीढियों द्वारा तन-मन-धन से योगदान इस परिवार पृथक पहचान है। बोहरा सा व श्रीमती यशोदा देवी जी ने समय दान दकर देव की व्यसन मुक्ति व सस्कार क्राति को मूर्ति रूप देने मे जो अलख जगाई से भुलाया नहीं जा सकता।

मुझे आपके साथ अनेक प्रवास करने व विशेष रूप मे मध्यप्रदेश के ाल क्षेत्रों में प्रवास के सुअवसर मिले। मेरे घर पर भी आपका कई बार रना हुआ। मैंने सदैव उनमे आत्मीयता सहृदयता एव निश्छलता के दर्शन ।। प्रवास के दौरान प्रत्येक सदस्य का ध्यान रखना सघ/समाज के विकास परिचर्चा करना एव सबको प्रेरणा देना आपका स्वभाव था। घर पर आते परिवार के हर सदस्य से बात करते व स्वाध्याय तथा धर्मध्यान के बारे में ते।

सघ की स्थापना से ही आप एक सशक्त स्तम्भ रूप में इससे सम्बद्ध रहे सघ की प्रत्येक प्रवृत्ति के बारे मे आप पूरी जानकारी रखते थे। जब भी ी प्रवृत्ति के बारे मे कुछ जानकारी की आवश्यकता हुई और आपसे पूछा तो आपने तुरन्त उसका जवाब दिया। अत तक आप सघ के सर्वतोमुखी ास का चिन्तन करते रहे।

मेरी आपसे अन्तिम भेंट आपके अभिनन्दन के समय दिनाक ८ अक्टूबर को हुई थी। अपनी सहधर्मिणी के निधन के पश्चात् आप अकेलेपन की ूति करने लगे थे और जैसे उन्हे कुछ आभास हो गया था अपने महाप्रयाण । कदाचित् उनकी आत्मा ने उन्हें पूर्व म ही सचेत कर दिया था और उन्हें
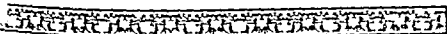
अन्तिम समय दृष्टिगोचर हो रहा था। आपने मुझे कहा–"अब अन्त (अन्तिम) मिलना है मैं अधिक समय नहीं निकालूगा।"

आपके चेहरे पर समभाव झलक रहा था और आप निर्द्वन्द्व थे। धन्य है ऐसे कर्मयोगी को जो राष्ट्रीय भावना दानवीरता सेवधर्मिता कल्याणकारी प्रवृत्तिया के प्रकाश स्तम्भ रहे और भविष्य में आने वाले का मार्गदर्शन करते रहेगे।

आपने सघ एव शासन हेतु ऐसा अनूठा कार्य किया है कि आपको स्मरण किया जाता रहेगा। आप पार्थिव रूप में भले ही विद्यमान न हे आपका परिवार श्री साधुमार्गी जैन सघ व नानेश शासन की तन, मन समय से अनवरत सेवा कर रहा है। यश शरीर रूप मे आप युग युगों तक रहेगे।

–बीकानेर

सघ के प्रति अटूट आस्थावान वोहरा दम्पत्ति

आप धर्मनिष्ठ सरलमना धर्मपाल पितामह गुरु भगवन्तद्वय के प्रति अटूट आस्थावान अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के सामाजिक कार्यों के प्रति सजग प्रहरी की भाति सदैव तत्पर रहते थे एवं माता भी सेवा सामाजिक कार्यों व महिला उत्थान के प्रति सदैव तत्पर थीं। आपने समाज की व धर्मपालों की बहुत सेवा की जो समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखी जावेगी।

आप अपने पीछे भरा पूरा सघनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं। आत्मा को चिरशाति प्रदान करने हेतु शासन देव से प्रार्थना करते हैं।

–धनराज कोठारी चित्तौड़ी

आदर्श समाज रचना के पुरोधा

—समाजसेवी श्री मानवमुनि—

सत्यवादी हरिशचन्द्र के लिए सत्य ही जीवन था राम के लिए पितृ भक्ति जीवन था भगवान महावीर के लिए जिओ और जीने दो की भावना का र प्रमुख था। भक्त के लिए प्रभु भक्ति ही जीवन होता है तपस्वियो के लिये ही जीवन होता है वैसे ही स्व श्री गणपतराज जी बोहरा के लिए समाजोत्थान ः निस्वार्थ शासन समर्पण ही जीवन था। उनका हृदय करुणा से भरा था। .. में उदारता और विचारो में स्पष्टता थी। वाणी मे मिठास थी और उद्यम से ' कर्मवीर थे।

सघ समस्याओ के समाधान मे वे सदैव अग्रणी रहते थे। चाहे महिला त्थान का कार्य हो चाहे शिक्षा क्षेत्र के विस्तार का या चिकित्सा सुविधा से माज को लाभान्वित करने का— वे सदैव पहल करने को तत्पर रहते थे। मता युवा सघ को प्रोत्साहित करने समता स्वाध्याय को विस्तारित करने र्मपाल प्रवृत्ति को गतिशील बनाने और समता-भवन निर्माण सहित सघ की हुआयामी प्रवृत्तियो में वे मुक्त हस्त से दान देने मे अग्रणी थे। वे सच्चे अर्थों i दानवीर थे भामाशाह थे।

श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल छात्रावास दिलीप नगर रतलाम की स्थापना की व्यय साध्य योजना के प्रस्तुत करते ही आपने जिस प्रकार तत्काल अर्थ स्वीकृति प्रदान की वह आज भी विस्मयकारी है। इस छात्रावास के विकास व छात्रो के प्रोत्साहन हेतु आप सदैव कटिबद्ध रहे तत्पर रहे।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी भी आपके प्रत्येक कार्य मे अनन्य उत्साह से सहयोगी रहती थीं। आप पर और यशोदा माताजी पर प्रारभ मे ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा और बाद में महात्मा गाधी जी का अनुपम प्रभाव पड़ा और आप दोना ने इन प्रभावो को अपने जीवन म साकार करके दिखाया। हरिजन उत्थान की इस पृष्ठभूमि मे धर्मपाल उत्थान हेतु आप दोनों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। समाज के गरीब परिवारो के प्रति आप दोनों के मन म अपार करुणा थी और वे उसे मूक भाव स सहयोग में परिवर्तित करते रहते थे।

आपको अपने जीवन में पद-पद पर सफलताओं ने चूमा और ...
सभी मनोकामनाए पूर्ण हुईं। पूज्य आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास ...
मे कराने की आपकी दृढ भावना भी पूर्ण हुई और तदनुसार बोहरा ...
पकज बाबू तथा शाह परिवार ने गजब की सेवा की। बोहरा सा ...
हर्षित हो उठा।

स्व श्री बोहरा सा का जीवन एक खुली किताब था। कथनी कर...
भेद नहीं था। दु ख-सकट कैसा भी हो—उनका धैर्य असीम था। ...
आचार्य श्री नानेश के प्रति उनकी श्रद्धा अटूट रही। वे दूरदृष्टा महापुरु...
हमारे बीच नहीं रहे। पचभूतों का नश्वर शरीर पचभूतो में मिल गया पर ...
अमर है और सदा अमर रहेगी।

उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि सघ के ...
क्रातिकारी कार्य धर्मपाल समाज रचना की भावना को सम्पूर्ण देश में फैला...
दलितोद्धार पूर्वक समता समाज रचना के गुरुदेव के धर्मोपदेश को सर्वत्र...

—विरार्जी आश्रम नौलखा ...

माँ बाप को मत भूलो

—दुलीचन्द फलोदिया—

१ भूलो सभी को तुम मगर मा–बाप को मत भूलो
उपकार अनगिनत हैं इस बात को मत भूलो।
२ पत्थर कई पूजे तुम्हारे जन्म की खातिर
पत्थर बन मा–बाप की छाती कभी न कुचलो।।
३ मुख का निवाला दे जिनने तुमको बड़ा किया
अमृत दिया तुमको जहर उनके लिए न उगलो।।
४ जिनने लड़ाए लाड प्यार सब अरमान पूरे किए
पूरे करो अरमान उनके यह बात कभी न भूलो।।
५ लाखों कमाते हो भला मा–बाप से ज्यादा नहीं
सेवा बिना सब व्यर्थ है मद में कभी न फूलो।।
६ धन तो मिलेगा फिर मा–बाप क्या मिल पायेंगे
उनके चरणों की धूल लेना तुम कभी मत भूलो।।
७ तीन को रोज प्रणाम करो
१ माता २ पिता ३ और गुरु को

ऐतिहासिक पुरुष श्री बोहराजी

—केशरीचद सेठिया—

भामाशाह के नाम से प्रख्यात श्री गणपतराज जी बोहरा से मेरा सर्वप्रथम साक्षात्कार कहा कब कैसे हुआ स्मृति पटल पर नहीं। श्री अ भा सा जैन सघ बीकानेर की किसी कार्यकारिणी मे हुआ था ऐसा कुछ-कुछ स्मरण मे आता है। सघ के प्रति मेरी लगन निष्ठा देखकर ही शायद उन्होंने मुझे उत्साहित किया। कहा—आपका परिवार हमेशा अग्रणी रहा है आपने जो रुचि दिखाई है उससे हमें अत्यन्त सतोष ओर प्रसन्नता है। आपके पत्र मिलते रहते हैं इसी तरह मैं सुझाव देते रहे। शायद उन्हीं की प्रेरणा से मुझे सघ सेवा करने का बल मिला।

श्यामवर्ण विशाल भाल मुख पर प्रखर तेज प्रसन्नता एव आत्मविश्वास की सम्मिश्रित झलक दिखाई देती थी। प्रसन्न मुखमुद्रा और हाथों मे उदारता की लबी रेखाए दृष्टिगोचर होती थी। परिपक्व अवस्था को उजागर करने वाली झुर्रिया लेकिन अपूर्व धैर्य दृढ निश्चय कार्य करने की अपूर्व क्षमता सौम्यता सहृदयता विनम्रता अल्पभाषी कर्तव्यनिष्ठ अनुभव प्रभावी व्यक्तित्व आदि सद्‌गुण एक ही स्थान मे एकत्रित होकर जीवन की नाना विधाओ का सहज ही अद्‌भुत सगम लगता था। श्री बोहरा जी का व्यक्तित्व अपनत्व की झलक सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती थी। नीचे से ऊपर तक श्वेतखद्दर के परिधान और उस पर गाधी टोपी आकर्षण का केन्द्र थी देश भक्ति की परिचायक थी।

आप एक कुशल व्यवसायी एव उद्योगपति थे। आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि दूरदर्शिता एव कुशल नेतृत्व से अपने व्यापार की उत्तरोत्तर वृद्धि की। सच तो यह है कि राजस्थान के एक पिछड़े गाव पीपलिया कला को अपनी सूझबूझ से औद्योगिक क्षेत्र बनाने का श्रेय आप ही को है। आपने विदेशो में जाकर वहा की तकनीक मे प्रवीणता ही प्राप्त नहीं की वरन् वहा से मशीनो का आयात कर फॉयल जगत मे अपनी एक विशिष्ट पहचान भी बनाली। इसके अतिरिक्त भारत में मशीन निर्माण मे अपने स्व पुत्र श्री पारसराज जी के साथ आपने अच्छी सफलता प्राप्त की।

यहा पर आपने व्यापार के साथ-साथ सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये। स्थानीय सस्थाओ के निर्माण व प्रगति में आपका योगदान रहा है। अपने निवास स्थान कोडम्बाकम मे जैन भवन के निर्माण का श्रेय भी आप ही को है। मद्रास म राजस्थानी एसोसियेशन के फाउन्डर के अतिरिक्त आप उसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये। इसकी स्थापना का उद्देश्य सबको एकजुट करके अपनी आवाज अधिकार-भाव सरकार तक पहुँचाना...

श्री अ भा सा जैन सघ बीकानेर से आप प्रारम्भ से ही सक्रिय रूप से जुडे रहे। सघ की छोटी-बड़ी प्रत्येक गतिविधि में पूर्ण रूप से जुडे हुए थे। ... ने जिस किसी प्रवृत्ति को अपने हाथ में लिये आपने मुक्त हस्त से उसमें दान ही नहीं दिया उस कार्य में आज पूरे मनोयोग से जुट गये। मैंने देखा जब कभी सघ के समक्ष किसी प्रवृत्ति में अर्थ सहयोग की आवश्यकता ... आपने हमेशा पहल की थी। आपकी उदारता एव गुणों के कारण ही ... लोकप्रिय हो गये कि समाज ने आपको भामाशाह जैसे गौरवपूर्ण ... विभूषित किया। आप को ही यह गौरव प्राप्त है कि आप बीस वर्षों के बाद पुन सघ के अध्यक्ष चुने गये। सन् १९८८ की बात है सघ की गतिविधि में ... शिथिलता का अनुभव किया गया तब पूरे समाज की नजरें एक योग्य दृढ़ कुशल नेतृत्व करने वाले की तरफ घूमी और सबने सर्वानुमति से आपको इस गौरवशाली पद पर आसीन किया।

उस समय आपने अपने उद्बोधन में कहा था— बीस वर्षों के बाद सभी ने मुझे फिर से अध्यक्ष निर्वाचित किया है यह कार्य सभालने की ... दी है शारीरिक स्थिति आयु के अनुसार बदलती है फिर भी आप सबकी शक्ति के बल पर ही आज्ञापालन के लिए मैं यह पद ग्रहण कर रहा हूँ। ... बल आप ही हैं। आपके भरोसे से यह कार्य स्वीकार किया है। विश्वास है सभी तन मन धन से सहयोग देकर सघ गौरव को बढ़ावेंगे। आपके ... शब्द से दृढ़ निश्चय और विनम्रता का दिग्दर्शन होता था।

महिलाओं में भी नवचेतना/जागृति के लिये आप सतत प्रयत्नशील ... शिक्षा संस्कार निर्माण में स्वय तथा आप की धर्मपत्नी का जो योगदान ... मन से सर्वप्रिय हो गई थी का विशेष सहयोग रहा है। कहावत है कि हर ... व्यक्ति के पीछे उसकी धर्मपत्नी का हाथ रहता है। आपके लिये यह ... पूर्णत सत्य सिद्ध हुई। प्रतिक्षण मदाद मुस्कुराता चेहरा मकरद विखेरता ... लगता था। सादर का परिधान आपकी शोभा ही नहीं आपकी सादगी और ...

वेचारों का प्रतीक था इनकी भी सघ मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

अध्यक्षीय भाषण मे आपने कहा श्री अ भा सा जैन महिला समिति जो भारत का एक आदर्श महिला सगठन है उससे भी मै अनुरोध करता हूँ कि सघ की कार्य समिति मे अपने प्रतिनिधि भेजे। समस्त महिला शक्ति से मैं अपील करता हूँ कि फैशन परस्ती छोडे क्योकि सौन्दर्य प्रसाधनो के कारण जो हिंसा हो रही है हमे उससे बचना चाहिये। मैं समाज को आडम्बर मुक्त बनाने की पुर-जोर अपील करता हूँ। हम अपने पूर्वजो की गौरवशाली सस्कृति को सादा जीवन अपनाकर ही बचा पाएँगे। शादी–विवाह ही क्यो यहा तक कि तपस्याओ के धार्मिक आयोजनो मे भी घुस गई आडम्बरप्रियता के दोष को निकाल फैंके और समाज जीवन को निर्मल बनावे।

उनका यह ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण सफल जीवन जीने के लिये प्रेरणाप्रद था। अपने पूज्य पिताजी श्री प्रेमराज जी बोहरा से ही आप हुक्म सम्प्रदाय के एक विशिष्ट श्रावक रहे हैं। आचार्य श्री नानेश और युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के आप सपत्नी अनन्यभक्त श्रद्धानिष्ठ समर्पित धर्म परायण सुश्रावक रहे हैं। पूरा परिवार ही उसी रग में रगा हुआ है। २३ ३ १९६४ के ऐतिहासिक व चिरस्मरणीय दिवस की बात है आचार्य प्रवर मालवा क्षेत्र के गुराडिया गाव में धर्मदेशना दे रहे थे। उस समय पिछड़ी अछूत व दलित बलाई जाति के लोग आपके पास आये और कहा आप धर्म की बात करते हैं व्यसन मुक्ति की बात करते हैं पर समाज मे हमे अस्पृश्य ही समझा जाता है। कोई हमें गले लगाना तो दूर पास मे बिठाने को भी तैयार नहीं। हमारे दु खदर्द पीड़ा को मिटाने को कोई तैयार नहीं। फिर हम आगे कैसे आ सकते हैं।

आचार्य श्री का कोमल हृदय करुणा से भर गया। अपने गभीर चिन्तन में सोचा समझा देखा कि इनकी बाता में वेदना है सच्चाई है वास्तविकता है वजन है तर्क सगत है। आपने अपने उद्बोधन मे फ़रमाया– 'मैं आपकी पीड़ा को समझता हूँ। आज से आप अपने को 'धर्मपाल' कहे। मेरी दृष्टि मे ही क्यों भगवान महावीर स्वामी ने कभी किसी को जाति विशेष के कारण श्रेष्ठ व हीन नहीं माना। हर मानव अपने अच्छे कर्मों से श्रेष्ठ हो सकता है। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र कुल मे जन्म लेने से ही कोई श्रेष्ठ नहीं हो जाता। श्रमणवर्ग अपनी मर्यादाओं की परिधि म रहकर ही जो कुछ कर सकते हैं करते हैं।

गुरुदेव के वचनो को बोहरा दम्पत्ति ने आत्मसात किया और उन्हें

सामाजिक सांस्कृतिक पारिवारिक परम्पराओं व रीति-रिवाजों सुसंस्कारी तथा न्यायोचित अधिकार दिलाने का बीडा उठाया। आपने अपने जीवन का लक्ष्य ही बना लिया। वे उनके सुख दुःख में शामिल हुए। संघ और समाज को इस क्रान्तिकारी योजना से जोड़ा। उन्हें शिक्षित बनाने व उनमें धार्मिक संस्कार डालने के लिये गाव गाव म पाठशालाए खुलवाई। दिलीप नगर म संघ के अर्न्तगत अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में श्री प्रेमराज गणपतराज धर्मपाल जैन छात्रावास का निर्माण करवाया। संघ के सदस्यों तथा वरिष्ठ लोगों के साथ पदयात्रा द्वारा हजारों हजार धर्मपाल बन्धुओं को सुसंस्कारी धार्मिक व्यसन मुक्त जाति मे फैली रूढियो अन्धविश्वास से मुक्त कराया। लोग उन्हें श्रद्धा के साथ धर्मपाल पितामह और यशोदा देवी को धर्मपाल मैया के नाम से सम्बोधित करने लगे।

आपने पिपलिया कला में एक विशाल हॉस्पिटल बनवाया। आप अपने में एक संस्था थे। लोगो को आपसे कार्य करने की प्रेरणा उत्साह और शक्ति मिली।

३० जुलाई १९९८ को आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी का देहान्त हो गया। आप उनके वियोग को सह नहीं सके और पूरा एक माह भी नहीं बीता की १५ अगस्त को ८५ वर्ष की आयु में आप भी उसी राह के राही बन गये।

यद्यपि पार्थिव रूप से हमारे बीच वे दोनों ही नहीं रहे पर उनके जीवन की सुरभि हमेशा हमेशा अपनी सुगन्ध फैलाती रहेगी।

उनके पौत्र श्री पकज जी जो संघ के उपाध्यक्ष हैं परिवार की परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। संघ और समाज को आपसे बहुत आशा है।

—वेपेरी चैन्नई—६०००००

अल्पारम्भ से भी छूटने की भावना रखो। कदाचित् अल्पारम्भ से न बच सको, तो महारम्भ से अवश्य ही बचो।

परोपकार के मसीहा   श्री गणपतराज जी बोहरा

—इन्दरचन्द वैद—

इस ससार मे अधिकाश व्यक्ति अपने सुख और स्वार्थ के लिए ही अनमोल जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं। बहुत ही कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जो धार्मिक प्रवृत्ति से अपना जीवन विकसित करके उसे परोपकार मे सलग्न करते हैं। ऐसे परोपकारी महापुरुष थे श्री गणपतराज जी सा बोहरा।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के पूर्वाध्यक्ष श्री गणपतराज जी सा बोहरा ने १९६५ से १९६८ एव १९८८ से १९९० तक इस गौरवमय पद पर आसीन रहकर सघ समाज और मानव-कल्याण के लिए जो महान कार्य किये वे अविस्मरणीय हैं। आपका वात्सल्यपूर्ण स्नेहिल स्वभाव देव-गुरु-धर्म के प्रति अडिग श्रद्धा एव दु खियों के आसू पोंछने में आपकी करुणा-भावना सतत प्रवाही रही है। आप धर्मपाल पितामह के नाम से एव आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी धर्मपाल माता के नाम से प्रख्यात थी। ऐसे दम्पत्ति जो अपने परिवार तक ही सीमित नहीं थे अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को अपना परिवार समझकर सेवा की प्रवृत्तियो मे एक-दूजे के पूर्ण सहयोगी थे। इस पुण्यशाली युगल ने अन्त समय तक परस्पर साथ निभाया। माता यशोदा देवी ३० जुलाई ९८ को स्वर्गस्थ हुई और इसके २० दिन पश्चात् १६ अगस्त १९९८ को धर्मपाल पितामह की पुण्य आत्मा ने भी देह त्याग दी। यह भी पूर्व भवों की पुण्याई का प्रतीक है।

आज से लगभग २० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई धर्म–क्रान्ति मे छुआछूत व पिछड़ेपन की त्रासदी भोग रहे बलाई जाति के परिवारों को दुर्व्यसनों से मुक्त कर सस्कार क्राति से धर्माचरण के मार्ग पर प्रतिष्ठित कर आचार्य श्री नानेश ने उन्हे धर्मपाल नाम से अभिहित किया। उन्हीं धर्मपाल विद्यार्थियो को उच्च शिक्षा देने एव धार्मिक सस्कार प्रदान करने हेतु धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा ने उदारतापूर्वक श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास की रतलाम में स्थापना की जहा आवास भोजन और पुस्तकों की नि शुल्क व्यवस्था की गई। यह सस्था आज भी सुचारु रूप से चल रही है। अपनी जन्म-भूमि राजस्थान के छोटे से गाव पिपलियाकला में आपने पूरे क्षेत्र की
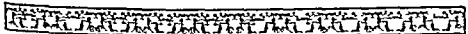
चिकित्सा सुविधा को देखते हुए विशाल अस्पताल बनाया जिसका संचालन आपके सुपौत्र श्री पंकज जी दोहरा कर रहे हैं।

संघ और समाज के लिए आपका जीवन समर्पित था ही किन्तु अपने परिजनों को आपने जो संस्कार दिये हैं वे अति महत्त्वपूर्ण हैं। परिजनों के लि धन छोड़कर जाने वाले तो बहुत होते हैं लेकिन संस्कार धन छोड़कर जाने वाले बहुत कम होते हैं।

धर्मपाल पितामह का व्यक्तित्व इतना घनीभूत था कि भुलाया नहीं जा व्यक्ति चला जाता है रह जाती है यादें। यदि वे यादें महापुरुष की है तो प्रेरणादायक स्मृति बनकर जीवन पर अमिट छाप छोड़ देती है। आपका जीवन सरलता नम्रता उदारता का बेजोड नमूना था। सादगी ने मानों आपका वरण किया और निरभिमानता का प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है आपका जीवन।

—भीलवाड़ा (राज.)

□

सच्चा सुख

एक व्यक्ति जब तक अपने ही सुख को सुख मानता रहेगा, जब तक उसमें दूसरे के दु:ख को अपना दु:ख मानने की संवेदना जागृत न होगी तब तक उसके जीवन का विकास नहीं हो सकता। उसके जीवन की धरातल ऊपर नहीं उठ सकता। अवतारों और तीर्थंकरों ने दूसरों के सुख को ही अपना सुख माना था। इसी कारण वे अपना परम विकास करने में समर्थ हुए।

-श्रीमद् जवाहराचार्य

धर्मनिष्ठ, दानवीर समाजसेवी बोहरा सा

—वीरेन्द्र सिंह लोढा—

श्रद्धेय गणपतराज जी सा बोहरा जिनको समाज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता है। उनका व्यक्तित्व बहुत आयामी था। धार्मिक सामाजिक सेवा कार्यों एव धर्मपाल भाइयो के उत्थान के लिए उन्होने एक उच्चतम आदर्श स्थापित किया। ये वास्तव म समाज भूषण एव समाज गौरव थे।

आपने समता विभूति आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा का एव उनके साथ मे सत मण्डली तथा महासतिया जी का चातुर्मास अपने गाव पिपलियाकला मे कराया था जिसमें आपने सपरिवार तन मन धन से जो सहयाग दिया वह नितात अनुकरणीय था। समता विभूति आचार्य प्रवर द्वारा मालव प्रात मे चलाई गई दलितोद्धार योजना में उन्होंने सपत्नी महत्त्वपूर्ण योगदान अत समय तक किया था। यही कारण है कि धर्मपाल सदस्य उनकी धर्मपत्नी को माता एव आपको पिता तुल्य मानते थे। पिछले लगभग बीस वर्षो से मेरा भी उनसे एव यशोदा माता जी से सम्पर्क रहा है। वे हर समय मुझे अपने पुत्र के समान समझते थे और समय-समय पर समाज के उत्थान हेतु परामर्श देते रहते थे। यही सबध उनके परिवार के सदस्य विशेष तौर से श्री पकज बाबू, श्री अशोक बाबू एव श्री अभय बाबू आज दिन तक निभाते आ रहे हैं।

ऐसे सघनिष्ठ दानवीर एव जनश्रद्धा के केन्द्र श्री गणपतराज जी बोहरा का सामाजिक धार्मिक व राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपूर्व योगदान रहा है। उनका यशस्वी जीवन सदैव जन मन को अनुप्रेरित करता रहेगा। ऐसी महान् आत्मा को मेरी अनेकानेक श्रद्धाजलि।

—उदयपुर—३१३००१

□

समाज रत्न बोहरा जी
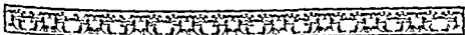
—सुरेन्द्र कुमार दस्साणी—

धर्मपाल पिता श्री गणपतराज जी बोहरा और धर्मपाल माता श्रीमती यशोदा जी बोहरा के बारे मे संस्मरण लिखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मेरा भावविभोर हो रहा है।

मुझे गत १३–१४ वर्षों से इनके सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मुझे यह सोच–सोचकर अत्यन्त गर्व होता है कि हमारे समाज में ऐसे रत्न हैं जो निरन्तर भाव से संघ और समाज की सेवा में तन–मन–धन से जुटे हुए हैं। नाम और सेवा करने वालों की आज समाज में बाढ आई हुई है किन्तु निःस्वार्थ सेवा करने विरले ही मिलते हैं। आप दोनों में सेवा कार्यों की सदैव उत्कट अभिलाषा रही।

इसी सन्दर्भ में मेरी एक प्रत्यक्ष अनुभूति लिख रहा हूँ। आचार्य गुरुदेव पीपलियाकला चौमासे की घोषणा कर दी थी किन्तु अभी चौमासा प्रारम्भ होने में कुछ शेष था। मैं ट्रेन से यात्रा कर रहा था कि जलगाव के आस–पास मेरी रेल में ही आपसे भेंट हो गई। मैंने पूछा आप दोनों कहाँ से यात्रा करके आ रहे हैं? इस पर बताया कि आचार्य–प्रवर का चौमासा हमारे गाव होने जा रहा है। पूरे क्षेत्र में खूब की है किन्तु हमारे गाव में जैन समाज के बहुत कम घर खुले हुए हैं। इसलिए हम बैंगलोर व दक्षिण के अन्य स्थानों पर गए थे और हमने वहाँ के स्वधर्मी बन्धुओं से की है कि पिपलियाकला पधार कर चौके खोलें। हमें पूरे चौमासे का लाभ देने की करें जिससे संत–सतियों जी म.सा. को गोचरी हेतु कम तकलीफ पड़े।

यह उत्तर सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। हमारे लिये यह प्रेरणा की बात है कि उम्र में भी इतनी लम्बी यात्रा पर निकल पड़े। हमें ऐसे धर्मनिष्ठ आदर्श त्यागी सुश्रावकों से प्रेरणा लेकर अपना जीवन सुधारना चाहिये।

संघ अधिवेशनों में भी अनेक बार ऐसे प्रसंग आते हैं जब वाद–विवाद में गर्मी हो जाती है किन्तु मैंने कभी भी बोहरा सा. के चेहरे पर तनाव नहीं देखा। मुझे दोनों का आशीर्वाद सदैव मिलता रहा है। आज बोहरा जी और यशोदा माता हमारे में नहीं है।

मैं स्वयं की तथा युवा संघ और बम्बई संघ की ओर से आप दोनों को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—बम्बई

सघनिष्ठ, धर्मप्रेमी बोहरा दम्पत्ति

—मोतीलाल मालू—

श्रद्धेय श्री गणपतराज जी बोहरा एव श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा से मेरा काफी समय से सबध रहा है। उनका सारा जीवन साधुमार्गी जैन सघ की उन्नति मे सघ की स्थापना से लेकर समर्पित रहा। सघ की साधारणतया हर बैठक मे उनकी हाजरी रहती थी—यहा तक कि विदेश यात्रा भी वे इस ढग से निश्चित करते थे कि सघ की बैठक में उपस्थित रह सके।

भावनगर चातुर्मास में तो लगभग चार मास तक वहा रहकर एक साधारण कार्यकर्ता की तरह भोजन व्यवस्था से लेकर हर तरह का कार्य करने में वे तत्पर रहे।

धर्मपाल भाइयो के बीच जाने मे उन्हे बहुत प्रसन्नता होती थी और रतलाम में प्रेमराज गणपतराज धर्मपाल छात्रावास की स्थापना करके आपने अपनी उदारता का परिचय दिया।

आचार्य प्रवर एव साधु-सन्तो की सेवा में वे हरदम तत्पर रहते थे।

लगभग १ वर्ष से स्वास्थ्य नरम रहने लग गया था फिर भी साधु-सन्तो के दर्शनार्थ बराबर जाते रहते थे। पिछले होली चातुर्मास पर भी स्वास्थ्य नरम होते हुए भी भीलवाड़ा पधार गए थे।

जब भी सघ की कोई भी प्रवृत्ति के लिए चदा किया जाता तो उनका सहयोग बराबर रहता था।

पीपलिया कला का ऐतिहासिक चातुर्मास कराके तो आपने कमाल ही कर दिया छोटा-सा गाव होते हुए भी रहने-खाने की कमाल की व्यवस्था करके एक रिकॉर्ड आपने कायम कर दिया।

बीमार तो गणपतराज जी सा थे पर बीच में ही श्रीमती यशोदा देवी जी को अचानक कैंसर की बीमारी ने आ घेरा और उनका स्वर्गवास हो गया। इसका आघात उन पर इतना पडा कि कुछ समय पश्चात् वह भी हम सबको छोड़कर चले गए।

सघ के लिए उन दोनों का इस तरह चले जाना वज्रपात साबित हुआ है। शासनदेव से प्रार्थना है कि दिवगत आत्माओं को शाति प्रदान करें।

—अहमदाबाद
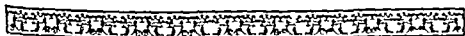
हे मानवता के सजग प्रहरी

—रामरथमल डागरिया—

हे मानवता के सजग प्रहरी
जन मन के उज्ज्वल सितारे
शुभ मुहुर्त के पावन प्रतीक
गणपति
तू बेमिसाल है।
तेरा जीवन एक प्रज्वलित मशाल है
क्योंकि तुमने ली
पूज्य श्रीलाल जी से रिद्धि
पूज्य जवाहराचार्य से सिद्धि
तुमने गणेशी का बलिदान
नाना की समता देखी।
यही कारण है तू हर दर्द से जुड़ गया।
शिथिलाचार समाज का कलंक है
उसे समझ गया।
सच है शंकर पार्वती प्रेम व जगती का इतिहास है
क्योंकि यही मानवता की श्रेष्ठ कृति है।
तुमने कितने भटके मनुजों को समता दर्शन से जोड़ा
नानेश के आशीष से धर्मपाल बनाया।
लोग भले ही तुझे भभकार कहें सच है
किन्तु लेखाकार भी हो तुम।
तुमने नई चेतना का पद उतार दिया
नरा ५८ पर
सम्पूर्ण जैन समाज इस गति पर
तेरा अभिनन्दन करता है।
तुझे नमन करता है तुझ पर नाज करता है।

हे मानवता के सजग प्रहरी !
एक बात तो मुझे बहुत अच्छी लगी
तुम कभी बूढ़े नहीं हुए
हर कदम तेरा
जागृति की निशानी है
पर हे नटवर नागर
तूने क्या कर डाला
दोनो शासन विभूति
को हमसे छीन लिया।
पर याद रख हम इनकी
जुदाई सह नहीं सकेगे
उसका हर कदम
जागृति का इतिहास होगा
हम स्वागत करते हैं वदन करते हैं।
जीवन का उत्कर्ष चदन
समर्पित करते हैं।
तेरी अलौकिक झाकी
हमेशा गौरवमय प्रकाश देती रहे।
यही तो जीवन का सार है
हमने तुझसे सीखा है
हे मानवता के सजग प्रहरी !

—रामपुरा (म प्र)

अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए कदम न बढ़ाया जाएगा तो ससार में अन्याय का साम्राज्य फैल जाएगा और धर्म का पालन करना असभव हो जाएगा।

\- आचार्य श्री जवाहर

समाज भूषण धर्मपाल पितामह श्री बोहरा सा

—लूणकरण हीरावत—

आदरणीय बोहरा सा अपने सुदीर्घ जीवन काल में ऐसे कर्मठ [illegible] जिनकी बहुआयामी समाज सेवा चिरस्मरणीय रहेगी। आपकी आचार्य नानेश के प्रति पूर्णनिष्ठा व श्रद्धा थी। देशनोक आचार्य भगवन् के प्रवास [illegible] समय समय पर आप पधारते रहते थे। तभी से मेरा आपसे सम्पर्क हुआ था। आपने अपने जीवन में आचार्य भगवन् के समता सिद्धांत को [illegible] था। आप विकट से विकट परिस्थिति में भी कभी आवेश में नहीं आते थे। [illegible] भी सामाजिक कोई समस्या आती आप अपनी गहन सूझ बूझ से उसका समाधान कर देते थे। आपका प्रभाव ही ऐसा था कि आपकी बात को [illegible] सम्मान देते थे। आपने दो दफा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। आपने अपने जीवनकाल में सब जनहिताय सब जन सुखाय की उदार भावना से प्रेरित होकर पिपलियाकलां में कई करोड़ की लागत से हॉस्पिटल बनवाया। आपकी हार्दिक इच्छा थी कि यह भूमि पहले आचार्य भगवन् के चरण-रज से पावन हो तत्पश्चात् इसका कार्य चालू किया जाये। आपकी भावना को आचार्य भगवन् ने पूरा भी किया। इतने [illegible] होते हुए भी आपमें अहम् भाव का नाम-निशान नहीं था। आपने धर्मपाल [illegible] पद ग्रहण करके आचार्य नानेश के नाम को खूब रोशन किया। [illegible] धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी का पूरा सहयोग रहता था। रतलाम के [illegible] नगर में आपने धर्मपाल छात्रावास भी बनवा दिया। आप धर्मपाल पितामह के नाम से विख्यात हो गए। आप जैसे उदार व समाजसेवी व्यक्ति विरले ही होते हैं। मैं उस महान् आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ [illegible] की कामना करता हूँ।

—देशनोक [illegible]

□
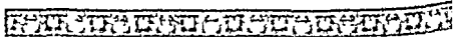
राष्ट्रीय सस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र स्व बोहरा दम्पत्ति

—गजेन्द्र सूर्या—

विरले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं कि जिनके जीवन के अनूठे कार्यो की छाप हमारे हृदय की गहराइयो मे सदा तरोताजा बनी रहती है।

श्रम सेवा त्याग का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करने वाले ऐसे धर्मवीर कर्मवीर दानवीर आडम्बरविहीन निरभिमानी व्यक्तित्व के धनी स्वर्गीय बोहरा दम्पत्ति ने राष्ट्र समाज एव सघ की बहुमुखी एव बहुउद्देशीय प्रवृत्ति की प्रगति मे अपूर्व योगदान प्रदान करके राष्ट्रीय सस्कृति को जो उज्ज्वलता प्रदान की है वह इतिहास के पन्नो मे स्वर्णाक्षरों मे सदैव अकित होने योग्य अद्भुत दस्तावेज बन गया है।

जन सेवा समाज सेवा एव सघ सेवा मे कीर्तिमान स्थापित करने वाले स्वर्गीय बोहरा दम्पत्ति का चरित्र उन अनगिणत लोगो के लिए एक अद्भुत प्रेरणा स्त्रोत है जो उसी पुण्य-पथ का अनुसरण करने योग्य जीवन को आदर्श बनाने के लिए कृत-सकल्पित हैं।

मानव-सेवा व मानव-रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील और लोक कल्याण की राह पर चलकर समाज के अन्तिम छोर पर खड़े व्यक्तियो की व्यथाओ एव कष्टो का निवारण कैसे हो मन में ऐसी व्यग्रता रखनेवाले स्वर्गीय बोहरा दम्पत्ति के प्रयास किसी से छिपे नहीं हैं।

स्वर्गीय बोहरा दम्पति 'रत्न' ने हमारे सघ को जो आशातीत लाभ पहुचाया है और कइयो पर जो अवर्णनीय उपकार किये हैं उनकी उन अमूल्य सेवाओं एव उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना हमारा फर्ज है।

उपकारी के प्रति आभार व्यक्त करना सामान्य शिष्टाचार माना गया है और जो लोग इस सामान्य शिष्टाचार को भुला देते हैं उनके उपकारो को उपकार नहीं मानते हैं वे लोग व्यावहारिक दृष्टि से दुष्ट माने गये हैं।

नीतिकारों ने यहा तक कहा है कि कृतघ्ने नास्ति निष्कृति अर्थात् कृतघ्नी के पाप का कोई निस्तार या छुटकारा नहीं हो सकता है।

हमारी सस्कृति ने नमकहरामी को तो बहुत नीचा और महापापी माना है।

मानवता का महाप्रयाण

—मनोहरलाल मेहता—

श्री गणपतराज जी बोहरा का देहावसान हो गया। यह समाचार तड़ित वेग से सर्वत्र प्रसारित हो गया। यह एक सामान्य प्रयाण नहीं अपितु एक महामानव का प्रयाण है। इस प्रयाण से केवल साधुमार्गी जैन सघ की ही नहीं अपितु समस्त जैन-अजैन समाज की क्षति है।

स्व बोहरा सा ने अपनी दयालुता दानशीलता धार्मिक भावना और मानवीय गुणो से समाज मे प्रकाश स्तभ की स्थिति प्राप्त कर ली थी। वे आचार्य श्री नानेश की अनन्य भक्ति के ऐसे प्रकाश पुज थे जिनकी यश किरणे— उनके जीवन काल मे ही दिग्दिगन्त मे प्रस्फुटित हो गई थी। उन्होने जो जीवन जीया वह विरल था। कविवर मैथिलीशरण की निम्न पक्तिया उनके जीवन पर खरी उतरती हैं—

मानलो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।
मरो परन्तु यों मरो कि याद तो करें सभी।।

बोहरा दम्पत्ति की मृत्यु से समाज ने एक रत्न युगल खो दिया है।

इस सस्थान पर बोहरा दम्पत्ति की विशेष अनुकम्पा रही है। अनेक बार यहा पधारे और छात्रों तथा हमारे परिवार को उपकृत किया। सस्थान के विकास मे उन्होने पूरी रुचि ली। ऐसे महामानव-दम्पत्ति के प्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि।

—आचार्य श्री नानेश शिक्षण सस्थान नानेश नगर दाता

❑

मातृ-प्रेम के समान ससार में और कोई प्रेम नहीं। मातृ-प्रेम ससार की सर्वोत्तम विभूति है ससार का अमृत है। अतएव जब तक पुत्र गृहस्थ-जीवन से पृथक् होकर साधु नहीं बना है, तब तक माता उसके लिए देवता है।

आज हमारे सामने ऐसी दम्पत्ति की तस्वीर उभर कर आ रही है जिसने अपना सारा जीवन समाज के लिए अपने को उपयोगी बनाने में लगा दिया। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम उनके जीते जी संघ समाज और जाति को अत्यधिक लाभ पहुचाने वाली उन योजनाओ को पूरा नहीं कर पाये जिनकी वे अपेक्षा करते थे तो यह बात जब हम याद करते हैं तो हृदय फटा सा जाता है।

वह दम्पत्ति जो जीवन भर दीप की तरह जलता रहा स्वय जलकर प्रकाश फैलाता रहा अधकार की शक्तियों से लडता रहा स्वय जलकर भी सघर्ष से कभी विश्राम नहीं मागा कर्त्तव्य के पथ पर कभी रुका कभी झुका नहीं 'चरवैति–चरवैति उपनिषद् के इस मत्र को माना उन्होंने अपने जीवन में साकार कर दिया।

जीवन भर तिल-तिलकर जलकर अनगिनत लोगों के जीवन को आलोकित प्रकाशित करने वाला वह तेज पुज आखिर कब तक मुटठी भर हाड़ मास के शरीर में सीमित रहता ?

नि स्वार्थ सेवा को जीवन का स्वभाव बनाकर मरते दम तक इस असिधारा व्रत का निर्वाह करने वाले स्वर्गीय दम्पत्ति **श्रद्धेय स्वर्गीय श्री गणपतराजजी साहब बोहरा एव श्रद्धेया स्वर्गीया श्रीमती यशोदा देवी** जी को मेरी अशेष श्रद्धाजलि।

–इन्द्र

परिवर्तन में ही गति है, प्रगति है, विकास है, सिद्धि है। जहा परिवर्तन नहीं वहा प्रगति को अवकाश भी नहीं है। वहा एकान्त जड़ता है, स्थिरता है, शून्यता है। अतएव परिवर्तन जीवन है और स्थिरता मृत्यु है। परिवर्तन के आधार पर ही विश्व का अस्तित्व है।

–आचार्य श्री जवाहर

मानवता का महाप्रयाण

—मनोहरलाल मेहता—

श्री गणपतराज जी बोहरा का देहावसान हो गया। यह समाचार तड़ित वेग से सर्वत्र प्रसारित हो गया। यह एक सामान्य प्रयाण नहीं अपितु एक महामानव का प्रयाण है। इस प्रयाण से केवल साधुमार्गी जैन सघ की ही नहीं अपितु समस्त जैन-अजैन समाज की क्षति है।

स्व बोहरा सा ने अपनी दयालुता दानशीलता धार्मिक भावना और मानवीय गुणो से समाज मे प्रकाश स्तभ की स्थिति प्राप्त कर ली थी। वे आचार्य श्री नानेश की अनन्य भक्ति के ऐसे प्रकाश पुज थे जिनकी यश किरणे— उनके जीवन काल मे ही दिग्दिगन्त में प्रस्फुटित हो गई थी। उन्हाने जो जीवन जीया वह विरल था। कविवर मैथिलीशरण की निम्न पक्तिया उनके जीवन पर खरी उतरती हैं—

मानलो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।
मरो परन्तु यों मरो कि याद तो करें सभी।।

बोहरा दम्पति की मृत्यु से समाज ने एक रत्न युगल खो दिया है।

इस सस्थान पर बोहरा दम्पत्ति की विशेष अनुकम्पा रही है। अनेक बार यहा पधारे और छात्रो तथा हमारे परिवार को उपकृत किया। सरथान के विकास मे उन्होने पूरी रुचि ली। ऐसे महामानव-दम्पत्ति के प्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि।

—आचार्य श्री नानेश शिक्षण सरथा नानेश नगर दाता

❑

मातृ-प्रेम क समान ससार में और कोई प्रेम नहीं। मातृ-प्रेम ससार की सर्वोतम विभूति है, ससार का अमृत है। अतएव जब तक पुत्र गृहस्थ-जीवन से पृथक् होकर साधु नहीं बना है, तब तक माता उसके लिए देवता है।

सर्वतोमुखी व्यक्तित्व

—उत्तमचन्द श्रीश्रीमाल—

भारत की पवित्र धरा अनेक मनीषियो एव दिव्यात्माओं की जन्मभूमि एव कर्मभूमि रही है। इन पावन आत्माओं की गौरव गाथाए एव कृतिया आज भी विश्व को सुरभित करती हैं।

ऐसे ही महान् व्यक्तित्व के धनी थे स्व श्री गणपतराज जी बोहरा सा.। उनके अनूठे जीवन में गुरुभक्ति और समर्पणा कूट-कूट कर भरी थी। वे मानवता के अमर पुजारी थे। मानवता ही जाति हो मानवता परक ही राष्ट्र हो और मानवता की ज्योति जन-जन के मन में प्रज्वलित रहे यही उनकी कामना थी।

वस्तुत उनके व्यक्तित्व को शब्दों की सीमाओ मे बाँधना कठिन है। उनके सर्वतोमुखी व्यक्तित्व मे सागर सी गहराई हिमालय सी ऊचाई धरा सी विशालता और शिशु सी सरलता समाहित थी।

उनकी कर्मण्यता हेतु निम्न पक्तिया उपयुक्त हैं—

कुछ भी नहीं असम्भव जग मे
सब सम्भव हो सकता है।
कार्य हेतु यदि कमर बाध लो
तो सब सभव हो सकता है।।
ऐसी दिव्य आत्मा को मेरे प्रणाम।

—ब्यावर

मनुष्य की महत्ता और हीनता, शिष्टता और अशिष्टता वाणी में तत्काल झलक जाती है। अतएव सस्कारी पुरुषों को बोलते समय बहुत विवेक रखना चाहिए।

प्रकाश स्तभ श्री बोहरा

—बसन्तीलाल जैन—

आज मुझे स्वर्गीय श्री गणपतराज जी बोहरा से मेरी सहसा हुई प्रथम भेंट की स्मृति आ रही है। मैं अनेक वर्ष पूर्व अपने विशिष्ट कार्य से जावरा गया था और वहा मेरे अनन्य आत्मीय साथी स्व श्री समीरमल जी काठेड के यहा पहुचा। जावरा म श्री काठेड़ के निवास पर मैंने खादी के वस्त्र और खादी की टोपी धारण किए एक गरिमामय व्यक्ति को देखा। ज्ञात हुआ कि ये ही सुप्रसिद्ध समाजसेवी धर्मपाल पिता श्री गणपतराज जी बोहरा हैं। मुझे लगभग तीन घटे श्री बोहराजी के साथ रहने का अवसर मिला। इस सत्सग की अवधि मे मैंने उनसे समाज व धर्म के विभिन्न पहलुओ पर खुलकर चर्चा की। उस चर्चा मे मुझे उनके मुक्त मन के दर्शन हुए और धर्मपालो के उत्थान हेतु उनके हृदय की उदात्त भावनाओ की अनुभूति हुई। उनकी कार्यप्रणाली और विशिष्ट व्यक्तित्व का मुझ पर बहुत प्रभाव पडा और आज मुझे उनकी स्मृति मे राष्ट्रकवि दिनकर की ये पक्तिया लिखते हुए गर्व होता है—

दीपक का निर्वाण बहुत कुछ श्रेय नहीं जीवन का।
है सद्धर्म दीप्त रख उसको हरना तिमिर भुवन का।।

स्व श्री बोहरा जी ने इसी प्रकार समाज को प्रकाशवान बनाने के लिए स्वय प्रकाश स्तभ का जीवन जिया। उनका यशस्वी जीवन युग युगान्तर तक समाज का पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

—मण्डी प्रागण नीमच (म प्र)

☐

ज्ञानपूर्वक होने वाला समभाव ही सामयिक है।

सर्वतोमुखी व्यक्तित्व

—उत्तमचन्द श्रीश्रीमाल—

भारत की पवित्र धरा अनेक मनीषियों एव दिव्यात्माओं की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है। इन पावन आत्माओ की गौरव गाथाए एव कृतिया आज भी विश्व को सुरभित करती हैं।

ऐसे ही महान् व्यक्तित्व के धनी थे स्व श्री गणपतराज जी बोहरा सा। उनके अनूठे जीवन में गुरुभक्ति और समर्पणा कूट-कूट कर भरी थी। वे मानवता के अमर पुजारी थे। मानवता ही जाति हो मानवता परक ही राष्ट्र हो और मानवता की ज्योति जन जन के मन में प्रज्वलित रहे यही उनकी कामना थी।

वस्तुत उनके व्यक्तित्व को शब्दों की सीमाओ में बाँधना कठिन है। उनके सर्वतोमुखी व्यक्तित्व में सागर सी गहराई हिमालय सी ऊचाई धरा सी विशालता और शिशु सी सरलता समाहित थी।

उनकी कर्मण्यता हेतु निम्न पक्तिया उपयुक्त हैं—

कुछ भी नहीं असम्भव जग मे
सब सम्भव हो सकता है।
कार्य हेतु यदि कमर बाध लो
तो सब सभव हो सकता है।।
ऐसी दिव्य आत्मा को मेरे प्रणाम।

—ब्यावर

□

मनुष्य की महत्ता और हीनता, शिष्टता और अशिष्टता वाणी में तत्काल झलक जाती है। अतएव सस्कारी पुरुषों को बोलते समय बहुत विवेक रखना चाहिए।

प्रकाश स्तंभ श्री बोहरा

—बसन्तीलाल जैन—

आज मुझे स्वर्गीय श्री गणपतराज जी बोहरा से मेरी सहसा हुई प्रथम भेट की स्मृति आ रही है। मैं अनेक वर्ष पूर्व अपने विशिष्ट कार्य से जावरा गया था और वहा मेरे अनन्य आत्मीय साथी स्व श्री समीरमल जी काठेड़ के यहा पहुचा। जावरा मे श्री काठेड के निवास पर मैंने खादी के वस्त्र और खादी की टोपी धारण किए एक गरिमामय व्यक्ति को देखा। ज्ञात हुआ कि ये ही सुप्रसिद्ध समाजसेवी धर्मपाल पिता श्री गणपतराज जी बोहरा हैं। मुझे लगभग तीन घटे श्री बोहराजी के साथ रहने का अवसर मिला। इस सत्सग की अवधि में मैंने उनसे समाज व धर्म के विभिन्न पहलुओ पर खुलकर चर्चा की। उस चर्चा मे मुझे उनके मुक्त मन के दर्शन हुए और धर्मपालो के उत्थान हेतु उनके हृदय की उदात्त भावनाओं की अनुभूति हुई। उनकी कार्यप्रणाली और विशिष्ट व्यक्तित्व का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा और आज मुझे उनकी स्मृति मे राष्ट्रकवि दिनकर की ये पक्तिया लिखते हुए गर्व होता है—

दीपक का निर्वाण बहुत कुछ श्रेय नहीं जीवन का।
है सद्धर्म दीप्त रख उसको हरना तिमिर भुवन का।।

स्व श्री बोहरा जी ने इसी प्रकार समाज को प्रकाशवान बनाने के लिए स्वय प्रकाश स्तभ का जीवन जिया। उनका यशस्वी जीवन युग युगान्तर तक समाज का पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

—मण्डी प्रागण नीमच (म प्र)

□

ज्ञानपूर्वक होने वाला समभाव ही सामयिक है।

सघ गौरव, साहित्य प्रेमी श्री बोहरा सा

—डॉ सुरेश रिसोदिया—

वर्ष १९८१ के उदयपुर वर्षावास में समता विभूति आचार्य श्री नानाल जी म सा ने सम्यक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु प्रभावशाली उद्बोधन दिया जिसका श्रोताओ पर विशेष प्रभाव पडा। फलत विश्वविद्यालय के विद्वानों तथा श्रीसघ ने जैन विद्या के अध्ययन के विकास हेतु एक योजना तैयार की, योजना को कार्य रूप में परिणत करने का उपक्रम धर्मनिष्ठ सघ गौरव साहि प्रेमी श्री गणपतराज जी बोहरा एव सघ प्रमुख साहित्य प्रेमी श्री सरदारमल काकरिया ने किया।

आगम साहित्य के अध्ययन-अनुसधान एव उच्च शोध केन्द्र की स्थाप हेतु अर्थ का विनियोजन करने वाले साहित्य प्रेमी प्राय. मुश्किल से ही मिल हैं। चूकि इस कार्य मे किये जाने वाला विनियोजन प्रत्यक्षत लोगों को दिख नहीं देता। अत शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र म अनुदान देने की भावना व व्यक्ति रख सकता है जो दान के प्रदर्शन में विश्वास नही रखता हो।

श्रीमान् गणपतराज जी बोहरा ने आचार्य श्री के सम्यक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु दिये गए उद्बोधन की फलश्रुति के रूप मे स्थापित आ अहिंसा—समता एव प्राकृत सस्थान उदयपुर के सस्थापक अध्यक्ष पद का निर्वहन किया। आप लगभग १५ वर्षों तक इस सस्थान के अध्यक्ष रहे। सर्वप्र सस्था को एक लाख रुपये का अनुदान देकर आप इस सस्था के परम सरक्ष भी बने। मात्र इतना ही नहीं सस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु भी आपने समय समय पर उदारतापूर्वक अनुदान दिया था।

आप अत्यन्त सरल हृदय एव मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। विद्व को यथेष्ठ सम्मान देना आपके स्वभाव में था। सस्थान द्वारा जब जब भी वि सगोष्ठियाँ आयोजित की गई आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होते हुए भी आप ऐसी सगोष्ठियों में सदैव सम्मिलित होते थे और एकाग्रता से विद्वानों के शोध-पत्रों को सुनते थे। विद्वानो से जैन धर्म एव दर्शन सबधित प्रश्न एवं जिज्ञासा प्रस्तुत करने में भी आप रुचि रखते थे। कुशल व्यवसायी होकर भी साहित्य के प्रति आपकी रुचि अत्यन्त प्रशसनीय थी।

आगम सस्थान के १५ वर्षों तक अध्यक्ष रुप मे जुडे रहना जहा एक और आपके साहित्य प्रेम का कारण था वहीं दूसरी ओर इस सस्थान को महामत्री के रूप मे सघ प्रमुख साहित्य प्रेमी श्री सरदारमल जी काकरिया का मिलना भी मुख्य कारण रहा। सस्थान के विकास हेतु श्री काकरिया जी ने आदरणीय बोहरा सा को जब कभी जो कोई सुझाव दिया उसे उन्होने सहर्ष स्वीकार किया।

सस्थान द्वारा जैन धर्म दर्शन एव आगम साहित्य के अनुवाद प्रकाशन आदि का जो कार्य हुआ है और हो रहा है उसमें दानवीर धर्मनिष्ठ साहित्य प्रेमी श्री गणपतराज जी बोहरा के अवदान को सस्थान कभी विस्मृत नहीं कर सकेगा। देह रुप मे आज बोहरा सा भले इस ससार मे नहीं हो किन्तु उनके द्वारा शिक्षा सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र में किये गए कार्य सेयामावी लोगों के लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत बने रहेगे।

साहित्य प्रेमी श्री गणपतराज जी बोहरा को शत्-शत् वन्दन।

—प्रभारी एव शोध अधिकारी

आगम अहिंसा समता एव प्राकृत सस्थान उदयपुर

❑

पूर्वांचल की श्रद्धा

—कमलचन्द भूरा—

साधुमार्गी सघ के गौरव सघ स्तम्भ धर्मपाल पितामह स्व० श्री गणपतराज जी बोहरा और समतादर्शी नारी जागरण व धर्मपाल उत्क्रान्ति हेतु समर्पित स्व० श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा की पुनीत दिव्य आत्माओ को पूर्वांचल सघ की भाव विह्वल श्रद्धाजली एव शासन देव से दिवगत आत्माओ की चिर शाति हेतु प्रार्थना।

—पूर्वांचल सयोजक गुवाहाटी

❑
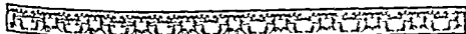
विरले महामानव

—एस के सोलंकी—

मेरा निवास जावरा है और जावरा धर्मपाल प्रवृत्ति का मुख्यालय भी र है। सन् १९९२ मे जावरा मे धर्मपाल प्रवृत्ति के क्रियाकलापों की भारी धूम थी। सेठ श्री गणपतराज जी बोहरा भी प्रवास मे जावरा आते ही रहते थे और मैं उनकी धर्मपाल सेवाओ के बारे मे खूब सुना था और मेरी उनके दर्शन की कामना थी।

शीघ्र ही सुयोग मिला और दिनांक २७ ३ ९२ को ग्राम सुनझारा मे आयोजित धर्मपाल सम्मेलन में मुझे उनके दर्शन का लाभ मिला। सेठ सा का उद्‌बोधन मुझे आज भी याद आ रहा है। उन्होने बहुत सरल भाषा में उपस्थित धर्मपालो से व्यसन मुक्ति हेतु अनुरोध किया। उनके सबोधन का बहुत अच्छा प्रभाव अनुभव किया गया। मुझे भी दो शब्द बोलने का अवसर देकर प्रोत्साहित किया गया।

दूसरे दिन दिनाक २८.३ ९२ को प्रात श्री समीरमल जी काठेड़ के निवास पर मैंने उनसे पुन भेंट की और उनके समक्ष रोटेरी क्लब जावरा द्वारा कैंसर परीक्षण शिविर आयोजित करने की योजना प्रस्तुत करते हुए इस सत्कार्य में अर्थ सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने तत्काल स्वीकार करते हुए रुपये ६०००/— की राशि प्रदान कर दी। उनके इस अर्थ सहयोग से ३० ३ ९२ को कैंसर परीक्षण शिविर आयोजित किये गये और उसमें ११ प्रारंभिक रोगी पहिचाने गए जो कालान्तर में उपचार से स्वस्थ हो गए। उनके प्राणों की रक्षा हो गई।

ऐसे दानदाता और उदारमना सेठ श्री गणपतराज जी बोहरा जैसे महामानव धरती पर विरले ही पैदा होते हैं। ऐसे महामानव को स्वय मेरी रोटरी क्लब और जन-जन की हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

—३ स्टेशन रोड जावरा (म प्र)

□

समाज सेवी सघ प्रेमी- श्रीमान बोहरा सा

प्रो सतीश मेहता—

महान् व्यक्ति वही है जो अपने पीछे कोई अनुगूज या अपनी पहचान छोड जाए और आने वाली पीढ़ियो के लोग कहे उनकी क्या बात उनके क्या कहने उन जैसा शायद ही कोई दूसरा हो। समाज सेवी सघप्रेमी महामना सेवा की प्रतिमूर्ति श्री गणपत राज जी बोहरा के सदर्भ मे भी यही कहा जाता है।

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के विकास मे इनका विशेष योगदान रहा। कर्मयोगी समाज सेवा को समर्पित बोहरा सा ने एक ऐसा अध्याय प्रारम्भ किया 'समाज सेवा का 'चिकित्सा सेवा का 'स्वधर्मी सहायता' का जो सेवा के क्षेत्र में सदैव मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

बोहरा जी अत्यन्त उदार धुन के धनी सघर्ष जीवी धर्म प्रेमी स्वप्न दृष्टा कर्मठ कार्यकर्त्ता सघ प्रेमी एव सघ के स्तम्भ थे।

आप समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा के निष्ठावान श्रावको की सूची मे प्रथम थे कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आपने आचार्य श्री के आर्शीवाद से सघ मे दो बार अध्यक्ष पद पर कार्य किया। आपके नेतृत्व मे सघ ने सराहनीय प्रगति की एव सघ की चहुमुखी प्रगति हुई। सघ द्वारा चलाई जा रही 'धर्मपाल प्रवृत्ति' को आपने निष्ठा से आगे बढाया। आपने रतलाम (म प्र) मे धर्मपाल जैन छात्रावास की स्थापना भी की ताकि धर्मपाल शिक्षा क क्षेत्र म आगे आये। यहा से शिक्षा प्राप्त अनेक धर्मपाल छात्र अनेक उच्च पदो पर आसीन होकर समाज सेवा मे रत हैं।

आपने पिपलिया कला जिला पाली में एक विशाल चिकित्सालय बनाकर व्यवसायियो के सामाजिक उत्तरदायित्व का श्रेष्ठ निर्वहन कर एक मिशाल कायम की। आप सदैव समाज के भाई—बहनो को जरूरत के अनुसार आर्थिक सहयोग छात्रवृत्ति चिकित्सा सहायता किया करते थे।

अत यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा कि बीमारी बेकारी अज्ञानता अभाव आदि मानव के दानवो से मुक्ति दिलाने मे श्री बोहरा जी ने अभूतपूर्व योगदान करके समाज सेवा की एक मिशाल कायम की। मेरा बोहरा सा के साथ दो तीन बार जाने का एव विभिन्न अवसरो पर मिलने वार्तालाप करने का काम पड़ा। आप नि सन्देह एक सेवाभावी सच्चे नेक इन्सान एव सघ के आधार स्तम्भ रहे।

उन्हें मेरे अनेक नमन। *—श्री जैन पी जी कॉलेज बीकानेर*

सेवामूर्ति, धर्मपाल माता माँ यशोदा देवी

—डॉ. कविता मेहता—

सेवा की प्रतिमूर्ति माँ यशोदा देवी जी एक नेक इन्सान थीं। करुणा एवं वात्सल्य की साकार प्रतिमा थीं। आप समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. की श्रद्धाशील निष्ठावान सुश्राविका थीं। आप अनेक वर्षों तक श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति की अध्यक्षा एवं आजीवन संरक्षिका रहीं। आपके नेतृत्व मे महिलाओ में अपूर्व जागृति आई व बहुँमुखी प्रगति हुई।

मेरी यशोदा माताजी से मेरी ताई डॉ. शान्ता भानावत के साथ [illegible] में भेंट हुई। संयोग से उस वक्त मेरे साथ उन्होंने साहित्य शिक्षा एवं सेवा पर काफी देर तक चर्चा की। उनके प्रगतिशील विचारों का मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा। आपके हृदय मे नारी जाति को आगे बढ़ाने की तीव्र ललक थी [illegible] देखने की अमिट चाह थी।

उन्होंने धर्मपालों को व्यसन मुक्त करने एव सद्संस्कार युक्त बनने [illegible] जिस अप्रतिहत भूमिका का निर्वहन किया वह विस्मय विमुग्धकारी [illegible] जायेगा। इनकी इन्हीं सेवाओं से प्रभावित होकर समाज ने उन्हें धर्मपाल [illegible] के नाम से अभिहित किया।

आपने अनेक जरूरतमंद महिलाओ की विभिन्न रूपों में प्रभूत [illegible] प्रदान कर अपनी महती उदारता का परिचय दिया है। आपका यह आदर्श [illegible] पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगा।

निम्न पंक्तियों द्वारा उन्हें मेरी अशेष श्रद्धांजलि —

ओ यशोदा मा ! तुम नारी कल्याण की पुजारी हो
इतिहास तुम्हें सदा याद रखेगा।

—मैदों का चौक [illegible]

शिक्षा और चिकित्सा को समर्पित बोहरा दम्पत्ति

—लक्ष्मीचन्द जैन—

बोहरा दम्पत्ति के बारे मे बहुत कुछ सुनता रहता था। श्रमणोपासक मे उनके जीवन के प्रेरक प्रसगो को समय-समय पर पढ़ने का अवसर भी मिलता था। इसलिए उनके दर्शन की भावना प्रबल होती गई। जब समता विभूति आचार्य श्री नानेश का चौमासा पीपलिया कला में हुआ और वहा स्नातक स्वाध्यायियो का शिविर आयोजित हुआ तो मेरी चिर इच्छा पूर्ण हुई।

पीपलिया कला की चातुर्मास व्यवस्था तो अद्वितीय थी ही किन्तु उससे भी बढकर थी बोहरा दम्पत्ति की वात्सल्य भावना। छोटे से छोटे कार्य में वे सेवा देने को तत्पर रहते थे। वे शिविरार्थियो को अपने बच्चो से बढकर मानते थे। प्रत्येक से व्यक्तिगत परिचय करके उनकी निजी समस्याओं को हल करने का प्रयास भी करते थे।

शिविर समापन के समय कहे गए उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूजते हैं। उन्होने कहा था कि—मेरी शुभकामना है कि आप लोग मेरे परम आराध्य आचार्य श्री नानेश के समता सघ के शाति सैनिक हैं। आपके कधो पर गुरुतर उत्तरदायित्व है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ धर्म और धर्म मार्ग का दिग्दर्शन आपको अपने आचरण से करना है। आप लोगों को वतन के चमन मे अमन के सुमन खिलाना है।

स्व बोहरा सा ने डॉ नेमीचन्द जी जैन को साधुमार्गी जैन सघ के साथ जोड़ा।

बोहरा दम्पत्ति हमारे प्रेरणा-पुज हैं।

—छोटी करारायद

□

अलौकिक व्यक्तित्व

—घघल कुमार योथरा—

ससार में जन्म—मरण दु ख—दर्द शोक—सताप आते ही रहते हैं। मरना ही का लक्षण है लेकिन जो व्यक्ति देश धर्म और समाज के लिए कुछ कर जाते हैं अमर हो जाते हैं। ऐसे ही अमर हो जाने वाले महापुरुष थे स्व. श्री गणपतराज जी बोहरा पीपलिया—कला। उन्होंने धर्म को समझा और अपने आचरण में धर्म को साकार किया।

जब परम पूज्य आचार्य श्री नानेश का स २०४८ का चौमासा पीपलिया—कला में हुआ तब उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा ने इन शासन नायक की जो सेवा की उसको समाज कभी भुला नहीं सकता। पूज्य गुरु के साथ चारित्रात्माओं की सेवा तो दिल से की ही साथ ही जो भी दर्शनार्थी पधारते उनकी सेवा में भी आत्मीयता से जुट जाते थे। सेवा का यह दृश्य स्मरण से आज भी हर्ष विभोर कर देता है। यह भुलाये नहीं भूलता। सुधिजनों से ऐसा सुनने में आया कि जिस प्रकार भगवान् महावीर गुणशील नामक उद्यान में विराजते थे उसी प्रकार आचार्य श्री नानेश पीपलिया कला के प्राकृतिक परिवेश में स्थित आचार्य श्री नानेश समता मेमोरियल अस्पताल परिसर में विराजते थे।

उसी चातुर्मास में स्नातक स्वाध्यायियों के शिविर का आयोजन एक अविस्मरणीय घटना थी। शिविर का स्तर शिविर की व्यवस्था आज भी अविस्मरणीय है। चौमासे में प्रति रविवार पी.जी.पोरवाल्स परिवार के विशेष प्रयासों से आचार्य श्री के प्रवचन में आस—पास के गावों से ५०—५० कि.मी. से बालक—बालिकाओं को लाने व ले जाने की बेजोड़ व्यवस्था देखने को मिली। संस्कार निर्माण के क्षेत्र में के इतिहास में यह एक अभिनव—अपूर्व प्रयोग था।

बोहरा दम्पति ने धर्मपाल क्षेत्र में भी सेवा के भागीरथ प्रयास किए। उन्हीं के जबरदस्त पुरुषार्थ का ही यह सुपरिणाम है कि जहा शराब—मास व दुर्व्यसनों का दौर—दौरा था वहा सत् संस्कारों की पावन सरिता आज भी बह रही है। जिस दुकान पर शराब की बोतल होती थी उस पर आज मुँहपत्ती लगी हुई है। इन भाइयों पर जबरदस्त सेवाओं की छाप अमिट है।

बोहरा दम्पति का निधन—बोहरा परिवार की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज की अपूरणीय क्षति है। उन दोनों की आत्माओं की चिरशांति हेतु मंगल कामना।

—गंगासहर भीनासर
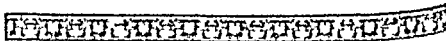
हस उड गया, लोग देखते रह गये

—मिट्ठालाल मुरड़िया साहित्यरत्न —

धर्म-समाज-साधुमार्गी जैन सघ और चतुर्विध सघ को एक साथ—गुलाब दा चम्पा चमेली मोगरा और केकड़े की खुशबू लुटाने वाले परमप्रतापी दृढ श्चयी धर्मानुरागी कर्त्तव्यशील उदार हृदयी शक्ति और भक्ति के परम ासक श्री गणपतराज जी बोहरा हमारे बीच नहीं रहे हैं मगर उनकी द्भावनाओं का स्त्रोत और सद् विचारों की मन्दाकिनी आज भी हमारे मानस निरन्तर प्रवाहित होकर हमारा मार्ग दर्शन कर रही है।

श्री गणपतराज जी समाज और धर्म की धरोहर थे। उन्होंने क्या ाया ? क्या बनाया ? क्या दिया ? क्या लुटाया ? यह पृथक विषय है। मगर नमें एक अद्भुत चमक थी एक सत्यनिष्ठा थी एक तेज था धर्म से उमड़ता क मानस था उनमें एक जिन्दा दिली थी एक फक्कडपन का एक लगन थी।

समाज को सन्मार्ग पर लाने का उनमे एक दर्द था एक पीड़ा थी एक स थी। जो जीवन भर उन्हे मर्माहित करती रही। वे अपने मिशन के सफल भिनेता थे। समाज के वे मदन मोहन मालवीय थे। वे जो कहते थे कर दिखाते । बड़े धैर्य से सभी की बात सुनते थे और बड़े विवेक के साथ समाधान देते । छल-छद्म से वे कोसो दूर थे। पवित्रता स्वच्छता निर्मलता उनके अन्तरतम छलकती थी। एक अभिनेता आया था प्रकाश कर गया रोशनी दे गया और पना कौतुक दिखाकर चला गया।

हस अपने पख फड़फड़ाता रहा पता ही नहीं चल सका। सभी देखते ३ गये गगन मे। तारे टिमटिमाते रहे चन्द्रमा शीतलता बिखेरता रहा पेड़—ाधों मे उदासी छा गई फलो का रस गिरता रहा आसू टपकते रहे मगर वह तुर चितेरा चल दिया— किसी को पता ही नहीं चला।

श्री बोहराजी मे पटेल की दृढता मीरा की भक्ति भावना प्रताप की शभक्ति हाडा का बलिदान पन्ना का त्याग एक साथ छलकता था। श्री र्धमानजी पीतलिया बनेचन्द भाई जौहरी हीरालाल जी नादेचा भैरोंदान जी ाठिया कुन्दनमलजी फिरोदिया की धर्मनिष्ठा श्री बोहराजी में एक साथ समायी ई थी।

—२० प्रीमरोज रोड़ बैंगलोर २५

□

बोहरा दम्पति को भावभानी श्रद्धाजलिया

—शातादेवी मेहता—

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के आधार स्तभ आ श्रीमान ग...
सा बोहरा पीपलियाकला के दिनाक १६ ८ ६८ को स्वर्गवास हो जाने से ए...
अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की वरिष्ठतम पदाधिकारी श्रीमती ...
बोहरा के दिनाक ३० ७ ६८ को आकस्मिक निधन हो जाने पर रतलाम में ...
शातादेवी मेहता की प्रेरणा से उनकी स्मृति स्वरूप विभिन्न कार्यक्रम ...
किये गये।

दिनाक २० ८ ६८ को समता भवन में एक शोक सभा का आयोजन ...
गया जिसमे यहा विराजित महासती श्री जयश्रीजी ने उनके जीवन पर प्र...
डालते हुए इसे सघ के लिये अपूरणीय क्षति बताया। इनके अ...
श्री हस्तीमलजी मूणत श्री मदनलालजी कटारिया आदि ने भी शोक ...
व्यक्त करते हुए अपनी ओर से श्रद्धान्जली अर्पित की। इसी प्रकार ...
स्मृति स्वरुप युवा महिला मडल एव महिला समिति द्वारा भी शोक ...
आयोजन किय गये।

दिनाक ३ ८ ६८ और दिनाक २० ८ ६८ को श्री जैन महिला उद्योग ...
रतलाम में शोक सभाओ का आयोजन किया गया जिसमे श्रीमती ...
मेहता द्वारा बोहरा दपति के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए ...
सघ समाज और महिला समिति को दी गई सेवाओं का उल्लेख किया ...
इनके अतिरिक्त श्रीमान् पी सी चौपडा श्री मगनलालजी मेहता श्री ...
पीरोदिया आदि द्वारा भी उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धा...
अर्पित की। रतलाम के जैन महिला उद्योग मदिर के तो बोहरा दपति ...
रतन ही रहे थे।

दिनांक ८ ६ १० सितम्बर १६६८ को बोहरा दपति की स्मृति में ...
रतलाम ने श्रीमती शातादेवी मेहता द्वारा त्रिदिवसीय नवकार मत्र के ...
आयोजन करवाया गया। अधिवेशन के पश्चात् उनकी स्मृति में ...
पैकेट महिलाओं मे वरदानो के साथ श्रीमती शातादेवी द्वारा ...

धर्म राही बोहरा दम्पति खट्टी मीठी यादे

-श्रीमती कमला श्रीमाली-

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की पूना कार्यकारिणी समिति बैठक मे आज से करीब २०–२१ वर्ष पूर्व सर्वप्रथम मैंने श्री गणपतराज जी बोहरा और श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा को देखा और तीन-चार दिन साथ-साथ रहने का मौका मिला। सभी लोग कहते थे ये बहुत बड़े उद्योगपति हैं किन्तु मुझे न तो पूना मे और न ही बाद के वर्षों मे कभी ये अनुभव हुआ कि मैं बहुत बडे धनाढय परिवार से बात कर रही हू। ये पति-पत्नी श्री बोहरा जी और श्रीमती यशोदा देवी जी सदैव सरल और सहज मिले। घर-परिवार की सुख-दु ख की बात पूछना और उत्साह बढाना तो मानो आप दोनो का सहज स्वभाव है।

पूना में बोहरा दम्पति से परिचय के बाद तो मिलना होता ही रहा। इन्दौर मे बालिकाओ के शिविर मे ६–७ दिन फिर बोहरा दम्पति के साथ रहने का अवसर मिला। दिलीपनगर रतलाम मे धर्मपाल शिविर में भी दो दिन साथ रहने का मौका मिला। सब लोग एक परिवार की तरह साथ रहते थे। परिवार के मुखिया की भाति हम सब बोहरा युगल को मानते थे। वे यादें याद करके आज भी बड़ा आनन्द आता है।

फिर तो मिलना होता ही रहा। धघुका मे आचार्य श्री नानेश के सान्निध्य मे अक्षय तृतीया के पारणो में और भावनगर मे आचार्य श्री के चौमासे में पुन बोहरा दम्पति की सेवा और कर्मठता के दर्शन किए। भावनगर हम पहुचे तो जैसा कि हम अपना अधिकार समझते थे सीधे बोहरा जी के आवास पर पहुच गए। दोपहर के करीब ३ बजने जा रहे थे तब बोहरा सा भोजन कर रहे थे। सबको भोजन कराकर सबके बाद। मन श्रद्धा से भर उठा।

एक बार पूरे परिवार को लेकर हम बोहरा सा की हवेली पीपलिया कला में जा धमके पर रात हो गई थी। अत जैन जीवन पद्धति की धनी यशोदा जी ने नए सिरे से रसोई बनाना और जिमाना उचित नहीं समझा। हम तो ब्राह्मण हैं रात को भी भोजन करते हैं किन्तु यशोदा मैया ने बच्चो को भुजिया बिस्कुट आदि तैयार भोजन कराके सुला दिया। थोड़ा बुरा लगा किन्तु सुबह होते ही जब यशोदा माताजी ने खुद अपने हाथ से भोजन बनाया और पास बैठकर खिलाया तो बड़ा अच्छा लगा। मन फिर खुश हो गया।

बीकानेर में एक बार आग्रह करने पर यशोदा मैया तुरन्त [illegible] हमारे घर भी आई और हमारे साथ बहुत देर रहीं। सभी बच्चों को स्नेह दिया।

कलकत्ता में श्री जैन विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के प्रसंग पर श्री सरदारमल जी और श्रीमती फूलकवर जी कांकरिया ने हमें भी बुलाया था और ५-६ दिन बोहरा दम्पति व संघ प्रमुखों के साथ बहुत हंसीखुशी से रहने का मौका मिला।

संघ अधिवेशनों, कार्यकारिणी बैठकों और विशेष मौकों पर मैं भी अपने पति के साथ जाया करती थी। प्रायः मुझे अपने पति के साथ देखकर यशोदा माताजी कहती थी कि "जानकीनारायण जी साधु नहीं बन जावें इसलिए क्या हमेशा उनकी निगरानी रखने के लिए साथ में रहती हो"— यह सुनकर हम सब कहकहा लगाकर हंस पड़ते थे किन्तु जब कभी मेरे पति अकेले ही संघ में जाते तो सभी बहिनें उनको उपालम्भ देती थीं कि साथ में क्यों नहीं लाए?

इस प्रकार कहां तक लिखूं। संघ और बोहरा जी व यशोदा माताजी के स्नेह-प्यार से मैं व मेरा पूरा परिवार भीगा हुआ है। आज बोहराजी और यशोदा माताजी इस संसार में नहीं हैं किन्तु उनका स्नेह भाव हमारी स्मृति में अमर है।

—महापुरी चौक [illegible]

□

जिस राष्ट्रीयता में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का सहायक और पूरक रहता है, जिसमें प्रतिस्पर्धा के बदले पारस्परिक सहानुभूति की प्रधानता होती है, जहाँ विश्व कल्याण के प्रयोजन से राष्ट्रीय नीति का निर्धारण होता है, वही शुद्ध राष्ट्रीयता है।

जैसे शरीर का प्रत्येक अंग दूसरे अंग का पोषक है, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र विश्व शरीर का पोषक होना चाहिए।

-आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा

सेवा पथ के पथिक

—एम के धर्मराज सचेती—

जन्म के पश्चात् मृत्यु अतिम सत्य है किन्तु जन्म लेना उसी का सार्थक है जो अपने सत्कर्मों से मरकर भी अमर हो जावे। बोहरा दम्पति मर कर भी अमर हो गये।

श्रीमती यशोदा माता एक आदर्श धर्मपत्नी कुशल नेत्री सफल समाज सेविका और महान् धर्मशीला श्रमणोपासिका थीं। आप बोहरा सा के साथ सदा छाया की भाति रही। आपने अपने यशोदा नाम को सार्थक किया और दोनो कुलो की कीर्ति को बढ़ाया।

धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा के व्यक्तित्व का तो कहना ही क्या ? वे व्यक्ति नहीं— सस्था थे। वे यद्यपि श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष व प्रमुख थे किन्तु वास्तव में सम्पूर्ण जैन समाज के आदरणीय थे। शिक्षाप्रेमी दानवीर स्वतत्रता सेनानी उद्योगपति धर्म प्रेमी और गुरु भक्त होते हुए वे सच्चे अर्थों मे एक मौन-मूक समाजसेवी थे।

परमपूज्य आचार्य श्री नानेश के सन् १९६६ के राजनादगाव चौमासे में वे अधिवेशन के दौरान गभीर रूप से बीमार हो गए थे किन्तु देव गुरु धर्म की छाव में पुन स्वस्थ होकर तीन दशक से अधिक समाज सेवा की। आपका देहावसान भी पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस को हुआ।

अपनी सहधर्मिणी यशोदा देवी जी के देहावसान पर उन्होने समाज व स्नेहीजनों को जो सन्देश प्रेषित किया वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। बोहरा दम्पति का निधन सघ समाज और राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। हम उनके आदर्शों पर चल कर समाज की सेवा करें यही उन्हें सही श्रद्धाजली होगी।

—डोंडीलोहारा दुर्ग (म प्र)

□

बीकानेर मे एक बार आग्रह करने पर यशोदा मैया तुरन्त रवाना होकर हमारे घर भी आई और हमारे साथ बहुत देर रहीं। सभी बच्चों को स्नेह दिया।

कलकत्ता में श्री जैन विद्यालय की स्वर्ण जयती के प्रसग पर श्री सरदारमल जी और श्रीमती फूलकवर जी काकरिया ने हमें भी बुलाया था और ५-६ दिन बोहरा दम्पति व सघ प्रमुखो के साथ बहुत हसीखुशी से रहने का मौका मिला।

सघ अधिवेशनों कार्यकारिणी बैठको और विशेष मौकों पर मैं भी अपने पति के साथ जाया करती थी। प्राय मुझे अपने पति के साथ देखकर यशोदा माताजी कहती थी कि 'जानकीनारायण जी साधु नहीं बण जावें इसलिए तुम हमेशा उनकी निगरानी रखने के लिए साथ मे रहती हो— यह सुनकर हम सब कहकहा लगाकर हस पड़ते थे किन्तु जब कभी मेरे पति अकेले ही सभा में जाते तो सभी बहिनें उनको उपालम्भ देती थीं कि साथ में क्यों नहीं लाए?

इस प्रकार कहा तक लिखू। सघ और बोहरा जी व यशोदा माताजी के स्नेह-प्यार से मैं व मेरा पूरा परिवार भीगा हुआ है। आज बोहराजी और यशोदा माताजी इस ससार में नहीं हैं किन्तु उनका स्नेह-भाव हमारी स्मृति में अमर है।

—ब्रह्मपुरी चौक बीकानेर

□

जिस राष्ट्रीयता में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का सहायक और पूरक रहता है, जिसमें प्रतिस्पर्धा के बदले पारस्परिक सहानुभूति की प्रधानता होती है, जहा विश्व-कल्याण के प्रयोजन से राष्ट्रीय नीति का निर्धारण होता है वहीं शुद्ध राष्ट्रीयता है।

जैसे शरीर का प्रत्येक अग दूसरे अग का पोषक है उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र, विश्व शरीर का पोषक होना चाहिए।

—आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा

सेवा पथ के पथिक

—एम के धर्मराज सचेती—

जन्म के पश्चात् मृत्यु अतिम सत्य है किन्तु जन्म लेना उसी का सार्थक है जो अपने सत्कर्मो से मरकर भी अमर हो जावे। बोहरा दम्पति मर कर भी अमर हो गये।

श्रीमती यशोदा माता एक आदर्श धर्मपत्नी कुशल नेत्री सफल समाज सेविका और महान् धर्मशीला श्रमणोपासिका थीं। आप बोहरा सा के साथ सदा छाया की भाति रही। आपने अपने यशोदा नाम को सार्थक किया और दोनो कुलों की कीर्ति को बढ़ाया।

धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा के व्यक्तित्व का तो कहना ही क्या ? वे व्यक्ति नहीं— सस्था थे। वे यद्यपि श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष व प्रमुख थे किन्तु वास्तव मे सम्पूर्ण जैन समाज के आदरणीय थे। शिक्षाप्रेमी दानवीर स्वतन्त्रता सेनानी उद्योगपति धर्म प्रेमी और गुरु भक्त होते हुए वे सच्चे अर्थों में एक मौन-मूक समाजसेवी थे।

परमपूज्य आचार्य श्री नानेश के सन् १६६६ के राजनादगाव चौमासे में वे अधिवेशन के दौरान गभीर रूप से बीमार हो गए थे किन्तु देव गुरु धर्म की छाव में पुन स्वस्थ होकर तीन दशक से अधिक समाज सेवा की। आपका देहावसान भी पयुर्षण पर्व के प्रथम दिवस को हुआ।

अपनी सहधर्मिणी यशोदा देवी जी के देहावसान पर उन्होने समाज व स्नेहीजनों को जो सन्देश प्रेषित किया वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। बोहरा दम्पति का निधन सघ समाज और राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। हम उनके आदर्शों पर चल कर समाज की सेवा करें यही उन्हें सही श्रद्धाजली होगी।

—डौंडीलोहारा दुर्ग (म.प्र)

□

जैन समाज के अमोलक रत्न बोहरा दम्पति

—केवलचद मूथा—

करुणा दया गम्भीरता धर्मवात्सल्य व्यक्तित्व के धनी एव धर्मपरा पितामह के नाम से विख्यात व्यक्तित्व श्रीमान् गणपतराज जी बोहरा एव इन्ही के गुणो का अनुसरण करती हुई श्रीमती यशोदा देवी बोहरा धर्म समाज एव परिवार के प्रति समर्पित थीं। आचार्य भगवन युवाचार्य भगवन् व सत-सतियों की सेवा में सदा अग्रणी विशेष रूप से धर्मपाल क्षेत्रों मे जाकर तन मन धन से सहयोग देने वाले बोहरा दम्पति को 'अ भा साधुमार्गी जैन सघ' व जैन सम्प्रदाय में ही नहीं अपितु अजैनों में भी श्रद्धा का पुज माना जाता रहा।

आपका मिलनसार सरल हृदय व मृदुभाषी व्यवहार सभी के दिलों में विशिष्ट स्थान बनाये हुए हैं। जब कभी भी साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ आपको हमेशा उपरोक्त व्यावहारिक गुणों से लाजवाब पाया। समाज के व विशिष्ट पद पर रहते हुए भी भावना सदा सरल बनाये रखकर सम्पर्क में लोगो को समाज धर्म से जोडने में वे हमेशा अपना योगदान देते रहे। मालवा के धर्मपाल क्षेत्रो में भी आपने उपरोक्त गुणो से उनके हृदय मे उच्च स्थान बना रखा। वहा तो आप दोनों को लोगो ने ऐसा सम्मान दिया कि देखते ही बनता था।

आज हमारे बीच बोहरा दम्पति नहीं है पर उनका आदर्श जीवन हमारे लिए समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

ऐसे महान् तेजस्वी करुणामयी दयामयी त्याग की प्रतिमूर्ति को हम कभी नहीं भूला पायेंगे।

—रायपुर (म.प्र)

जैसा आहार वैसा विचार, उच्चार और व्यवहार।

श्री बोहरा व्यक्ति नही सस्था थे

–राजेन्द्र कुमार सिघवी–

श्री गणपतराज जी बोहरा एक व्यक्ति नहीं थे वे एक पूर्ण सस्था थे। जिस प्रकार से उन्होने सामाजिक धार्मिक एव औद्योगिक क्षेत्र मे अपना सक्रिय योगदान दिया यह इस बात का परिचायक है। जिस कार्य को भी उन्होने अपने हाथ में लिया उसका दृढ़ता पूर्वक सफल सचालन किया एव उसे पूर्ण करके ही छोड़ा। उन्होने समय के महत्व को समझ कर आशावादी बने रहने के लिए एव सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे कारगर तरीका व्यस्तता को अपनाया एव अपने श्रम तथा समय को लक्ष्य प्राप्ति मे लगाया। अनियमितता उनके जीवन में कभी हावी नहीं रही एव वे कार्य की महता व प्राथमिकता के आधार पर अपने सभी कार्य निपटाते थे।

हमेशा प्रसन्न रहना उनकी आदत थी एव हर नई बात वह धार्मिक हो सामाजिक हो उद्योग सम्बन्धी हो अथवा राजनैतिक उनका पूर्ण प्रयास रहता था कि वे हर नई बात की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें अपने से छोटों से भी कोई बात सीखनी होती तो वे किसी प्रकार का सकोच नहीं करते थे।

अनुशासन एव किसी भी सस्था अथवा समाज द्वारा बनाये गये नियमो का वे हमेशा पालन करते थे। इस बारे मे मुझे एक घटना का स्मरण हो रहा है। यह तब की बात है जब सन् १६६१ मे आचार्य श्री का पिपलिया कला में चातुर्मास चल रहा था उस समय यहा पर जैन तत्त्व ज्ञान स्नातक शिक्षण शिविर का ३ दिन के लिये आयोजन किया गया था। इस शिविर मे न्यूनतम स्नातक स्तर की योग्यता वाले भाई बहिनो को ही भाग लेने का अवसर दिया गया था। शिविर के प्रथम दिवस से ही गूढ विषयों पर आचार्य श्री के प्रवचन होते थे परन्तु जैसा कि हर जगह होता है पुरुष एव महिलाये व्याख्यान प्रारम्भ होने पर आते एव समापन से पूर्व अपनी इच्छा से उठकर चले जाते इससे व्याख्यान में बार बार व्यवधान होता था मैं उन दिनों व्याख्यान का सचालन करता था। तब यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी एव मैंने यहा पर विराजित मुनिराज श्री राम मुनि जी एव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज साहब को बतलाई
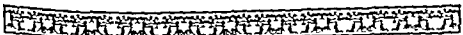
एव उनसे आदेश लेकर उसी दिन यह घोषणा कर दी कि अगले दो दिनों में किसी भी व्यक्ति को गुरुदेव का व्याख्यान प्रारम्भ होने के पश्चात् व्याख्यान हाल मे प्रवेश नहीं करने दिया जायेगा। इसकी हिदायत स्वय सेवकों को भी दे दी गई थी।

यद्यपि श्री गणपतराज जी हमेशा समय पर व्याख्यान में आते थे परन्तु दूसरे ही दिन किन्हीं अन्य व्यवस्थाओं में लगे रहने के कारण वे गुरुदेव का व्याख्यान प्रारम्भ होने के पश्चात् व्याख्यान हाल के द्वार पर पहुचे वहा खड़े कार्यकर्ताओ ने उन्हे अन्दर आने का आग्रह किया परन्तु व्यवस्था में सहयोग करने के हिसाब से एक अनुशासित श्रावक की तरह बाहर निर्धारित स्थान पर बैठ गये। इस घटना का वर्णन आचार्य श्री एव युवाचार्य श्री ने अपने कई व्याख्यानों मे मेरे सामने भी किया परन्तु यह मेरे द्वारा निर्धारित अनुशासन नहीं था वरन् सेठ साहब श्री गणपतराज जी के द्वारा अपनाया गया अनुशासन था।

सेठ साहब के स्वर्गवास होने के कुछ दिनों पूर्व जब पीपलिया कला में श्री पकज बाबू एव उनके दोनो भ्राता अनुपस्थित थे तब उन्होंने मुझे बुलाकर बतलाया कि उन्होने अपना सम्पूर्ण शरीर दान में देने का निश्चय किया हुआ है अत यदि उनका स्वर्गवास हो जावे तो आप यह अवश्य ध्यान रखें कि पाली के ही मेडिकल कॉलेज म उनका शव सौंप दिया जावे विधि के विधान से इस बात के कुछ ही दिनों पश्चात् उनका स्वर्गवास हो गया एव मैंने टेलीफोन पर पाली एव अजमेर डाक्टरों से सम्पर्क किया तो उन्होंने यह बतलाया कि अधिक आयु हो जाने के कारण उनके शरीर के अगो का प्रत्यारोपण सम्भव नहीं होगा। अत हम इस शरीर को लेकर भी सदुपयोग नहीं कर पायेंगे। इसके पश्चात् ही उनका दाह सस्कार किया गया।

वैसे तो मुझे प्रत्यक्ष रूप से उनके साथ कार्य करने का अधिक सौभाग्य नहीं मिला क्योकि वे पीपलिया कला कभी-कभी ही आया करते थे परन्तु जब भी उनके पास जाने का अवसर मिला एव बात करने का मौका मिला मैं उनकी सादगी और अपनत्व से ऐसा महसूस करता जैसे मैं उन्हीं के सानिध्य में कार्य कर रहा हू। अपने पास बैठकर बात सुनना भोजन खिलाना एव मार्गदर्शन करना उनका एक बहुत बड़ा गुण था। आज उन्हीं के पद चिन्हो पर चलते हुये उन्हीं के सुपोत्र श्री पकज पी शाह अशोक पी शाह एव अभय पी शाह धार्मिक सामाजिक एव औद्योगिक क्षेत्र में अपना स्थान बनाये हुए हैं।
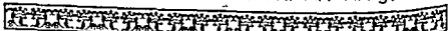
इस अवसर पर मैं स्वर्गीय श्री पारसराजजी का भी अवश्य स्मरण करना चाहूगा जिन्होने अपने पिता श्री गणपतराज जी से जो गुण प्राप्त किये उन्हे अपने जीवन में उतारा एव जीवन पर्यन्त उसी के अनुरूप चलते रहे चाहे वे सरपच के पद पर रहे या सामाजिक धार्मिक एव औद्योगिक सस्थाओ से जुड़े रहे। उनका सदैव यही प्रयास रहा कि वे सार्वजनिक हित का कार्य करे एव इसी मत्र को उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया।

श्री गणपतराज जी साहब पिपलिया कला के निर्विरोध सरपच रहे एव जिस प्रकार के कार्य उन्होने अपने कार्यकाल मे करवाये वे आज सभी स्मरण किये जाते हैं एव इसी कारण जब इनकी अन्तिम शव यात्रा गाव में से गुजरी तो सम्पूर्ण ग्रामवासिया ने इन्हे अश्रुपूरित नेत्रों से विदा दी। व्यक्ति चला गया लेकिन उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही उन्हे सच्ची श्रद्धाजली दी जा सकती है।

—महाप्रबधक पी जी फायल्स लिमिटेड पिपलिया कला (राज०)

❑

विश्व के समस्त प्राणियों पर निर्वैरभाव रखना और विश्वमैत्री-भावना विकसित करना क्षमापना का महान् आदर्श और उद्देश्य है। मनुष्य के साथ मनुष्य का सबध अधिक रहता है अतएव मनुष्यों के प्रति निर्वैरवृति धारण करने के लिए सर्वप्रथम अपने घर के लोगों के साथ अगर उनके द्वारा कलुषता उत्पन्न हुई हो या उनके चित्त में कलुषता हुई हो तो क्षमा का आदान-प्रदान करके विश्वमैत्री का शुभ समारम्भ करना चाहिए।

- श्रीमद् जवाहाचार्य

भीलणी के बेर

–हीरालाल मकवाना 'धर्मपाल जैन'–

युग-युग से उपेक्षित हमारा समाज आचार्य श्री नानेश की अप्रत देशना और सत-सतियो के उपकार से आज धर्मपाल समाज के रूप में सम्मानित स्थिति को प्राप्त कर चुका है। आचार्य गुरुदेव के उपदेशो को आचार में ढालने का काम साधुमार्गी जैन सघ ने किया और इस कार्य के लिए श्री गणपतराज जी बोहरा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा ने अपने आपको सर्वभावेन समर्पित कर दिया। इन दोनो ने हम धर्मपालो को जो स्नेह और ममता दी उसे हमारा समाज कभी नहीं भूलेगा। इन दोनों ने धर्मपाल समाज को अपने पुत्र की भाति माना। इसीलिए समाज इन्हें धर्मपाल पिता और माता के रूप में मानने लगा।

उन दोनों के जीवन सस्मरणो से तो हृदय लबाबल भरा है पर २-३ सस्मरण यहा लिख रहा हू। एक–धर्म जागरण पद यात्रा मक्सी क्षेत्र में निकल रही थी। मैं सघ की जीप–गाड़ी लेकर ग्राम झोंकर से मक्सी पहुचा। वहा ग्राम कायथा में दर्ज किसी मामले की पूछ परख के लिए थानेदार सा ने मुझे पकड़ लिया और मक्सी से १६ किमी दूर ग्राम कायथा ले गए। जब यशोदा माताजी को इस घटना की जानकारी मिली तो उन्हाने तत्काल भोजन का त्याग कर दिया और कहा कि हीरालाल के आने पर ही भोजन करूगी।

फौरन श्री पी सी चौपड़ा सा समीरमल जी काठेड और युवा नेता श्री वीरेन्द्र कोठारी एडवोकेट आदि कार्यकर्त्ता दो गाड़ियों में कायथा पहुचे। थानेदार जी ने मुझे तत्काल उनके हवाले किया और वे मुझे लेकर वापस ग्राम झोकर पहुचे। हम पदयात्रा पडाव पर पहुचे तो मा यशोदा मुझे सीने से लगाकर रो पड़ी फिर हम दोनो मा बेटे ने साथ-साथ भोजन किया। अन्य भी सभी लोगों ने भोजन किया।

दूसरे दिन पदयात्रा का रूलकी ग्राम में पड़ाव था। पहले दिन की घटना पर देशनोक के श्री हनुमानमल जी बोथरा ने एक भजन बना कर गाया और पूछा कि 'जसोदा मैय्या धर्मपाल थारे काई लागै यशोदा माता जी ने खड़े

होकर कहा कि 'धर्मपाल म्हारा कृष्ण कन्हैया लागे सभा हर्ष नाद से गूज उठी।

इसी प्रकार एक बार ग्राम रूलकी मे धर्मपाल सम्मलेन था जिसमे बोहरा जी माता यशोदा जी और सघ के प्रमुख लोग आए थे। इन सभी करीब २०–२५ प्रमुख लोगों का भोजन मेरे घर पर था। हमने लड्डू बाफले बनाए और उस कड़ी धूप मे सभी के बैठने की व्यवस्था की। जैसे ही धर्मपाल सम्मेलन सम्पूर्ण हुआ श्री बोहरा जी और यशोदा माताजी सीधे ही मेरे घर के चौके मे आ पहुचे और मेरी पत्नी से पूछा कि क्या भोजन बनाया है तो उसने बताया कि लड्डू, बाफले दाल और कड़ी बनाई है। इस पर माता–पिता दोनो बोले कि आप लोग जो हमेशा खाते हैं वही हमे भी खिलाओ। तब हमने ज्वार की रोटी बनाई और साथ ही छाछ भी परोसी। सभी ने बडी आत्मीयता के साथ खाई। जैसा स्थान था उबड़–खाबड उसकी चिन्ता न कर आराम से चटाई पर लेट गए।

मैं बोहरा दम्पत्ति के बडौदा और पिपलिया कला निवासो पर जा चुका हू, रह चुका हू और उनके वैभव को निकट से देख चुका हू। उसके मुकाबले मेरे घर की ज्वार की रोटी व छाछ और सोने की चटाई का दृश्य याद कर-कर के मुझे राम और शबरी की घटना मानो मेरे घर मे साकार हो गई–सी लगती है। मुझे लगता है उस दिन मेरी कुटिया मे राम ने भीलनी के झूठे बेर खाए थे।

आज बोहरा सा और यशोदा माता जी इस दुनिया मे नहीं हैं किन्तु उनकी याद धर्मपालो के ह्रदयों में अमर रहेगी।

–जैन मन्दिर के पास पो मकरी

☐

साधक को साधना के क्षेत्र में निरन्तर चलते रहना चाहिए। कभी भी विराम का नहीं सोचना चाहिये। विराम का चिन्तन साधक के गिराव (पतन) का सूचक है।

-आचार्य श्री नानेश

हम धर्मपाल तो क्या पूरा श्री सघ भी नहीं भूलेगा

–नरसिह सोलकी–

श्रीमान् परम पूज्यनीय अमरजीवित धर्मपालों के प्राण धर्मपाल पितामह स्व० श्री गणपतराज जी सा बोहरा को व परम पूज्यनीय धर्मपालों के ममत्व की छाय धर्मपाल माता जी स्व० श्री यशोदा देवी बोहरा ऐसी दयालु माता-पिता को मध्यप्रदेश के मालवाअचल के धार जिले– मदसौर, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर के करीब एक लाख धर्मपाल भाई–बहिने माता–पिता बच्चे आपको कभी नहीं भुलेगे। जनजन क हृदय सम्राट धर्मपाल पितामह ने हम धर्मपालों के लिये शिक्षा विकास एव उच्य पद पर नौकरी हेतु दिलीप नगर रतलाम में धर्मपाल जैन छात्रावास निर्माण कराया। ग्राम-ग्राम मे आचार्य श्री एक हजार आठ (१००८) श्री नाना लाल जी म. सा की आपने डाक बाटी। आपने धर्मप्रचार किया एव धर्मपालो के धर्मध्यान हेतु धार्मिक पाठशालाए एव धर्मपाल समता भवन ग्राम–ग्राम में बनवाये हैं। धर्मपालों के दुःख-सुख मे आप हमेशा साथी बना करते थे। जैसे कोई पिता अपने परिवार की देखरेख कर घर का सचालन करता वैसे ही आप हम धर्मपालो की हमारे परिवार की देखरेख कर सेवा में समर्पित थे। ममत्व की छाव धर्मपाल माता जी स्व० श्रीमती यशोदा देवीजी बोहरा पूरे धर्मपाल परिवार की माता जी थीं। हम धर्मपाल बहुत गरीब थे तो माता जी ने हमारी दयनीय दशा देखकर यह सोच लिया था कि जब तक धर्मपाल भाई-बहन गादी-बिस्तर पर आराम से नहीं सो सकेंगे तब तक मैं भी गादी बिस्तर बिछाकर नहीं सोऊगी। माताजी को सघ वाले व हम धर्मपाल सब कहकर-कहकर थक गये पर वही किया जो उन्हे करना था। माता जी की भावना एव गुरुदेव की पूरी दया के कारण आज हम सब धर्मपाल सक्षम हो गये। श्री सघ के साथ रहकर हमने इज्जत सम्मान पाया यह सब गुरुदेव की कृपा व धर्मपाल पिता व माताजी की आतरिक भावना की दया की सफलता है।

पूज्य धर्मपाल पिता एव माताजी सन् १९६२ में हमारे गाव लामगरा धर्मपाल गढ़ क्षेत्र मदसौर धर्मपाल सम्मेलन में पधारे थे। बहुत बड़ा सम्मेलन था उसमे माता जी ने हमारे कच्चे मकान जो कवेलु के थे उसमें भोजन किया।
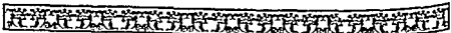
धर्मपाल माताजी के चरण हमारे घर को छू गये फलत २ साल के बाद ही हमारा पक्का घर हो गया। आज हम धर्मपाल सपरिवार जैन के समान रह रहे हैं। कोई जान ही नहीं सकता कि हम जैन हैं या धर्मपाल। यह सब श्रीसघ के सहयोग का फल है। जैसी सेवा धर्मपाल पिता-माता ने हम धर्मपालो के हित मे की ऐसी पुनीत आत्मा को सभी धर्मपालो की ओर से हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित एव शत-शत नमन।

जब तक सूरज चाद रहेगा।
धर्मपाल पिता व माताजी का नाम रहेगा।।

–क्षेत्रीय सयोजक ग्राम लामगरा (मदसौर)

आत्म-बल की श्रेष्ठता

आत्म-बल में अद्भुत शक्ति है। इस बल के सामने ससार को कोई भी बल नहीं टिक सकता। इसके विपरीत जिसमें आत्म-बल का सर्वथा अभाव है वह अन्यान्य बलों का अवलम्बन करके भी कृत-कार्य नहीं हो सकता। मृत्यु के समय अनेक क्या अधिकाश लोग दु ख का अनुभव करते हैं। मृत्यु का घोर अधकार इन्हें विह्वल बना देता है। बड़े-बड़े शूरवीर योद्धा, जो समुद्र के वृक्ष स्थल पर क्रीड़ा करते हैं, विशाल जल-राशि को चीरकर अपना मार्ग बनाते हैं और देवों की भाति आकाश में विहार करते हैं, जिनके पराक्रम से ससार थर्राता है, वे भी मृत्यु को समीप देखकर कातर बन जाते हैं, दीन हो जाते हैं। लेकिन जो महात्मा आत्मबली होते हैं वे मृत्यु का आलिंगन करते समय रचमात्र भी खेद नहीं करते। मृत्यु उनके लिए सघन अन्धकार नहीं है, वरन् स्वर्ग-अपवर्ग की ओर ले जाने वाले देवदूत के समान प्रतीत होती है।

–श्रीमद् जवाहराचार्य
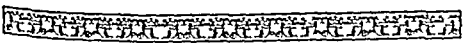
धर्मपाल समाज को असह्य आघात

—कुन्दल लाल मकवाना 'धर्मपाल' —[1]

श्रमणोपासक के माध्यम से धर्मपाल पिता सेठ श्री गणपतराज जी बोह और धर्मपाल माता श्रीमती यशोदा देवी जी शाह के महाप्रयाण का समाचार प्राप्त होते ही सम्पूर्ण धर्मपाल क्षेत्र मे शोक की लहर फैल गई। धर्मपाल सम स्तब्ध सा हो गया। सर्वत्र गहन मातम छा गया। अनेक आखें आसुओं से हो गई। शब्द निशब्द हो गए।

मक्सी क्षेत्र म समाचार प्राप्त होते ही शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे भारी सख्या मे आबाल-वृद्ध धर्मपाल स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। धर्मपाल क्षेत्र के समर्पित कार्यकर्त्ता अनन्य निष्ठावान कुशल सगठक श्री हीरालाल जी मकवाना ने मेरे हृदय और रुधे गले से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वर्गीय श्री बोहरा सा ने और यशोदा माता जी ने धर्मपाल समाज को जिस प्रकार हृदय से लगाया और जो स्नेह दिया वह इतिहास में अमर रहेगा। कोई भी धर्मपाल और धर्मपाल सतति इस वात्सल्य को भूल नहीं सकती। आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा ने हमे मार्ग बताया उपदेश दिया किन्तु उस मार्ग पर अगुलि पकड़कर चलाने और हमसे मजबूती के साथ नियमों को पालन करवाने मे बोहरा दम्पति ने अपनी सारी शक्ति झोक दी। उन्होने समाज को जो गति दी और उसे जिस मुकाम पर पहुचाया उसकी कल्पना करना भी कठिन है। बोहरा दम्पति ने हमारे समाज की उन्नति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

मै तो जब कभी उनसे मिलने जाता था तो वे हृदय से लगा लेते थे और समाज की गतिविधि पूछते थे। इन दोनो के निधन से समाज मातृ-पितृहीन हो गया है।

श्री बाबूलाल जी यादव ने कहा कि उन्होने जो बीडा उठाया उस कार्य को करके दिखा दिया। हमें सप्त कुव्यसनो से मुक्त करा दिया।

श्री जैरामसिह जी यादव ने कहा कि वे दोनों ऐसे ज्ञानमूर्ति थे कि उनका
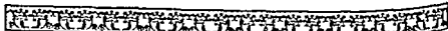
र्णन करना कठिन है। ऐसी विभूतिया पुन होना कठिन है।

श्री उमरावसिंह जी रूलकी ने कहा कि हमें हमारे धर्मपाल माता-पिता के बताये मार्ग पर चलकर उनके सकल्प को पूरा करना चाहिये। इसी प्रकार अन्य भाइयों ने भी अपने विचार रखे।

नवकार मत्र जाप चार लोगस्स के ध्यान और मौन श्रद्धाजलि पूर्वक देवगत आत्माओं को मोक्ष प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

—जैन मन्दिर के पास मक्सी (शाजापुर)

❑

जिस विचार यात और कार्य का त्रिकाल मे भी पलटा न हो, जिसको अपनी आत्मा निष्पक्ष भाव से अपनावे जिसके पूर्ण रूप से हृदय में स्थित हो जाने पर भय ग्लानि अहंकार मोह दम्भ ईर्ष्या द्वेष काम क्रोध, लोभ आदि कुत्सित भाव नि शेष हो जावे जो भूत में था वर्तमान में है और भविष्य में होगा तथा जिसके होने पर आत्मा को यास्तविक शान्ति प्राप्त हो, उसी का नाम सत्य है।

यालक तो अपने माता पिता का उत्तराधिकारी है। न केवल उनकी धन दौलत का मगर उनके सद्गुणो एवं दुर्गुणों का भी वह उत्तराधिकारी है। यह यात अगर मां याप की समझ में आ जाय तो यालक का यहुत कुछ भला हो सकता है।

मातृ प्रेम के समान संसार में और कोई प्रेम नहीं। मातृ प्रेम संसार की सर्वोत्तम विभूति है संसार का अमृत है। अतएव जय तक पुत्र गृहस्थ-जीवन से पृथक होकर साधु नहीं यना है तय तक माता उसके लिए देवता है।

सस्कारो के अग्रदूत

—श्री सज्जनसिह मेहता साथी —

दानवीर उदारमना श्री गणपतराज जी बोहरा बालक बालिकाओं मे सुसस्कारो के अभाव के कारण अत्यधिक चिन्तित थे क्योंकि वर्तमान युग मे बालक-बालिकाओ मे सुसस्कारों का प्राय अभाव पाया जाता है। माता-पिता का अपने व्यस्त जीवन के कारण बच्चो मे सस्कार निर्माण के प्रति बेखबर है उन्हे पुत्र-पुत्रियों के सस्कार निर्माण के लिए समय नहीं है। विद्यालयों महाविद्यालयं मे सस्कार निर्माण का कोई प्रावधान नहीं है। यही नहीं कॉन्वेन्ट स्कूल्स ए इगलिस मिडियम स्कूल्स में पढाने की अन्धानुकरण की प्रवृति से बच्चों मे पाश्चात्य सभ्यता एव सस्कृति का कुप्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है जिससे इस देश की पवित्र सस्कृति पर सीधा कुठाराघात हो रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में बालको मे सुसस्कार कहा से प्राप्त हों ? सता की सद्प्रेरणा से श्री गणपत राज जी बोहरा ने बच्चों मे सुसस्कार हेतु विद्यालयो के अवकाश के दिनों मे जैन धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजन करने की योजना बनाई। अपने स्वर्गी पिता श्री प्रेमराज श्री सा बोहरा के नाम से श्री प्रेमराज बोहरा शिविर समिति का गठन किया जिसके माध्यम से बालक बालिकाओं के अनेक शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों का सम्पूर्ण व्यय दानवीर श्री बोहरा जी वहन करते थे। मुझे भी इन शिविरो में सयोजक एव अध्यापक के पद पर कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्री बोहरा जी ने बहुत उदारतापूर्वक सभी शिविरों का व्यय वहन किया। भोपाल उदयपुर निकुम्भ राणावास गिलूण्ड रतलाम आदि कई स्थाना पर शिविरों का आयोजन हुआ जिसमें सैंकडो छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। इन शिविरों में जैन धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ सुसस्कार प्रदान का कार्य विशेष रूप से किया गया। जिसके फलस्वरूप अनेक बच्चे सस्कारित हुए इन शिविरों की उपलब्धि के रूप मे सघ को सन्त-सती एव वैरागी (मुमुक्षु) भी प्राप्त हुए। इस प्रकार बच्चों मे सस्कार निर्माण के प्रति आप पूर्ण जागरूक थे तथा इस पवित्र कार्य के लिए सदैव तन मन धन से तत्पर रहते थे।

श्री बोहरा जी परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य प्रवर १००८ श्री नानालालजी म सा शास्त्रज्ञ प्रशान्तमना युवाचार्य प्रवर १००८ श्री रामलाल जी म.सा एव उनके सघ के प्रति पूर्ण श्रद्धानिष्ठ थे। उन्हीं की सद्प्रेरणा से आप समता प्रचार सघ के सक्रिय सदस्य के रूप मे पर्युषण पर्व के पावन प्रसगों पर सेवा प्रदान करने भी पधारे। निम्बाहेडा मे आप श्री की पर्युषण सेवाए अमूल्य और अत्यन्त सराहनीय रही। इतने महान् उद्योगपति पर्युषण पर्वाराधना हेतु १०-१२ दिन का समय समता प्रचार सघ को प्रदान करना आपकी सुसस्कारिता सघ निष्ठा गुरु भक्ति समाज सेवा विशाल हृदयता एव त्याग के प्रति समर्पित होने की भावना का प्रतीक है। समता प्रचार सघ के प्रति तो आप पूर्ण समर्पित थे। सदैव तन मन एव धन से सेवा हेतु तत्पर रहते थे। समय समय पर स्वाध्यायी सदस्य के रूप मे सवा प्रदान करना समता प्रचार सघ के कार्यक्रमो में उपस्थित होना तथा आर्थिक सहयोग हेतु सदैव तत्पर रहना आपके जीवन की विशेषता थी। समता प्रचार सघ के प्रति आपकी सेवाए एव उपकार चिरस्मरणीय रहेंगे।

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की प्रत्येक प्रवृत्ति से श्री बोहरा जी सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। धर्मपाल प्रवृत्ति के तो आप प्राण ही थे। अत आप धर्मपाल पिता के रूप में विख्यात हो गये थे। आपकी उदारता एव दानवीरता सर्व विदित है। इस प्रकार बहुआयामी प्रतिभा के धनी उदारमना दानवीर सेठ श्री गणपत- राज जी बोहरा समाज के रत्न थे। आपकी क्षतिपूर्ति होनी अत्यन्त दुष्कर है। आप स्वय सुसस्कारी थे अत सस्कार निर्माण के प्रति सदैव जागरूक थे।

हृदय की असीम श्रद्धा सहित श्रद्धाजलि।

सयोजक, श्री समता प्रचार सघ चित्तौड़गढ़

❑

आत्मा में जो गुण वैभाविक हैं जो उपाधिजन्य हैं अर्थात् काल क्षेत्र या पर्याय आदि पर निमित्त से उत्पन्न हुए हैं जो स्वाभाविक नहीं हैं वे गुण बदल जाते हैं। परन्तु आत्मा के स्वाभाविक गुणों में परिवर्तन नहीं होता।

सघ समर्पित, समाज सेवी दम्पत्ति

—शातिलाल राका—

श्रमणोपासक श्रेष्ठीवर्य समाजरत्न अ भा साधुमार्गी जैन सघ के दानवी भामाशाह आचार्य भगवन् युवाचार्य श्री जी व चतुर्विध सघ के प्रति पूर्ण समर्पित पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा अनेक गुणों से युक्त अनुपम मूर्ति विरल विभूति थी।

आपका जीवन समाज सेवा में ही व्यतीत हुआ। उद्योगपति श्री बोहरा सा की 'पी जी फोइल्स लि पिपल्याकला भारतवर्ष मे आज भी विख्यात है। धर्मपाल पितामह का हमारे बीच न रहना समाज के लिये अपूरणीय क्षति हुई है। साथ ही धर्मपरायण समाज सेवी दीन दु खियो की माता श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा की स्मृतिया हमेशा याद रहेगी। आप दम्पत्ति की जैसी शासन समर्पण भावना दानवीरता सहनशीलता मधुरता थी वह विरल है। धार्मिक सामाजिक पारिवारिक कार्यो मे योगदान हमेशा आपकी याद दिलाता रहेगा।

करीब दस वर्ष पूर्व आप दम्पत्ति का जयनगर पधारना हुआ। आपके सानिध्य से श्रीसघ मे विकास हुआ। महिला समिति का गठन हुआ तथा समता युवा सघ का प्रार्दुभाव भी आपके सानिध्य में हुआ। समता भवन हेतु भी आपने सहयोग प्रदान किया ऐसे शासननिष्ठ दम्पत्ति को श्रीसघ का नमन।

—जयनगर

□

जो आत्मा स्व स्थान का त्याग करके प्रमाद के वश होकर पर-स्थान में चला गया हो उसे फिर स्व-स्थान में लाना प्रतिक्रमण है।

सघ भामाशाह श्री बोहरा

–तोलाराम मिन्नी–

धर्मनिष्ठ सुश्रावक सेठ श्री गणपतराज जी बोहरा एव सुश्राविका श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा हमारे सघ के गौरव थे। आपने अपने जीवन मे सघ को मुक्त हस्त से दान दिया। आचार्य श्री नानेश की पावन प्रेरणा से प्रारभ श्री धर्मपाल प्रवृत्ति को पल्लवित करने मे आप दोनो का जो सर्वभावेन और आत्मीय सहयोग मिला वह हमेशा-हमेशा याद किया जावेगा।

अपने गाव पीपलिया कला में आचार्य प्रवर श्री नानेश के ऐतिहासिक चातुर्मास में आप दोनो ने जिस अटूट श्रद्धा और समर्पणा का परिचय दिया वह सदा प्रेरणा देता रहेगा। ऐसे दानवीर धर्मनिष्ठ बोहरा दम्पति भामाशाह का जीवन हमेशा समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा।

आपके सुपौत्र श्री पकज बोहरा एव सम्पूर्ण परिवार भी अपने पितामह के पदचिन्हों पर चल रहे हैं। श्रद्धापूर्ण श्रद्धाजली।

–मद्रास

❑

सम्यग्ज्ञान शाश्वत सूर्य है कभी न बुझने वाला दीपक है। उसके चमकते हुए प्रकाश से मात्सर्य ईर्ष्या क्रूरता लुब्धता आदि अनेक रूपों में फैला हुआ अज्ञान अन्धकार एक क्षण भी नहीं टिक सकता है।

देशभर मे श्रद्धापूर्ण स्मरण

रतलाम— धर्मपाल क्षेत्रो में बोहरा सा के निधन समाचार से शोक की लहर छ
गई। समता भवनों में एकत्रित होकर धर्मपाल भाई–बहिनों ने शोक सभा
आयोजित कीं। उनके निर्मल एव धार्मिकता से ओतप्रोत व्यक्तित्व व उनकी
दानवीरता को स्मरण कर आवाल वृद्ध के नेत्र सजल हो उठे। रतलाम, जावर
मदसौर उज्जैन मक्सी नागदा आदि स्थाना पर धर्मपाल पितामह करुणा
मसीहा को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। आपका निधन समग्र जैन समाज की ही
नहीं पूरे भारत की अपूरणीय क्षति है।

धीरजलाल मू

चित्तौड़गढ़ शा प्रभायिका तपस्यिनी महासती श्री विमला कवर जी म.सा आदि
ठाणा के प्रवचनोपरान्त स्मृति सभा आयोजित कर बोहरा दम्पति को हार्दिक
श्रद्धाजलि अर्पित की गई। इनके सत्कार्यों को रेखाकित करते हुए दोनों
प्रेरणास्पद निरूपित किया गया।

सागरमल भडालि

रायपुर स्थानीय श्री सघ द्वारा स्मृति सभा आयोजित कर मृदुभाषी धर्मपराय
दानवीर बोहरा सा को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

धरम धाड़ीवा

भीलवाड़ा श्री साधुमार्गी जैन सघ के तत्वाधान मे आयोजित स्मृति समि
बोहरा दम्पति को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। अनुपम सघ सेवा के आदर्श
के कारण ही आपको अम्मापिया की पदवी से विभूषित किया गया था। आप
निधन सघ व समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

रोशनलाल डा

उदयपुर—समाज गौरव कर्मठ श्रावक रत्न श्रेष्ठीवर्य श्रीमान गणपतराज जी
बोहरा एव श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा के स्वर्गवास के समाचार सुनक
उदयपुर सघ को भारी आघात लगा। श्री वर्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जै
श्रावक सघ ने स्वर्गीय बोहरा दम्पति के स्वर्गवास पर शोकसभा का आयोज
किया जिसमें उनके द्वारा की गई समाज सेवाओं को स्मरण किया गया। स्वर्गी

श्री बोहरा सा की शासन निष्ठा समर्पणा धर्मभावना अनुकरणीय थी। सन्त सती रत्नो की उदात्त भावना से सेवाए बजाते थे। समाज सेवा मे उन्होने नींव के पत्थर के रूप में योगदान दिया था। समाज की विभिन्न प्रवृत्तियो मे उदार भाव से सहयोग देकर भामाशाह का आदर्श प्रस्तुत किया। धर्मपाल उत्काति के अर्थ सहयोगी सस्थापक एव उस क्षेत्र मे अनेकानेक पदयात्राए एव दौरा कर नानेश शासन को चमकाने में अथक पुरुषार्थ किया वहीं धर्मपाल बन्धुओ को सस्कारित कर उन्हे धर्म के क्षेत्र में आगे बढाया है। उस क्षेत्र मे समता भवन छात्रावास आदि भवनों का निर्माण कराया विभिन्न सस्थाओ को सहयोग देकर समाज की सेवाए कीं। अनेकानेक गुणो से युक्त स्वर्गीय श्री गणपतराजजी बोहरा को समाज सदा स्मरण रखेगा। इन्हीं गुणो के अनुरूप चलने वाली धर्म शीला महिला रत्ना श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा भी छाया भी भाति समाज सेवा के कार्य में उनके साथ रहती थी। धर्मपाल समाज उन्हे (धर्मपाल) माताजी कहते हुए गौरव का अनुभव करते थे। उन्होंने धर्मपाल बन्धुओ की स्थिति नहीं सुधर जाये तब तक सादा एव सूती साड़ी पहनने का सकल्प किया जिसे मनत निभाकर चलती रही। ऐसे गुणनिष्ठ अनन्य आगाध आस्थाशील गुणरत्नो से सुशोभित बोहरा दम्पति को सघ सदा स्मरण रखेगा साथ ही उनका ऋणी रहेगा।

श्री वर्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन श्रावक सघ उदयपुर ने उनके स्वर्गवास पर शोक सभा का आयोजन कर श्रद्धाजलि अर्पित की एव प्रवचन सभा के बीच उनकी सेवाओं का स्मरण किया।

—किशनसिह राख्परिया

वड़पलानी (चेन्नई)— उपाध्यक्ष व्याख्यान वाचस्पति श्री ईश्वर मुनिजी म सा व श्री रगमुनि जी म.सा के सानिध्य मे श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा जैन भवन में स्मृति सभा आयोजित की गई। धार्मिक सस्कारो से ओतप्रोत सरलता सादगी की प्रतिमूर्ति उदारता महिला एव श्रीमती यशोदा देवी बोहरा के जीवन पर उपाध्यम श्री जी ने प्रकाश डाला और सघ की ओर से भी सोहनलाल जी बाफना व श्रीमती बादल बाई झाम्चर ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

बैंगलोर सिपानी भवन कोरमगला मे आयोजित स्मृतिसभा में नवकार मत्र की सामूहिक धुन के पश्चात् सर्व श्री शातिलाल जी सा साड सम्पतराज जी सा कटारिया मिठठालाल जी मुरड़िया एव मोहनलाल जी मूथा ने बोहरा सा के

गुणो को रेखाकित करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान व मागलिक श्रवण श्री सोहनलाल जी सिपानी ने कराया।

देशनोक- नानेश सघ की शान वरिष्ठ समाजसेवी धर्मपाल-पितामह दानवीर श्रेष्ठिवर्य श्रीमान् बोहरा सा एव सघ/शासननिष्ठ श्रीमती यशोदा देवी बोहरा का देहावसान अपूरणीय क्षति है। दिवगत आत्माओ के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि।

कानोड धर्मवीर सादगी के प्रतीक आचार्य श्री नानेश के प्रति अटूट श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्रीमान् बोहरा सा का निधन कभी भुलाया नहीं जा सकता। समाजिक धार्मिक शैक्षिणिक सस्थाओं के उन्नयन एव सातत्य हेतु आपका अवदान समय की शिला पर सशक्त हस्ताक्षर है।

भीण्डर समता युवा सघ के सानिध्य में स्मृतिसभा का आयोजन कर बोहरा दम्पति को विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित की। जैन समाज बोहरा परिवार का ऋणी हैं जिसके सदस्यो ने गुरु भक्ति गुरु निष्ठा का आदर्श स्थपित किया है समाज सेवा मे भी अग्रणी है।

परिवर्तन में ही गति है प्रगति है विकास है सिद्धि है। जहां परिवर्तन नहीं वहां प्रगति को अवकाश भी नहीं है। वहां एकान्त जड़ता है स्थिरता है शून्यता है। अतएव परिवर्तन जीवन है और स्थिरता मृत्यु है। परिवर्तन के आधार पर ही विश्व का अस्तित्व है।

क्रमिक रूप से अपनी भावना का विकास करते चलने से समय आपकी भावना प्राणी मात्र के प्रति आत्मीयता से परिपूर्ण बन जाएगी आपका अहं जो अभी सीमित दायरे में गांठ की तरह सिमटा हुआ है बिखर जायेगा और आपका व्यक्तित्व विराट रूप धारण कर लेगा।

धर्मपाल पिता श्री गणपतराज जी बोहरा

—भयरलाल कोठारी—

स्वर्गीय श्री बोहरा जी का जीवन बहुआयामी था। एक ओर वे स्वातन्त्र्य-प्रेमी खादी व स्वदेशी को समर्पित थे तो दूसरी ओर गजब के पुरुषार्थी उद्यमी थे। साथ ही इन दोनों दायित्वो का उन्होने निर्वाह भी असाधारण प्रतिभा से किया। वे परिवार के सरक्षक ग्राम के पिता तुल्य प्रोत्साहक समाज के मार्गदृष्टा और राष्ट्र के अनन्य समर्पित सेवक की बहुआयामी भूमिकाओं मे सदैव सरल सौम्य सस्मित धीर-वीर-गभीर और कर्मण्य आदर्श शलाका पुरुष के रूप में सफल रहे। उनके जीवन के अनेकानेक आयाम थे और प्रत्येक आयाम को उन्होंने सफलता से निभाया। अपनी भूमिकाओं को निभाते समय वे अत्यन्त सजग रहते थे। मेरा उनसे तथा परिवार से अन्तरग स्नेह सम्बन्ध रहा। इसलिए आज जब उनके ससमरण लिखने का प्रसग आया तो मानस पटल पर एक के बाद एक बहुरगी जीवन घटना क्रम उभरने लगा। क्या भूलू ? क्या याद करु ? निर्णय करना कठिन हो रहा है। ऐसी दशा मे मैं उनके जीवन के केवल एक ही पक्ष–धर्मपाल सेवा पर सक्षिप्त में प्रकाश डालने का यत्न कर रहा हू।

उन्हें धर्मपालों ने उनके जीते जी ही पिता के रूप मे स्वीकार तथा सबोधित किया और उनकी धर्मपाल सेवाए इतनी आत्मीय निश्छल और समर्पित पुरुषार्थ से परिपूर्ण थी कि धर्मपालो के साथ ही साथ सम्पूर्ण समाज ने भी उन्हें 'धर्मपाल पिता' के विरुद से सहज ही सबोधित करना प्रारभ कर दिया। धर्मपाल क्षेत्र में एक गृहस्थ होते हुए उनकी सपत्नीक सेवा आज के भौतिकवादी युग मे एक अविश्वसनीय लग सकने वाली किन्तु आश्चर्यजनक रूप से सत्य कथा है।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने मालव अचल के दलित अस्पृश्य माने जाने वाले बलाई जाति के लोगो को आचारवान जीवन जीने का उपदेश दिया और धर्मपाल के नाम से सबोधित किया। सैकडो वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे फैले लक्ष-लक्ष पीड़ितजनों को एक स्वर्ण विहान उदित होता हुआ दिखाई दिया। इस स्वर्ण विहान को धर्मपाल के स्वर्ण तिलक के रूप में परिवर्तित करने का दायित्व श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ ने स्वय प्रेरणा से स्वीकार किया और

शीघ्र ही इस महाअभियान के नायक के पद पर श्री गणपतराज जी बोहरा को अभिषिक्त किया। लगभग ३० वर्ष से अधिक समय तक बोहरा जी ने श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार प्रवृत्ति का नेतृत्व किया और धर्मपालो के कल्याण एव उत्थान हेतु अनथक श्रम किया। इस पूरी अवधि में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी शाह भी समर्पित भाव से धर्मपाल समाज की सेवा म समर्पित रही। हृदय की अगाध श्रद्धा के साथ इसीलिये धर्मपाल समाज ने श्री व श्रीमती बोहरा को धर्मपाल पिता और धर्मपाल माता के पद पर प्रतिष्ठित किया।

धर्मपाल क्षेत्र में सेवा देने वाले स्वधर्मी बन्धुओं बहिनों को वे पुत्र–पुत्रीवत् स्नेह प्रदान करते थे। श्री समीरमल जी काटेड़ श्री पी सी चौपडा मानव मुनि जी मामाजी आदि व श्रीमती शान्ता देवी मेहता और श्री मगनलाल जी मेहता सहित धर्मपाला के उत्थान में सहयोगी प्रत्येक व्यक्ति के लिए उनके हृदय म अपार स्नेह आदर और वत्सल भाव था।

धर्मपालों के लिए जब जिस योजना की आवश्यकता अनुभव हुई उन्होंने पहल करके उसे पूरा किया। धर्मपाल क्षेत्रीय सम्मेलना सघ प्रमुखों के प्रवास धार्मिक पाठशालाओ का सचालन धर्मपाल क्षेत्र में रोग निदान शिविर, चिकित्सा वाहन धर्मपाल शिक्षको के प्रशिक्षण शिविरो धर्मपाल नवयुवकों की रैलियां धर्मजागरण पदयात्राओ के आयोजनों धर्मपालों के आर्थिक स्वावलंबन प्रवृत्ति जलकूप निर्माण समता भवन निर्माण धर्मपाल क्षेत्रों में पयुर्षण पर्वाराधना धर्मपाल छात्रो हेतु छात्रावास धर्मपाल महिलाओं हेतु शिक्षण शिविरों आदि धर्मपालो की सर्वांगीण उन्नति के लिए उन्होने बहुआयामी कार्य योजनाएं नवाचारा को न केवल स्वीकृति ही प्रदान की अपितु उन्हें सफल बनाने के लिए धर्मपालो की विकास योजनाओ मे प्राण फूकने के लिए श्री बोहरा जी ने अपने प्राणो का निस्स्वार्थ समर्पण कर दिया था।

उन्होने सफलतापूर्वक धर्मपाल क्षेत्र में धर्मपाल समाज रचना को साकार किया और भगीरथ बन कर उस क्षेत्र म धर्मगगा को प्रवाहित किया।

वे सचमुच समाज रत्न थे। सघ आदर्श थे। उन्हें शत–शत नमन।

—ओसवाल कोठारी मोहल्ला बीकानेर

ओजस्विता का पुंज-लोक मंगला श्रीमती यशोदा बहनजी बोहरा

–रेणुमल जैन–

पूज्य श्रीमान् गणपतराज जी सेवाभावी कठिनाइयों से झूझने वाले व्यक्ति थे। सरल स्वभाव के धनी भी थे पर श्रीमती यशोदा बहन जी तो हर काम में आगे रहने वाली सेवा की प्रतिमूर्ति थीं। काम कोई भी हो उसमे सेवा की छाया शीतलता को ढूढ लेना श्रीमती यशोदा बहन जी की अपनी विशेषता थी।

मेहनतकशों की मसीहा

श्रीमती यशोदा बहन जी एक साधन सम्पन्न परिवार मे जन्मी और धनाढ्य परिवार मे बहू बनकर आई मगर उन्होने अपना जीवन किसी धनाढय सेठानी की तरह बिताना पसद नहीं किया बल्कि उन्होने अपना पूरा जीवन गरीब मेहनतकश पद्दलित इन्सानो की सेवा मे समर्पित कर दिया। वे सदैव गरीबों की भलाई के कार्यों मे लगी रहीं। नारी उत्थान के लिए उन्होने प्राण–पण से जीवन भर कार्य किया।

अहिंसा प्रेम करुणा की सागर

श्रीमती यशोदा बहन जी ने योग बोध और प्रेम मे ही जीवन देखा इसी कारण उनके व्यक्तित्व म इतना निखार आ गया था कि जन–कल्याण म ही अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। ऐसी नारी–रत्न की गौरव गाथा को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

श्रीमती यशोदा बहन जी की प्रवचन–धारा गहराइयो को स्पर्श करती हुई अनेक अनुभूतिया की अभिव्यक्ति देती और अनेक तथ्यो को उजागर करती हुई प्रवाहित होती रही। आपके प्रवचन आध्यात्मिक एव नैतिक प्रेरणाओं से परिपूर्ण होते थे तथा सदैव खडन–मडन से दूर रहती थीं।

प्रवृत्ति और प्रगति की पर्याय

श्रीमती यशोदा बहन जी एक असाधारण महिला थीं। उनकी जैसी

कार्यशीलता प्रगतिशीलता और हिम्मत बहुत कम बहना में देखने को मिलती है।
राजस्थान के परम्परावादी वातावरण में खासकर ग्रामीण क्षेत्र में इन्होंने जि
साहस और गति के साथ काम किया उसे असाधारण ही कहा जायेगा।
महिला-जागरण शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर काम करते के
साथ-साथ ठेठ मूल मे वे अपने गाव पीपलियाकला की बरसों से सेवा कर्ती
रहीं।

सेवा साहस एव स्नेह सरिता

श्रीमती यशोदा बहन जी मे जागृति और समाज-सुधार की उद्
इच्छाशक्ति निहित थी। उनका लालन-पालन तथा बचपन जिस घर में बी
उसे हम अत्याधुनिक नहीं कह सकते फिर भी ऐसा लगता है कि उनके अ
समाज-सुधार व निर्भीकता के गुण प्रकृति दत्त थे और जैसे-जैसे इन्हें अव
प्राप्त होते गये इन गुणो में एक अद्भुत निखार आता गया।

आचार य विचार की साक्षात् मूर्ति

समाजोत्थान की दृष्टि से श्रीमती यशोदा बहन जी की भूमिका स
अत्यत महत्त्वपूर्ण रहीं। वह समाज-सेवा के प्रति पूर्णत समर्पित रही। समाज-
उनके जीवन का परम लक्ष्य था। सादा जीवन एव उच्च विचार की वह सा
मूर्ति थीं। जन-जन के प्रति विशेषत असहाय एव निर्धनो के प्रति उनके मन में
असीम एव अगाध प्रेम था।

उनके नाना भक्त यत्सल हृदय में राजयोग ज्ञानयोग फर्म योग का त्रिवेणी स

य	याने	=	राजयोग
शो	याने	=	ज्ञानयोग
दा	याने	=	कर्मयोग

श्रीमती यशोदा बहन जी के प्रवृत्तिमय सामाजिक जीवन में राज
ज्ञानयोग कर्मयोग का त्रिवेणी सगम बहता था। उनके सरल हृदय में जो
स्फटिक मणि सदृश्य स्यच्छ था भक्ति रस की निर्मल धारा सदा बहती र
थी। उनका भक्त हृदय सस्कृति य कला युक्त नैसर्गिक बुद्धि की वज
प्रभु-भजनो के द्वारा मधुर याणी से प्रकट होता रहा जो कि उनकी निवृत्ति
जीवन धारा का प्रमुख अग हो गया था। सक्षेप में कहें तो उनका जीवन पर
हो गया था। प्रवृत्तिमय जीवन विताते हुए निवृत्तिमय जीवन बिताना यही उन
सबल यही उनका पाथेय और यही उनकी बहुत बड़ी शक्ति थी।

आज के इस भौतिकवादी युग मे जहा शक्ति का उपयोग अधिकतम सत्ता की प्राप्ति क लिए होता है यशोदा बहन जी सेवा भक्ति एव निरहकारिता द्वारा भगवद् भक्ति की उपासना करती रहीं। नाना गुरु की वह परम-भक्त थीं। (ससुराल पक्ष से) वही उनके लिए आराध्य वही उनकी आराधना और वही आराधेय। आराध्य आराधना व आराधेय का त्रिवेणी अमृतपान उन्होने नाना गुरु के भक्तिमय वचन काव्यो से ग्रहण किया। इनकी साधना सहज व नैसर्गिक हो गई थी। उपनिषद जिसे 'तत्वमसि' कहता है वह उनके जीवन मे साकार हो गया था। निर्गुण भाषा में कहें तो यशोदा बहन जी नाना गुरु की भक्ति में निर्गुणमय हो गई और यदि सगुण भाषा में कहे तो वह सगुणमय हो गई थीं। इस तरह का दिव्य प्रसाद उन्होने अपने भक्त–हृदय से प्राप्त किया है।

ज्ञानगच्छ के पूज्य सत श्री चपालाल जी म सा का चातुर्मास सन् १९९१ में जब खीचन मे था तब उनके दर्शनार्थ आप खीचन आई थीं। जब श्री चपालाल जी म सा ने इन्हें आते देखा तो पाट से नीचे उतर कर आदर किया। उस घटना से कह सकते हैं कि बीज से वृक्ष तक सफर भारतीय साहित्य में भक्ति इस काव्य धारा के सोपान पर प्रतिष्ठित रचनाकारों मे श्रीमती यशोदा बहन जी भी एक थीं।

व्यक्तित्व और कृतित्व गृहस्थ साध्वी श्रीमती यशोदा बहन

श्रीमती यशोदा बहन जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे मे क्या कहू ? जीवन मे सादगी विचारों मे प्रखरता और दृढता वाणी में निश्चितता स्वभाव मे स्नेह आतिथ्य सत्कार मे सहज तत्परता। जो काम हाथ में लिया उसे सफल बनाने में पूरा प्रयत्न था। समग्र सकल्प के साथ तन-मन-धन से लग जाना उनका स्वभाव था। आप मानवीय मूल्यो का अभूतपूर्व समन्वय थीं।

श्री माताजी (श्री अरविंद आश्रम) कहती हैं कि स्त्रियो में पुरुषो जैसा गर्वीला मानसिक आडम्बर नहीं होता इसलिए उनके लिए अपनी चैतन्य सत्ता को खोजना और उसके द्वारा मार्गदर्शन पाना ज्यादा आसान होता है।

मेरी धर्मपत्नी चपा देवी कहती हैं–

'परिचय से परिचित हो जाना सहज नहीं।

इनका आपसे (यशोदा बहन जी से) मिलने का कई बार मौका मिला और हर बार नया अनुभव। कार्य क्षमता कुशलता सतुलन विश्वास निष्ठा सब कुछ किसी एक में देखा जा सकता है तो उसे हमने यशोदा बहन जी से देखा।

मेरा परिचय परिचित मे परिवर्तित हुआ यह मेरी उपलब्धि है। मनुष्य समाज में नारी का स्थान सर्वोपरि और सर्वोत्कृष्ट है। मनुष्य यदि प्रकृति की सर्वोत्तम अनुकृति है तो नारी उसका अनुपम और अनोखा अग है। प्रकृति के विविध रूपों का समग्र दर्शन हम नारी रूप म एक साथ कर सकते हैं।

'निष्ठा नारी की प्रकृति और उसका आदर्श है' –विवेकानद।

"मैं चाहता हू कि स्त्रिया साहसी बने और शेर के समान गर्जना करें। उस गर्जना मे नैतिक आचरण और अदर की ब्रह्मनिष्ठा की ताकत हो और वहा वक्तृत्व प्रगट हो। यह नहीं होना चाहिये कि स्त्रिया दब जायें या झुक जायें बल्कि यह होना चाहिये कि कहीं भी वे जायें और शेर के समान पराक्रम करें, ताकत के साथ काम करे। इसलिए स्त्रियो की वाक्य शक्ति खुलनी चाहिये तथा साथ ही उनकी चितन–शक्ति भी बढ़नी चाहिये।–"विनोबा

मुझे लगता है कि विनोबा वाणी की अमृत धारा सघ प्रमुख उदारमना धर्मपाल पिता श्रीमान् गणपतराज जी व धर्मपाल माता श्रीमती यशोदा बहन के म बह निकली थी।

एक बार सेठ सा के उदार मन की प्रशसा श्री घनश्याम दास जी बिड़ला की बहुरानी गोपी बहन ने मेरे सम्मुख की थी।

अन्तत मेरा निवेदन यह है –

कुछ नहीं होगा तो अपने आचल मे छिपा लेगी
मा कभी सिर पर खुली छत नहीं रहने देगी

मुनव्वर रजा की यह पक्तिया लिखते हुए मैं बहुत भीतर तक भीग गया हू। धन्य है बोहरा दम्पति। धन्य है यशोदा माता जी।

–११/५७१ चोपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

□

सौजन्य मूर्ति श्री बोहरा सा के सम्पर्क की मधुर स्मृतिया

–पी सी चौपडा, पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन सघ–

श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ द्वारा आयोजित धर्मपाल क्षेत्र की पद यात्रा के दौरान लगभग २५ वर्ष पूर्व सौजन्य मूर्ति समाजसेवी प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गणपतराज जी बोहरा के सम्पर्क म आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ जो अपितु उत्तरोतर दृढ और गहन होता गया है।

श्री बोहरा सा का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना आकर्षक था कि जो भी व्यक्ति एक बार उनके सम्पर्क मे आया वह अनायास ही उनके प्रति श्रद्धावनत हुए बिना नहीं रहा। प्रथम सम्पर्क में ही मेरे हृदय पटल पर श्री बोहरा सा की जो छवि अकित हुई वह एक कर्मठ कर्मयोगी समाज सेवी एव धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के रूप मे उभरती चली गइ। ऐसे उदारमना सौजन्यशील व्यक्ति के विषय मे मेरे अनुभव की कुछ पक्तिया अकित करते हुए हर्ष एव गौरव की अनुभूति हो रही है।

मुझ यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि हमारा साधुमार्गी जैन सघ एक गौरवशाली सघ है जिसके सर्वोच्च नायक समता विभूति आचार्य श्री नानेश हैं। श्री बोहरा सा आचार्य श्री के अनन्य भक्त और निष्ठावान सुश्रावक थे। इस सघ के सगठन एव उत्कर्ष म श्री बोहरा सा का अद्वितीय योगदान रहा है। श्री बोहरा सा ने इस सघ के अध्यक्ष के रूप में सन् १६६५ से लगातार तीन वर्षों तक इस सघ का सचालन किया। इसके पश्चात् सन् १६८८ में पुन आप दो वर्ष के लिए अध्यक्ष के रूप में मनोनीत हुए। उस समय आप इस गरिमामय पद पर आसीन होना नहीं चाहते थे परन्तु सघ के प्रमुख व्यक्तियो एव जनसाधारण के अत्यधिक आग्रह एव अपार स्नेह से अभिभूत होकर आपने यह उत्तरदायित्व पुन स्वीकार किया। यह आपकी लोकप्रियता तथा आपके प्रति जन-जन की आस्था और विश्वास का द्योतक था।

श्री बोहरा सा ने सघ की कल्याणकारिणी प्रवृत्तिया म जिस उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया है वह भामाशाह की याद को ताजा करता है तथा वह सघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।

मेरा परिचय परिचित मे परिवर्तित हुआ यह मेरी उपलब्धि है। मनुष्य समाज म नारी का स्थान सर्वोपरि और सर्वोत्कृष्ट है। मनुष्य यदि प्रकृति की सर्वोत्तम अनुकृति है तो नारी उसका अनुपम और अनोखा अग है। प्रकृति के विविध रूपों का समग्र दर्शन हम नारी रूप में एक साथ कर सकते हैं।

निष्ठा नारी की प्रकृति और उसका आदर्श है –विवेकानद।

'मैं चाहता हू कि स्त्रिया साहसी बने और शेर के समान गर्जना करें। उस गर्जना मे नैतिक आचरण और अदर की ब्रह्मनिष्ठा की ताकत हो और वह वक्तृत्व प्रगट हो। यह नहीं होना चाहिये कि स्त्रिया दब जायें या झुक जायें। बल्कि यह होना चाहिये कि कहीं भी वे जाये और शेर के समान पराक्रम करें, ताकत के साथ काम करे। इसलिए स्त्रियो की वाक्य शक्ति खुलनी चाहिये तथा साथ ही उनकी चितन–शक्ति भी बढ़नी चाहिये।– 'विनोबा

मुझे लगता है कि विनोबा वाणी की अमृत धारा सघ प्रमुख उदारमना धर्मपाल पिता श्रीमान् गणपतराज जी व धर्मपाल माता श्रीमती यशोदा बहन के मे वह निकली थी।

एक बार सेठ सा के उदार मन की प्रशसा श्री घनश्याम दास जी बिड़ला की बहुरानी गोपी बहन ने मेरे सम्मुख की थी।

अन्तत मेरा निवेदन यह है –

कुछ नहीं होगा तो अपने आचल मे छिपा लेगी
मा कभी सिर पर खुली छत नहीं रहने देगी

मुनव्वर रजा की यह पक्तिया लिखते हुए मैं बहुत भीतर तक भीग गया हू। धन्य है बोहरा दम्पति। धन्य है यशोदा माता जी।

–११/५७१ चोपासनी हाउसिंग बोर्ड जोधपुर

सौजन्य मूर्ति श्री बोहरा सा के सम्पर्क की मधुर स्मृतिया

—पी सी चौपड़ा पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन सघ—

श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ द्वारा आयोजित धर्मपाल क्षेत्र की पद यात्रा के दौरान लगभग २५ वर्ष पूर्व सौजन्य मूर्ति समाजसेवी प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गणपतराज जी बोहरा के सम्पर्क मे आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ जो अपितु उत्तरोतर दृढ और गहन होता गया है।

श्री बोहरा सा का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना आकर्षक था कि जो भी व्यक्ति एक बार उनके सम्पर्क मे आया वह अनायास ही उनके प्रति श्रद्धावनत हुए बिना नहीं रहा। प्रथम सम्पर्क मे ही मेरे हृदय पटल पर श्री बोहरा सा. की जो छवि अकित हुई वह एक कर्मठ कर्मयोगी समाज सेवी एव धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के रूप मे उभरती चली गई। ऐसे उदारमना सौजन्यशील व्यक्ति के विषय में मेरे अनुभव की कुछ पक्तिया अकित करते हुए हर्ष एव गौरव की अनुभूति हो रही है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि हमारा साधुमार्गी जैन सघ एक गौरवशाली सघ है जिसके सर्वोच्च नायक समता विभूति आचार्य श्री नानेश हैं। श्री बोहरा सा आचार्य श्री के अनन्य भक्त और निष्ठावान सुश्रावक थे। इस सघ के सगठन एव उत्कर्ष मे श्री बोहरा सा का अद्वितीय योगदान रहा है। श्री बोहरा सा ने इस सघ के अध्यक्ष के रूप में सन् १९६५ से लगातार तीन वर्षों तक इस सघ का सचालन किया। इसके पश्चात् सन् १९८८ म पुन आप दो वर्ष के लिए अध्यक्ष के रूप मे मनोनीत हुए। उस समय आप इस गरिमामय पद पर आसीन होना नहीं चाहते थे परन्तु सघ के प्रमुख व्यक्तियो एव जनसाधारण के अत्यधिक आग्रह एव अपार स्नेह से अभिभूत होकर आपने यह उत्तरदायित्व पुन स्वीकार किया। यह आपकी लोकप्रियता तथा आपके प्रति जन जन की आस्था और विश्वास का द्योतक था।

श्री बोहरा सा ने सघ की कल्याणकारिणी प्रवृतियो ने जिस उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया है वह भामाशाह की याद को ताजा करता है तथा वह सघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।
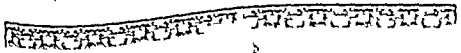
आचार्य श्री नानेश द्वारा उपदिष्ट धर्मपाल प्रवृत्ति के आप मुख्य सूत्रधार रहे। मानव कल्याण एव व्यसन मुक्ति जैसे कार्यों में आपने लाखों रुपयों की धनराशि दान म दी। इतना सब करने के बाद भी आप सदा अभिमान से दूर रहे। वे सदा यही भाव व्यक्त करते रहे कि दान देकर आपको उपकृत नहीं करता परन्तु मैं आपका कृतज्ञ हू कि आपने मुझे सेवा करने का अवसर प्रदान किया। धर्मपालो के प्रति आपको इतना गहरा अनुराग कि अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना ये उनके कार्यक्रमो मे लगभग सदैव उपस्थित हो जाते थे एव समारोह को गरिमा प्रदान करते थे।

एक बार तो ऐसा हुआ जब हमने देखा कि आप रतलाम स्टेशन पर उतरे तो आपके हाथ मे फ्रेक्चर के कारण पट्टा बधा था। यह देखकर हम आश्चर्यचकित रह गये कि इतना बड़ा व्यक्ति अपने फ्रेक्चर की परवाह किये बिना धर्मपाल के लिए आयोजित कार्यक्रमो मे भाग लेने के लिए उपस्थित हुआ।

धर्मपाल क्षेत्रो मे आपने सघन दौरे किये। उन क्षेत्रों में धार्मिक गतिविधिया सचालित करने के लिए समता भवनों के निर्माण में आपने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। १९७६ में दिलीपनगर (रतलाम) में धर्मपाल विद्यार्थियों के लिए भूमि और भवन प्रदान कर छात्रावास प्रारम्भ करवाया। उक्त सभी सेवाओं के कारण आप 'धर्मपाल पितामह' के रूप में विख्यात हुए।

बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका हृदय और मन सरल मधुर और निश्छल हो। श्री बोहरा सा की गणना ऐसे विरल व्यक्तियों में होती थी। आपका हृदय विशाल था अभिमान तो आपको छू भी नहीं सका। "सादा जीवन" और उच्च विचार के आप साकार स्वरूप थे। खादी की सादी वेशभूषा सरल व्यवहार आडम्बरहीन जीवन उदार हृदय आदि आपके जीवन के विशेष उल्लेखनीय गुण थे।

यहा कुछ ऐसे प्रसग उदधृत किये बिना मैं नहीं रह सकता –

मेरी पुत्री मधु के विवाह का प्रसग था। विवाह प्रसग पर आशीर्वाद देने के लिए विविध व्यस्तताओ के बावजूद आपके पधारने से मैं गदगद हो गया। वैवाहिक रस्में देर रात तक चलनी थीं। अतएव मैंने अपने घर पर ही आपके विश्राम हेतु व्यवस्था की थी। प्रात ५ बजे आपको वापस ट्रेन पर पहुचना था। मैंने आपसे कहा कि आप निश्चिन्त होकर सोइये प्रात ५ बजे के पूर्व मैं आपको ट्रेन पर ले चलूगा। शादी की थकावट से मेरी नींद समय पर न खुल सकी। जब

नींद खुली तो मैंने देखा कि बोहरा सा शय्या पर नहीं हैं। तुरन्त गाडी लेकर स्टेशन की ओर बढा तो देखता हू कि हाथ में सूटकेस लिये बोहरा सा पैदल ही स्टेशन की ओर चले जा रहे हैं। मैं बडा शर्मिन्दा हुआ। मैं उन्हे गाडी मे बैठाकर स्टेशन ले गया। पूछने पर बोहरा सा कहने लगे– शादी के कार्य मे थकावट आना स्वाभाविक है। अतएव मैंने आपको जगाना उचित नहीं समझा। यह है आपकी सरलता एव सादगी का जीता जागता नमूना जो मुझे आज भी याद आकर भाव विभोर कर देता है।

दूसरा प्रसग है– मेरे श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष पद पर मनोनयन के समय का। अध्यक्ष के स्वागतार्थ भीनासर मे चल समारोह (जुलूस) निकलने वाला था। मैं तो अपनी पेट बुशर्ट की वेशभूषा मे था। बोहरा सा बोले–अब आप सघ के अध्यक्ष हैं अतएव यह ड्रेस नहीं चलेगी। उन्होने स्वय की खादी की धोती कुर्ता और सफेद टोपी पहनने को दी। मैंने यह पोशाक धारण की। मेरी परिवर्तित वेशभूषा देखकर एक बार तो मेरी पत्नी कमला भी मुझे पहचान न पायी। ऐसी है उनकी सहृदयता।

यह सुखद सयोग था कि आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा माता जी भी समाज सेवी थीं एव उन्होने धर्मपाल जागृति के सभी कार्यों में आपका साथ देकर सही रूप में सहधर्मिणी का कर्त्तव्य निभाया। धर्मपाल क्षेत्र में गाव–गाव जाकर और घर–घर घूमकर आपने अलख जगाया और इसीलिए आपको 'यशोदा मैया' के रूप मे सबोधित किया जाता था। श्रीमती यशोदा माता जी श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की प्रमुख सस्थापिका एव अध्यक्ष रहीं।

–शीला भवन आई आई टी रोड़ रतलाम

□

आचार्य श्री नानेश द्वारा उपदिष्ट धर्मपाल प्रवृत्ति के आप मुख्य सूत्रधार रहे। मानव कल्याण एव व्यसन मुक्ति जैसे कार्यों में आपने लाखो रुपयों की धनराशि दान में दी। इतना सब करने के बाद भी आप सदा अभिमान से दूर रहे। वे सदा यही भाव व्यक्त करते रहे कि दान देकर आपको उपकृत नहीं करता परन्तु मैं आपका कृतज्ञ हू कि आपने मुझे सेवा करने का अवसर प्रदान किया। धर्मपालो के प्रति आपको इतना गहरा अनुराग कि अपने स्वास्थ्य की परवाह किये विना ये उनके कार्यक्रमो मे लगभग सदैव उपस्थित हो जाते थे एव समारोह को गरिमा प्रदान करते थे।

एक बार तो ऐसा हुआ जब हमने देखा कि आप रतलाम स्टेशन पर उतरे तो आपके हाथ में फ्रेक्चर के कारण पट्टा बधा था। यह देखकर हम आश्चर्यचकित रह गये कि इतना बड़ा व्यक्ति अपने फ्रेक्चर की परवाह किये विना धर्मपालों के लिए आयोजित कार्यक्रमों मे भाग लेने के लिए उपस्थित हुआ।

धर्मपाल क्षेत्रो मे आपने सघन दौरे किये। उन क्षेत्रों में धार्मिक गतिविधिया सचालित करने के लिए समता भवनों के निर्माण में आपने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। १६७६ में दिलीपनगर (रतलाम) मे धर्मपाल विद्यार्थियों के लिए भूमि और भवन प्रदान कर छात्रावास प्रारम्भ करवाया। उक्त सभी सेवाओं के कारण आप 'धर्मपाल पितामह' के रूप में विख्यात हुए।

बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका हृदय और मन सरल मधुर और निश्छल हो। श्री बोहरा सा की गणना ऐसे विरल व्यक्तियों में होती थी। आपका हृदय विशाल था अभिमान तो आपको छू भी नहीं सका। "सादा जीवन" और उच्च विचार के आप साकार स्वरूप थे। खादी की सादी वेशभूषा, सरल व्यवहार आडम्बरहीन जीवन उदार हृदय आदि आपके जीवन के विशेष उल्लेखनीय गुण थे।

यहा कुछ ऐसे प्रसग उद्धृत किये बिना मैं नहीं रह सकता –

मेरी पुत्री मधु के विवाह का प्रसग था। विवाह प्रसग पर आशीर्वाद देने के लिए विविध व्यस्तताओ के बावजूद आपके पधारने से मैं गदगद् हो गया वैवाहिक रस्में देर रात तक चलनी थीं। अतएव मैंने अपने घर पर ही आपके विश्राम हेतु व्यवस्था की थी। प्रात ५ बजे आपको वापस ट्रेन पर पहुचना था मैंने आपसे कहा कि आप निश्चिन्त होकर सोइये प्रात ५ बजे के पूर्व मैं आपको ट्रेन पर ले चलूगा। शादी की थकावट से मेरी नींद समय पर न खुल सकी। जब

नींद खुली तो मैंने देखा कि बोहरा सा शय्या पर नहीं हैं। तुरन्त गाडी लेकर स्टेशन की ओर बढा तो देखता हू कि हाथ मे सूटकेस लिये बोहरा सा पैदल ही स्टेशन की ओर चले जा रहे हैं। मैं बडा शर्मिन्दा हुआ। मैं उन्हे गाड़ी मे बिठाकर स्टेशन ले गया। पूछने पर बोहरा सा कहने लगे– शादी के कार्य मे थकावट आना स्वाभाविक है। अतएव मैंने आपको जगाना उचित नहीं समझा। यह है आपकी सरलता एव सादगी का जीता जागता नमूना जो मुझे आज भी याद आकर भाव विभोर कर देता है।

दूसरा प्रसग है– मेरे श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष पद पर मनोनयन के समय का। अध्यक्ष के स्वागतार्थ भीनासर मे चल समारोह (जुलूस) निकलने वाला था। मैं तो अपनी पेंट बुशर्ट की वेशभूषा मे था। बोहरा सा बोले–अब आप सघ के अध्यक्ष हैं अतएव यह ड्रेस नहीं चलेगी। उन्होने स्वय की खादी की धोती कुर्ता और सफेद टोपी पहनने को दी। मैंने यह पोशाक धारण की। मेरी परिवर्तित वेशभूषा देखकर एक बार तो मेरी पत्नी कमला भी मुझे पहचान न पायी। ऐसी है उनकी सहृदयता।

यह सुखद सयोग था कि आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा माता जी भी समाज सेवी थीं एव उन्होने धर्मपाल जागृति के सभी कार्यों में आपका साथ देकर सही रूप मे सहधर्मिणी का कर्त्तव्य निभाया। धर्मपाल क्षेत्र में गाव–गाव जाकर और घर–घर घूमकर आपने अलख जगाया और इसीलिए आपको 'यशोदा मैया' के रूप मे सबोधित किया जाता था। श्रीमती यशोदा माता जी श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की प्रमुख सस्थापिका एव अध्यक्ष रहीं।

–शीला भवन आई आई टी रोड़, रतलाम

□

स्वतत्रता सेनानी, उद्योगपति श्री गणपतराज जी बोहरा

–रेणुमल जैन–

(श्री रेणुमल जैन का धर्मनिष्ठ बोहरा दम्पति के साथ गहन पारिवरिक सम्बन्ध रहा। अत उनके परिवार के भी सभी सदस्यों श्रीमती चम्पादेवी टाटिया सन्तोष जैन सरोज-प्रबोधकुमार जैन टाटिया कलकत्ता मास्टर आदित्य कुमार, सुश्री आकाक्षा जैन नीता-सुबोधकुमार जैन टाटिया मास्टर शुभम रायपुर रचना-विनोदकुमार, रायपुर, जेठमल कोचर अमलनेर नवरतनमल–पदमचद कोठारी अहमदाबाद जयतीलाल जी चोरड़िया कुनूर, श्रीमती मनोहरदेवी टाटिया बीठडी जिला जोधपुर, श्रीमती रजन देवी बाफणा चैन्नई उषा बैद बीठड़ी जमनालाल टाटिया जोधपुर, मूलराज मुकेश खीचन श्रीमती बेला जैन बम्बई कुमारी सोनल रायपुर, चन्द्रकला-सदेश बैद, कन्हैयालाल टाटिया खींचन एम के जैन बम्बई श्रीमती विमला बहन दिल्ली, पूर्णचन्द्र– कमला एव परिवार आदि। श्री रेणुमल जी की प्रेरणा पर इस भाव व्यापी श्रद्धाजलि --सस्मरण प्रयास हेतु हार्दिक साधुवाद। हम प्रतीकात्मक रूप से श्री रेणुमल जी के सस्मरण को प्रकाशित कर रहे हैं। –स)

श्री गणपतराज जी सा बोहरा सादा जीवन उच्च विचार के मूर्तिमन्त स्वरूप थे। सादा जीवन जीने के लिए वेश परिधान खानपान में अत्यत सयम रखना पडता है। इसी कारण आप स्वय शुद्ध खद्दर के वस्त्रो का उपयोग करते। आहार शुद्धि पर भी आप श्री बहुत ध्यान रखते।

श्रीमान् गणपतराज जी सा बोहरा ने उदयमान भास्कर की तरह जिन शासन की शोभा में अभिवृद्धि की। अनेको ने आपश्री का सपर्क पाकर अपने अधकारमय जीवन को प्रकाशमय बनाया।

आप श्री ने जो कार्य राजस्थान व मध्यप्रदेश (रतलाम) में किये वह सर्वथा प्रशस्य एव स्मरणीय रहेगा। आपके द्वारा प्रेरित होकर अनेकों आत्माए सद्धर्म के सम्मुख हुई ऐसे पुरुष की आभा–मडल के प्रति जिसकी भी श्रद्धा बढेगी वे सम–सवेग तथा निर्वेदमय मार्ग की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन का आत्मोत्थान करेंगे।

श्रीमान् बोहराजी का जीवन साध्यानामय था। जीवन के अतिम क्षणों तक नमस्कार मत्र को अपना सहयोगी बनाया।

आत्मनिष्ठ श्रमण आत्मभाव मे लीन रहते त्याग प्रत्याख्यान-अभिग्रह का क्रम चालू रहता।
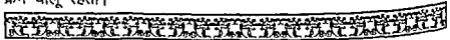
निर्मल चारित्र के धनी मूत्तिमान ज्योति थे। सयम साधना के देवता थे। ८५ वर्ष की उम्र होते हुए भी दिन मे सोना नहीं रात में भी बहुत कम सोते।

श्रीमान् (जिन्हे जी पी शाह नाम से भी पुकारा जाता है) बोहरा सा के जीवन की सब से बडी विशेषता थी वे सत्य के कठोर समुपासक थे। सच्चा जैनत्व उनकी रग-रग मे रमा था। वे वीतराग देव को ही सच्चे देव मानते थे। उनकी आराधना से ही समस्त दु ख शोक भय पीडा बाधा शात होती है। श्रीमान् जी पी शाह की इस प्रेरणा उद्‌बोधन और बार- २ के मार्गदर्शन से लोगों में सस्कार बदले। अनेक लोगा ने मिथ्या रीति-रिवाज कुरुती और मिथ्या देवी देवताओ के अधविश्वासो का त्याग किया। जागृति की लहर चेतना की नई अगड़ाई सर्वत्र लहरा उठी।

श्री गणपत राज जी सा बोहरा सादगी पसद समत्वयोगी थे। दया के सागर थे। जीव दया के मसीहा थे। शिक्षा चिकित्सा व खादी इनके तीन प्रमुख सूत्र थे। यतना इनकी प्रमुख साधना थी। सम्यक श्रद्धा— यही इनका साधना पथ था। उनके इस प्रकाश से हजारा अधकार पीड़ितो के जीवन म प्रकाश की किरण चमक उठी।

आपश्री धार्मिक परपरा के पोषक थे तथा उसका कट्टरता से पालन करने-कराने के हिमायती थे। शुद्ध जैनत्व के आप प्रबल प्रचारक थे। महाराष्ट्र या दक्षिण में बड़ी तपस्याए होना आपश्री की प्रेरणा का पुण्यफल है। आपका सयम तपाराधना दृढ़ता पर आधारित कार्य का प्रकाश जन-मन पर छाया हुआ है। युग की दिव्य विभूति के रूप में आपका स्मरण रहेगा।

मारवाड पाली जिले के ग्रामीण अचल में स्थित पीपलियाकला मे सन् १९१३ को आदर्श सुश्रावक व्रती और दृढधर्मी श्री प्रेमराजजी शाह के पुत्र रूप में जन्म हुआ। अपने जन्मकाल से सवेदनशील बाल मन ने सूक्ष्मता से राष्ट्रीय परिवेश राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय अपेक्षा को अनुभव किया। इसी समय महात्मा गाधी ने सन् १९३१ मे सविनय अवज्ञा आदोलन का आह्वान किया। देश में ज्वार आ गया। जलजले उठे। अग्रेज सिहासन डोलने लगा। मात्र १७–१८ वर्ष की वय म श्री बोहरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समर्थन करते स्वय थाने पर पहुचे और अपने आपको गिरफ्तारी के लिए प्रस्तुत किया। आपके क्षेत्र के श्री आनदराजजी सुराणा प्रजा परिषद् के जबरदस्त कार्यकर्ता थ। जोधपुर मारवाड के लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास तथा श्रीमान सुराणाजी से आपके पिता श्री प्रेमराजजी बोहरा का आत्मीय सबध था और श्री शाह प्रजा परिषद् के सभी कार्यों मे मुक्त भाव से सहयोगी रहते थे। इन सबका श्री गणपतराजजी सा बोहरा पर जबरदस्त प्रभाव पडा।

सन् १९३३–३५ के बीच देश मे चल रही बहिष्कार की आधी से श्री बोहराजी अछूते न रह सके। पीपलियाकला (मारवाड़) मे रहते हुए उन्होंने देशी रियासतो की सामन्ती व्यवस्था का जमकर विरोध किया था तो तमिलनाडु पहुच कर ब्रिटिश राज्य मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के वे सच्चे सिपाई बन गये और अब तक के अप्रत्यक्ष सघर्ष से हटकर अग्रेजों के साथ प्रत्यक्ष सघर्ष में कूद पडे। चाहे साही कमीशन हो या प्रतिरोध आदोलन विल्लुपुरम (तामिलनाडु) में रहकर भी उन्होंने राष्ट्रीय धारा मे अपने सहयोग को अखड रक्खा। खादी और स्वदेशी के वे अनन्य उपासक बने तो मृत्युपर्यन्त निष्ठावान पथिक बने रहे। काग्रेस कार्य के दौरान श्री बोहराजी के जीवन पर महात्मा गाधी के साथ ही साथ प जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे नेताओं का भारी प्रभाव पड़ा।

श्री गणपतराजजी बोहरा ने गाधीजी के सभी विचारों को अपने जीवन से एकात्म कर लिया। राष्ट्रीय एकात्मता साम्प्रदायिक सौहार्द सामाजिक और आर्थिक न्याय एव अस्पृश्यता का अत जैसी महात्मा गाधीजी की अवधारणाए थी श्री गणपतराजी बोहरा की सुदीर्घ जीवन यात्रा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कथनी और करणी की दुर्लभ एकता श्री बोहराजी की एक लोक-दुर्लभ विशेषता है।

उदार अर्थ सहयोग

राष्ट्रीय सकट के प्रत्येक क्षण मे आपने मुक्त हस्त से केन्द्र व शासन को अर्थ सहयोग किया है। दुर्भिक्ष अकाल के प्रत्येक प्रसग पर आपने मुख्यमत्री सहायता कोश में भरपूर राशि भेट की है। यह तो सबको ज्ञात ही है कि राजस्थान में अकाल एक स्थायी–सी समस्या है।

मरुभूमि की आशा–भव्य चिकित्सालय

आपकी उदारता की एक झलक पीपलियाकला में आप द्वारा स्थापित चिकित्सालय है। इस पी. जी चिकित्सालय हेतु आपने पाच करोड़ रुपये की राशि आवटित की और इसकी आधारशिला तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति सरदार ज्ञानी जैलसिह जी ने १८८८३ को रखी थी और आज यह मरुभूमि की स्वास्थ्य के क्षेत्र मे एक ज्वलत आशा-विश्वास है। अधुनातन सुविधायुक्त यह चिकित्सालय ग्रामीण क्षेत्रो के जरूरतमदो को नि शुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान करता है।

श्री साधुमार्गी जैन सघ

आपका परिवार साधुमार्गी परपरा का उपासक है। श्रमण सस्कृति के
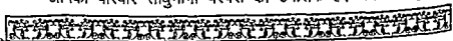
प्रति आपकी प्रगाढ श्रद्धा है। आपको शुद्धाचारी हुकम सघ की आचार्य परपरा के चार आचार्यों श्री श्रीलालजी म सा श्री जवाहरलालजी म सा श्री गणेशलालजी म सा और श्री नानालालजी म सा की सेवा का अपूर्व अवसर मिला। आपने अ भा साधुमार्गी जैन सघ के आस्थावान सदस्य के रूप म सघ सेवा शुरू की तथा सन् १९६७–६८–६६ तथा बीस वर्ष बाद आप पुन इस भारतीय सगठन के अध्यक्ष बने। आपकी प्रबल प्रेरणा से महिला स्वावलबन के क्षेत्र मे श्री महिला उद्योग मदिर रतलाम की स्थापना कर क्रातिकारी कदम आपने उठाया जो भारत में एक मिसाल है। सघ की विशाल धर्मसभाओं में प्रवासों मे आपके प्रति जन–जन की श्रद्धा देखते ही बनती थी। सघ सेवा मे आपने अपनी सपूर्ण सामर्थ्य समर्पित कर दी। आप आचार्य श्री नानेश के अनन्य निष्ठावान सुश्रावक थे।

व्यक्ति एक गुण अनेक

आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा का चातुर्मास भावनगर (गुजरात) मे था। चौमासे के दौरान बोहरा सा खुद कोठार से सामान लेकर परोसने का कार्य करते थे। इतने बड़े होकर भी समाज के लिए छोटा काम करने मे आपको कभी रज मात्र भी हिचक नहीं हुई। समाज के लिए आपका हृदय बहुत बड़ा था।

श्री बोहराजी की एक अन्य विशेषता बारबार देखने को मिली कि आप सघ की जिस किसी भी बैठक में सम्मिलित होते थे वहा अपने स्नेहिल व्यवहार से सबका हृदय जीत लेते थे। बैठक में ऊचा–नीचा प्रसग आने पर भी आपको कभी उग्र होते नहीं देखा। अनेक विशेषताए यदि किसी एक व्यक्ति मे देखनी हो तो वे सहज ही श्री बोहराजी के जीवन मे देखी जा सकती है।

आदर्श पति पत्नी

स्व श्री बोहरासा और स्व. श्रीमती यशोदा देवीजी जन्मजात धनाढ्य होते हुए भी आप दोनो को अहभाव छू भी नहीं गया था। आप में सरलता गभीरता दानवीरता आदि गुण सहज रूप मे विद्यमान थे।

एक बार बोहरा दपति के उदारमन की प्रशसा श्री घनश्यामदास जी बिड़ला की बहूरानी गोपी बहन ने बबई मे लेखक के सम्मुख की। चूकि लेखक का बिड़ला परिवार व बोहरा परिवार दोनो से निकट का सपर्क रहा है।

ऐसे शात, धीर दोनो चेत्ताओं को श्रद्धापूर्वक शब्द कुसुमाञ्जलि अर्पित करता हू। इन विरल विभूतियो के प्रति मेरे भाव सुमन असीम निष्ठा के साथ अर्पित करता हू।

— ११/५७१ चौपासनी हाउसिंग बोर्ड जोधपुर ३४२००८

□

मनोभावना होगी वैसा ही हमारा दूसरों के साथ व्यवहार होगा। हम दूसरों से अच्छे व्यवहार की इच्छा रखते हैं तो पहले हम स्वय भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। अपना व्यवहार सुखद व निर्मल होगा तो दूसरों से स्वत ही मिल जायेगा। फिर इसके लिए कहने व उपदेश देने की आवश्यकता नहीं है।

श्री बोहरा दपति के पारदर्शी जीवन की झलक उपरोक्त विवेचन से भली भांति समझ में आ जाती है। वैसे 'धर्म सघ' पुस्तक में विस्तार से बहुत लिखा है। 'बोहरा दपति' ने आचार्य श्री नानेश की निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति को देश के कौने कौने में पहुचाने का आह्वान किया तथा बताया कि इस विषम समय में लोगों के कल्याण का यही मार्ग है।

व्यक्ति का मन बड़ा चचल होता है। यह मन के अधीन ही रहता है। कबीरदासजी ने अपने साखी ग्रथ में 'मन को अग' में लिखा है—

मनुआ तो पखी भया जहा तहा उडि जाय।
जहा जैसी सगति करै तह तैसा फल खाय।

अर्थात् मनुष्य का मन पक्षी की तरह है। जो कहा कहा उडता रहता है। वह जैसी सगति करता है वैसा ही फल मिलता है।

'सगति को अग' में उन्होंने लिखा है—

जग सो आपा राखिये ज्यों विषहर सो अग।
करो दया जो खूब है बुरा खलक का सग।।

अर्थात् कुसगी लोगो की सगति से अपने आपको बचाना चाहिये। जिस तरह साप से अपने शरीर को बचाते हैं। इसे आगे ये लिखते हैं—

मैं सींचो हित जानि के कठिन भयो है काठ।
आई सगति नीच की सिर पर पाडी बाट।।

अर्थात् जल के इस प्रकार उदारता दिखलाने पर भी काठ अपनी नीचता को नहीं छोड़ता। वह सदैव उसके सिर पर चढ़ा रहता है और जल के ऊपर से ही अपना आना-जाना जारी रखता है। यही नीचों की नीचता है। अतएव हे मानव ! तू ऐसी सगति या ऐसी आदत मत रखना।

अत मनुष्य के मन पर सगति का काफी गहरा प्रभाव पडता है। मनुष्य को अच्छे सुसस्कारित व्यक्तियो के सपर्क में रहना चाहिये।

श्रमणोपासक ने बोहरा दपति का स्मृति अक निकालकर युवक वर्ग में सुसस्कार डालने की दृष्टि से एक मिसाल पेश की है यह स्तुत्य कार्य पाच सौ वर्षों तक जिंदा रह सकता है ऐसी अपेक्षा के साथ। ॐ शाति शाति शाति।

—ऋषियायतन ४४८ रोड सी सरदारपुरा जोधपुर

चिन्तन-मनन

राग, त्याग, वीतराग

—चादमल बाबेल—

'नास्ति राग सम दुख —महाभारत

राग अर्थात् आसक्ति के समान दु ख नहीं है। आसक्ति अथवा राग इस ससार में परिभ्रमण कराता है यह जन्म मरण के चक्र की वृद्धि करता जाता है अत इसे कर्मों का बीज कहा गया है। 'रागो य दोषो विय कम्मणीय' यदि बीज नष्ट नहीं होगा तो शाखा प्रशाखा रूप जन्म मरण नष्ट नहीं होगे अत सर्वप्रथम शाखा प्रशाखा रूपी जन्म मरण को समाप्त करना है तो राग को त्यागना होगा तब शाश्वत् सुख प्राप्ति मे कोई बाधा नहीं आवेगी। राग के कारण ही जीव अनेक अनिष्टकारी प्रवृत्तियो में प्रवृत्त होता चला जाता है। यह हमारा प्रबल शत्रु है तथा यह ऐसा शत्रु है जो मित्रवत् रहता है। यह आस्तीन की सर्प की तरह है जो हमारा इतना अनिष्ट कर देता है जितना शत्रु भी नहीं करता है। यह एक प्रकार का बन्धन है जोकि पराधीन बनाये रखता है। विद्वानों के कथन के अनुसार यह सोने की बेडी है अत इसको पहचानना भी बड़ा कठिन है। राग भाव के कारण ही तो हजारो लाखो कीट पतगे दीपक की लौ पर अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। राग भाव के कारण ही भ्रमर पुष्प की कली म बन्द हो जाता है जबकि उसमें सख्त लकडी मे छेद करने की शक्ति है किन्तु पुष्प की कोमल पत्तियो में छेद नहीं कर पाता है तथा अपने प्राणो को भी गवा बैठता है। राग का बन्धन बड़ा ही भयकर है राग भाव को जानना पहचानना व त्यागना बड़ा कठिन है। 'नेह पासा भयकरा' राग का बन्धन बडा भयकर होता है। चार ज्ञान चवदह पूर्व धारी गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति तब तक नहीं हो पाई जब तक भगवान महावीर के प्रति हल्कासा राग मन में बना रहा था। जब राग छूटा तो अनन्त ज्ञान की प्राप्ति हुई। किसी वस्तु या पदार्थ या प्राणी के प्रति राग भाव है तो वह आसक्ति का रूप ले लेता है जिससे वह ससार के बन्धनों को काट नहीं पाता है।

'रागान्धो हि न सर्वे पश्यति हिताहितम' राग में अन्धे हुए सभी प्राणी अपनी आत्मा के हिताहित स्वरूप को नहीं देख सकते हैं। पदार्थों के प्रति राग करना ससार अभिवृद्धि का कारण होता है 'भोगी भमई ससारे' भोगी व्यक्ति ससार में भ्रमण करता है अत स्पष्ट हुआ कि भोग की प्रवृत्ति को छोड़कर त्याग

भाव को अपनाना आवश्यक है। त्याग की बडी ही महत्ता है जैसे कि दीक्षा का महत्त्व ज्यादा है वनिस्पत विवाह कार्य से। व्यवहार में ही परिलक्षित होता है कि विवाह के निमन्त्रण पर चन्द व्यक्ति ही एकत्रित होते हैं किन्तु दीक्षा महोत्सव पर निमन्त्रण अथवा निमन्त्रण न होने पर भी अधिक मात्रा में एकत्रित होना स्वाभाविक है क्योकि त्याग का महत्त्व अधिक है। यदि कोई लकड़हारा दीक्षा लेता है और उसके बाद चक्रवर्ती राजा दीक्षा लेता है तो चक्रवर्ती लकड़हारे दीक्षित को वन्दन करता है 'नास्ति त्याग सम सुखम् त्याग के समान सुख नहीं है। वस्तु का सयोग होने पर भी इच्छा पूर्वक उसके भोग से मुह मोड़ लेना-- ऐसा त्याग ही अलौकिक सुख रूप होता है। इससे अपूर्व शान्ति प्राप्त होती है। समस्त प्राणियो के लिये मुक्ति का एक मात्र साधन भोगो का त्याग कर देना ही माना गया है 'त्यागाच्छान्तिरनत्तरम्' गीता का यह सूत्र भी यही बात कहता है कि इच्छापूर्वक भोगो का त्याग करने का अन्तिम परिणाम अनन्त शान्ति ही है। पापपूर्ण आरम्भ समारम्भ से निवृत पुरुष ही साधुता प्राप्त करते हुए मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

> आगे बढ़ने के लिये स्वच्छ राह चाहिये
> जीवन बनाने के लिये अच्छा उत्साह चाहिये।
> निर्वाण पथ की ओर बढ़ने के लिये मानव को
> अपने जीवन में त्याग की सुराह चाहिये।।

जीवन में त्याग ही मोक्ष मार्ग मे ले जाने का एक मात्र सहारा है। उस समय सबको सभी को त्यागना पड़ता है जिसे हम तत्त्वो की अपेक्षा उपादेय मानते हैं वे भी हेय हो जाते हैं। त्याग से अनुपम शान्ति प्राप्त होती है। जो निस्पृही होता है उसे चक्रवर्ती से भी अधिक सुख का अनुभव होता है। यदि कोई भी प्राणी वर्तमान मे प्राप्त वस्तुओं से भोगो से तृप्त नहीं हुआ भला वह भविष्य मे कैसे सन्तुष्ट होगा। देवताओ को सुख से कभी तृप्ति नहीं होती है पूर्ण सतुष्टि तो प्राणी को त्याग मे ही प्राप्त होगी। वैभवशाली देव व इन्द्र भी इस त्याग के समक्ष अपने को निम्न समझते हैं। वे भौतिक ऐश्वर्य से सम्पन हो सकते हैं किन्तु त्याग मार्ग को नहीं अपना सकते हैं।

दशार्ण भद्र राजा ने जब विचार किया कि मैं आज भगवान महावीर के दर्शनार्थ बड़ा सजधज से प्रस्थान करू तथा उसने ऐसा किया। इस स्थिति को देखकर इन्द्र ने अपने वैक्रय बल से इतनी सजधज की तो दशार्ण भद्र ने अपने आपको पर्वत के सामने चींटी की स्थिति में पाया। राजा को अपनी भूल मालूम हुई तथा विचार किया कि वैभव से अधिक त्याग का महत्त्व है।

भौतिकबल अन्यत्र कहीं नहीं भौतिक शक्ति से झुकता है
आध्यात्मिकबल के सन्मुख आकर आखिर थकता है।

अत दशार्ण भद्र ने वैभव को छोड़कर भगवान महावीर के पास दीक्षा गीकार करली तब इन्द्र ने आकर वन्दना की एव निवेदन किया कि वैभव का काबला मैं अवश्य कर सकता हू किन्तु त्याग के सामने मैं स्वय नत मस्तक हू। पको मैं वैभव से विजित करना चाहता था किन्तु आपने त्याग से मुझे पराजित र दिया अत शाश्वत् सत्य है कि त्याग की महत्ता सर्वोपरि है।

त्याग करना उतना कठिन नहीं है जितना राग का त्याग करना अत राग के त्याग के अभाव में त्याग त्याग नहीं कहला सकता है त्याग के साथ वैराग्य की आवश्यकता है। त्यागी के मन में यह भाव रह सकता है कि मैंने ससार न माल पुत्र पुत्री पत्नी आदि सभी को छोड़ दिया है। वैरागी इससे कुछ ऊपर उठता है त्याग के बाद साधक यदि यह विचार करे कि ये मेरे भक्त हैं यह मेरा क्षेत्र है ये मेरे शिष्य एव शिष्याये हैं यदि इस प्रकार का राग है तो वह सच्चा त्यागी नहीं हो सकता है। अपने सम्प्रदाय का राग अपने ज्ञान का राग अपनी उच्च क्रियाओं का राग अपने पद के प्रतिराग अपने प्रभाव के प्रति राग यह सब प्रदर्शित करना या बताना निरर्थक है इसे सच्चा त्याग नहीं माना जा सकता है। त्याग वैराग्य के साथ वीतराग की आवश्यकता है आत्म ज्ञान की आवश्यकता है। इसके अभाव मे आत्मार्थी अपने जीवन को सफल नहीं बना सकता है न उसे मोक्ष मार्ग की ओर कदम बढाने मे सफलता मिल सकती है अटके त्याग विरागमा तो भूले निज भान जो त्याग वैराग्य मे अटक कर आत्मज्ञान की आकाक्षा न रखे वह अपना भान भूल जाता है। पूजा सत्कार से तो वह पराभव को प्राप्त होता है। मात्र त्याग वैराग्य मे अनुरक्त होना कृतार्थता नहीं है। इससे ससार का उच्छेद नहीं होगा सयम आदि की प्रवृत्ति अवश्य हो जावेगी किन्तु जीवन का जो उद्देश्य है उसमे सफलता नहीं मिल सकेगी।

वैराग्यादि सफल तो जो सह आतमज्ञान।
तेम ज आतम ज्ञाननी प्राप्ती तणा निदान।।

वैराग्य त्याग आदि यदि आत्मज्ञान के साथ हों तो वे सफल हैं क्योकि वैराग्य त्याग दया आदि अतरग वृत्ति वाली क्रियाए हैं यदि इनके साथ वीतराग भाव हो तो भव के मूल का नाश करती है अत आवश्यक है कि त्याग वैराग्य के साथ ससार के प्रति उदासीनता शरीर के प्रति अल्प मूर्छा भाव भोग में

अनासक्ता मान आदि की कृशता इत्यादि गुणों का होना आवश्यक है तभी वीतराग भाव की ओर गति की जा सकती है। केवल अपने आपको आत्मज्ञानी मान लेना भी उचित नहीं हैं क्योकि जब आत्मा के भोग आदि की कामना की अग्नि जला करती है तो पूजा सत्कार आदि की कामना बारबार स्फुरित होती रहती है। सहज असाता से आकुलता व्याकुलता हो जाती है। ये सब वीतराग भाव की ओर बढ़ने के लक्षण नहीं हैं अत श्रीमद् रायचन्द्र के विचार सटीक एव उचित ही हैं कि--

देहछता जेनीदशा वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानीना चरणमा हो वन्दन अगणित।।

देह से अतीत अर्थात् देहादि की कल्पना से रहित आत्ममय जिसकी दशा रहती है वह आत्म साधक वन्दनीय है पूजनीय है। अत राग से त्याग त्याग से वैराग्य वैराग्य से वीतराग भाव ही जीवन का लक्ष्य बने तो जीवन की सार्थकता है।

--सी ४६ डॉ राधा कृष्ण नगर भीलवाड़ा--३११ ००१

आज इन्सान अपने मन मे क्या अभिलाषा रखता है ? यह कि मैं दुनिया का मान सम्मान ग्रहण करू ? दुनिया के सिर पर चढ कर दुनिया का वदनीय और पूजनीय बनू। यदि इन्सान को अपना जीवन जीना है यदि इन्सान को जीवन के प्रश्न को हल करना है कि मेरा जीवन क्या है ? तो इस जीवन के प्रश्न को हल करने में सबसे पहल उसे मिट्टी से शिक्षा लेनी चाहिए कि मिटटी के समान मे निश्चल दृढ धैर्यवान बन जाऊ।

-- आचार्य श्री नानेश

समता-दर्शन निर्गुण और सगुण पक्ष

—कन्हैयालाल डूगरवाल—

भगवान महावीर ने कहा है कि सभी आत्माए समान हैं। सभी को जीने का अधिकार है। कोई भी किसी की सुख सुविधा का अपहरण नहीं कर सकता। जिस प्रकार चोरी करने वाला दण्डित किया जाता है क्योकि उस वस्तु पर उसका अधिकार नहीं है वैसे ही किसी अन्य के जीवन इन्द्रिय शरीर पर किसी का कोई अधिकार नहीं है। सभी को समान रूप से जीने का अधिकार है। अत किसी के प्राणों का व्यपरोपणादि करना अपराध है। महावीर का मूल उद्घोष है जीओ और जीने दो । इस सिद्धात को ज्ञान व आचरण पूर्वक अपनाने से अवश्य ही जीवन मे समता रस की प्राप्ति हो सकती है।

महावीर के इस सिद्धात को आचार्य नानेश ने समता दर्शन के रूप मे आगे बढाया है। इसको समझने और आचरण करने पर उन्होंने जोर दिया है । अपने व्याख्यानो में साहित्य में वे हमेशा समता को ही केन्द्र बिन्दु रखते हैं। इस तरह आज पू नानालालजी एक ऐसे जैन साधु हैं जिन्हाने समता दर्शन की सगुण और निर्गुण रूप मे व्याख्या करने का हमेशा प्रयास किया है।

भारत मे निर्गुण रूप मे सत्य अहिंसा अपरिग्रह आदि सिद्धातों को हमेशा अपनाया है। अपरिग्रह पर प्राय सभी धर्म जोर देते हैं। किन्तु भारत जैसी सामाजिक व आर्थिक विषमता अन्यत्र कहीं नहीं है। पश्चिमी देशो को जहा हम आध्यात्मिक पक्ष में इतने सबल नहीं मानते वहा मनुष्य मनुष्य मे इतनी विषमता नहीं है जितनी आध्यात्मिक गुरु कहलाने वाले देश भारत मे।

पश्चिमी देशो ने अपरिग्रह का निर्गुण सिद्धात नहीं अपनाते हुए भी राज्य व्यवस्था ने सपत्ति की सस्था पर नियत्रण किया फलस्वरूप वहा अमीर गरीब में इतनी गैर बराबरी नहीं है जितनी भारत में। भारत मे सपत्ति की सस्था पर कारगर नियत्रण नहीं हुआ। भारत के सविधान मे मौलिक अधिकार उसका मूल आधार है। किन्तु कदम कदम पर उनका हनन होता है। बराबरी का बराबरी के मौके का लिंग जाति और धर्म का कोई बधन लगाये बिना हर नागरिक को अधिकार दिया है। मौलिक अधिकारो को मूर्त रूप देने के लिए न्यायिक व्यवस्था भी है। नागरिक को जीने का अधिकार है और किसी के जीवन को कानूनी प्रक्रिया के बिना खत्म नहीं किया जा सकता किन्तु कदम-कदम पर

अनासक्ता मान आदि की कृशता इत्यादि गुणों का होना आवश्यक है तभी वीतराग भाव की ओर गति की जा सकती है। केवल अपने आपको आत्मज्ञानी मान लेना भी उचित नहीं हैं क्योकि जब आत्मा के भोग आदि की कामना की अग्नि जला करती है तो पूजा सत्कार आदि की कामना बारबार स्फुरित होती रहती है। सहज असाता से आकुलता व्याकुलता हो जाती है। ये सब वीतराग भाव की ओर बढने के लक्षण नहीं हैं अत श्रीमद् रायचन्द्र के विचार सटीक एव उचित ही हैं कि–

> देहदता जेनीदशा वर्ते देहातीत।
> ते ज्ञानीना चरणमा हो वन्दन अगणित।।

देह से अतीत अर्थात् देहादि की कल्पना से रहित आत्ममय जिसकी दशा रहती है वह आत्म साधक वन्दनीय है पूजनीय है। अत राग से त्याग त्याग से वैराग्य वैराग्य से वीतराग भाव ही जीयन का लक्ष्य बने तो जीवन की सार्थकता है।

–सी ४६ डॉ राधा कृष्ण नगर भीलवाडा–३११ ००१

आज इन्सान अपने मन मे क्या अभिलाषा रखता है ? यह कि मैं दुनिया का मान सम्मान ग्रहण करु ? दुनिया के सिर पर चढ कर दुनिया का वदनीय और पूजनीय बनू। यदि इन्सान को अपना जीवन जीना है यदि इन्सान को जीवन के प्रश्न को हल करना है कि मेरा जीवन क्या है ? तो इस जीवन के प्रश्न को हल करने में सबसे पहल उसे मिटटी से शिक्षा लेनी चाहिए कि मिट्टी के समान में निश्चल दृढ धैर्यवान बन जाऊ।

— आचार्य श्री नानेश

समता-दर्शन निर्गुण और सगुण पक्ष

—कन्हैयालाल डूगरवाल—

भगवान महावीर ने कहा है कि सभी आत्माए समान हैं। सभी को जीने अधिकार है। कोई भी किसी की सुख सुविधा का अपहरण नहीं कर सकता। स प्रकार चोरी करने वाला दण्डित किया जाता है क्योकि उस वस्तु पर तका अधिकार नहीं है वैसे ही किसी अन्य के जीवन इन्द्रिय शरीर पर किसी कोई अधिकार नहीं है। सभी को समान रूप से जीने का अधिकार है। अत सी के प्राणों का व्यपरोपणादि करना अपराध है। महावीर का मूल उदघोष 'जीओ और जीने दो । इस सिद्धात को ज्ञान व आचरण पूर्वक अपनाने से वश्य ही जीवन में समता रस की प्राप्ति हो सकती है।

महावीर के इस सिद्धात को आचार्य नानेश ने समता दर्शन के रूप मे गे बढ़ाया है। इसको समझने और आचरण करने पर उन्होन जोर दिया । अपने व्याख्यानो मे साहित्य मे वे हमेशा समता को ही केन्द्र बिन्दु रखते । इस तरह आज पू नानालालजी एक ऐसे जैन साधु हैं जिन्होने समता दर्शन ो सगुण और निर्गुण रूप मे व्याख्या करने का हमेशा प्रयास किया है।

भारत मे निर्गुण रूप मे सत्य अहिंसा अपरिग्रह आदि सिद्धातो को मेशा अपनाया है। अपरिग्रह पर प्राय सभी धर्म जोर देते हैं। किन्तु भारत जैसी माजिक व आर्थिक विषमता अन्यत्र कहीं नहीं है। पश्चिमी देशो को जहा हम ध्यात्मिक पक्ष मे इतने सबल नहीं मानत वहा मनुष्य मनुष्य मे इतनी विषमता हीं है जितनी आध्यात्मिक गुरु कहलाने वाले देश भारत में।

पश्चिमी देशों ने अपरिग्रह का निर्गुण सिद्धात नहीं अपनाते हुए भी राज्य यवस्था ने सपत्ति की सस्था पर नियत्रण किया फलस्वरूप वहा अमीर गरीब इतनी गैर बराबरी नहीं है जितनी भारत म। भारत ने सपत्ति की सस्था पर गरगर नियत्रण नहीं हुआ। भारत के सविधान ने मौलिक अधिकार उसका मूल धार है। किन्तु कदम कदम पर उनका हनन होता है। बराबरी का बराबरी के मौके का लिग जाति और धर्म या कोई बधन लगाये बिना हर नागरिक को धिकार दिया है। मौलिक अधिकारो को मूर्त रूप देने के लिए न्यायिक यवस्था भी है। नागरिक को जीने का अधिकार है और किसी के जीवन को नूनी प्रक्रिया के बिना खत्म नहीं [illegible] जा सकता किन्तु कदम कदम पर

बहुराष्ट्रीय कपनियो के प्रादुर्भाव से समाज में विषमता और बढी है।

विषमता कम करने के लिये सरकारी कानून और सिविल नाफरमानी ही कारगर साधन है। समता के लिये सघर्ष करने वालो को कुचला जायेगा। आज यह हो रहा है। मनुष्य जाति को अत्याचारी अपहर्ता और शोषक से 'नहीं कहने की कला ज्यादा से ज्यादा सीखना चाहिये। सादगी स्वालबन और स्वदेशी अपनाने से भी समता का लक्ष्य हासिल होगा। इसके लिये मनुष्य को अकेले और समूह मे शातिपूर्ण सघर्ष के लिये तैयार होना होगा।

आज इस सदी मे हथियारी व अन्य क्रूरताओं के चलते-समानता की लड़ाई भी चल रही है। नर-नारी समता राष्ट्रो के बीच समता काले-गोरे के भेद मिटाने जाति भेद मिटाने राष्ट्रो के भीतर और बाहर शोषण की खिलाफत हथियारों की समाप्ति आदि क्रातियों की धाराए भी चल रही हैं। हम आशा करें कि २१वीं सदी समता के सगुण लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

—अधिवक्ता पूर्व विधायक नीमच (म.प्र)

वाणी सयम

यदि वाणी रजत है तो मौन स्वर्ण है।

जीवन में हम प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं कि जो कार्य बोलने से नहीं हो पाता वह मौन से सहज ही हो जाता है। वाणी की जो शक्ति है मौन की शक्ति उससे बढ कर है। साढ़े बारह वर्ष की घोर मौन साधना द्वारा ही भगवान् महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त किया था।

वाणी–पर–नियन्त्रण के अभाव के कारण ही आज घर–घर में 'महाभारत' चल रहा है। दुनिया मे अधिकाश झगड़ो का मूल 'वाणी का अनियन्त्रण' है। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'यदि मनुष्य अपनी वाणी को टेलीग्राफिक बना ले तो दुनिया के ८० प्रतिशत झगड़े कम हो सकते हैं।

जब लिफाफे में पत्र लिखना होता है तो व्यक्ति पूरी छूट से लिखता है परन्तु यदि तार करना हो तो मर्यादित शब्दो में ही वह अपनी बात रखने की कोशिश करता है। बस इसी प्रकार यदि तुम अपनी वाणी को मर्यादित रखोगे तो तुम्हारे शब्दो की कीमत खूब बढ़ जाएगी।

याद रखना जो सतत् बकवास करता रहता है उसके मूल्यवान शब्द भी मूल्यहीन हो जाते हैं और जो मौन रह कर अवसर पर ही थोडी बात करता है उसके अल्प शब्द भी अत्यधिक मूल्यवान बन जाते हैं।

—मुनि रत्नसेन विजय

उवओगो लक्खणम्

—उदयलाल जारोली—

तत्वार्थ सूत्रकार ने आत्मा का लक्षण कहा है— उपयोग। भेद विवक्ष म लक्षण–लक्षी मे भेद है। मिश्री मीठी होती है–इस कथन मे मिश्री और मिठास में भेद दिखता है गुण–गुणी भिन्न-भिन्न दिखते हैं परन्तु वस्तु स्वरूप को समझने के लिए ज्ञान पहले खड–खड में एक-एक गुण एक-एक लक्षण पर विचार करता है और सभी गुणों/लक्षणो को जाना जाता है जिस समय वस्तु का स्वरूप सर्वांश मे सपूर्णत एक साथ दृष्टि मे आता है तब दर्शन कहा जाता है। दर्शन अभेद अखड को देखता है तब मिश्री और मिठास का भेद मिट जाता है। मात्र उसका स्व सवेदन-अनुभवन रहता है मिठास का।

इसी प्रकार आत्मा मे अनन्त गुण हैं। ज्ञान एक–एक करके जानता है यह ज्ञान है यह दर्शन है यह चारित्र है यह सुख है यह वीर्य है यह उपयोग है– इनके भेदाभेद को जानता–समझता है। भेद विवदा मे ये सब भिन्न-भिन्न दिखते हैं। जब सभी गुण सभी लक्षण एक साथ सपूर्णत सर्वांश मे अनुभव मे आते हैं तब दर्शन कहलाता है।

इन्हे क्रमश ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग या ज्ञानचेतना और दर्शनचेतना कहा जाता है। इस उपयोग के १२ भेद भी कहे गये हैं। अभेद विवक्षा मे सब भेद गौण हो जाते हैं अनुभव–दशा मे सब ओझल हो जाते हैं ज्ञाता– ज्ञेय और ज्ञान का भेद मिट जाता है। ज्ञाता भी आत्मा जाना भी आत्मा को और जानन-क्रिया भी आत्मा की। यही स्व-समय है। यही समयसार है। यहा आत्मा का उपयोग आत्माकार हो जाता है।

आत्मा का उपयोग भटकता रहता है ? कब ? कब तक ? जब आत्मा और उसके गुणों उसके कार्यों का ज्ञान भान नहीं होता तब और जब तक पूर्णता की प्राप्ति नहीं होती तब तक आत्मा का उपयोग परपदार्थों म परभाव में भटकता रहता है। ये अनन्त हैं और इसीलिए अनन्त काल तक भटकन अर्थात् चतुर्गति-भ्रमण जन्म-जरा-मृत्यु आधि-व्याधि उपाधि के भयकर दु ख भोगने पड़ते हैं। यही अज्ञान है यही अ–दर्शन है और इसी कारण रागादि रूप कु चारित्र है। यह पर-समय है–असार है।

आत्मा का उपयोग आत्मा मे ही क्यों नहीं होता क्यो नहीं टिकता–टिके रहता ? क्योंकि 'आत्मवीर्य पुरुषार्थ बाहर उमडता है। आत्मार्थ (परमार्थ) के—

लिए लगता ही नहीं। आत्मार्थ मे लगे तो सत्पुरुषार्थ और परभावों-परपदार्थों मे लगे तो असद्-व्यवहार असत् पुरुषार्थ का-पुरुष कहलाता है।

अनन्त ज्ञानादि-गुणसम्पन्न आत्मा को क्या इतना समझ में नहीं आता कि क्या स्व-हित और पर-हित क्या मेरा और क्या पराया क्या स्व-भाव और क्या पर-भाव क्या स्व-उपयोग और क्या पर-उपयोग ? तो उत्तर है कि ह समझ में नहीं आता क्यो ? क्योंकि ज्ञान पर पर्दा डाल रखा है इसलिए स्व-पर का भेद नहीं होता मान नहीं होता और बे-मान होने से 'पर-भाव' पर पदार्थ 'पर-जन' का ही क्रमश स्वभाव (स्वकार्य) स्व-धन और परिजन मानता चला जाता है उन्हीं का कार्य करने मे रचा-पचा रहता है। इन 'पर' से उपयोग जुड़ते ही पर-धन पर-जन से बन्धते-जुड़ते ही आश्रय और बन्ध निरन्तर कर्मबन्ध होते रहते हैं।

जिन-जिन व्यक्तियो वस्तुओ परिस्थितियो मे यह जीव अपनापन मानता है वहा-वहा राग है। जहा राग हैं वहा कर्मों का रोग है आत्मा का भाव-मरण है। इस आत्मा की अनादि की एक ही भूल ज्ञानियो ने कही है वह है-'पर को अपना मानना और स्व को भूले रहना'। यही अज्ञान है यही मिथ्यात्व है यही मोह है।

जहा राग है वहा प्रकारान्तर से द्वेष है क्रोध मान माया लोभ हिंसादि पचपाप पचेन्द्रिय-विषय-भोग मन-वचन-काया के त्रियोग का बाहर में चलना आदि है। ज्ञानियों ने इन्हें एक शब्द दिया 'रागादि'। ये रागादि जीव के भाव हैं इनका निमित्त पाकर कार्मणवर्गणा के पुद्गल-परमाणु आकर्षित होकर तीव्र-मदभावों के अनुरूप, स्थिति अनुभाग लेकर ज्ञानावरणादि सात-आठ कर्मों मे बदलकर आत्मा के साथ आकर ठहर जाते हैं। इन्हें द्रव्यकर्म कहा है। इनके कारण से देहादि नाकर्म होते हैं। देहादि अर्थात् देह पाच इन्द्रिया, अनुकूल-प्रतिकूल साधन-सामग्री धन परिजन आदि। द्रव्य कर्म से भावकर्म और भावकर्म से द्रव्यकर्म की श्रृखला में यह अज्ञानी मोही जीव अनन्तकाल से फसा हुआ है। यह विषमय घेरा है। मोहनीय कर्म का अन्दर मे उदय आता है बाहर में वेदनीय के निमित्त से शत्रु-मित्र अनुकूल-प्रतिकूल व्यक्ति-स्थिति-परिस्थिति मिलते ही जीव रागादि करता है और रागादि भावों से पुन मोहनीयादि कर्मबन्ध में फस जाता है।

आत्मा शुद्धोपयोग अशुद्धोपयोग उससे कर्मबन्ध आदि कुछ समझ में नहीं आता। इसलिए शुद्धोपयोगी ज्ञानियों ने एक शुद्ध दिव्य सम्यक दृष्टि दी कि हे आत्मन् यह समझ कि (१) तू देहादिस्वरूप नहीं (२) ज्ञानावरणादि स्वरूप

नहीं (३) रागादि भाव--स्वरूप नहीं। तू देहादि नोकर्म ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म और रागादि भावकर्म से परे शुद्ध बुद्ध निर्मल निर्विकारी मात्र ज्ञाता-दृष्टा शुद्धोपयोगी चैतन्य स्वरूपी-- शुद्धात्मस्वरुप है। निशक विभ्रम और विपर्यय से परे ऐस शुद्धात्मस्वरूप का ज्ञान ही सम्यक ज्ञान और उसका सर्वांश-सपूर्ण स्वरूप का भान होना ही सम्यक दर्शन या सम्यक्त्व है। यहा शुद्ध स्वरूप की प्रतीति या श्रद्धा होती है। उस शुद्ध निर्मल स्वरूप को प्रकट करना-उस हेतु, लक्ष्य-पूर्ति से व्रत महाव्रतादि का ग्रहण सम्यकचारित्र है।

जब ज्ञान और दर्शन सम्यक होते हैं तब रागादि हेय हो जाते हैं। अटूट श्रद्धा यह रहती है कि देहादि मैं नहीं मेरे नहीं मैं उनका नहीं दोना मे तदन स्पष्टत भिन्नता द्रव्य से गुण से और पर्याय से स्पष्टत भासित होती है। इस भेदविज्ञान से जड-चेतन की भिन्नता क ज्ञान से भान से समस्त रागादिभाव हेय हो जाते हैं श्रद्धा में राग नहीं ज्ञान राग को नकारता है चारित्र मोहनीय के उदय से रागादि होते हैं परन्तु वे अन्नतराग रूप नहीं होने से अनन्त से बन्ध नहीं करवा सकते हैं।

इस स्तर पर पहुचते ही जीव की दृष्टि 'स्व पर शुद्धोपयोग मे ही रहने की होती है। यहा उपयोग को दो भागों मे बाटा गया है (१) शुद्धोपयोग और (२) अशुद्धोपयोग। अशुद्धोपयोग को पुन दो भागों मे बाटा गया है-

(१) शुभोपयोग और (२) अशुभोपयोग।

१८ प्रकार के पाप-भाव अशुभोपयोग म आते हैं। १० प्रकार के पुण्य-भाव शुभोपयोग मे आते हैं। सम्यक्त्वी जीव अशुभोपयोग में नहीं जाना चाहता परन्तु श्रेणी अनुसार नवें गुणस्थान तक अशुभोपयोग है। क्षीणतर-क्षीणतर होता जाता है। 'पाप-भाव होता है बुद्धिपूर्वक करना नहीं चाहता। इसी अपेक्षा से कहा गया है कि 'समतदसी न करेई पाव-अर्थात् सम्यकदर्शी पाप नहीं करता है।

अब प्रश्न है कि क्या वह शुभ-भाव (पुण्यभाव) करना चाहता है ? सम्यक दृष्टि तो वही है जो न शुभ करना चाहता है न अशुभ भाव। वह चाहता तो निरन्तर शुद्धभाव मे जाना स्वात्म-स्वरुप में जाकर उसी मे स्थित हो जाना चाहता है परन्तु कर्मोदय से जा नहीं पाता है।

शुभोपयोग से पुण्यबन्ध होता है। एक ही समय मे जितने अश में निर्जरा का श्रेणी अनुसार उतनी निर्जरा रहती है सत्ता में बैठे अघाती (ज्ञानावरण आदि) से पापबन्ध भी होता है और शुभभाव से पुण्यबन्ध भी होता है।

भूखे को भोजन प्यासे को पानी [illegible] की सेवा उपचार करना करवाना सहायता देना आदि पुण्य कार्य हैं। यदि प्रचुर धन साधन [illegible]

[illegible]

[illegible]

उपयोग अपनी पचेन्द्रियो के पोषण हेतु, मोहवशात् परिजनों पर व्यय करता है ता पाप–बन्ध परन्तु उसमे न करके उन्हे न्यून करके परोपकार म लगाता है तो पुण्यबन्ध होगा जिसका फल शातावेदनीय–कर्म का उपार्जन और फल आगे शरीर मे बाहर म अनुकूलताए आदि मिलेगी।

एक प्रकार शुभोपयोग का होता है–प्रशस्त शुभ। यदि जीव अरिहन्तादि के गुणानुराग–वन्दन स्मरण स्तवन पच–व्रत पच–महाव्रत समिति–गुप्तिरुप चारित्र आराधन वाचना–पृच्छना–पर्यटना रूप स्वाध्याय करता है तो शुद्ध–निमित्तो मे उपयोग लगने से उत्कृष्ट पुण्य होता है। यहा उपयोग शुद्ध–निमित्तो पर दृष्टि अभी भी बाह्य पर रहती है बाह्याचरण होता है–समिति गुप्ति भी बाहर होती है अत शुद्धोपयोग नहीं कहा जा सकता बाह्य मे शुद्धात्मस्वरुप का चिन्तन–मनन भी सम्मिलित है मन–वचन– काय योग चल रहे हैं अत यहा तक बन्ध है यह अवश्य है कि इस बन्ध मे पुण्यबध म स्थिति (काल) कम और अनुभाग (रस) अधिक होता है और अरिहन्तादि का अधिकाधिक सयोग इसका फल होता है। इन्हे क्षय नहीं करना पडता। वह शुद्धोपयोग मे स्थित होने क अधिकाधिक अवसर पाता है शुद्ध के अत्यन्त निकट होता है जिस समय वह ऐसे उत्कृष्ट भावो म होता है उस समय जिन क्षणो मे वह शुद्धापयोग में स्थित होता है अप्रमत्त होता है उस क्षण निर्जरा में होता है सवरपूर्वक निर्जरा जिसमें कर्मों के पुज के पुज भस्म होते हैं। ऐसी एक देश निर्जरा करते-करते रम अवस्था परम शुद्धात्म दशा की प्राप्ति होती है आत्मा का उपयोग मात्र आत्मा में ही रहता है यह तेरहवे *गुणस्थान की अवस्था* होती है।

चौथे गुणस्थान पर जो शुद्धोपयोग का ज्ञान-भान होता है वह तेरहवें में पूर्ण होता है। चौथे के आगे पाचवे मे कुछ अशो में प्रकट होता है। स्वभाव दशा ही शुद्धोपयोग है। सातवे म और अधिक बढ़ता है। अधिक नहीं टिक पाने से पुन छठे गुणस्थान पर आ गया प्रमादी कहलाता है। प्रमादी अर्थात् आत्मा की शुद्धात्म-दशा से नीचे स्थित होना। इससे निर्जरा नहीं बध है। इस राग से ही चौथे पाचवे और छठे गुणस्थानवर्ती को देवायु का बन्ध होता है। सयम से तो निर्जरा होती है परन्तु उसके साथ रहे हुए शुभ-राग (अशुभ नहीं) शुभोपयोग–प्रशस्त शुभ से देवायु का बन्ध होता है वीतराग-सयम तो शुद्धोपयोग में ले जाकर सीधे मोक्षावस्था मे स्थित करता है।

हम सबका एक ही लक्ष्य रहे कि कैसे हम अशुभ से हटकर शुभ प्रशस्त शुभ और अन्त मे परम शुद्धोपयोग में स्थित हों। लक्ष्य बनाएगे परम शुद्ध का लक्ष्य बनाएगे तो उस परमशुद्ध दशा को निश्चित ही कभी-न कभी प्रकट करेंगे ही।

—जारोली सदन नीमच (म प्र)

जैनेत्तर जातियो मे जैनत्व का प्रभाव

–डॉ महेन्द्र भानावत–

जैनधर्म अत्यन्त प्राचीन धर्म है। जैनियो के २४ तीर्थंकरो मे अतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर को हुए ही ढाई हजार से ऊपर वर्ष व्यतीत हो गए। प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव ने ज्ञान–विज्ञान तथा मानव सभ्यता की जो देन दी उससे भारत की अपनी प्राचीन पहचान बनी हुई है। विश्व के देशो में भारत की ख्याति ही उसके प्राचीन होने तथा परम्पराओ के सरक्षण करने की बनी हुई है।

जैनिया के सिद्धात किसी वर्ग विशेष तथा सम्प्रदाय विशेष को व्याख्यायीत करने वाले नहीं हैं। वे जन-जन को सुखमय जीवन जीने अपने आचरण को पवित्र बनाये रखने तथा आवश्यकताओ को सीमित रखते हुए सयमी एव अनुशासनबद्ध जीवन जीने की कला के द्योतक हैं।

महावीर के सत्य अहिंसा अपरिग्रह के सिद्धात सार्वभौमिक और सार्वकालिक बने हुए हैं। ये सिद्धात मनुष्य मात्र के लिये जीवनी–शक्ति देने वाले सिद्धात हैं। यदि इनका सम्यक प्रकारेण आचरण किया जाये तो मनुष्य का जीवन आदर्श जीवन बन सकता है। महात्मा गाधी के सत्य और अहिंसा के प्रयोग जैनत्व से ही अनुप्राणित हैं। मोटे रुप मे कोई भी गलत काम करना नहीं दूसरों से कराना नहीं और कराते हुए का अनुमोदन करना नहीं–जैनत्व के मूल उत्स और उदबोधन है। यदि व्यावहारिक कसौटी पर इन्हे प्राणी हृदयगम कर ले तो वह कई प्रकार की परेशानियो और मुसीबतो से बच सकता है।

जैन लोग तो जैन सिद्धातो और आचार–विचारो से भली भाति सुपरिचित हैं और दैनिक जीवन मे भी उन्हीं की परिपालना करते पाये जाते हैं। पानी छानकर पीना खुले मुह नहीं बोलना चलते समय जमीन पर देखकर चलना वनस्पतियों को आघात नहीं पहुचाना किसी जीव को नहीं सताना जैसी बाते यद्यपि बहुत सामान्य बहुत छोटी और बड़ी साधारण लगती हैं किन्तु ये बातें उतनी ही महत्वपूर्ण भी हैं।

उदयपुर का आदिवासी बहुल इलाका मुख्यत बागड क्षेत्र भीली क्षेत्र है। इधर नारु रोग की बड़े लम्बे समय से बहुलता है। कोई घर ऐसा नहीं मिलेगा जहा नारु रोग का प्रवेश नहीं हुआ हो। यह एक बीडा ऐसा है। जरेप मोटे

[illegible]
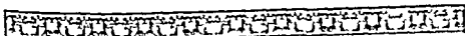
धागे जैसा कीडा जो एक–एक मीटर तक की लबाई लिये होता है। शरीर के किसी भी भाग मे नारु पनप सकता है। बागड़ में एक–एक व्यक्ति के दस–दस बीस-बीस नारु तक देखे गए। जब यह बीमारी अपने चरम पर होती है तब रोगी बड़ा कष्ट पाता है। छह–छह माह तक वह बिस्तर पर पडे रहता है। यह कीड़ा गुडी बनकर रहता है और जरा सा मुह निकालता है।

यह बीमारी गदा पानी पीने से पानी द्वारा कीटाणु शरीर के भीतर चले जाने से होती है। सरकार ने नारु उन्मूलन की बड़ी योजना बनाई। इसके लिए लाखो रुपया खर्च कर दिया। घर–घर पानी छानने का कपड़ा (गरना) दिया गया। छलनिया बाटी गयीं। जिन बावड़ियो और कुओ से पानी पिया जाता उनकी सफाई की गयी। कई बावड़िया तो सदैव के लिये पूर दी गयीं। जब लोगो को यह समझ आई कि पानी छानकर पीने से यह बीमारी नहीं होती है तो सबने यही कार्य शुरु किया। आज इस क्षेत्र में नारु का कोई रोगी नहीं है। जैनियो में तो यह कहावत ही है–पाणी पीजे छाणने आर सग्गो कीजे जाणनै। अपने बचपन मे मैंने देखा कहीं भी बाहर कोई भी जैनी जाता लोटा डोर साथ रखता। जहा भी उसे प्यास लगती कुए से पानी निकाल लोटे के रूमाल या कपड़ा लगाकर ही वह पानी पीता।

प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप मे जहा भी जैनियों की बस्ती है उनके साथ रहने वाली जैनेतर जातिया भी जैनियों के देखादेख पानी छानकर ही पीती हैं। महिलायें जो कुए-बावड़ी से पानी भरकर लाती हैं अपने साथ कपड़े का गरना ले जाती हैं। उससे पानी छानती है और उसी को बट देकर घूमली के रुप में काम में लेती है।

आदिवासी भीलो में एक बड़ा ही आनुष्ठानिक नृत्य–नाटय प्रचलित है। जिसे गवरी नाम से जाना जाता है। यह एक ऐसा अनुरजनकारी विविध स्वाग स्वरुपो का रूप है जो भीली जीवन के सामाजिक सरोकारो का सागोपाग दर्शन देता है। शिव-भस्मासुर का इसके मूल में जो कथा प्रसग है वह पुराणों में भी मिलता है। यो शिव महादेव भीलों का आदिदेव है और पार्वती भीलों की बहिन बेटी भी है। भाद्र माह मे यह पार्वती मृत्युलोक में आती है अपने पीहर और जहा–जहा भील बस्ती है वहा–वहा गवरी के बहाने खेलती–रमती सबसे मिलती है।

गवरी मे यह पावती राई के नाम से मुख्य नायिका है। शिवजी नायक हैं जो बूड़िया देव हैं। पूरे सवामाह यह गवरी गाव-गाव घूमती प्रदर्शनरत रहती है। इसका प्रदर्शन दिन को होता है। जहा भी खुली जगह चौराहा तिराहा
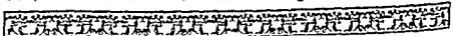
मदिरस्थल मिलता है गवरी प्रारम कर दी जाती है। दिन भर के प्रदर्शन मे कई स्वाग लीलाए अभिनीत होती हैं। लेकिन जो भील अभिनेता हैं वे पूर्ण सयमी और जैनत्व को आत्मसात किये रहते हैं। यथा –

(अ) पावो मे जूते नहीं पहनते हैं।
(आ) नहाते नहीं है।
(इ) एक समय भोजन करते हैं।
(ई) हरी सब्जी का त्याग रखते हैं।
(उ) शराब नहीं पीते हैं।
(ऊ) मास भक्षण नहीं करते हैं।
(ए) सयम एव आत्मानुशासन का जीवन जीते हैं।
(ऐ) आगन पर सोते हैं।
(ओ) ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।
(औ) अपरिग्रही बने रहते हैं।
(अ) सत्य एव अहिंसा का अनुगमन करते हैं।
(अ) जीवन शुद्धि के लिये मन–वचन–काय शुद्ध रखते हैं।

मैं समझता हूँ, गवरी के दिनो के ये सारे नियमाचार जैन सिद्धातो के अनुकूल हैं। गवरी के आखिरी दिन जो समापन के रुप मे वलावण होता है वह धरम बडा ही भावनापरक आत्मकरुणा से ओतप्रोत होता है जब गवरी में रमे भाई के लिये बहिन पूरी पोशाक–पहरावणी लाती है। घर ले जाने से पूर्व आरती करती है। उसका मगलाचार कर उसे बधाती है बधावा गाती है। यह ठीक उसी प्रकार हर्षाचार का प्रसग है जैसे कोई तीर्थयात्रा से लौटता है और मगल विधि-विधान द्वारा पुन अपने गृह में प्रवेश करता है।

गवरी का भागीदारा तन की ही पवित्रता नहीं मन को भी पवित्र करता है। इसमें रमण करने वाला आचार्य तुलसी के 'सयम खलु जीवनम्" तथा 'निज पर शासन फिर अनुशासन आदर्श को मूर्तिधत करता है। ये आदर्श वाक्य कोई सप्रदाय विशेष के प्रतीक नहीं हैं। जैनत्व के प्रतिबोधक हैं। 'परस्परोपग्रहो जीवानाम् का सूत्र महावीर ने दिया है जो अखिल मानवता के लिये हैं। पूरे विश्व-मानव समूह के लिये है। गवरी का यह समय तपोधनी बनने का समय है। भीलों को कुछ ज्ञात नहीं कि वे ये सब नियम आचार विचार क्यों ग्रहण किये हुए हैं ? इससे उन्हें क्या फल मिलने वाला है ? वे तो बस इतना ही जानते-मानते हैं कि यह देवी गवरज्या के प्रति पवित्र भावना और श्रद्धा का

प्रसाद है। यह कम अचरज भरी बात नहीं है कि वे भील जो अशिक्षित असस्कारी और असभ्य कहे गए उनम यदि जैनत्व के दो उदात्त भाव और आदर्श कल्प हैं तो निश्चय ही वे वरेण्य विभूति हैं।

इधर आदिवासियों के गावो में भ्रमण करते मैंने देखा कि सैंकड़ों आदिवासियों पर गोविंद गुरु का प्रभाव है। गोविंद गुरु ने आदिवासियों में सामाजिक एव राष्ट्रीय चेतना फूकने का बड़ा भरसक कार्य किया। आदिवासी इसी कारण इनके भगत बन गये। भगत बने ही नहीं भगत नाम से एक नया पथ ही चल पडा। इस भगत पथ के नियम जिनका आदिवासी कड़ाई से पालन करते हैं जैनत्व के सिद्धातों से ही प्रतिपादित हुए लगते हैं। यथा –

(अ) शराब–मास का परित्याग।
(आ) चारी डकैती लूटपाट का बहिष्कार।
(इ) झगडे टटो से दूर रहो ताकि अदालत की शरण नहीं लेनी पड़े।
(ई) यदि कोई झगड़ा हा भी तो उसे गाव की पचायत में निपटाओ।
(उ) न किसी से बगार लो न दो।
(ऊ) अन्याय मत सहो। उसका बहादुरी के साथ मुकाबला करो।
(ए) देश से बाहर बनी विदेशी वस्तु का उपयोग न करो।

जैन सत स्थायी रुप से किसी स्थान को अपना वास नहीं बनाते। वे निरतर पैदल ही परिभ्रमण करते रहते हैं और ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए जन–जन को अच्छा जीवन ईमानदारी का सत्य का अहिंसा का भाई–चारे का पवित्रता का जीने का उपदेश होते हैं। किसी व्यक्ति स्थान वस्तु के प्रति वे तनिक भी मोह नहीं पालते। अपने पास कुछ नहीं रखते। जैसा जो जहा मिला सयमपूर्वक खा लिया और अपनी तपस्या आराधना मे लीन रहते हैं।

जाहिर है ऐसे सतों के साधुओं के सपर्क में कई लोग आते हैं। उनमे सामान्य से सामान्य और विशिष्ट से विशिष्ट लोग भी होते हैं। राज पुरुष श्रेष्ठिजन और अकिंचन सबसे उनके सवाद वार्तालाप विचार–विमर्श होते हैं। तब स्वाभाविक है उनके उपदेशों का वाणी का विचारो का प्रभाव भी पड़ता ही है। यह प्रभाव धीरे–धीरे गहन से गहनतर होता हुआ व्यापक रुप लेता है और विभिन्न समाजो सगठनों समूहा द्वारा स्वीकार कर जीवन का धर्म का अनुष्ठान का एक आवश्यक अग बन जाता है। जब इसका एक नैरन्तर्य रुप स्वीकार कर लिया जाता है तब यही परम्परा के रुप में पुष्ट हुआ फलित बना मिलता है।
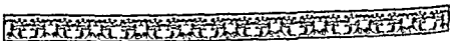
आदिवासियो की ही बात क्यो अन्य जातिया मे भी यह प्रभाव बडे व्यापक और गहरे रुप मे दिखाई देगा। उदयपुर मे लकडी के खिलौने के अध्ययन के दौरान जब मैंने खिलौने बनाने वाले खैरादिया से आजादी से पूर्व के बनने वाले खिलौनो की जानकारी चाही तो वे मुझे एक ९३ वर्षीय बुढिया के पास ले गये जो अब भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार खिलौनो को रग देने मे श्रमनिष्ठ बनी रहती है। उस बुढिया ने बातचीत के दौरान बताया कि लगभग पचास के करीब ऐसे विविध काष्ठफलक हैं जो अब लुप्त हा गए हैं। उनका चलन आजादी पूर्व था।

उसने बताया कि उनमे से एक टेबल लैंप का ऐसा स्टेंड बनाया जाता था जिस पर जैन साधु की तस्वीर बनती थी। मुह पर मुहपत्ती साथ मे ओघा हाथ मे सूत्र का पन्ना उपदेश देते हुए की मुद्रा। उस बुढ़िया ने बताया कि जब वह जैन साधु के सपर्क मे आई तो अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति के फलस्वरुप यह चित्र बनाना शुरु किया तब उसी की देखादेखी अन्य खैरादियो ने भी वह चित्र बनाना प्रारभ कर दिया।

ऐसे कई लोग कलाधर्मी जातिया मेरे सपर्क मे आई जिन पर जैन साधुओ का बड़ा असर पड़ा। उनके द्वारा दिलाये शराब नहीं पीने मास नहीं खाने शिकार नहीं करने के सौगन कई लोगों ने लिये जिनकी वे तादिन तक पालना करते रहे। पाप–पुण्य धर्म–कर्म अच्छा–बुरा स्वर्ग–नर्क जैसी शब्दावली और उसकी जैन अर्थावली से ये लोग भली भाति परिचित लगे।

आज जबकि सब ओर यह कहा जाता रहा है कि जैनियो की युवा पीढी ही जैनत्व से भटकती जा रही है तब यह आवश्यक हो गया है कि हम उन जैनेतर जातियो की शोध बोधात्मक स्थितियो का आकलन कर उन्हे प्रचारित करें ताकि जैन युवाओ को यह एहसास हो कि वे स्वय कहा हैं ? इससे उन्हे अपने आत्मचितन का अवसर स्वत हाथ लगेगा और वे स्वत ही सही मार्ग को तलाशते विवेकवान जैनत्व के पुजारी बनने का गौरव पायेंगे।

–३५२ श्रीकृष्णपुरा उदयपुर
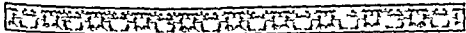
समता पारिवारिक परिप्रेक्ष्य मे

—इन्दरचन्द बैद—

मनुष्य जीवन के उद्देश्यो मे प्रमुख उद्देश्य मानसिक सुख—शान्ति की प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर चलता है। इस लक्ष्य के शुभारभ की प्रथम पाठशाला परिवार है। बाहरी धन यश और कीर्ति चाहे कितनी ही प्राप्त हो जाय पर परिवार मे आपसी द्वेष क्लेश व्याप्त है तो वह कभी भी सुख—शान्ति की अनुभूति नहीं कर सकता।

मनुष्य पशुओं से भिन्न इसी कारण है क्योकि वह अपने परिवार के सदस्यो के प्रति प्रेम सहानुभूति त्याग दया आदि के भाव रखता है। ऐसा वह इसलिये कर पाता है क्योंकि वह बुद्धि हृदय और आत्मा से प्रेरित नियत्रित तथा निर्देशित होता है। बुद्धि उसे बताती है कि सभी प्राणी उसी के सामने दुख पीडा हर्ष आदि का अनुभव करते हैं तथा सभी सुखी रहना चाहते हैं- 'सव्वे पाणा पियाउआ सुहसाया दुक्खपडिकूला (भगवान महावीर)। हृदय उसमें इस समझ के उपयुक्त भावनाए उत्पन्न करता है तथा आत्मा उसे सभी प्राणियों के प्रति ऐसी ही भावनाए रखने तथा उनके अनुसार आचरण करने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार आत्मवत् सर्वभूतेषु का उत्पन्न हुआ यह विचार उस चिन्तन का मूल है जिसे आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन के नाम से उद्बोधित किया।

समता चिन्तन सम्पूर्ण दर्शन है और जीवन के अस्तित्व की सुरक्षा की भावना से सम्पृक्त होने के कारण चिन्तन का सर्वस्व भी है। इस चिन्तन की पूर्णता तक पहुचने के लिये एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अध्ययन अपेक्षित है। यह ऐसा पाठयक्रम है जिसका अध्ययन जीवन भर चलता है और जब तक यह चलता रहता है तब तक मनुष्यता के गुणो की रक्षा भी होती रहती है और चूकि परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है इसलिये इसका अध्ययन परिवार की पाठशाला से ही प्रारभ होना चाहिये।

यदि हम विचार करें कि परिवार कैसी इकाई है तो यह स्वत ही स्पष्ट हो जायेगा कि परिवार वह इकाई है जिसके सभी सदस्य एक दूसरे के प्रति प्रेम त्याग और अपनत्व का भाव रखते हैं। चिन्ता यह होती है कि परिवार के किसी भी सदस्य को किचित मात्र दुख या कष्ट न हो चाहे मैं कितना ही कष्ट पाऊँ मेरे माता पिता भाई-बहिन आदि को सुख होना चाहिये। परिवार की जो

एक प्रमुख विशेषता समाज शास्त्री बताते हैं वह सदस्यो मे असीमित उत्तरदायित्व की भावना का होना है अर्थात् परिवार एकमात्र वह स्थान है जहा व्यक्ति बड़े से बडा त्याग करने मे भी सकोच नहीं करता है व्यक्ति अपनी कर्त्तव्य–भावना तथा प्रयत्नो से ऐसा स्थान बना लेता है जहा से वैर और सघर्ष की भावनाए समाप्त हो गई होती हैं।

इस प्रकार यदि गहराई से देखें तो यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि परिवार मे समता की अवधारणा किन्हीं भौतिक गुणो तत्त्वो अथवा विचारा पर आधारित नहीं होती वह स्वत स्फूर्त होती है। जब कोई माँ अपनी सन्तान को बचाने के लिये कोई भाई अपने भाई की रक्षा के लिये कोई पुत्र अपने पिता-माता की चिन्ता से किसी जोखिम भरे अथवा कठिन कार्य को सम्पन्न करने मे प्रवृत्त हो जाता है तब वह किसी प्रकार के सोच-विचार के उपरान्त वैसा करने के निर्णय पर नहीं पहुचा होता है वह तो अनायास ही वैसा कर गया होता है यह वैसी ही सहज प्रतिक्रिया होती है जैसी आँखों के बन्द हो जाने और सिर के दुबक जाने की जब कोई वस्तु तीव्रता से आँखों की ओर आती दिखाई देती है। यहाँ तर्क का नहीं भावना का महत्त्व होता है। इस स्थिति को हम भले ही पारिवारिक प्रेम कह ले परन्तु वह उस चिन्तन की सहज प्रतिक्रिया होती है जो परिवारजन के दु ख-सुख को अपना दु ख-सुख समझता है–ऐसा समझना ही समता-दृष्टि का मूल है। जब यही दृष्टि विकसित होकर सर्वव्यापिनी बन जाती है तब वह समता दर्शन बन जाती है जिसका आदर्श होता है– सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु ख भाग्भवेत्। ऐसी ही दृष्टि वाले को गीता मे समदर्शी कहा गया है–

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैवश्वपाकेच पण्डिता समदर्शन।।

यह समदर्शिता छोटे–बडे अज्ञ–ज्ञानी दुर्बल–सबल अकिंचन–समृद्ध जैसे किसी भी विचार से नियत्रित नहीं होती क्योंकि उसका उद्देश्य सर्व कल्याण होता है। यह सर्व–कल्याण भी इसलिये हैं क्योकि बिना इसके अन्य का कल्याण नहीं हो सकता। परिवार का सघटन सुरक्षा समृद्धि शान्ति सुख एव सन्तोष इसी भावना पर निर्भर करता है। जैसे शरीर के किसी भी अग की पीड़ा सम्पूर्ण शरीर को व्यथित कर देती है उसी प्रकार परिवार के किसी भी सदस्य का दु ख सम्पूर्ण परिवार को चिन्ताग्रस्त एव व्यग्र बना देता है।

यह स्थिति परिवार के सदस्या के सदर्भ मे जिन कारणों से सत्य सिद्ध होती है उनमे प्रमुख है परिवार का यह ढाचा उसकी वह व्यवस्था और उसका यह आधार जिसे न केवल समाजशास्त्र ने वरन नीति धर्म एव दर्शनशास्त्र ने भी स्वीकार किया है। इस आधार का निर्माण वे पारिवारिक सबध करते हैं जिनके पीछे वह भावना होती है जो समता का मूल है और जिसे महाभारत में धर्म के सार के रुप मे व्याख्यायित किया गया है–

श्रुयताम् धर्म सर्वस्व श्रुत्वाचैन धार्यताम।
आत्मना प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत।।

बात इस समता के मूल की है। हम जानते हैं कि कोई भी दो वस्तुए अथवा व्यक्ति कभी भी समान नहीं हो सकते। जब एक ही चित्र की कई प्रतियाँ अथवा एक ही मजमून की कई प्रतिलिपियो मे भी समानता नहीं हो सकती तब दो व्यक्तियो अथवा उनके सबधों मे समान होने की बात की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। परिवार में भी कोई दो सबधी अथवा सबध समान नहीं होते। पति पति रहता है पत्नी पत्नी पिता पिता रहता है तथा भाई भाई। दो सगे भाई अथवा बहिने भी छोटी बड़ी होती है। सास लाख कहे कि वह बहू को बेटी मानती है और बहू कहे कि वह सास को माँ तो भी न बहू बेटी हो सकती है न सास माँ फिर भी उनके बीच माँ-बेटी का आधार स्वीकृत है। इसके पीछे विचार यही है कि उनमे परस्पर प्रेम अपनत्व और सद्भाव बना रहे। व्यक्ति-परिवार मे भी जब इस तरह की भिन्नताएँ होती है तब सयुक्त परिवार अथवा सौतेले सबधो मे इनके न होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तब समता का आधार केवल एक दूसरे के प्रति समान प्रेम त्याग और सद्भाव ही रह जाता है। परिवार के परिप्रेक्ष्य मे समता का यही अर्थ है और इस अर्थ के पीछे छिपा भाव ही परिवार की स्थिति सुरक्षा सम्पन्नता तथा उसमे सुख शान्ति और सन्तोष की गारण्टी होती है। रामचरित्र मानस में राम--सीता के प्रति लक्ष्मण के व्यवहार के सबध म तुलसी कहते हैं–

सेवहिं लखन सीय रघुबीरहिं। जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं।।

यह भावना-प्रसूत आचरण है जो राम सीता का उनके प्रति ऐसे ही समान प्रेम-भाव का परिणाम है। यही नहीं चित्रकूट प्रसग में उन्हाने राम के मुख से भी भरत के प्रति अटूट स्नेह एव विश्वास से सपृक्त उद्गार व्यक्त करवाये हैं –
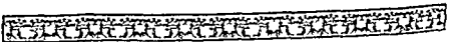
भरतहिं होड न राजमद विधि हरि हर पद पाय।
कवहुँ कि काँनी सी करनि छीटसिधु बिलगाय।।

राम भारतीय सस्कृति के आदर्श पुरुष हैं और राम का परिवार पारिवारिक मर्यादाओं का आदर्श प्रस्तुत करता है। राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न कौशल्या और सुमित्रा यदि सवधो की परिपालना के कारण पारिवारिक व्यवस्था और अनुशासन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं तो राजा दशरथ और कैकेई का कपट उस स्थिति के प्रमाण भी प्रस्तुत करता है जिसके कारण परिवार की सुख-शान्ति और व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो सकती है। राम की कथा ही नहीं भारतीय सस्कृति के आदर्श जनो की कथाए परिवार-व्यवस्था के जिस स्वरूप का उद्घाटन करती है वह भावनात्मक समता की आधार-सामग्री पर निर्मित होता है।

परिवार की ऐसी आदर्श व्यवस्था किसी थोपे हुए चिन्तन अथवा विचारित दर्शन पर आधारित न होकर उस आवश्यकता पर आधारित होती है जिसके कारण ही परिवार-व्यवस्था का जन्म हुआ जिसके कारण वह टिकी हुई है और जिसके कारण चिर सचालित रहेगी।

सत्य तो यह है कि समाज-व्यवस्था का आधार नींव अथवा धुरी परिवार ही है वही मानव की समस्त सामाजिक सस्थाओ की आधारभूत इकाई भी है। निश्चय ही इसका जन्म मूलत शारीरिक एव भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हुआ था परन्तु इसके कारण ही यौन-सबधों एव सन्तानोत्पति के कार्यों के नियमन एव उन्हे मान्यता प्रदान करने की वह स्थिति भी बनी जिसने उच्छृखलता वासना मूलक अरक्षित बर्बर एव पशु-जीवन से मनुष्य को मुक्ति दिलाई। परिवार भावनात्मक घनिष्ठता का जो वातावरण प्रदान करता है वह बच्चे के समुचित लालन-पालन समाजीकरण और शिक्षण में तो योग देता ही है–वश परम्परा को जीवित रख मानव-सृष्टि की निरतरता मे भी योग देता है। यही नहीं परिवार अपने सदस्यों की सामाजिक मनोवैज्ञानिक आर्थिक धार्मिक आदि आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है और अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था द्वारा सस्कृति के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है परिणामस्वरूप हम जातियों के सास्कृतिक गौरव की बात करने लगते हैं। इस प्रकार सस्कृति और सभ्यता का विकास जिन कारणो से सभव होता है वे कारण यही समाज प्रस्तुत करता है जिसकी परिवार-व्यवस्था सुदृढ स्वस्थ एव सतुलित होती है। यदि हम ससार के विभिन्न देशो के ऐतिहासिक स्वर्णयुग पर दृष्टिपात कर तो हम पायेंगे कि वे युग वैसे ही काल थे जिनमे स्वस्थ पारिवारिक जीवन-व्यवस्था ने व्यवस्थित समाज-निर्माण मे योग देकर ऐसी ही स्थितियों का निर्माण किया था
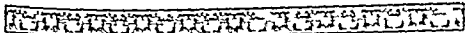
जिनमे उपलब्ध शाति सन्तोष सुरक्षा एव सुख की मानसिकता ने कला संस्कृति दर्शन विज्ञान आदि के विकास के लिये उपयुक्त वातावरण निर्मित किया था–भारतीय इतिहास का गुप्तकाल इसका प्रमाण प्रस्तुत करता है।

जब भावनात्मक समता-भाव पर सकट आता है अथवा किन्हीं कारणों से वह नष्ट होता है तब परिवार ही नहीं टूटते व्यक्ति के सुख शाति सन्तोष ओर समृद्धि की स्थितिया भी प्रभावित होती हैं और दुर्व्यवस्था अराजकता अविश्वास अशाति द्रोह वैर असुरक्षा आदि का ऐसा सामाजिक वातावरण भी बन जाता है जिसमे सास्कृतिक मूल्यो का भीषण रुप से पतन होता है परिणामस्वरुप व्यवस्था की वे नीवे हिल जाती है जिन पर सभ्यता का भव्य भवन निर्मित होता है। वर्तमान जीवन की स्थितिया ऐसी ही अव्यवस्था का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। पश्चिमी देशो में जहा उन्मुक्त जीवनचर्या ने समतामूलक पारिवारिक आधार को नष्ट कर डाला है वहा तलाक आत्महत्याओं हिंसात्मक घटनाओ स्वपराचार असुरक्षा अशान्ति अतृप्ति आदि का जैसा वातावरण निर्मित हुआ है वह भारतवर्ष जैसे सास्कृतिक सम्पदा से सम्पन्न देश के लिये आँख खोल देने वाला होना चाहिये। भारत मे बढ़ते कुव्यसन अपराध तथा अनैतिक जीवनचर्या के लिये हमे उसी दृष्टि को उत्तरदायी समझना चाहिये जो पश्चिम की भौतिकवादी–उपभौतिकवादी चिन्तन से प्रभावित है। सर्वाधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि समाजवाद मानववाद प्रजातत्र तथा व्यक्ति के अधिकार एव उसके सम्मान की रक्षा की आवश्यकता का ढिढोरा पीटने वाली आज की सभ्यता मे मनुष्य सर्वाधिक त्रस्त हुआ है। यह मानव समाज के साथ घटित होने वाली भीषणतम दुर्घटना है तथा पारिवारिक जीवन के आधार, परिवार के सघटन परिवार के सदस्यो के पारस्परिक स्नेह विश्वास सद्भाव तथा समभाव के नष्ट हो जाने का परिणाम है। जब भाई–भाई के सबध समभाव पर नहीं स्वार्थ पर आधारित होगे पति-पत्नी असमान अधिकारों के लिये लड़ते-झगड़ते रहेगे माताएँ मातृत्व की भावना त्यागकर विलासी मानसिकता से ग्रस्त हो जायेंगी परिवार के सदस्य व्यक्तिगत हितो के पीछे पारिवारिक हितों की बलि देने लगेगे और अधिकाधिक भोग के लिये व्यक्ति दीवाना हो जायेगा तब अपराध व्यसन अनैतिकता भ्रूण हत्याओं तलाकों अपराधी वृत्तियों और पारिवारिक विघटन का जैसा माहौल बनेगा उसमें व्यक्ति के सुख शाति और सन्ताप की वे सभी स्थितिया समाप्त हो जायेंगी जिन्हें परिवार ही सुनिश्चित एव सुरक्षित कर सकता है। परिवार के सदस्यों का आत्म-विनाश के ऐसे मार्ग पर चल पडना मानव सभ्यता ही नहीं मानव जीवन के विनाश की स्थितिया भी
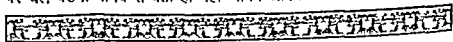
निर्मित कर सकता है जैसी उसने कर भी दी है। ऐसी स्थितियो से रक्षा का एकमात्र मार्ग है–सुसघटित परिवार–व्यवस्था क्योंकि सद्भाव और समभाव से व्यक्तियों को जोड़े रखकर वह न केवल वैयक्तिक कल्याण का मार्ग ही नहीं वरन् उसके माध्यम से समाज के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करती है। और जब समाज कल्याण-पथ पर अग्रसर होता है तभी सभ्यता और सस्कृति का विकास होात है और मानव समाज अपने लिये स्वर्णयुग का निर्माण करता है। निश्चय ही परिवार व्यवस्था सघटना की दृष्टि से आज परिस्थितिया विकट एव विषम हैं तथापि उनके व्यक्ति-विरोधी होने तथा उनके सुख शाति सतोष एव प्रगति की स्थितियों के प्रतिकूल होने के कारण उनके बदलने की उत्कट सभावनाए भी हैं मनुष्य परिवार के बिना रह नहीं सकता उसकी यह भावनात्मक आवश्यकता परिवार व्यवस्था की सुरक्षा एव चिरन्तनता के प्रति आश्वस्त करती है। परिवार के स्वरुप व्यवस्था एव सघटना के रूपो में निश्चय ही परिवर्तन हुए हैं जो परिस्थितियो की आवश्यकता को देखते हुए बहुत अस्वाभाविक भी नहीं कहे जा सकते परन्तु वे परिवार के उस शाश्वत आधार को नष्ट नहीं कर पाये हैं जो मानव के रुप मे उसके अस्तित्व का आधार है और इस आधार की ईंटें समता के विचार से परस्पर जुड़ी हुई हैं। यह परिवार-भाव ही उस आदर्श का जन्मदाता बना है जो इस विस्तीर्ण धरा पर निवास करने वाले प्राणियो को एक विशाल परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रुप मे देखने की कामना करता है। समता चिन्तन का यह विस्तार परिवार-भावना के सर्वकल्याणकारी रूप की ही प्रकारान्तर से पुष्टि करता है।

–भीलवाड़ा

☐

बाहरी दृष्टि से तो हम आज स्वतत्र हैं पर मानसिक दृष्टि से देखते हैं तो मानव आज भी परतन्त्र बना हुआ है। यदि हम उस समतादर्शन की दृष्टि से अपने जीवन का अवलोकन करें तो मानसिक परतन्त्रता से मुक्त हो सकते हैं।

–आचार्य श्री नानेश
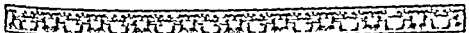
आदर्श शिक्षा

–जानकी नारायण श्रीमाली–

(बोहरा दम्पति को शिक्षा से अगाध लगाव था। अपने ग्राम में विद्यालय स्थापित करने के साथ ही धर्मपाल क्षेत्रो के सैकड़ों विद्यालयों की स्थापना और विस्तार में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। रतलाम में स्थित प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल छात्रावास विद्यार्थियों के विकास हेतु उनके अथाह उत्साह का प्रतीक है। अत इस स्मृति अंक में यह शिक्षा आलेख उन्हें सच्ची श्रद्धाजलि है।–स)

शिक्षा का नाम आते ही आधुनिक युग मे जो दूसरा नाम स्वत मन पटल पर उत्कीर्ण हो जाता है वह है विद्यालय। आधुनिक युग मे प्रबुद्ध जनों में शिक्षा और विद्यालय पर्यायवाची बनते जा रहे हैं। किन्तु जन सामान्य में आज भी शिक्षा और विद्यालय दो भिन्न अवधारणाए हैं। भारतीय लोक जीवन आज भी सदाचारी विनम्र और सहज बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति को शिक्षित सस्कारित मानता है यहा केवल अक्षर बोध या विद्यालयी शिक्षा को ही शिक्षा का सब कुछ आज भी स्वीकार नहीं किया जाता। लोक जीवन की यह अवधारणा प्राचीन शैक्षिक चिन्तन पर आधारित है। अत आइये ! प्राचीन और अर्वाचीन शैक्षिक चिन्तन पर पहले पृथक-पृथक विचार करके फिर शिक्षा पर सर्वांगीण विचार और निर्णय के स्तर की ओर बढ़ें।

प्राचीन शैक्षिक चिन्तन

वैदिक दर्शन में शिक्षा वैदिक वागमय में शिक्षा पर गहन चिन्तन उपलब्ध है। तैत्तिरीय उपनिषद में 'सत्य वद धर्मचर स्वाध्यायान्मा प्रमद' का उपदेश दिया गया है अर्थात् सत्य बोलना धर्म का आचरण करना और स्वाध्याय मे कभी प्रमाद–आलस्य–नहीं करना ही महत्त्वपूर्ण बताया गया है। इसी उपनिषद में मातृदेयोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव तथा अतिथिदेवोभव कह कर आचार–धर्म को दिशानिर्देश किया गया है।

एतरेय ब्राह्मण में अपेक्षा की गई है कि 'शिष्य को सत्यवादी और ईमानदार होना चाहिये। गोपथ ब्राह्मण म विद्यार्थी के ब्रह्मचारी होने की अपेक्षा की गई है। इस अपेक्षा से विद्याध्ययन की आयु सामान्यत २५ वर्ष निर्धारित हुई है। मनु ने विद्यार्थी से आत्म विद्या' प्राप्ति की अपेक्षा की है। उनके
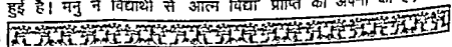
मतानुसार विद्यार्थी को सत्य और यथार्थ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। विद्या के लिए तपोवन और गुरुकुल को सर्वत्रविद्या का उपयुक्त स्थान बताया गया है।

वैदिक शिक्षा सम्पूर्ण विश्व मे उत्तम विचारो की सवाहक और विश्व कल्याण की कामना से ओत-प्रोत रही है। इसीलिये वह कामना करती है आह्वान करती है कि आनो भद्रा' कृतवोयान्तु विश्वत ।

जैनदर्शन में शिक्षा

स्थानाग सूत्र म शिक्षा के चरणों का वायणा (वाचना) पुच्छणा (पूछना) परियट्टणा (आवृत्ति करना दुहराना) तथा अणुप्पेहा (पढ़े हुए पर विचार करना चिन्तन करना) के रूप मे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण विवेचन किया गया है। ये चरण आज भी निर्विवाद रूप म शिक्षा मे महत्त्व के साथ प्रतिष्ठित है।

जैनदर्शन मे शिक्षा को सम्यकदर्शन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा गया है– 'सम्यग्देशी न करेई पाव' वहा शिक्षा को गुरु तथा धर्म के स्वरूप का दिग्दर्शन कराने मे उपयोगी स्वीकार किया गया है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने शिक्षा उद्देश्य निरूपित करते हुए कहा है कि आत्मा की ओर उन्मुख करने वाली शिक्षा ही उपादेय है।

इस प्रकार जैनदर्शन मे शिक्षा क भौतिक स्वरूप और उसके आत्मिक धार्मिक महत्त्व पर एक साथ विचार किया गया है।

स्त्री शिक्षा– प्राचीन काल मे भी स्त्रियो की शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया जाता है। पाणिनी ने 'छात्री शालाओ यानी बालिका पाठशालाओ का उल्लेख किया है। भवभूति ने अपने 'मालती–माधव' मे जो कि आठवीं शती की रचना है सहशिक्षा का उल्लेख किया है जो कि युग साक्षी से एक अतिमहत्त्वपूर्ण बात है। जैन ग्रन्थ 'समराइच्च कहामे' रत्नावली और कुसुमावली तथा परिवार की शिक्षा के निमित्त से स्त्रीशिक्षा की दशा पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

आधुनिक युग की शिक्षा

हमने देखा कि प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था में आचार एव लोक जीवन में आचरण शिक्षा की कसौटी थे किन्तु आधुनिक युग में डिग्री यानी स्तरीय उपाधि ही शिक्षा की कसौटी बन गई है। अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व लगभग नामशेष हो गया है। मात्र औपचारिक स्कूली शिक्षा ही सब कुछ मानी जाने लगी है। परिणामत स्कूलों की बाढ़ आ गई है। प्रारम्भ मे सरकारा ने
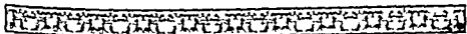
सार्वजनिक शिक्षा का दायित्व ग्रहण किया किन्तु बढ़ती जनसख्या के दबाव के अनुरूप शिक्षा के आधारभूत ढाचे का द्रुत विकास सभव नहीं हो पाया। फलत निजी शिक्षण सस्थाओ की बाढ़ ने शिक्षा जगत को आप्लावित कर दिया है। प्रारभ मे राष्ट्रीय आदर्शो से ओत-प्रोत होकर निजी शिक्षण सस्थाओं की परम्परा प्रारभ हुई यथा डी ए वी स्कूले रविन्द्रनाथ टैगोर का शान्ति निकेतन रामकृष्ण मिसन के विद्यालय सामाजिक विद्यालयो ने शिक्षा जगत में चरित्र निर्माण के साथ ही साथ लौकिक शिक्षा के क्षेत्र में भी महान् योगदान दिया किन्तु निजी हितो ने शनै शनै शिक्षा को व्यवसाय में बदलना प्रारभ किया और इस क्षेत्र में बड़ी सफलता अर्जित की। आज औपचारिक शिक्षा को नैतिक शिक्षा और जीवन मूल्यो की तीव्र प्यास है किन्तु इस प्यास की पूर्ति का कोई उपाय नहीं दीख रहा है।

इस प्रकार आज का शैक्षिक परिदृश्य औपचारिक शिक्षा तत्र पर आधारित है। यद्यपि इस तत्र ने भी विश्व को बहुत कुछ दिया है किन्तु यह तत्र जीवन-मूल्यो के सृजन अभियान मे पिछड़ता जा रहा है।

समन्वय की आवश्यकता

आज समाज राष्ट्र और विश्व मे प्राचीन और अर्वाचीन शैक्षिक मूल्यों के समन्वय की तीव्र आकाक्षा करवटे ले रही है। शिक्षाविदों समाज के अग्रणी जनों सरकारो और विश्व जनमत को औपचारिक शिक्षा के दूषणों का निराकरण करके कदम उठाने चाहिये। आचार परमो धर्म का शखनाद करके औपचारिक शिक्षा तत्र को मूल्य आधारित बनाने और परिवार को शिशु की सचमुच प्रथम पाठशाला बनाने के दो उपायों से हम एक आदर्श शिक्षा तत्र प्राप्त करके समाज को राष्ट्र को विश्व को आदर्श शिक्षा व्यवस्था प्रदान कर सकते हैं। आइये ! इस दिशा मे हमारे लघु प्रयास प्रारभ करे।

—*महापुरी चौक बीकानेर*

□

जैन शास्त्र मे गुरु महत्ता

—डॉ प्रकाश लता—

तीर्थंकर के अभाव मे मुमुक्षु साधक के लिए गुरु का प्रमुख स्थान है। गुरु के प्रति विनय उसके जीवन–निर्माण का मूलाधार है। इसलिए शिष्य की प्रारंभिक भूमिका में ३ बाते आवश्यक बताई गई हैं –

१ गुरु की आज्ञा और निर्देश के अनुसार प्रवृत्ति करना।
२ गुरुजनो के सानिध्य मे रहकर उनकी सेवा शुश्रूषा करना।
३ गुरु की चेष्टा और आकृति को देखकर उनके मनोभावो को समझ लेना।

गुरु के द्वारा दी गई विधेयात्मक या निषेधात्मक आज्ञा वीतराग भगवान् द्वारा प्रतिपादित आगमो में विहित उत्सर्ग–अपवादमार्ग की अपेक्षा से होती है इसलिए शिष्य के लिए अत्यन्त हितकर होने से शिरोधार्य करके तदनुरूप आचरण करने के लिए उसे वचनबद्ध होना आवश्यक है। गुरु के निकट रहने से समय-समय पर उसे अनेक बातो का बोध हो जाता है तथा सेवा–शुश्रूषा से निर्जरा का परम लाभ भी होता है।

इसके विपरीत जो गुरु की आज्ञा के पालन और सेवा-शुश्रूषा से दूर भागता है और गुरु का मिथ्या आलोचक बनकर उनके विरुद्ध चलता है वह दुर्बोध सभी प्रकार के उत्तम लाभो से वचित रहता है।

गुरु के वचनों को सुने-अनसुने करने वाले गुरु के सदर्भ में यदा-कदा अटसट बोलने वाले तथा दु शील अनुशासनहीन शिष्य कोमल स्वभाव वाले शान्तिप्रिय गुरु को भी प्रचण्ड क्रोधी बना देते हैं जबकि गुरु के मनोऽनुकूल चलने वाले मृदुभाषी एव कार्यदक्ष अनुशासनप्रिय शिष्य तेज स्वभाव के क्रोधी गुरु को भी प्रसन्न कर लेते हैं।

किस प्रकार शान्त व सेवा शुश्रूषा करने वाले शिष्य ने क्रोधी गुरु को भी शान्त बना दिया व सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गया यह अग्रलिखित कथानक से स्पष्ट है –

एक समय की बात है। उज्जयिनी मे चण्डरुद्राचार्य अपनी साधु-मण्डली-सहित पधारे हुए थे। उनका स्वभाव क्रोधी बन गया था। अपनी इस आदत को सुधारने के लिये वे एकान्त मे स्वाध्याय ध्यान करने बैठ गए।
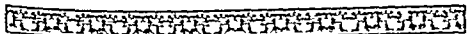
सयोगवश एक नव विवाहित श्रद्धालु श्रेष्ठीपुत्र अपनी मित्रमण्डली के साथ आचार्यश्री की सेवा मे पहुँची। मित्रमण्डली ने आचार्यश्री से कहा- 'गुरुदेव ! हम आपके लिए योग्य शिष्य को लेकर आए हैं। इनको ससार से विरक्ति हो चुकी है। आप इन्हें दीक्षा दीजिए हम सबकी आज्ञा है। बार-२ ऐसा कहने पर आचार्यश्री ने तत्काल ही श्रेष्ठीपुत्र के केशा का लोच करके उसे प्रव्रज्या दे दी।

श्रेष्ठीपुत्र अत्यन्त सरल शान्त और देव-गुरु धर्म क प्रति श्रद्धालु था। माता-पिता की आज्ञा के बिना केवल मित्रों के उपहास के कारण गुरुदेव द्वारा प्रव्रज्या देने के कारण मेरे माता-पिता गुरुदेव को कष्ट न दें इस विचार से उसने गुरुदेव से विहार करने का निवेदन किया। गुरुदेव का आवश्यक सामान तथा गुरुजी को अपनी पीठ पर लादकर नवदीक्षित शिष्य ने वहाँ से प्रस्थान किया। कुछ की दूर चले होंगे कि रात्रि का अधेरा हो गया। इससे नवदीक्षित मुनि के पैर ऊँचे-नीचे पड़ने लगे। इससे गुरुजी को धक्के लगते थे। बार-बार धक्का लगने से गुरु क्रोधाविष्ट होकर अपशब्दो की बौछार करते व रजोहरण की डण्डी से उसके मुँडे हुए सिर पर मारते। यह जरा भी उत्तेजित हुए बिना सौम्य शब्दों में गुरुजी से क्षमा माँगते हुए आत्मचिन्तन की गहराई मे डूब गया। इस प्रकार आत्मलोचना करते--करते नवदीक्षित मुनि को अपूर्व अध्यवसाय के कारण केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

आचार्य चण्डरुद्र नवदीक्षित मुनि की सरलता नम्रता सहिष्णुता और आज्ञाकारिता से अत्यन्त प्रभावित हुए।

शिष्य को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है ऐसा ज्ञात होने पर आचार्यश्री आश्चर्यचकित एव लज्जित होकर गहरे मथन में पड़ गये। इस प्रकार पश्चातापूर्वक चिन्तन-मनन करने से शान्तभाव से आत्म-निरीक्षण करने एव बार बार शिष्य से क्षमा माँगने से आचार्य चण्डरुद्र को भी केवलज्ञान हो गया।

इस प्रकार विनयशील शिष्य की मृदुता नम्रता सहिष्णुता और आज्ञाकारिता ने कठोर स्वभावी आचार्य का भी हृदय परिवर्तन करके उन्हें परमपद का अधिकारी बना दिया।

यह कथानक उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्याय 'विनय श्रुत की १३वीं गाथा पर आधारित है।
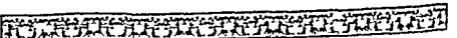
अणासवा थूलवया कुसीला मिउ पि चड पकरेति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया पसायए ते हु दुरासयपि।।

उपर्युक्त के विपरीत जो अविवेकी शिष्य आचार्य और उपाध्याय आदि उपकारी सन्तो की निन्दा अकीर्ति तथा अपमान करता है वह कृतघ्न पाप श्रमण कहलाता है।

स्थानाग सूत्र (७) से परिज्ञात होता है कि भगवान महावीर के गण मे इस प्रकार की व्यवस्था थी कि जो निर्ग्रन्थ श्रमण जिस गण मे दीक्षित होता वह आजीवन उसी गण मे रहता।

उत्तराध्ययन सूत्र के सत्रहवा अध्ययन 'पापश्रमणीय की १७वीं गाथा में बताया गया है कि जो अपने आचार्य (कलह करके या दोष लगाकर) को छोड़कर दूसरे धर्म-सम्प्रदायो परम्पराओ को स्वीकार कर लेता है जो गाणगणिक होता है वह निन्दनीय आचार वाला भिक्षु पाप श्रमण कहलाता है।

आयरिय परिच्चाई पर पाखण्ड सेवए।
गाणगणिए दुब्भूए पाय समणि त्ति वुच्चई।।

वर्तमान समय के लोकतान्त्रिक वातावरण मे दल–बदल प्रवृत्ति तथा अपने दल में फूट डालकर तथा दल के सदस्यो मे विरोधी विचारधारा का प्रसार करके उन्हे लेकर अपने स्वार्थ के लिये नये दल का गठन करने की जो मनोवृत्ति देखी जाती है वही मनोवृत्ति व आचरण सघ मे विभेद उत्पन्न कर सघ से पृथक होकर नये सघ का गठन करने वाले साधु-साध्वियों के सदर्भ मे देखी जा सकती है परन्तु हमे आश्चर्य इस बात का है कि लौकिक प्राणियो से भिन्न सयमी जीवन की आराधना करने वाले साधु इस तरह का आचरण कर रहे हैं। किस तरह ये अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर पायेगे ? वर्तमान समय में गुरु की उपेक्षा करके ससार परिमित करना असभव है।

—कोठारी भवन ६ भूपालपुरा उदयपुर (राज)

□

धर्म का मर्म

—उदय नागोरी—

'वत्थु सहाओ धम्मो' अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है धर्म की इस परिभाषा से प्रभु महावीर ने दर्शन धर्म व चिन्तन के क्षेत्र में नव आयाम प्रस्तुत किया। उन्होंने किसी सम्प्रदाय मत पथ का प्रचार न कर आत्म स्वभाव मे रमण करना ही धर्म बताया। वस्तुत धर्म की वर्तमान से परे भावी जीवन एव आगामी जन्म के लिए ही उपयोगिता नहीं तथा यह पारलौकिक तत्त्व मात्र नहीं वरन् इसका सम्बन्ध वर्तमान जीवन से है। मनुष्य ने अपने विवेक व अनुभव से धर्म का आविष्कार किया और मानवता के विकास का आधार धर्म ही रहा है अतः यह मानव से अलग नहीं है। धर्म तो मनुष्य के साथ रहने वाला व साथ चलने वाला अर्थात् सहचर है। जीवन से पृथक धर्म की कल्पना ही नहीं की जा सकती इसी दृष्टि से 'धारयते इति धर्म कथन द्वारा इसकी अद्वेतता सिद्ध की गई है।

धर्म एक सामाजिक आवश्यकता एव व्यक्तिगत अनिवार्यता है जो साधना व आचरण पक्षों मे विभाजित की गई है। साधना के द्वारा व्यक्ति अपनी सुप्त शक्तियों का जागरण कर स्वचेतना की अनुभूति करता है। इससे चित्त की वृत्तियों का नियत्रण होता है और जीवन में सयम सतोष अपरिग्रह आदि सद्वृत्तियों का विकास होता है। इस साधना की सफलता आचरण से प्रकट होती है और धर्माचरण ही वास्तविक धर्म है। आवश्यकता है कि धर्म प्रदर्शन, प्रतिष्ठा आडम्बर न बने वरन् प्राण रूप मे प्रतिष्ठित हो तथा हमारी दृष्टि अन्तर्मुखी बने।

धर्म के स्वरूप पर विचार करें तो इसके चार दृष्टिकोण स्पष्ट होते हैं— अतीन्द्रिय शक्तिमूलक आदेश मूलक ध्येय मूलक व आधार मूलक। आधारमूलक दृष्टि से नैतिकता विशेष महत्त्वपूर्ण है और इसका आधार समता है। नैतिकता के भी दो रूप हैं— बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी। इसका बाह्य रूप है— दूसरों को न सताना व्यवहार मे परस्पर ईमानदारी रखना आदि। आन्तरिक रूप में इसकी परिणति है— सर्व मैत्री भाव की जागृति और आत्म—अभ्युदय द्वारा मोक्ष प्राप्ति। मोक्ष का अर्थ है— आत्मा के अन्दर रहे हुए अनन्त ज्ञान अनन्त सुख तथा अनन्त वीर्य की अभिव्यक्ति। आत्मा के इसी शुद्ध रूप को उपनिषदों में सच्चिदानन्द

शब्द द्वारा प्रकट किया गया है। सत् का अर्थ है शक्ति चित्त का अर्थ है ज्ञान और आनन्द का अर्थ है सुख। इन तीनों की पूर्णता ही परमात्म पद है जिसकी उपलब्धि धर्म का चरम लक्ष्य है।

दशवैकालिक सूत्र म धर्म को उत्कृष्ट मगल मानते हुए प्रभु महावीर ने अहिंसा सयम तप के सन्दर्भ में 'धम्मो मगल मुक्किट्ठम्' कहा है। स्पष्ट है कि धर्म की मगलमयता को लक्ष्य मे रखकर ही इसे उत्कृष्ट बताया है क्योकि उत्कृष्ट धर्म वह है जो अपनी मागलिकता के लिए काल की सीमा को भी पार कर जाय। इस परिप्रेक्ष्य मे अपने स्व-भाव मे स्थित रहना ही धर्म का मर्म है। इसी आधार पर साधना ने बताया कि मनुष्य का वास्तविक स्वभाव चिरन्तर स्थायी व अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त करना है परन्तु विडम्बना है कि व्यक्ति आज स्वभाव के बजाय विभाव मे अधिक जीने लगा है और धर्म के नाम पर प्रदर्शन व साम्प्रदायिक उन्माद का जोर है।

वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारो से मानव वास्तविक व स्थाई सुख के स्थान पर सुखाभास व क्षणिक सुखो से दिग्भ्रान्त है। उसकी दृष्टि बहिर्मुखी है फलस्वरूप धर्म मनुष्यता का सहचर प्रतीत नहीं होता एतदर्थ आवश्यकता है कि हम बाहर नहीं भीतर की ओर उन्मुख हों और स्वय से जुड़ने का प्रयास करे। यह स्थिति धर्माचरण से ही सभव है और धर्माचरण का कोई निश्चित समय नहीं है। धर्म का आचरण तो अभी इसी क्षण करना अपेक्षित है क्योकि मानव जीवन का अस्तित्व कुश के अग्रभाग पर ठहरी हुई ओसबिन्दु के समान है जैसा कि उत्तराध्ययन सूत्र के 'द्रुम पत्रक' अध्ययन में कहा गया है–

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए थोव चिट्ठइ लम्बमाणए।
एव मणुयाण जीवय समय गोयम मा पमायए।।

धर्म के सम्यक आचरण हेतु इन्द्रियो की सजगता और पुष्टता आवश्यक है अत प्रभु महावीर का स्पष्ट निर्देश है कि जब तक वृद्धावस्था नहीं आती जब तक व्याधियो का जोर नहीं बढता व इन्द्रिया क्षीण नहीं होती तब तक विवेकी आत्मा को जो भी धर्माचरण करना है कर लेना चाहिए–

जरा जाव न पीडेइ वाही जाव न वड्ढई।
जाविंदिया न हायति ताव धम्म समायरे।। दशवै ८/३६

स्पष्ट है कि जो व्यक्ति स्व के वशीभूत है इन्द्रिय सयमी है व आत्मानुशासित है वही धर्म को धारण करने वाला है और धर्म का मर्म यही है कि हम स्व से जुड़े व स्वय को जाने।

–सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर।

जैन सस्कृति के मूल स्वर

–बसन्तीलाल लसोड–

जैन सस्कृति अपनी मौलिकता एव वैज्ञानिकता के कारण सारे विश्व की शाश्वत सस्कृति के रूप में अपनी अभिव्यक्ति दे रही है। यह सस्कृति सयम त्याग अहिंसा की भूमि पर अधिष्ठित है एव ज्ञान विज्ञान कला सभ्यता, सस्कृति जीवन पद्धति आदि महान् गुणो की सवाहक है। अनन्त आलोक पुञ्ज तीर्थंकर इसके सस्थापक हैं। वैदिक परम्परा मे जैसे चौबीस अवतारों का विशिष्ट उल्लख है बौद्ध परम्परा के अनुसार गौतम बुद्ध ने बोधि सत्व के रूप में पुन पुन जन्म लिया है। इसी प्रकार जैन सस्कृति में चौबीस तीर्थंकरों की परम्परा चली आ रही है। इसी क्रम मे वर्तमान चौबीसी में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव श्लाघ्य महापुरुष के रूप में सुविख्यात है। भागवत पुराण अग्नि पुराण वायु पुराण शिव पुराण ब्राह्मण पुराण प्रभास पुराण स्कन्ध पुराण नाग पुराण ऋग्वेद अथर्ववेद मनुस्मृति योग वशिष्ठ त्रिषष्ठीशलाका महापुरुष चरित्र आदि अनेक महाग्रथों म विविध रूपों से इनका उल्लेख है। यही ऋषभदेव मानवीय सस्कृति के आद्य सूत्रधार प्रथम समाज व्यवस्थापक प्रथम राजा प्रथम भिक्षाचर (सत मुनि) प्रथम केवली और प्रथम धर्म प्रवर्तक के रूप मे माने-जाने जाते हैं। वर्तमान जैन सस्कृति के आद्य प्रवर्तक यही हैं जिसे बीच के बाईस तीर्थंकरो के बाद इस चौबीसी के अतिम तीर्थंकर महावीर ने अपनी साधना तपस्या के बल पर लोकोतर स्थिति प्राप्त कर ससार के सामने रखा। इन्हीं वीतराग महावीर जिनका सदा ऊर्ध्वमुखी चिन्तन रहा है जिनके जीवन दर्शन में भोग को योग की ओर ले जाने की प्रवृत्ति रही है ऐसे महामानव की अमृतवाणी को आगमों के रूप मे पूज्य गणधरों ने प्रचारित किया और बाद में विराट कृतित्व एव उदात्त कर्तत्व के सूक्ष्म चिन्तक धैर्या गाम्भीर्य औदार्य तत्परा महामनीषी जैनाचार्यो ने अपने ज्ञान का उपयोग कर इसे आने वाली पीढ़ी के उपयोग एव आत्म कल्याण क लिए इसी साहित्य आगम रूपी कोष का लेखन पर सुरक्षित किया जिसका आज भी कुछ विशाल सग्रह जैसलमेर बीकानेर, पाटण बड़ौदा लिमडी खम्भात अहमदाबाद आदि नगरो में उपलब्ध है।

इन महान् ग्रथो में इतने गूढ विषया का प्रतिपादन है कि उनको "जिन खोजा तिन पाइया' के आधार पर अनेक विषयों में कुछ विषय अहिंसा

अनेकान्त अपरिग्रह आदि की सर्वहारा उपयोगिता जीव अजीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल प्राणविद्या आत्मविद्या चेतना उपयोग अवग्रह ईहा अनाय धारणा स्मृति सज्ञा चिन्ता अभिनिबोध मति कुति अवधि मन पर्याय केवलज्ञान लब्धि भावना नय नैगम सग्रह व्यवहार ऋजुसुत्र शब्द समभिरूढ एव भूत द्रव्य गुण पर्याय कर्म स्वरूप आश्रव बध सवर निर्जरा मोक्ष मोहमार्ग मोक्षमार्ग सम्यकज्ञान सम्यकदर्शन सम्यक चारित्र पच परमेष्ठी आदि अनेक गहन विषयो का विस्तृत वर्णन आचाराग जीवाभिगमा भगवती सूत्र आदि अनेक शास्त्रों मे विराट रूप से पाया जाता है। सार स्वरूप यही कहा जा सकता है कि जैन सस्कृति के इन ग्रथो मे अहिंसा की पराकाष्ठा अनेकान्तवाद जिसे स्याद्वाद भी कहते हैं की अमोघ विशिष्टता अपरिग्रह की व्यावहारिकता सूक्ष्माति सूक्ष्म कर्मपद्धति सूक्ष्म तप मीमासा नवतत्त्व का सुन्दर स्वरूप चार अनुयोग व चार निक्षेपो का अनुपम विवरण सप्तभगी और सप्तनय का विशिष्ट स्वरूप तप की अलौकिकता योग की अद्वितीय साधना महाव्रतो अणुव्रतो का सूक्ष्म रीति से पालन आदि का वैज्ञानिक दार्शनिक ऐसा उल्लेख है कि दातो तले उगली दबानी पड़ती है ऐसा दिव्य जनोपयोगी कोष अन्यत्र पाया जाना प्राय दुर्लभ है।

जैन सस्कृति मे पहला शब्द 'जैन' है। जो जिनेश्वर को मानते हैं जैन धर्म जैन दर्शन की उपासना करते हैं वे जैन कहलाते हैं। जिनेश्वर द्वारा कथित धर्म जैन धर्म कहलाता है और जो रागद्वेष आदि सभी अभ्यतर शत्रुओ पर विजय प्राप्त कर लेते हैं इन्द्रियों को जीत लेते हैं वे 'जिन' या जिनेश्वर कहलाते हैं। इन्हीं के द्वारा जो धर्म प्रचारित किया गया जो दार्शनिक मीमासा निरूपित की गई। आचार विचार नियम सिद्धान्त सस्कार आदि प्रतिपादित किए गए वही जैन सस्कृति के रूप मे सुविख्यात है। सस्कार शब्द सस्कृति से काफी साम्य रखता है। दूसरे शब्दो में सस्कार परिष्कृत करना मानव मस्तिष्क व चेष्टाओ को सुसस्कारित करना ही सस्कृति है।

सस्कृति भावनात्मक है अन्तर्मुखी है। बुद्धि और हृदय की तारतम्यता ही सस्कृति है। सस्कृति के इन्हीं सब रूपो को सजोकर आत्मा को आलोकित करने के लिए जिनेश्वर ने सस्कृति का जो मूल उद्देश्य स्थापित किया वह है "विविध प्रकार के मोहपाश को भग कर राग द्वेष और अज्ञान से मुक्त होकर आत्मानन्द मे विहार करते हुए परमात्म स्वरूप मे प्रतिष्ठित हो जाना ही जैन सस्कृति है। जैन सस्कृति सश्लेषात्मक है। विकासशील है। कहीं बिखराव नहीं ठहराव नहीं दुराव नहीं तप जनित योग कर्तव्य जनित अधिकार त्याग वृत्ति
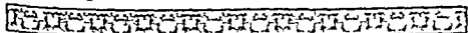
आत्मा के ऊर्ध्वमुखी उत्थान में रमण करना यही जैन सस्कृति का मूल स्वर है। मानव कल्याण और सच्चिदानन्द की खोज में सतत नियोजन ही इसकी दृष्टि है। दूसरे शब्दो में जैन सस्कृति का अर्थ है कर्म ध्यान और आदि का समन्वय। ज्ञान अर्जित कर्म करते करते भक्ति अर्थात् आस्था व शाति की उपलब्धि एव परमात्म स्वरूप में लीन हो जाना।

धर्म दर्शन और सस्कृति यह मानव जीवन की तीन विकास रेखाए हैं। ये तीनों परस्पर पूरक है। सस्कृति जब आचारोन्मुख होती है तब वह धर्म कहलाती है। उपवास अन्य व्रत नियम सामायिक प्रतिक्रमण आदि यह सब इसके मार्ग हैं और जब यह विचारोन्मुख होती है तब यह दर्शन कहलाती है। जिस प्रकार धर्म अधर्म अहिंसा अनेकान्त अपरिग्रह आदि जिनका शास्त्रों में विशद् वर्णन है। यानी सस्कृति का बाह्यरूप क्रियाकाण्ड आदि धर्म है और इसकी आतरिक रेखा यानी चिन्तन मनन ही दर्शन है अर्थात् धर्म व दर्शन का समन्वित रूप ही सस्कृति है जो एक अखण्ड तत्त्व है पर जब इसके पूर्व में इसके साथ कोई विशेषण जोड दिया जाता है तो यह विभाजित हो जाती है जैसे सस्कृति से पूर्व श्रमण ब्राह्मण आदि जोड दिया जावे तो वह श्रमण सस्कृति ब्राह्मण सस्कृति आदि के रूप मे अपनी अलग पहचान बना लेती है। अलग स्वरूप में विख्यात हो जाती है। श्रमण और ब्राह्मण सस्कृति दोनों भारत भूमि मे पली पली एक ही जलवायु मे पनपी। वैसे दोनो मे गुरु पद को महत्ता दी गई है पर दोनो की परम्परा आचार विचार नियम सिद्धान्त आदि में बहुत विभिन्नता है। चिन्तन मनन की पद्धति स्वरूप आदि अलग अलग हैं। श्रमण सस्कृति में भोग की। प्रधानता है जब कि ब्राह्मण सस्कृति में योग की श्रमण सस्कृति का मुख्य उद्देश्य रहा त्याग वैराग्य विरक्ति आध्यात्मिक सुख। आत्म कल्याण को प्राप्त कर मोक्ष सुख को प्राप्त करना जबकि ब्राह्मण सस्कृति का लक्ष्य रहा भोग सुख सुविधा प्राप्त करना। स्वर्ग प्राप्ति इसकी आखिरी मजिल रही। इस सस्कृति का मूल लक्ष्य कर्म योग पर अधिक आधारित रहा जब कि श्रमण सस्कृति का ज्ञान योग सन्यास पर अधिक केन्द्रित रहा। महावीर ने सन्यास को प्रधानता देते हुए गृहस्थ जीवन की अपेक्षा श्रमण जीवन को श्रेष्ठ मान कर श्रमण सस्कृति का पोषण किया। ब्राह्मण सस्कृति के विकास ने मीमासा दर्शन वेदान्त दर्शन वैशेषिक दर्शन न्याय दर्शन आदि को जन्म दिया जबकि श्रमण सस्कृति ने जैन दर्शन बौद्धदर्शन सॉख्य दर्शन योग दर्शन आजीवन दर्शन आदि को प्रेरणा दी।

मीमासा वेदान्त वैशेषिक न्याय साख्य योग आजीवक आदि दर्शनो के तो प्राय अब नाम व दर्शन मात्र ही रह गए हैं पर जैन दर्शन के साथ साथ बौद्ध दर्शन भी अपना अस्तित्व भली प्रकार सजोए हुए हैं। वैसे बौद्ध दर्शन जैन दर्शन कई बातों में मिलता है पर यह जैन दर्शन के बहुत बाद अस्तित्व मे आया। महावीर एव बुद्ध लगभग समकालीन हुए पर लगता है महावीर के समय जैन सस्कृति की पताका सर्वत्र फहरा रही थी इससे उससे अलग पहचान बनाने के लिए कुछ सिद्धान्त यम नियम अलग बनाए गए। उदाहरण के तौर पर जैन दर्शन की अहिंसा–मन वचन से भी की गई हिंसा को हिंसा मानती है काया से तो की गई हिंसा है ही पर बुद्ध दर्शन मरे हुए जीव का मास खाने की भी इजाजत देता है। पर मास चाहे वह मरे हुए का ही हो चित्त पर विपरीत असर पड़ता है। जब एक बार कोई वस्तु उपभोग मे आ जावे तो पुन उसको लेने की आकाक्षा बनी रहती है और उसके लिए उपभोक्ता येन-केन-प्रकारेण प्राप्त करने की लालसा रखता है। बौद्ध दर्शन शून्य रूप को ही मानता है–अद्वैतवाद इसी का एक अग है। बौद्ध दर्शन आकाश काल जीव पुद्गल यह चार द्रव्य ही मानता है जबकि जैन दर्शन धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय जीवास्तिकाय और काल इन छ द्रव्यो को मानता है। इन चार और छ के गणित के आधार पर ही साम्यता और वैषम्यता जानना चाहिए।

जैन सस्कृति की दार्शनिक मीमासा पर जब हम विचार करते हैं तो इसकी अनेक विशेषताओं पर मान्यताओं पर सिद्धान्तों पर दृष्टि जाना स्वाभाविक है। उदाहरणार्थ इसके अनुसार–

१ ससार के सभी पदार्थ क्षणिक हैं।
२ अकेली आत्मा ही अमर है।
३ यह सम्पूर्ण जगत अनादि और नश्वर है इसका कोई कर्ता नहीं
४ आत्मा स्वय ही अपनी आत्मा का उद्धार कर सकता है।
५ आत्मा से शरीर आदि सर्वथा भिन्न स्वतत्र है।
६ आत्मा और शरीर दोनो अलग अलग है और आत्मा अमर एव शरीर नाशवान है।
७ कर्म बन्धन का प्रवाह ही आत्मा को रूलाता है और इसावे वह परावलम्बी है।
८ प्रत्येक जीव को कर्म प्रवाह रोकने का प्रयत्न करना चाहिए।
९ कर्मों से छुटकारा पाये बिना आत्मा की मुक्ति नहीं होती।

१० मुक्त आत्माए कर्म बन्ध और ससार से परे हैं।
११ इस जगत म मानव जन्म लेना और आत्म स्वरूप में लीन हो जन ही सबस बड़ा सद्भाग्य है।
१२ सम्यकज्ञान सम्यकदर्शन एव सम्यक चारित्र यह तीन रत्न ही मुक्ति के मार्ग हैं।

धर्म की मीमासा करते हुए कहा गया है अहिंसा सयम तपोधर्म मूल अर्थात् अहिंसा सयम और तप का आचरण करना ही धर्म है। धर्म छाय के समान है जो पतन की ओर उन्मुख प्राणी की रक्षा करता है। धर्मो रक्षति रक्षित जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म मन वचन और काय तीनो को नियत्रित करने का मुख्य साधन है। धर्म एक पवित्र जीवन पद्धति को विकसित करने का एक प्रमुख मार्ग है। बुरे कर्मों की कालिमा से जो बचाता है कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। जो पाप व बुराइयों की कालिमा को नष्ट करता है। सुख शाति समृद्धि कल्याण की प्राप्ति जो कराता है वह धर्म है। इसम मानव जाति को सर्वोत्कृष्ट महत्ता दी है। मानव ही अपने कर्मों का विध्वंस कर मुक्ति में जा सकता है। मुक्ति देवताओं के लिए दुर्लभ है क्योंकि देवता स्वर्ग के सुखा में भोग में लिप्त होकर अपने स्वरूप को भूल जाती हैं। मानव को इगित कर यह सस्कृति कहती है मानव तू महान है अनत शक्ति का भण्डार है दिव्यशक्ति का पुज है। तू जब तक अपने को भूला हुआ है तभी तक हैरान है परेशान है। तू जागा नहीं कि तेरी मति कृति शक्ति का कण-कण जाग जायगा तू अपने पुरुषार्थ को जगा। तू अपने भाग्य का स्वय ही उन्नायक है। ईश्वर किसी का भाग्य विधाता नहीं अपितु तुम्हारे सत् असत् कर्म ही तुम्हे उत्थान या पतन की ओर ले जाते हैं।

अहिंसा— अहिंसा के बारे मे कहा गया है कि किसी प्राणी की शरीर से हिंसा करना ही अहिंसा नहीं है। अपितु अपने आचरण से किसी भी जीव को मन वचन काया से दु ख न पहुचाना अहिंसा है। किसी के साथ दुर्व्यवहार करना उसकी आत्मा को कष्ट पहुचाना भी हिंसा ही है। किसी का अपमान उपेक्षा छल अथवा बल का अनावश्यक प्रयोग भी चाहे वह कितने ही छोटे क्यों न हो हिंसा के अन्तर्गत ही आते हैं पृथ्वी जल अग्नि वायु व वनस्पति में भी जीवन है अत इनकी विराधना नहीं करना चाहिए। अपन दैनिक व्यापार जय हरे जय चिटठे सव्वे पाणा पिया उया दुक्खा पडिकूला उठने बैठने सभी कार्यों मे सावधानी बरतते हुए काम करना चाहिए। जैसा हम दूसरों से व्यवहार चाहते हैं वैसा ही दूसरा के साथ करना चाहिए। सभी सुख चाहते हैं

सभी को अपने प्राण प्यारे हैं अत दु ख किसी को नहीं देना चाहिए।

अनेकान्त– प्रत्येक वस्तु मे अनन्तगुण हैं। हम अपने सीमित ज्ञान के कारण किसी एक पक्ष को ही जान पाते हैं जबकि अन्य पक्षो की भी पूर्ण जानकारी ली जानी चाहिए। सभी को सुन कर फिर ही न्याय करना चाहिए।

अपरिग्रह– जितना वस्तुओ का सग्रह कम होगा उतना ही ममता भाव मिटेगा। बेहोशी मिटेगी। 'मूर्छा परिग्रह' अर्थात् वस्तु के प्रति मूर्छा भाव राग भाव ममत्व का विसर्जन ही अपरिग्रह है। जितनी वस्तु की आवश्यकता हो उतनी ही रख कर बाकी की दूसरो को अभावग्रस्तो को दे देना चाहिए इस प्रकार जहा ममत्व भाव मिटेगा पर हित का लाभ भी अर्जित होगा।

जैन सस्कृति मे तीर्थकर अरिहन्त की बहुत महत्ता है। जैन सस्कृति मे तीर्थंकर चतुर्विध सघ की स्थापना करते हैं जो तीर्थ कहलाते हैं। साधु, साध्वी श्रावक श्राविका यही चतुर्विध सघ के रूप में सुविख्यात है। इनकी आचार सहिता बनाकर उनकी जीवन पद्धति की सुव्यवस्थित रूप रेखा बनाई। साधु साध्वियों के लिए अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह एक पाच महाव्रतों का सम्पूर्ण रूप से पालन का नियम रखा। श्रावक श्राविका के लिए बारह अणुव्रतो के पालने का आदेश दिया। इनके लिए अणुव्रत यानी छोटे रूप से जितनी सावधानी पूर्वक नियम पूर्वक पाल सके उतना पालना है। बारह व्रतो में पाच पाच महाव्रत अणुव्रत के रूप मे तथा बाकी सात दिक परिणाम– भोगोपभोग पहिमाण अनर्थ दण्ड सामायिक देशावगासिक-पौषधो पवास एव अतिथि सविभाग है। साधु साध्वी श्रमण सस्कृति के मुख्य अग हैं। सत श्रमण श्रमणी को सरिता का स्वरूप प्रदान किया। बहते रहना यानी चातुर्मास के चार माह छोड़ कर सदा उनको विहार करते रहना अपना स्वय का तथा परहित का कल्याण करना ही उनका ध्येय है। वे एक जगह से अपना आहार नहीं लेते वरन गोचरी यानी गौ (गाय) जिस प्रकार चरती है उसी प्रकार अलग-अलग स्थानो से आवश्यकतानुसार विशुद्ध आहार ग्रहण करना ही उनका नियम है।

इस सघ को जैन सस्कृति में समाज का ही रूप माना गया है। इसकी दृष्टि मे जिस परिवेश में समानता बिना किसी रोकटोक के प्रभावी हो अस्पृश्यता को अपराध मान कर मैत्री प्रेम करुणा की बुनियाद पर मानव का सम्मान हो वह समाज है। ऐसा समाज ही सघ कहलाने योग्य है। सघ वास्तव मे एकाधिपत्य नहीं अपितु सामूहिक सामयिक परिवेश का उपमान ही है। सघ के लिए कहा गया है यह गुणों का समूह है। यह कर्मों का विमोचन करने वाला है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसे व्यक्ति समाज राष्ट्र सुख शाति पूर्वक
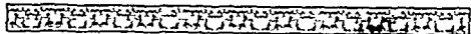
जीवन यापन कर लोककल्याण व स्वकल्याण मे सहभागी बन सकते हैं।

जीव अजीव तत्त्व जैन संस्कृति के अनुसार जगत में मुख्य दो तत्व हैं। जीव और अजीव। जीव यानी आत्मा अजीव यानी अचेतन जड़। जीव से भिन्न पहले अजीव तत्त्व को लेते हैं। यह तत्त्व जीव तत्त्व जितना ही स्वाधीन स्वतंत्र अनादि अनन्त है। इसके पाच भेद हैं— १ पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश ५ काल

पुद्गल रूप रस गध स्पर्श ये पुद्गल के चार गुण हैं। पुद्गल की सख्या अनन्त है। शब्द बध (मिलन) सूक्ष्मता। स्थूलता आकार भेद, अन्धकार छाया आलोक तथा ताप पुद्गल के पदार्थ हैं। अर्थात् पुद्गल मे से इनकी उत्पत्ति होती है। शब्द आलोक (प्रकाश) तथा ताप को पौद्गालिक मानने से इन जैन मान्यताओं में वर्तमान वैज्ञानिक शोध का हाथ स्पष्ट ग्रहण किया हुआ लगता है।

धर्म पानी जिस भाति मछलियों की गति मे सहायक होता है उसी भाँति अजीव तत्व पुद्गल तथा जीव की गति मे सहायता करता है उसी का नाम धर्म है। धर्म अमूर्त है निष्क्रिय हैं तथा नित्य है यह जीव तथा पुद्गल को चलाता नहीं अपितु यह तो केवल इसकी गति में सहायक बनता है।

अधर्म मार्ग भूला हुआ पथिक गहन अधकार देख कर रात्रि को एक स्थान पर विश्राम करता है उसी भाति अधर्म अजीव तत्त्व पुद्गल तथा जीव की स्थिति विषय में सहायता करता है।

आकाश जिस अजीव तत्त्व के अन्दर जीवादि पदार्थ रह सके उसी का नाम आकाश है। आकाश नित्य है व्यापक है तथा जीव पुद्गल धर्म अधर्म तथा काल के आश्रय भूत है। इसके भी दो भेद हैं— १ लोकाकाश २ अलोकाकाश। लोकाकाश के लिए ही जीवादि पदार्थ आश्रय पाता है। लोकाकाश के बाहर अनन्त शून्यमय अलोक है।

काल पदार्थ के परिवर्तन में जो अजीव तत्त्व सहायता करता है उसी का नाम काल है। यह नित्य है अमूर्त है यह असख्य द्रव्यमय लोकाकाश परिपूर्ण है। पुद्गल आदि पचतत्व की इतनी व्याख्या से कोई भी समझ सकता है कि आज के जड़ विकास के मूल तत्व जैन दर्शन से नरे पड़े हैं। प्राचीन ग्रीस से लेकर वर्तमान युग तक के सभी वैज्ञानिकों ने Atom अथवा पुद्गल के अस्तित्व को स्वीकार किया है। पर परमाणु अनन्त है ऐसा भी इन सब ने स्वीकार किया है तथा इसके सयोग वियोग के कारण ही जड़ जगत में स्थूल पदार्थ जन्म लेते हैं। तथा विलय पाते हैं। यह तथ्य जैन संस्कृति ने हजारों वर्षों पूर्व ही समझ
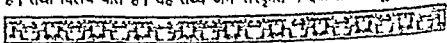
के सामने रख दिया था उस ज्ञान से आज के वैज्ञानिक हतप्रभ होकर उनका ही अनुगमन कर रहे हैं।

जीव उपरोक्त पाच प्रकार के अजीव पदार्थ के साथ जो तत्त्व कर्म वश जकड़ा हुआ है उसी का नाम जीव है। जीव का अस्तित्व चेतना उपयोग प्रभुत्व भोक्तृत्व देह परमाणता अमूर्तत्व आदि दैनिक गुणो में स्पष्ट गोचर है। इस प्रकार जैन सस्कृति साहित्य दर्शन का अपूर्व भण्डार है। किस किस का उल्लेख किया जावे।

विज्ञान ज्यों-ज्यो विकास की ओर बढ़ता जा रहा है त्या-त्यों जैन सस्कृति के मान्य विषयो का प्रतिपादन होता जा रहा है। आज विज्ञान ने उन्नति करते करते अणुबम उद्जन बम्ब मिसाइल्स और अनेक विध्वसक हथियारो का उत्पादन कर लिया है यह सब अणु, पुद्गल का ही प्रभाव है। जैन सस्कृति में अणु की विशाल शक्ति का भण्डार बताया है पर उस शक्ति का उपयोग शाति सौहार्द भाईचारा विश्व कल्याण के लिए करने का सदेश दिया है जबकि आज चारो तरफ से एक ही आवाज आ रही है इन प्रलयकारी साधनो को बन्द किया जावे या फिर जनहित के कार्यों मे उनका उपयोग किया जावे। आज सारा विश्व भयकर ज्वालामुखी के मुहाने पर खड़ा है अगर विज्ञान एक कदम भी आगे बढ़ा तो समस्त विश्व का उसकी सभ्यता और सस्कृति का लोप हो जावेगा।

कुल मिलाकर जैन सस्कृति की साधना के पथ पर आगे बढ़ना एक ऐसी ज्योतिर्मय यात्रा है जिसमे साधक असद् से सद् की ओर अधेरे से आलोक की ओर मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होता है। यह एक ऐसी अद्भुत आध्यात्मिक साधना है जिसमें साधक बाहर से अन्दर की ओर सिमटता है। इस प्रकार आत्मा को परमात्म पद की ओर अग्रसर होने की यह श्रेष्ठतम साधना है।

—मण्डी प्रागण नीमच
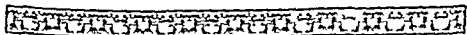
□

दान या सहयोग

—मनोहरलाल मेहता—

एक फिल्मी गीत की जोशीली पंक्ति है— अपने लिये जिये तो क्या जिये। सृष्टि के आरम्भ से ही यह भावना चली आ रही है। हमारे धर्माचार्यों साहित्यकारों समाजसेवियों ने इसी भावना को समाज में पुष्ट किया है। संत तुलसीदास ने कहा है—

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण।।

दया के वशीभूत होकर ही प्राणी दूसरों के संकट के समय उनकी सहायता करता है उसके साथ सहयोग करता है। स्थानांग सूत्र में श्रावक के तीन मनोरथों का उल्लेख है उसमे से एक मनोरथ है —

अह अप्प या बहुअ या परिग्रह परियइस्सामि' अर्थात् 'वह समय कब आयेगा जब मैं अल्प अथवा अधिक परिग्रह का त्याग करू।

परिग्रह के त्याग करने का अर्थ आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति को उन लोगों को देना है जिसकी उन्हें आवश्यकता है। इस प्रकार अपना स्वामित्व छोड़कर वस्तु, धनराशि आदि दूसरों को समर्पित करना ही दान या सहयोग है। दान के स्थान पर सहयोग शब्द का प्रयोग अधिक उचित है क्योंकि दान देना किसी पर एहसान जताना न होकर कर्तव्य भाव से देना है। अपरिग्रह की भावना आते ही अतिरिक्त धनराशि का त्याग कर दूसरों को देना ही है तो इसमें एहसान का भाव न होकर कर्त्तव्य का भाव स्वत आ जाता है। कविवर रहीम ने कहा है—

जो जल बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये यह सज्जन को काम।।

दान का महत्त्व

धर्माचार्यों ने गृहस्थ जीवन को दान एवं शील प्रधान तथा साधु जीवन को तप एवं संयम प्रधान कह कर गृहस्थों के लिए दान का महत्त्व स्पष्ट कर दिया है। दान में स्व एवं पर दोनों का कल्याण होता है। रहीम कवि का यह दोहा विचारणीय है—

यों रहीम सुख होत है पर उपकारी सग ।
बाटन वाले को लगे ज्यों मेंहदी को रग।।

मेंहदी बाटनेवाले के हाथो मे मेहदी का रग लगता ही है। इसी प्रकार दान लेनेवाले को तो सहयोग मिलता ही है दान देनेवाले की भी अपरिग्रह की भावना पुष्ट होती है ममत्वभाव से छुटकारा मिलता है मन मे सतोष एव आनद के भाव जागृत होकर शरीर स्वस्थ होता है तथा समाज मे कीर्ति फैलती है। इस प्रकार दान लेनेवाला दान दाता पर अनुग्रह ही करता है।

दान शील तप एव भाव को धर्म के चार चरण कहा गया है। इसमे दान को प्रथम स्थान इसलिये दिया गया है कि जहा शील तप तथा भाव का लाभ इन्हे पालनेवाले को ही मिलता है वहा दान का लाभ इसे लेने वाले तथा देने वाले दोनो को ही मिलता है।[1]

ससार मे ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो दान से न मिल सके क्योंकि शास्त्रकारो के अनुसार सबसे दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति भी दान से हो सकती है। श्री पद्मनान्दिपचविंशतिका का निम्न श्लोक यही दर्शाता है–[2]

मिथ्यादृशोऽपि रुचिरेव मुनीन्द्र दाने दद्यात्पशोपि हि जन्म सुभोग भूमौ।
कल्पाग्रिपा ददाति यत्र सदेप्सितानि सर्वाणि तत्र विद्धाति न किं सुदृष्टे।।

नाना प्रकार के कष्टो को झेलकर प्राप्त होनेवाले धन की सद्गति दान मे ही है। मृत्यु के बाद आत्मा जब स्वर्ग मे जाती है तो धर्मराज उसके बारे में पूछता है कि इस प्राणी ने किंच भुक्ता किंच दत्ता (कितना भोगा एव कितना दिया)। कुरान मे भी दान के महत्त्व मे कहा गया है–

'प्रार्थना ईश्वर की ओर आधे रास्ते तक लेजाती है उपवास महल के द्वार तक पहुचा देता है परन्तु दान से ही हम अदर प्रवेश कर सकते हैं।'[3]

दिया हुआ दान व्यर्थ नहीं जाता इसलिये दान की तुलना खेती से की जाती है। कवि ने कहा है–

ऋतु बसत जाचक भया हरखि दिया द्रुम पात।
ताते नव पल्लव भया दिया दूर नहीं जात।।

आज विश्व में कर्ण भामाशाह आदि को उनकी दानवृत्ति के कारण ही

---

१ धर्म मे दान को प्रथम स्थान क्यो स्व–उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि–साभार [illegible] अहिंसा
२ पद्मनान्दिपचविंशतिका–श्लोक स २३१
३ प्राचीन साहित्य में दान की महिमा – श्री विजय मुनि शास्त्री–साभार [illegible] अहिंसा

दान या सहयोग

—मनोहरलाल मेहता—

एक फिल्मी गीत की जोशीली पक्ति है— अपने लिये जियें तो क्या जिये। सृष्टि के आरम्भ से ही यह भावना चली आ रही है। हमारे धर्माचार्यो साहित्यकारों समाजसेवियो ने इसी भावना को समाज मे पुष्ट किया है। सत तुलसीदास ने कहा है—

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण।।

दया के वशीभूत होकर ही प्राणी दूसरो के सकट के समय उनकी सहायता करता है उसके साथ सहयोग करता है। स्थानाग सूत्र मे श्रावक के तीन मनोरथो का उल्लेख है उसमे से एक मनोरथ है —

अह अप्प या बहुअ या परिग्रह परिचइस्सामि' अर्थात् 'वह समय कब आयेगा जब मैं अल्प अथवा अधिक परिग्रह का त्याग करू।

परिग्रह के त्याग करने का अर्थ आवश्यकता से अधिक सम्पति को उन लोगो को देना है जिसकी उन्हे आवश्यकता है। इस प्रकार अपना स्वामित्व छोड़कर वस्तु धनराशि आदि दूसरो को समर्पित करना ही दान या सहयोग है। दान के स्थान पर सहयोग शब्द का प्रयोग अधिक उचित है क्योंकि दान देना किसी पर एहसान जताना न होकर कर्त्तव्य भाव से देना है। अपरिग्रह की भावना आते ही अतिरिक्त धनराशि का त्याग कर दूसरो को देना ही है तो इसमे एहसान का भाव न होकर कर्त्तव्य का भाव स्वत आ जाता है। कविवर रहीम ने कहा है—

जो जल बाढ़े नाव में घर में बाढे दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये यह सज्जन को काम।।

दान का महत्त्व

धर्माचार्यो ने गृहस्थ जीवन को दान एव शील प्रधान तथा साधु जीवन को तप एव सयम प्रधान कह कर गृहस्थों के लिए दान का महत्त्व स्पष्ट कर दिया है। दान में स्व एव पर दोनों का कल्याण होता है। रहीम कवि का यह दोहा विचारणीय है—

यों रहीम सुख होत है पर उपकारी सग ।
बाटन वाले को लगे ज्यों मेंहदी को रग।।

मेहदी बाटनेवाले के हाथो मे मेहदी का रग लगता ही है। इसी प्रकार दान लेनेवाले को तो सहयोग मिलता ही है दान देनेवाले की भी अपरिग्रह की भावना पुष्ट होती है ममत्वभाव से छुटकारा मिलता है मन मे सतोष एव आनद के भाव जागृत होकर शरीर स्वस्थ होता है तथा समाज मे कीर्ति फैलती है। इस प्रकार दान लेनेवाला दान दाता पर अनुग्रह ही करता है।

दान शील तप एव भाव को धर्म के चार चरण कहा गया है। इसमें दान को प्रथम स्थान इसलिये दिया गया है कि जहा शील तप तथा भाव का लाभ इन्हे पालनेवाले को ही मिलता है वहा दान का लाभ इसे लेने वाले तथा देने वाले दोनों को ही मिलता है।[1]

ससार मे ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो दान से न मिल सके क्योकि शास्त्रकारो के अनुसार सबसे दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति भी दान से हो सकती है। श्री पद्मनान्दिपचविंशतिका का निम्न श्लोक यही दर्शाता है–[2]

मिथ्यादृशोऽपि रूचिरेव मुनीन्द्र दाने दद्यात्पशोपि हि जन्म सुभोग भूमौ।
कल्पाग घ्रिपा ददाति यत्र सदेप्सितानि सर्वाणि तत्र विद्धाति न किं सुदृष्टे।।

नाना प्रकार के कष्टो को झेलकर प्राप्त होनेवाले धन की सद्गति दान मे ही है। मृत्यु के बाद आत्मा जब स्वर्ग म जाती है तो धर्मराज उसके बारे मे पूछता है कि इस प्राणी ने किंच भुक्ता किंच दत्ता (कितना भोगा एव कितना दिया)। कुरान मे भी दान के महत्त्व में कहा गया है–

'प्रार्थना ईश्वर की ओर आधे रास्ते तक लेजाती है उपवास महल के द्वार तक पहुचा देता है परन्तु दान से ही हम अदर प्रवेश कर सकते हैं।'

दिया हुआ दान व्यर्थ नहीं जाता इसलिये दान की तुलना खेती से की जाती है। कवि ने कहा है–

ऋतु बसत जाचक भया हरखि दिया द्रुम पात।
ताते नव पल्लव भया दिया दूर नहीं जात।।

आज विश्व में कर्ण भामाशाह आदि को उनकी दानवृत्ति के कारण ही

---

१ धर्म में दान को प्रथम स्थान क्यो ? –उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि–[illegible]
२ पद्मनान्दिपचविंशतिका–श्लोक स २३१
३ प्राचीन साहित्य मे दान की महिमा – श्री विजय मुनि शास्त्री–[illegible]

याद करते हैं न कि उनके धनी होने से।

शास्त्रकारो ने लक्ष्मी को चचला कहा है– कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सब कोय'। इसी प्रकार के भाव निम्न दोहे मे भी व्यक्त है–

धन अरु गेंद के खेल को दोनों एक सुभाय।
कर में आवे छिनक में छिन में कर ते जाय।।

अर्थात् धन एव गद का खेल एक समान है। दोना क्षण भर में हाथों में आ जाते हैं तो क्षण भर में ही हाथ से निकल भी जाते हैं। इसलिये चचला लक्ष्मी का ठीक ढग से दान आदि सत्कार्यों मे उपयोग करना चाहिये। धन की तीन ही गतिया बतायी गयी हैं– दान भोग एव नाश। उचित मात्रा मे भोग करने के बाद यदि शेष धन राशि को दान मे नहीं दिया गया तो उसकी तीसरी गति नाश ही है।

अपनी भावी पीढ़ियो के लिये धन सचय करने वाले को 'पूत सपूत तो क्यों धन सचै पूत कपूत तो क्यो धन सचै उक्ति को ध्यान में रखना चाहिये। पुत्र सुपुत्र है तो स्वय कमा लेगा एव यदि पुत्र कुपुत्र है तो व्यर्थ में उड़ा देगा। यह भी देखा गया है कि सपत्ति के लिये उत्तराधिकारियों में इतने झगड़े होते हैं कि वे एक दूसरे की जान के ग्राहक तक हो जाते हैं। आयकर विभाग वाले छापों मे ले जाते हैं। यदि दान देते हैं तो कीर्ति भी मिलती है तथा धन राशि का सामाजिक कार्यों मे उपयोग भी होता है। तीर्थंकर भगवानों ने भी साधु जीवन ग्रहण करने के पूर्व वर्षी दान किया ही है। दान से अपरिग्रह व्रत की पालना होती है। *पद्मानन्दिपचविंशति का के श्लोक का भावार्थ है कि* कर्मानुसार पशु तथा राजा दोनों अपना पेट भरते ही हैं। इसलिए पेट भरने में तो दोनों समान हैं परन्तु नर भव पाने का उत्तम विवेकवान होने का केवल एक ही फल है कि निरतर उत्तम पात्रों को दान देना।[1]

दान आधुनिक समाजवादी विचारधारा के अनुकूल है तथा अहिंसक युक्ति द्वारा समाजवाद के पथ का पोषक है।

दान कब दें बहुधा यह प्रश्न उठाया जाता है कि दान कब दे ? दान देने की भावना होने पर यह पूछना व्यर्थ है। दान नहीं देनेवाले ही ऐसा प्रश्न उठाते हैं। वास्तव में दान देने की भावना आते ही दान देने की बात कही गयी है क्योंकि सभव है बाद में विचार बदल जायें।

---

१. श्री पद्मानदिपचविंशतिका

दान से बचने वाला व्यक्ति सोचता है कि मुझे मकान बनवाना है पुत्र का विवाह करना है पोते-पड़पोता के लिये भी छोड़कर जाना है। उसके बाद दान देने पर विचार करना है। ऐसा विचार करता करता ही व्यक्ति अचानक काल के मुह म चला जाता है तथा कुछ भी नहीं कर पाता। उसका जीवन उस शहद की मक्खी ही तरह हो जाता है जो शहद एकत्र तो करती है परन्तु स्वय उपभोग नहीं कर पाती तथा लोग उसे लूट ले जाते हैं। इसलिये कहा है कि धन मिलने पर सर्वप्रथम उसी प्रकार दान करना चाहिये जिस प्रकार भोजन करनेवाला व्यक्ति प्रथम ग्रास या पहली रोटी गाय के लिए निकालता है।

इस प्रकार दान देने का कोई नियत समय तो नहीं परन्तु यदि रोज दान नहीं दे सके तब भी परिवार में सतान के जन्म के समय विवाहोत्सव आदि मागलिक कार्यों के समय अपने परिजनो की स्मृति में धर्माचार्यों की जन्म जयन्ती के समय पर्युषण पर्व मे देव एव गुरु दर्शनो के समय तथा वर्ष के अत में व्यवसाय के लाभ को देख कर एक निश्चित प्रतिशत दान देने के प्रसग बनते हैं।

दान में विवेक

इस सम्बन्ध में दो बाते महत्त्वपूर्ण हैं—

(अ) दान कितना दें (ब) दान किसे दे

(अ) दान कितना दें दान देते समय अपनी सामर्थ्य का ध्यान रखना चाहिये न कि अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने हेतु इतना दान दे दे कि बाद मे पश्चाताप करना पडे। कहा है —

बढ़ती करके खरचिये पूजी रखिये पास।
नहीं दान पूजी घटत रखो मनुज विश्वास।।

यहाँ सामर्थ्य से तात्पर्य अपनी वर्तमान सम्पति भावी आय अर्जन शक्ति अपनी वर्तमान एव भावी आवश्यकता आदि को ध्यान मे रखना है। इन आधारों पर अपने लिये आवश्यक सम्पति की मात्रा निर्धारित करके उससे अधिक राशि का ही दान करना चाहिये। अपनी आय का एक निश्चित प्रतिशत (कम से कम १ प्रतिशत) अवश्य प्रतिवर्ष दान देना चाहिये।

(ब) दान किसे दें अपनी पुत्री जामाता आदि को देना दान नहीं है। दान देते समय 'नेकी कर नदी में डाल' की भावना में न बह कर पात्र कुपात्र
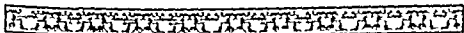
का विचार करना आवश्यक है। दान देते समय व्यक्ति या सस्था नहीं वरन् उपयोगिता प्रमुक्तता आदि का विचार करना आवश्यक है।

दान में भावना

दान मे भावना का उदाहरण कविवर रहीम का निम्न दोहा महत्त्वपूर्ण है जब किसी ने उनसे पूछा कि आप दान देते समय नजरें नीची क्यों रखते हैं? उनका उत्तर था

देन हार कोऊ ओर हैं देता हैं दिन-रैन।
लोग भरम हम पर करें ताते नीचे नैन।।

अहा! क्या भावना है कि दान देने वाला कोई और है जो दिन रात में दान की व्यवस्था करता है परन्तु लोग सोचते है कि मैं दान दे रहा हू। इसी शर्म के मारे नेत्र नीचे रखता हू। सक्षेप मे निम्न भावनाए रखनी चाहिये–

१) मैं अपनी सामर्थ्य के साथ दान दू
२) हर्ष पूर्वक दान दू।
३) दान देना चाहिये की भावना से दू न कि देना पड़ेगा की भावना से।
४) दान देते समय अह की भावना न हो तथा न लेनेवाले के प्रति तिरस्कार की भावना हो।
५) दान देते समय बदले मे फल प्राप्ति की भावना न हो।
६) दान मे प्रचार-प्रसार की भावना न हो अर्थात् दाया हाथ जो दान दे वह बाया हाथ न जान सके।

वास्तव मे दान देने की भावना हर किसी में नहीं जागृत होती। प्रबल पुण्योदय की स्थिति हो तभी व्यक्ति मे यह भावना जागृत होती है।

–निदेशक आचार्य श्री नानेश शिक्षण सस्थान नानेश नगर दाता

□

सुसस्कारो का पुल बनाइये

—राजमल डागी—

हम सस्कारो पर चर्चा करते रहते हैं। मगर सस्कार कोई ढाई घटे का सिनेमा नहीं होता। सस्कारो का पुल बनाने मे बहुत समय लगता है।

जैसे बिना पानी के नाव नहीं चल सकती वैसे ही सस्कारो के बिना विचार नहीं बनते।

एक बार कुछ बुजुर्गों ने सस्कारो और विचारो का रिश्ता जानने के लिये एक प्रयोग किया। उन्होने एक कसाई को एक सूखे कुए में उतार दिया। कसाई सुबह उठा तो उसने अपनी दिन चर्या शुरू करने का सोचा। उसकी दिनचर्या तो वध शाला से जुडी हुई थी। उसने तत्काल एक उपाय ढूढ लिया। उसने अपने कपड़े उतारे फिर हाथों से रगड रगड कर शरीर से मेल इकटठा किया। उस मेल से बनी बकरी का उसने हाथ से वध करके राहत की सास ली।

हम देखते हैं कि जिन लोगों को पढ़ने—लिखने के सस्कार है उन्हें कहीं पुस्तक पढने को नहीं मिलेगी तो पुराना अखबार ही देखकर राहत लेगें। प्रत्येक किशोर की दिनचर्या उसके सस्कारो से शुरू होती है। कोई मुर्गे की बाग सुनकर उठ जाता है तो कोई फिर से रजाई ओढकर सो जाता है।

एक बार एक आरक्षण कोच में चार—पाच किशोर बच्चो का दल भ्रमण के लिये जा रहा था। उनके पास ढपली ढोलक बासुरी भी थे। चार बजे वे उठे। उठते ही उन्होंने दो—दो ग्लास पानी पिया। पानी पीकर अपने सगीत की धुन शुरू की। उनके गीत—सगीत की धुन मे यात्री मग्न हो गये। आपके पास सस्कारो की पूजी जमा होगी तो यात्रा मे भी एक—एक पल आप वसूल कर लेंगे।

कुछ वर्षों पहले एक बुजुर्ग ने जापानी सस्कारों में उद्यमशीलता की चर्चा करते हुए बताया कि एक दम्पत्ति ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। रास्ते में उन्होने दो गन्ने खरीदे। उन गन्ने के छिलकों को चाकू से लम्बे लम्बे उतार कर अखबार पर इकट्ठे कर लिये। गन्ना चूसकर छिलके बाहर फैंके। उन ऊपर के छिलको से उन्होंने एक पखा बनाया और उसे ट्रेन में ही बेच दिया।

एक बार एक स्टेशन पर ट्रेन आने में काफी विलम्ब था। मैंने देखा एक सफेद बाल वाला आदमी पुराने टाट के टुकडों से सुथली के तार निकाल—निकाल कर एक झोला बना रहा है। समय का सदुपयोग उद्यमशीलता से जोडने का विचार सस्कारों पर निर्भर करता है।
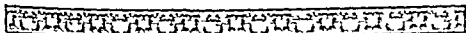
कुछ बच्चे बाहर की दुनिया में थोड़े समय में ही उक्ता जाते हैं। उनको अपने समय का नियोजन करने के सस्कार नहीं है। मेरे लिये ट्रेन का सफर बडा लुभावना होता है। सुबह का समय होता है तो लम्बे समय तक खिड़की मे से सूर्योदय देखने का आनन्द नहीं छोडता। यदि रात्रि का वक्त है तो चन्द्रमा को एक टक देखते-देखते समय गुजर जाता है।

माना कि कुछ सस्कार तो विरासत में ही मिलते हैं मगर अच्छी पत्रिकाए और पुस्तको से भी सस्कारो की खेती हरी भरी रहती है। विद्वानो का सानिध्य भी खुली किताब होती है। गाव के लोग अपने बुजुर्गों के सम्पर्क में रहकर अनुभवो से बहुत कुछ हासिल कर लेते है। कुछ लोग प्रकृति के सानिध्य मे रहकर कोयल जैसा सगीत सीख लेते हैं।

प्रत्येक अच्छे सस्कारो की जननी माता होती है। एक बार गाधीजी से वर्धा आश्रम मे एक किशोर ने पूछा बापू आपने सच बोलना कहा से सिखा। बापू मुस्कराते हुए बोले— बेटा मेरी माता पुतलीबाई ने मुझे सच बोलने के सस्कार दिये।

बचपन मे एक गाव के बुजुर्ग ने मुझे समझाया था 'बेटा माथो कटी जावे तो भी झूठ नी बोलणों।

अच्छे सस्कारों की फसल बोनी पडती है। बुरे सस्कार तो गाजर घास की तरह अपने आप पैदा हो जाते हैं।

आपके विचार अच्छे सस्कारो के पुल पर दौड़कर लक्ष्य हासिल कर लेते हैं। अच्छे सस्कारों को पुष्पित और पल्लवित करने के लिये अच्छा वातावरण होना चाहिये। मगर सस्कारो की सही परीक्षा तो विषम परिस्थितियों में ही होती है।

एक बार मेरे शहर में एक अमन एजेन्सी वाले की दुकान आई थी वह कपनी पहले रुपया जमा रखती फिर एक महीने बाद पलग अलमारी घड़ी आदि आधे दामों में दे देती थी। उसका धधा खूब चला यहा तक कि कुछ लोगों ने कार स्कूटर भी खरीद लिये।

कुछ मित्रो ने मेरे ऊपर भी दबाव डाला कि आप भी इस मौके का फायदा उठा भी लीजिये। सच मानिये मैंने उस दुकान को देखने में भी अपना वक्त खराब नहीं किया। एक दिन अखबार में पड़ा अमन ऐजन्सी वाला लाखों रुपये लेकर फरार हो गया।

बिना श्रम के कुछ पाने की लालसा अथवा किसी को बुद्धू बनाकर कोई वस्तु हड़प लेना बुरी बात है।

मगर इन बुरी बातों की जहा बरसात होती है तब व्यक्ति को सस्कारों की छतरी बुरी बातों मे भीगने से बचाती है। आप सस्कारों की फसल कैसे बोए कैसे सींचे और कैसे समालकर रखते हैं आप जाने ?

—93/3 रामटेकरी मदसौर (म प्र)

राहु नही सूर्य बनो

—देवीचद भडारी—

अपने आप को दूसरों से बडा सिद्ध करना चाहते हो तो दो ही उपाय हैं। प्रथम दूसरे की निन्दा और अपमान कर उसकी श्रेष्ठता को कम करना यह उपाय रेखा को काटने या मिटाने जैसा है। द्वितीय उपाय उससे अधिक गुणवान बन कर बड़ा होना। यह उपाय रेखा के बराबर दूसरी बड़ी रेखा बना कर उसे छोटी सिद्ध करने जैसा है।

प्रथम उपाय प्रमुदित चित्त दिशा का लक्षण नहीं अपितु ईर्ष्यालु चित्त की दशा का लक्षण है। अत दूसरा उपाय करके हमे प्रमुदित हृदयी मानव बनाना है।

शक्ति और सत्ता पाण्डवो के पास भी थी और कौरवो के पास भी परन्तु कौरवों ने उसका दुरुपयोग किया जबकि पाण्डवो ने सदुपयोग। इसी कारण आज भी कौरव बदनाम हैं और पाण्डव प्रशसा के पात्र हैं।

दूसरों की निन्दा एव अहित चिन्तन करने से स्वय का बुरा तो होता ही है उसका बुरा हो या न हो। इसलिए निन्दा का त्याग कर अपना ही शुद्धिकरण करना चाहिए इससे अपना भी भला होता है तथा सामाजिक वातावरण भी आदर्श बनता है।

तोड़ने मिटाने गिराने तथा मारने का काम करना अनधिकृत चेष्टा है उस से पतन ही होता है।

भक्त ध्रुव राजा की गोदी में बैठने का प्रयत्न न करके प्रभु की भक्ति कर श्रेष्ठ पद प्राप्त कर अपने भाई से उच्च पद प्राप्त कर महान् बना।

देवदत्त हस को तीर से मार कर अपना हक बताने लगा और सिद्धार्थ उसकी मरहम पट्टी कर हस पर अपना अधिकार बताने लगा। उसका निर्णय हस पर छोड़ दिया गया। हस ने सिद्धार्थ के पास जाकर उसके अधीन रहना स्वीकार किया। किसी को मार कर अपना नहीं बना सकते स्नेह प्यार देकर अपना बना सकते हैं।

अत हमें राहु न बन कर सूर्य बनना है।

—डी ४७ देवनगर टोंक रोड़ जयपुर —३०२०१८

मानव का शत्रु ''अहकार''

—देवीचद भडारी—

अहकार मुख्यतया चार प्रकार का होता है। धन का पद का शक्ति का और ज्ञान का। जब तक मानव के हृदय में अहकार की ज्वाला धधकती रहेगी तब तक मानव को विलक्षण कार्य मे सफलता व प्रभु मिलन नहीं हो सकता।

रावण मे शक्ति का अहकार था उसने राम जैसे महापुरुष को तुच्छ समझ कर उस से युद्ध कर अपना परिवार का नामोनिशान मिटा दिया।

बाहुबली मे पद का अहकार था। अह की एक पर्त हटते ही केवलज्ञान हो गया।

हिरण्यकश्यप में अहकार होने से अपने को भी भगवान् समझता था। अहकार के बल से अपने पुत्र प्रहलाद को ईश्वर भक्ति से विमुख करने की कोशिश की परन्तु स्वय का ही अन्त हो गया।

मानव के पास परम आनन्द दायिनी सम्पत्ति है परन्तु अहकार होने से उस सम्पत्ति का उपयोग न करके अपने जीवन को ही नष्ट कर देता है।

अहकार की पहचान

खुद अपने आप को पूछिये कि जब मानव मेरी और ध्यान नहीं देते या मेरे महत्त्व को मानने से इन्कार करते हैं तो मुझे कितना बुरा लगता है ? जितना ही ज्यादा बुरा लगता हो समझिए कि अहकार का अश आप में उतना ही ज्यादा है।

कृत्य के कारण अहकार पकड़ा जाता है। कृत्य अहकार का भोजन बन जाता है।

अहकार की तुष्टि किसी चीज को पाने से नहीं बल्कि उस चीज को किसी दूसरे की अपेक्षा ज्यादा पाने से होती है।

व्यावहारिक जीवन में किसी का दमन शोषण और उत्पीड़न पहुचाना ही अहकार है।

अह और 'मम' के मार से मन को मुक्त करन से शान्ति मिलती है। अहकार की उत्पत्ति क्रोध ईर्ष्या झूठ घृणा दुश्मनी मद राग मान एव लोभ से होती है। हमारा 'मेरापन कर्त्तापन होना ही अहम् है।

अहकार से छुटकारा प्रेम सच्चाई मित्रता करुणा क्षमा समता ज्ञान नम्रता त्याग योगासन व ध्यान एव हार्दिक समर्पण से होता है। दूसरे से श्रेष्ठ मानना ही अह है।

अह मनुष्य का सबसे बडा शत्रु है। यह विषैला साप है जो जीव की जन्म जन्मान्तर की साधना को पल भर मे नष्ट कर देता है। मनुष्य भगवान् का अश है परन्तु अहम् अहकार उसे अलग कर के रखता है।

जिस मानव को अहकार हुआ है उसका पतन हुआ और अहकार हटते ही उसका उद्धार हुआ।

जिसने अहम् को छोड़कर नम्रता को अपना लिया उसे श्रेय और प्रेय दोनों मिल जाता है।

नाम प्रसिद्धि सपत्ति धन परिवार आदि के अहकार को त्याग दें क्योकि ये सब अस्थायी हैं और एक दिन समाप्त हो जायेगा। अहकार एक पर्दा है जो परमात्मा के निकट नहीं पहुचने देता।

ज्ञानी स्थिराशयी शान्त खेदादिदोष वर्जित ।
अहवृच्यदिनिर्मुक्त सत्कार्य कर्त्तुमर्दति।।

अहकारादि वृत्तियों से रहित खेदादि दोष से मुक्त स्थिर आशयवाला शान्त ज्ञानी सत्कार्य कर सकता है।

—डी ४७ देवनगर टोक रोड़ जयपुर —३०२०१८

□

समय का अनन्त प्रवाह गतिमान है। इन्द्रियों को अनियत्रित तथा अन्तरात्मा को उन्मुक्त छोड कर मनुष्य इस प्रवाह मे बहा जा रहा है। परन्तु प्रवाह में बहना तो जीवन नहीं न लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा है। जो प्रवाह को मोड सकता है अथवा प्रवाह से कट कर अपने लक्ष्य की ओर मुड सकता है उसी का जीवन सार्थक होता है परन्तु उसके लिये आस्था आवश्यक है।

—युगाचार्य श्री रामलालजी म सा

वन्दना आनन्द

तर्ज – वन्दना आनन्द........

शुभ भावना का दीप जलाकर अर्चना नित मै करू।
आराध्यो के चरणो मे झुक झुक वन्दना नित मैं करू।
आचार्य पद है श्रेष्ठ शुभकर साधुमार्गी अनादि से।
दीप से दीप प्रज्वलित बनते आगम अनुपम आधार से।
सुदृढ शासन है इन्हीं का सुमेरु वत ससार मे।।
वीर सुधर्मा का बजता डका अविराम दिल में मैं धरू।।1।।

आई थी बाधाए अनेक हुक्मेश नहीं घबराये थे।
शिथिला चारियों का मर्दन करके अखण्ड नाद गुजाये थे।
शिव उदय चौथ श्री लाल गुरुवर जवाहर सब मन भाये थे।
ज्योत से ज्योत बढ़ी ये गणपति चरणों में नमू।।2।।

शान्त क्रान्ति का ध्वज लहराया 'नाना' को पदासीन किया।
धवल केसरी दोनों रग को 'नाना' को पदासीन किया
धवल केसरी दोनो रग को 'नाना' ने अपूर्व चमका दिया।।
अवनि अम्बर मे यश फैला 'नाना अद्‌भुत सावरा।
त्रिलोकमहिमा है गुरु की कैसे वर्णन मैं करू।।3।।

जितनी उपमाए हैं जगत में उतनी सभी वर्णन करें।
सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र वृहस्पति मिले सभी आख्यान करें।
अवर्णनीय महिमावन्त है 'सूरज प्यार के सवारे ।
युग युग शासन दीप्तिवन्त रहे लक्ष्मीता सगान यू करू।।4।।

महापुरुषा का दिवस आया प्यारा पाघू मे सुनहरा।
गाव हमारा है छोटा पर भावना मे महक उठा
बालक–बालिका की अभ्यर्थना युगों युगों जियो गुरु।।
तन मन अर्पण है हमारा दया महर तुम करो गुरुवर।।5।।

भाव सुमनअर्पिता कत्री श्री लक्ष्य प्रभाजी म सा
सकलन कर्ता घेवर चन्द बुच्चा देशनोक

क्या है माटी क्या सोना है ?

विद्यावारिधि डा महेन्द्र सागर प्रचण्डिया

क्षणिक रूप काया नश्वर है
आत्म चेतना सदा अमर है
चेतन मन कुदन सी काया अतकाल माटी होना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।१।।

घुले–मिले हम नित विभाव मे
कभी न ठहरे हम स्वभाव मे
सारी उमर निरर्थक बीती होता वही कि जो होता है।
क्या है माटी क्या सोना है।।२।।

परिजन सब ममता मे डूबे
भोगो से हम कभी न ऊबे
कुटिल कषायो के कल्मष को समता साबुन से धोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।३।।

कोई सगी साथ न अपना
सारा जीवन ही है सपना
विश्व विकर्षण का बजार है पाना कम ज्यादा खोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।४।।

तप–सयम से जीवन निखरे
भोग-वासना से वह बिखरे
आत्म साधना ही सम्यक है व्यर्थ सभी जादू–टोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।५।।

३६४ सर्वोदय नगर आगरा रोड अलीगढ़ उ प्र २०२०

वन्दना आनन्द

तर्ज – वन्दना आनन्द .. ..

शुभ भावना का दीप जलाकर अर्चना नित मैं करू।
आराध्यों के चरणो में झुक झुक वन्दना नित मैं करू।
आचार्य पद है श्रेष्ठ शुभकर साधुमार्गी अनादि से।
दीप से दीप प्रज्वलित बनते आगम अनुपम आधार से।
सुदृढ़ शासन है इन्हीं का सुमेरु वत ससार मे।।
वीर सुधर्मा का बजता डका अविराम दिल में मैं धरू।।१।।

आई थी बाधाए अनेक हुक्मेश नहीं घबराये थे।
शिथिला चारियो का मर्दन करके अखण्ड नाद गुजाये थे।
शिव उदय चौथ श्री लाल गुरुवर जवाहर सब मन भाये थे।
ज्योत से ज्योत बढी ये गणपति चरणों में नमू।।२।।

शान्त क्रान्ति का ध्वज लहराया 'नाना' को पदासीन किया।
धवल केसरी दोनों रग को 'नाना' को पदासीन किया
धवल केसरी दोनो रग को 'नाना' ने अपूर्व चमका दिया।।
अवनि अम्बर मे यश फैला 'नाना अद्भुत सावरा।
त्रिलोकमहिमा है गुरु की कैसे वर्णन मै करू।।३।।

जितनी उपमाए हैं जगत म उतनी सभी वर्णन करें।
सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र वृहस्पति मिले सभी आख्यान करे।
अवर्णनीय महिमावन्त है 'सूरज प्यार' के सवारे ।
युग युग शासन दीप्तिवन्त रहे लक्ष्मीता सगान यू करू।।४।।

महापुरुषो का दिवस आया प्यारा पाचू मे सुनहरा।
गाव हमारा है छोटा पर भावना मे महक उठा
बालक–बालिका की अभ्यर्थना युगों युगों जियो गुरु।।
तन मन अर्पण है हमारा दया महर तुम करो गुरुवर।।५।।

भाव सुमनअर्पिता कत्री श्री लक्ष्य प्रभाजी म सा

सकलन कर्त्ता घेवर चन्द बुच्चा देश
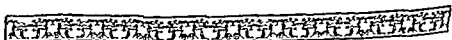
क्या है माटी क्या सोना है ?

विद्यावारिधि डा महेन्द्र सागर प्रचडिया

क्षणिक रूप काया नश्वर है
आत्म चेतना सदा अमर है
चेतन मन कुदन सी काया अतकाल माटी होना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।१।।

धुले-मिले हम नित विभाव मे
कभी न ठहरे हम स्वभाव में
सारी उमर निरर्थक बीती होता वही कि जो होता है।
क्या है माटी क्या सोना है।।२।।

परिजन सब ममता मे डूबे
भोगो से हम कभी न ऊबे
कुटिल कषायो के कल्मष को समता साबुन से धोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।३।।

कोई सगी साथ न अपना
सारा जीवन ही है सपना
विश्व विकर्षण का बजार है पाना कम ज्यादा खोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।४।।

तप-सयम से जीवन निखरे
भोग-वासना से वह बिखरे
आत्म साधना ही सम्यक है व्यर्थ सभी जादू-टोना है।
क्या है माटी क्या सोना है।।५।।

३६४ सर्वोदय नगर आगरा रोड अलीगढ़ उ प्र २०२००१

□
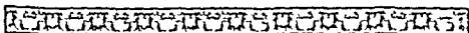
जीवन मूल्यो की तलाश

—निहाल चन्द जैन—

मनुष्य जीवन अनन्त सम्भावनाओं का कोष है
यदि यह खाली दिखता है तो इसमे हमारा ही दोष है।
इसमे चेतना प्रयोग की क्षमता और ज्ञान है
इसमे छिपा नये आविष्कार का विज्ञान है।
यह चहुँमुखी विकास के आयामों का खजाना है
लेकिन साबित कर रहे ज्यो भिखारी का ढोल बजाना है।
जीवन का घना अधकार
लोभ और लिप्सा का बाजार
रोज–रोज कुछ पा लेने का इन्तजार।
इस अधकार में न जाने कब से भ्रमित हैं ?
देह की देहरी और चेतना की चौखट पर
पुरुषार्थ का एक नन्हा सा दीप तो जलाओ।
सकल्प की एक चिनगारी तो उगाओ
जिसमें जूझने का पुरुषार्थ हो।
समस्याओ की भीड में—समाधान खोजने का विश्वास हो।
गलत को छोड़ने और सही को जीने की सास हो।
हमारे कर्म हमारे विचार व्यवहार व भाषा
झील की तरह निर्मल आकाश सी अनत हो।
पारदर्शी दर्पण सा स्वय का भगवन्त हो।
इसे परमात्मा के सागर मे मिलने के लिए मोड दे।
और सेवा को समर्पित दरिया सा उन्मुक्त छोड दे।

—प्राचार्य